॥ श्रीः ॥

अवन्तिकाचार्यवराहमिहिरकृत-

बृहज्जातकम् ।

पण्डितमहीधरकृतभाषाटीकासहितम्.

यत्र च-जातकशुभाऽशुभफलज्ञानप्रकारः शोभन-
तया निरूपितोऽस्ति ।

तदेव
मिथिलानिवासिज्योतिर्विज्झोपाह्व-
श्रीवच्चूशर्मणा संशोध्य

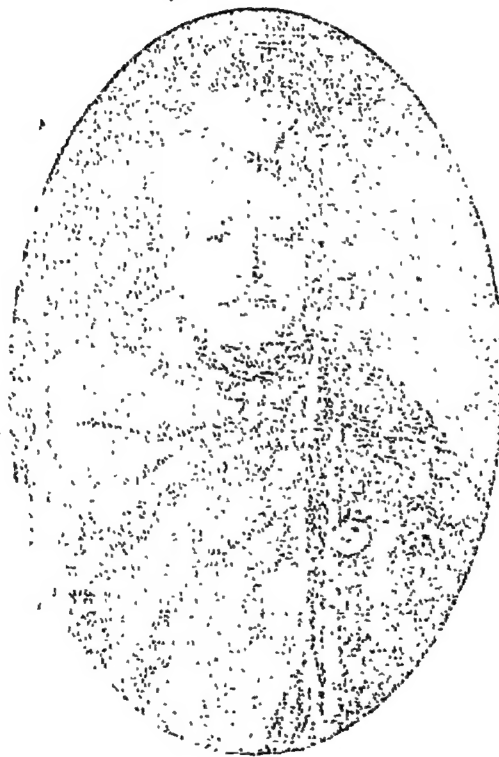
क्षेमराज-श्रीकृष्णदासश्रेष्ठिना

मुम्बय्यां

स्वकीये "श्रीवेङ्कटेश्वर" स्टीम्-यन्त्रालये
मुद्रयित्वा प्रकाशितम् ।

संवत् १९६६, शके १८३१.

महीधर शर्म्मा.



"श्रीवेङ्कटेश्वर" स्टीम् प्रेस-मुम्बई.

प्रस्तावना ।

विदित हो कि प्रथम प्रजापतिजीने संसारकी रचना करके स्वरचित मनुष्य जातिको सर्वोत्कृष्ट बहुज्ञ तथा उन्नतिशीलतासंपन्न देखकर उसके हृदयमें वेदाङ्ग त्रैकालिक त्रिविधकर्मसूचक ज्योतिश्शास्त्रका बीज वपन किया जिसके हृदयमें अंकुरित होनेसे अन्य २ व्यास पराशरादि ऋषियोंने देश काल तिथि नक्षत्र वार योग करण मुहूर्त्त घटी पल आदिकोंके भिन्न २ फल विशिष्ट होनेके कारण उक्त अंकुरको त्रिस्कन्धमें प्रसारित किया जिससे मनुष्यजाति को अनेक प्रकारसे उपकारी हो ।

कालान्तरमें श्रीसूर्य्यांशावतार अवन्तिकाचार्य्य **वराहमिहिर** ने ज्योतिश्शास्त्र में अपनी निपुणता तथा बहुज्ञता के कारण अन्य २ पूर्वाचार्योंका मत ग्रहण करके यह **बृहज्जातक** नाम ग्रन्थ रचा जिससे पाठकवृन्द थोडेही परिश्रमसे बहुत आचार्योंके मतके अभिज्ञ हो जावैं किन्तु वर्तमान समय की ऐसी महिमा होगई कि ऐसे एक सुगम ग्रन्थ का अर्थ भी बहुत सरल बुद्धियोंके हृदयमें संस्कृतके अल्प परिचय होनेके कारण सहसा स्फुरित नहीं होता है,इस दशाको देख कर श्रीमन्महामहिम क्षत्रियकुलावतंस गढदेशाधिप बदरीशमूर्ति श्रीमन्महाराजाधिराज प्रतापशाहदेव महोदयजी (जिनकी न्यायशीलता विद्वज्जनानुरागिता सद्गुणविशिष्टता प्रजोन्नतिशीलता प्रसिद्ध है) ने भाषा टीका करने को मुझे आज्ञा दी, सो उनकी आज्ञासे मैंने अपनी अल्प बुद्धिके अनुसार इस ग्रन्थ की टीका सरल हिन्दी भाषा में की है, प्रार्थना है कि विद्वज्जन अशुद्धियोंमें हास्य न कर शुद्धार्थसे सन्तुष्ट हों ।

यह ग्रन्थ २८ अध्यायों में विस्तारित है. १ में राशि स्वरूप, होरा, द्रेष्काण, नवांशक, द्वादशांशक, त्रिंशांशकका ज्ञान और ग्रहस्वरूप का वर्णन है. २ में ग्रह और राशिका बलाबल. ३ में वियोनिजन्म. ४ में आधानज्ञान. ५ में जन्मकाल. ६ में अरिष्ट कथन. ७ में आयुर्दाय. ८ में दशान्तर्दशा.

९ में अष्टक वर्ग. १० में कर्माजीव. ११ में राजयोग. १२ में नाभसयोग. १३ में चन्द्रयोग. १४ में द्विग्रहादियोग. १५ में प्रव्रज्यायोग. १६ में नक्षत्रफल. १७ में—(चन्द्र) राशिस्वभाव. १८ में (अन्यग्रह)—राशिस्वभाव. १९ में दृष्टिफल. २० में भावाफल. २१ में आश्रययोग. २२ में प्रकीर्णक. २३ में अनिष्टयोग. २४ में स्त्रीजातक. २५ में निर्याण. २६ में नष्टजातक. २७ में द्रेष्काणरूप. २८ में उपसंहार हैं यहाँ उपसंहाराध्यायके आदिमें आचार्यने अन्यग्रहराशिस्वभाव और नक्षत्रफल इन दोनोंका राशिशीलमें अन्तर्भाव मानकर और उपसंहारको छोडकर २५ ही अध्याय कहेहैं।

इस ग्रन्थका प्रयोजन यह है कि जो शुभाशुभ कर्म जीवने पहिले कियेहैं उन्हीके अनुसार अब फल पावैगा किन्तु फल होजाने पर मनुष्यको जान पडताहै न कि पहिले ही, इसके जाननेको इस ग्रन्थको जो मन लगाकर पढैगा और ठीक विचार करके फल कहैगा तो भूत भविष्य वर्तमान सभी फलको ग्रह विचार से कह सकता है, पूछनेवाला भूत बातको सुनकर प्रतीत मानता है और भविष्य बातके लिये यत्न कर सकता है ।

इस ग्रन्थकी प्रथमावृत्ति श्रीक्षेत्र काशीजीमें भारतजीवन प्रेसमें मैंने छपवायीथी वह ग्रन्थ सर्वत्र प्रसिद्ध होही गयाहै. अब इस ग्रन्थको सब रजिस्टरी हक्कके साथ "श्रीवेङ्कटेश्वर" स्टीम् यंत्रालयाधिप खेमराज श्रीकृष्णदास जीको मैंने पारितोषिक पाकर सदाहीके लिये समर्पण करदियाहै ।

भाषाटीकाकार—टीहरीनिवासी पं० महीधरशर्मा.

॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

अथ भाषाटीकायुतबृहज्जातकविषयाऽनुक्रमणिका ।



राशिभेदाऽध्यायः १.

विषय. पृष्ठांक.

ग्रहयोनिप्रभेदाऽध्यायः २.

वियोनिजन्माऽध्यायः ३.

अरिष्टाऽध्यायः ६.

आयुर्दायाऽध्यायः ७.

दशांतर्दशाऽध्यायः ८.

विषय. पृष्ठांक.

अष्टकवर्गाऽध्यायः ९.

कर्माजीवाऽध्यायः १०.

राजयोगाऽध्यायः ११.

दृष्टिफलाऽध्यायः १९.

भावाऽध्यायः २०.

आश्रययोगाऽध्यायः २१.

प्रकीर्णकाऽध्यायः २२.

अनिष्टाऽध्यायः २३.

स्त्रीजातकाऽध्यायः २४.

उपसंहाराऽध्यायः २८.

॥ इति श्रीभाषाटीकायुतबृहज्जातकविषयानुक्रमणिका समाप्ता ॥

॥ श्रीः ॥

बृहज्जातकम् ।

भाषाटीकासहितम्.

राशिभेदाध्यायः १.

शार्दूलविक्रीडितम् ।

मूर्त्तित्वे परिकल्पितश्शशभृतो वर्त्माऽपुनर्जन्मना-
मात्मेत्यात्मविदां क्रतुश्च यजतांभर्तामरज्योतिषाम् ।
लोकानाम्प्रलयोद्भवस्थितिविभुश्चानेकधा यः श्रुता
वाचं नः स ददात्वनेककिरणस्त्रैलोक्यदीपो रविः ॥ १ ॥

टीका–ग्रंथकर्त्ता विघ्ननिवृत्त्यर्थ प्रथम अपने इष्ट श्रीसूर्य नारायणसे वाक् सिद्ध्यर्थ प्रार्थना करता है ॥ अनेक किरणोंवाला तथा तीन लोकमें प्रकाश करनेवाला जैसा दीपक और शश जो कलङ्क उसे धारण करनेवाला जो चन्द्रमा है उसकी मूर्ति प्रगट करनेवाला अर्थात् चन्द्रमा जलमय बिना कलङ्कके दर्पण (आइना) के समान है उसको सूर्य्यनारायण अपनी किरणों से तेज देकर पूर्णकला बनाते हैं सूर्य्य का तेज क्रम से लगने पर चन्द्रमा प्रकाशमान होता है । यद्वा [शशिभृतः] ऐसा पाठ भी है तो शशिभृत् जो महादेवजी हैं उनकी मूर्ति अर्थात् श्रीमहादेवजीकी अष्टमूर्ति में एक सूर्य्य भी हैं और अपुनर्जन्मा जो (मुमुक्षु) मुक्तिपद को प्राप्त होने-वाले, हैं उन्हीं का मार्ग है जो मुक्त होने के समय पितृलोकमें जाते हैं

वे चन्द्रमण्डलहोकर और जो कैवल्य मुक्ति वाले हैं वे सूर्य्यमण्डल को भेदन करके जाते हैं और जो परमात्मा को अपने हृदय में नित्यस्थित जानने वाले योगीश्वर हैं उन का चित्ताधिष्ठाता और जो यज्ञ करने वाले यजमान हैं उन का यज्ञ रूपी देवता और ग्रहों का भर्त्ता (श्रेष्ठ) क्योंकि सब देवता सूर्य्य को नित्य प्रणाम करते हैं एवं सब ग्रह सूर्य्य के वशसे उदयास्तादि गति पाते हैं और सत्र लोक का ब्रह्मा विष्णु महेश्वर त्रयी मूर्ति और वेद जिसको अनेक प्रकार अर्थात् इन्द्र मित्र वरुण अग्नि गरुड यम वायु करके कहते हैं ऐसा जो सूर्य्य-नारायण है सो मुझको वाक्सिद्धि देवै ॥ १ ॥

शार्दूलविक्रीडितम् ।

भूयोभिः पटुबुद्धिभिः पटुधियां होराफलज्ञप्तये
शब्दन्यायसमन्वितेषु बहुशश्शास्त्रेषु दृष्टेष्वपि ।
होरातन्त्रमहार्णवप्रतरणे भग्नोद्यमानामहं
स्वल्पं वृत्तविचित्रमर्थबहुलं शास्त्रप्लवंप्रारभे ॥ २ ॥

टीका—चतुर बुद्धि वाले आचार्य्यों ने चतुरों के होरा फल जानने के निमित्त शब्द शास्त्रन्याय मीमांसाओं की युक्ति अनेक वार देख विचार के अनेक ज्योतिष ग्रंथ बनाये परन्तु तौ भी होरा शास्त्ररूपी समुद्र के पार पहुँचने में निरुद्यम होगये क्योंकि और ग्रन्थों का बहुत विस्तार है जिनके पढने में कलियुग की थोडी सी आयु व्यतीत हो जाती है तो उसका फलोदय कब होना है इस कारण मैं वराहमिहिर नामा आचार्य ज्योतिश्शास्त्ररूपी नाव बनाता हूं इसमें विचित्र छन्दोंवाले श्लोक थोडे हैं और अर्थ बहुत हैं ॥ २ ॥

इंद्रवज्रा ।

होरेत्यहोरात्रविकल्पमेके वाञ्छन्ति पूर्वापरवर्णलोपात् ।
कर्म्मार्जितं पूर्वभवे सदादि यत्तस्य पंक्तिं समभिव्यनक्ति ॥ ३ ॥

टीका–अहोरात्रका विकल्प होरा कहतेहैं अकार पूर्वाक्षर और त्र अन्त्य का अक्षर इन दोनों के लोप करने से बाकी बीच में [होरा] ये दो अक्षर रह जाते हैं अहोरात्र से होरा पद सिद्ध करने का प्रयोजन यह है कि सारे ज्योतिष शास्त्र में शुभाशुभ फल लग्न से जाने जाते हैं वह लग्न समय के वश से और समय दिन रात्रि मात्र है यह मेषादि राशि बारह पूरी हो जाने पर दिन रात्रि होती है अतएव अहोरात्र से होरा नाम हुआ। जीव ने जो कुछ शुभाशुभकर्म पूर्व जन्म में किया उसका फल उसी प्रकार इस जन्म में मिलैगा परंतु वह पहिले जाना नहीं जाता इस कारण उस फल के पहिले जान लेने के निमित्त यहां यह विचार किया जाता है शुभाशुभ फल भी दो प्रकारका है एक तो दृढ कर्म करने से दूसरा अदृढ कर्म से। दृढ कर्मोपार्जित तो दशा फल है दशा का शुभ फल जान के यात्रादि शुभ कर्म करै अशुभ जान के न करै जो अदृढ कर्मोपार्जित है वह अष्टकवर्ग गोचर में फल बतलाता है अशुभ जान कर उसकी शान्ति आदि करै ॥ ३॥

शार्दूलविक्रीडितम्।

कालाङ्गानि वराङ्गमाननमुरो हृत्क्रोडवासो भृतो
बस्तिर्व्यञ्जनमूरुजानुयुगले जंघे ततोऽङ्घ्रिद्वयम्।
मेषाश्विप्रथमा नवर्क्षचरणाश्चक्रास्थिता राशयो
राशिक्षेत्रगृहर्क्षभानि भवनं चैकार्थसम्प्रत्ययाः ॥ ४ ॥

टीका–अश्विनी नक्षत्र से लेकर ९ चरण पर्यन्त मेष राशि होती है, एवं नौ २ नक्षत्र चरणों की एक २ राशि जानो ये बारह राशि चक्र के समान फिरती हैं इनको राशिचक्र कहते हैं राशि, क्षेत्र, गृह, ऋक्ष, भ, और भवन ये सभी इन्हीं के नाम हैं। कालचक्र भी राशिचक्र को कहते हैं उनकी संज्ञा शरीर में इस क्रम से है कि मेष शिर, वृष मुख, मिथुन स्तनमध्य, कर्क हृदय, सिंह उदर, कन्या कटि, तुला नाभी से नीचे, वृश्चिक लिङ्ग, धन ऊरु, मकर जंघा, कुम्भ घुटना, मीन पैर, कालचक्र के राशि-

विभाग का प्रयोजन यह है कि जन्म वा प्रश्न वा गोचर में जो राशि पापाक्रान्त हो उस राशिवाले अङ्ग में तिल, लाखन, वा चोट से किसी प्रकार का चिह्न होगा और जो राशि शुभयुक्त हो तो वह अङ्ग पुष्ट होगा यह विचार सर्वत्र स्मरण चाहिये ॥ ४ ॥

वसंततिलका ।

मत्स्यौ घटी नृमिथुनं सगदं सवीणं
चापी नरोऽश्वजघनो मकरो मृगास्यः ।
तौली ससस्यदहना प्लवगा च कन्या
शेषाः स्वनामसदृशाः खचराश्च सर्वे ॥ ५ ॥

टीका–राशियों के स्वरूप का वर्णन । मीन राशि दो मछलियां हैं एक के मुख में दूसरी का पूंछ लग कर गोल बनी हुई हैं, कुम्भ रिक्त घट (कलश) कांधे पर धरा हुआ पुरुष, मिथुन स्त्री पुरुष का जोडा, स्त्री के हाथ पर वीणा, और पुरुष के गदा, धन धनुष हाथमें कटि से ऊपर मनुष्य नीचे घोडा, मकर शरीर नाकू का मुख मृग का, तुला मनुष्य तुला (तखडी) हाथ में लिये हुये, कन्या नाव के ऊपर बैठी हुई साथ में अग्नि और तूला, और राशि नामतुल्य रूप जैसे वृष बैल रूप, कर्क केकडा, सिंह शेर, वृश्चिक बिच्छू इनको स्पष्ट रूप से दोहों में दर्शाताहूं ॥

दोहा ।

मेंढा सूरत रक्त तनु, बनवासी है मेष । रतन खान तस्कर पती, कहत महीधर वेष ॥ १ ॥ गौर वर्ण है कण्ठ मुख, सुन्दर बैल समान । पर्वत गोकुल क्षेत्रपति, यों वृष राशी जान ॥ २ ॥ बीण गदा धारे सदा, गावत नरमादीन । अर्द्धाङ्गी क्रीडा करै, राशी मिथुन न दीन ॥ ३ ॥ कर्कट कीटक वारिचर, उपवन सरसि निवास । पुष्ट हृदय वाणी मधुर, सुरपुर नारि विलास ॥ ४ ॥ वन पर्वत रात्री बली, सर्वोत्तम यह रास । हस्ति दलन विक्रम करन, सिंह स्वरूप विलास ॥ ५ ॥ दीपक हस्त

कुमारिका, सकल कला परवीन । नौकामें धीरज सहित, लेखत चित्र नवीन ॥ ६ ॥ वणज करत मानुष तनू, तखड़ी तौलै हाट । श्वेत वसन माला धरी, तुला दिखावत बाट ॥ ७ ॥ वृश्चिक विच्छू है सबल, गुप्त हलाहल सार । बाँबी रंधर छिप रहे, करै अजाने मार ॥ ८ ॥ कटि ऊपर मानुष तनू, नीचे घोड़ा ऐन । तीर धनुष करमें लसै, मीठे बोलै बैन ॥ ९ ॥ मृगमुख नाकू और तनु, वनवासी दिन रैन । शुक्ल वसन भूषण बरण, जल विन नित नाहिं चैन ॥ १० ॥ खाली घट कांधे धरै, तप्त नीर आधार । जूआँ वेश्या मद्य सों, झूठा बारंबार ॥ ११ ॥ मच्छी जोड़ा पूंछ मुख, धारत हैं विपरीत । जलवासी धर्मी धनी, मीन राशि यह रीत ॥ १२ ॥

यह राशियोंके रूप स्थान, खोये गये द्रव्यके वतलाने प्रभृतिमें काम आते हैं ॥ ५ ॥

त्रोटकम् ।

क्षितिजसितज्ञचन्द्ररविसौम्यसितावनिजाः
सुरगुरुमन्दसौरिगुरवश्च गृहांशकपाः ।
अजमृगतौलिचन्द्रभवनादिनवांशविधि-
र्भवनसमांशकाधिपतयः स्वगृहात् क्रमशः ॥ ६ ॥

टीका–राशीश, नवांशक, द्वादशांशक का वर्णन । मेष राशिका स्वामी क्षितिज (मङ्गल) वृष का स्वामी सित (शुक्र) मिथुन का ज्ञ (बुध) कर्क का चन्द्र, सिंह का रवि (सूर्य्य) कन्या का सौम्य (बुध) तुला का शुक्र, वृश्चिक का अवनिज (मङ्गल) धन का सुरगुरु (बृहस्पति) मकर का मन्द (शनि) कुम्भका सौरि (शनि) मीन का गुरु,(बृहस्पति)

राशि ।	मे०	वृ०	मि०	क०	सिं०	क०	तु०	वृ०	ध०	म०	कु०	मी०
स्वामी ।	मं०	शु०	बुध	चं०	सू.	बुध	शु०	मं०	वृ०	श०	श०	बृ०

नवांशक एक राशि के ९ भाग अर्थात् ३ अंश २० कला का होता है उनकी गणना ऐसीहै कि मेष सिंह धनमें मेष से, वृष कन्या मकर में

मकर से, मिथुन तुला कुम्भमें तुलासे, कर्क वृश्चिक मीन में कर्क से; मेष सिंह धन इत्यादि तीन२ राशियों की त्रिकोण संज्ञा है, एक संज्ञा में जो राशिचर है उसी से पहिले नवांशक गणना है जैसे पहिले लिखा है चक्र भी यह है।

चर १	च० १०	च० ७	च० ४
१।५।९	२।६।१०	३।७।११	४।८।१२

एकराशिके ९ भाग।

अंश।	३	६	१०	१३	१६	२०	२३	२६	३०
कला।	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०

जैसे मेष के ३ अंश २० कला पर्यन्त मेष नवांशक, ३।२० से ६ अंश ४० कला पर्यन्त वृष नवांशक, १० अं० क० पर्यन्त मिथुन नवांशक और मिथुन राशि में ३ अंश २० क० पर्यन्त तुला नवांशक, ६।४० पर्यन्त वृश्चिक नवांशक इसी प्रकार सबका जानना। द्वादशांशक एक राशिके १२ भाग एक २ भाग दो अंश ३० कला का होताहै जिस राशिका द्वादशांश करना हो उसी से पहिले गिनना जैसे मेष में २ अंश ३० क० पर्य्यन्त मेष द्वादशांश, ५ अंश ० क ० पर्य्यन्त वृष द्वादशांश, वृष में २ अं० ३० क० पर्य्यन्त वृष द्वादशांश, २। ३० से ५। ० पर्य्यन्त मिथुन द्वादशांश, ७ अंश ३० क० पर्य्यन्त कर्क द्वादशांश, मिथुन में २। ३० पर्य्यन्त मिथुन द्वादशांश ५। ० पर्य्यन्त कर्क द्वादशांश इसी प्रकार सब का द्वादशांश जानना ॥ ६ ॥

पुष्पिताग्रा।

कुजरविजगुरुज्ञशुक्रभागाः पवनसमीरणकौर्प्यजूकलेयाः।
अयुजि युजि तु भे विपर्ययस्थाः शशिभवनालिझषान्तमृक्षसन्धिः ७

टीका—त्रिंशांशक में एक राशि के ३० अंश के भाग इस प्रकार होते हैं कि विषम राशि १ । ३ । ५ । ७ । ९ । ११ में पहिले ५ अंश पर्यन्त मङ्गल का त्रिशांश, ५ से १० अंश पर्य्यन्त शनिका त्रिशांश, १० से १८ अंश पर्यन्त बृहस्पति का १८ से २५ अं० तक बुध का २५ से ३० अं० तक शुक्र का । और सम राशि २ । ४ । ६ । ८ । १० । १२ में ५ अंश पर्यन्त शुक्र का, ५ अं० से १२ अंश तक बुध का, १२ से २० तक बृहस्पति का, २० से २५ तक शनि का, २५ से ३० तक मङ्गल-का त्रिशांश होता है अयुजि (विषम में) मं० श० बृ० बु० शु० ऐसा क्रम है । युजि (सम) में उलटा अर्थात् शु० बु० बृ० श० मं० ऐसा क्रम त्रिंशांशक का है ॥

मं०	श०	गु०	बु०	शु०	शु०	बु०	गु०	श०	मं०
५	५	८	७	५	५	७	८	५	५
५	१०	१८	२५	३०	५	१२	२०	२५	३०

(शशिभवन) कर्क (अलि) वृश्चिक (झष) मीन इन राशियों के में ऋक्षसन्धि कहते हैं । अर्थात् मीन मेष की, कर्क सिंह की, और वृश्चिक धनुष् की सन्धि है चक्रसंधि भी इन्हीं का नाम है । राशिसन्धि लग्नसन्धि, नक्षत्रसन्धि; ये तीनों प्रकार इन्हींमें आते हैं गण्डान्त के भी यही स्थान हैं मेष मीन के संधि की १ घडी, कर्क सिंह के सन्धि की १ घडी, और वृश्चिक धनुष् के सन्धि की १ घडी लग्न गण्डान्त होती है. ऐसे-ही रेवती अश्विनी के सन्धि की ३ घडी, आश्लेषा मघा के सन्धि की ३ घडी, ज्येष्ठा मूल के सन्धि की ३ घडी, ये नक्षत्र गण्डान्त कहाते हैं । गण्डान्तका विचार और ग्रन्थों में बहुत है प्रसंग वश से यहां इतनाही लिखा और सप्तमांश, यहां ग्रन्थकर्ता ने नहीं कहा परन्तु वह भी गिनना आवश्यक है

क्योंकि सप्तमांश से द्रव्य रूपादि का तथा भाईका विचार होताहै इस कारण मैंने यहाँ केवल चक्रही लिखदिया ॥ ७ ॥

सप्तमांशचक्रम् ।

१	२	३	४	५	६	७	भाग ।
४	८	१२	१७	२१	२५	३०	अंश ।
१७	३४	५१	८	२५	४२	०	कला ।
८	१७	२५	३४	४२	५१	०	विकला ।
३४	८	४२	१६	५०	२४	०	प्रतिविकला ।

आर्या ।

क्रियताबुरिजितुमकुलीरलेयपाथोनजूककौर्प्याख्याः ।
तौक्षिक आकोकेरो हृद्रोगश्चांत्यभं चेत्थम् ॥ ८ ॥

टीका–राशियों के नाम ये हैं । क्रिय मेष, ताबुरि वृष, जितुम मिथुन, कुलीर कर्क, लेय सिंह, पाथोन कन्या, जूक तुला, कौर्प्य वृश्चिक, तौक्षिक धनुष, आकोकेरो मकर हृद्रोग कुम्भ, अन्त्यभ मीन ॥ ८ ॥

इन्द्रवज्रा ।

द्रेष्काणहोरानवभागसंज्ञास्त्रिंशांशकद्वादशसंज्ञिताश्च ।
क्षेत्रञ्च यद्यस्य स तस्य वर्गो होरेति लग्नं भवनस्य चार्द्धम् ॥ ९ ॥

टीका–द्रेष्काण होरा आगे कहे जांयगे, नवांश त्रिशांशं द्वादशांश और गृह ऊपर लिखगये ये सब छः वर्ग हैं इन में जो राशि उसी का अंश भी होवे तो उसे वर्गोत्तम कहते हैं अंश षड्वर्ग में सभी को कहते हैं, जैसे मेषमें मेष नवांशादि, वृष में वृष यादि षड्वर्ग में जो राशि उसी के अंशक में जो ग्रहहोवे वह षड्वर्ग शुद्ध कहलाता है परन्तु सूर्य चन्द्रमा का त्रिशांश नहीं है और भौमादिग्रहोंकी होरा नहीं है, अतएव पंचवर्ग होता है षड्वर्ग शुद्ध कभी

नहीं हो सक्ता होरा लग्नको कहते हैं और राशिका आधा भागको भी होरा कहते हैं विस्तार इस का आगे लिखा है ॥ ९ ॥

वसंततिलका।

गोजाश्विकर्किमिथुनाः समृगा निशाख्याः
पृष्ठोदया विमिथुनाः कथितास्त एव।
शीर्षोदया दिनबलाश्च भवन्ति शेषा
लग्नं समेत्युभयतः पृथुरोमयुग्मम् ॥ १० ॥

टीका—वृष मेष धन कर्क मिथुन मकर इतनी राशियां रात्रिबली हैं और पृष्ठोदय भी यही हैं परन्तु इन में मिथुन पृष्ठोदय नहीं है और सिंह कन्या तुला वृश्चिक कुंभ ये दिवाबली हैं यही शीर्षोदय भी हैं मिथुन भी शीर्षोदय है और मीन दो मछली मुख पूंछ मिलकर गोलाकार होनेसे शीर्षोदय भी है जो पीठ से उदय होते हैं वे पृष्ठोदय जो शिर से उदय होते हैं वे शीर्षोदय मीन दोनों मुख पूंछ से उदय होता है ॥ १० ॥

मन्दाक्रान्ता।

क्रूरः सौम्यः पुरुषवनिते ते चरागद्विदेहाः
प्रागादीशाः क्रियवृषनृयुक्कर्कटाः सत्रिकोणाः।
मार्त्तण्डेंद्वोरयुजि समभे चन्द्रभान्वोश्च होरे
द्रेष्काणाः स्युः स्वभवनसुतत्रित्रिकोणाधिपानाम् ॥ ११ ॥

टीका—मेष क्रूर व पुरुष, वृष स्त्री व सौम्य, मिथुन, क्रूर व पुरुष, कर्क स्त्री व सौम्य, सिंह पु० क्रू०, कन्या स्त्री सौ०, तुला क्रू० पु०, वृश्चिक स्त्री सौ०, धन क्रू० पु०, मकर स्त्री सौ०, कुंभ पु० क्रू,० मीन स्त्री सौ०, और मेष कर्क तुला मकर चर, वृष सिंह वृश्चिक कुंभ स्थिर, मिथुन कन्या धन मीन ये द्विस्वभाव हैं। मेष सिंह धन पूर्व, वृष कन्या मकर दक्षिण, मिथुन तुला कुंभ पश्चिम, कर्क वृश्चिक मीन उत्तर दिशा में रहते हैं। होरा विषम

राशि में पूर्वार्द्ध १५ अंश पर्यन्त सूर्य की, १५ से ३० तक चंद्रमा की और सम राशि में १५ अंश तक चन्द्रमा की उपरान्त ३० तक सूर्य्य की होती है द्रेष्काण एक राशि में दशदश अंश के तीन होते हैं जो राशि है पहिले १० अंश पर्यन्त उसी राशिके स्वामी का द्रेष्काण, १० अंशसे २० पर्यन्त उस राशि से पांचवीं राशिके स्वामी का, २० से ३० पर्यन्त उस राशि से नवीं राशिके स्वामी का द्रेष्काण होता है जैसे मेष के १० अंश पर्यन्त मेष के स्वामी मंगल का द्रेष्काण, १० अंशसे २० अंश पर्यन्त मेष से पंचम सिंह के स्वामी सूर्य्यका द्रेष्काण, २० अंश से ३० अंश पयन्त मेष से नवम धन के स्वामी बृहस्पतिका द्रेष्काण होता है इसी प्रकार सब राशियों के द्रेष्काण जानने ॥ ११ ॥

इन्द्रवज्रा ।

कश्चित्तु होरां प्रथमाम्भपस्यवाञ्छान्तिलाभाधिपतेर्द्वितीयाम् ।
द्रेष्काणसंज्ञामपि वर्णयन्ति स्वद्वादशैकादशराशिपानाम् ॥ १२ ॥

टीका–कोई २ यवनेश्वरादि आचार्य होरा का इस प्रकार वर्णन करते हैं कि पूर्वार्द्ध में उसी राशिके स्वामी का और उत्तरार्द्ध में उसी राशि से ग्यारहवीं राशि के स्वामी का और द्रेष्काण प्रथम १० अंश तक उसी के स्वामी का, दूसरे २० अंश पर्यन्त उस से बारहवीं राशिके स्वामी का, तृतीय ३० अंश लौं उससे ग्यारहवीं राशि के स्वामी का परन्तु इस मत को सर्व सम्मत न होने से नहीं मानते ॥ १२ ॥

पुष्पिताग्रा ।

अजवृषभमृगाङ्गनाकुलीरा झषवणिजौ च दिवाकरादितुङ्गाः ।
दशशिखिमनुयुक्तिथीन्द्रियांशैस्त्रिनवकविंशतिभिश्च तेऽस्तनीचाः ॥

टीका–सूर्य्य का उच्च मेष १० अंश में परम उच्च, चन्द्रमा का वृष ३ अंश में, मंगल मकर के २८ अंश में, एवं बुध कन्या के १५ अंश पर

बृहस्पति कर्क के ५ अं० में, शुक्र मीन के २७अं०में, शनि तुला के २० अं० में । ये ग्रह इन राशियों में उच्च और इन अंशकों में परमोच्च होतेहैं वैसा ही अपनी उच्च राशि से सातवीं राशि नीच और वही उच्च वाले अंशकों में परम नीच होतेहैं ॥ १३ ॥

	ग्रह	सूर्य्य	चन्द्र	मं०	बु०	बृ०	शु०	श०
उच्च	राशि	मेष	वृष	मकर	कन्या	कर्क	मीन	तुला
	अंश	१०	३	२८	१५	५	२७	२०
नीच	राशि	तुला	वृश्चिक	कर्क	मीन	मकर	कन्या	मेष
	अंश	१०	३	२८	१५	५	२७	२०

वसन्ततिलका ।

वर्गोत्तमाश्चरगृहादिषु पूर्वमध्य-
पर्यन्ततश्शुभफला नवभागसंज्ञाः ।
सिंहो वृषप्रथमषष्ठहयाङ्गतौलि-
कुम्भास्त्रिकोणभवनानि भवन्ति सूर्य्यात् ॥ १४ ॥

टीका—जो राशि है उसमें उसी का नवांश वर्गोत्तम होता है जैसे मेष में मेष नवांशक, वृषमें वृष नवांश इत्यादि । यहां मेष कर्क तुला मकर के प्रथम नवांश वर्गोत्तम, वृष सिंह वृश्चिक कुंभ में मध्यम अर्थात् पंचम नवांश वर्गोत्तम होते हैं वर्गोत्तम लग्नवर्गोत्तमांश में ग्रह शुभ फल देता है और सूर्य-का सिंह, चन्द्रमा का वृष, मंगल का मेष, बुध का कन्या, बृहस्पति का धन, शुक्रका तुला, शनि का कुंभ ये मूल त्रिकोण हैं ॥ १४ ॥

वसंततिलका ।

होरादयस्तनुकुटुम्बसहोत्थबंधु-
पुत्रारिपत्निमरणानि शुभास्पदायाः ।

रिष्फाख्यमित्युपचयान्यारिकर्मलाभ-
दुश्चिक्यसंज्ञितगृहाणि न नित्यमेके ॥ ॥ १५ ॥

टीका–लग्नादि बारह भावों के नाम, लग्न होरा, दूसरा, कुटुम्ब, तीसरा (सहोत्थ) सहज, चौथा बन्धु, पंचम पुत्र, छठा रिपु, सप्तम पत्नी, अष्टम मरण (मृत्यु), नवम शुभ, दशम आस्पद, ग्यारहवां आय, बारहवां रिष्फ, और ६ । १० । ११ । ३ । इन भावों की संज्ञा उपचयहै कोई आचार्य पाप-युक्तादि विरुद्ध फल होने से इनकी उपचय संज्ञा ठीक नहीं बताते हैं परन्तु यहांआचार्य ने बहुत ग्रन्थ सम्मत होनेसे इनकी उपचय संज्ञा स्थापन करीहै ॥

वसंततिलका ।

कल्पस्वविक्रमगृहप्रतिभाक्षतानि-
चित्तोत्थरंध्रगुरुमानभवव्ययानि ।
लग्नाच्चतुर्थनिधने चतुरस्रसंज्ञे
द्यूनञ्च सप्तमगृहं दशमं खमाज्ञा ॥ १६ ॥

टीका--तन्वादि द्वादश भावों के नाम और प्रकार के भी हैं कि पहिला भाव लग्न का नाम कल्प, दूसरे का (स्व) धन, तीसरा पराक्रम, चौथा गृह, पंचम (प्रतिभा) पुत्र, छठा क्षत, सातवां (चित्तोत्थ) स्त्री, आठवां (रंध्र) छिद्र नवम (गुरु) धर्म, दशम(मान)राजा, ग्यारहवां (भव)लाभ, बारहवां व्यय और लग्न से चौथे आठवें स्थान का नाम चतुरस्र और सप्तम का नाम द्यून और दशम स्थानका नाम ख और आज्ञाहै ॥ १६ ॥

तोटकम् ।

कण्टककेंद्रचतुष्टयसंज्ञाः सप्तमलग्नचतुर्थखभानाम् ।
तेषुयथाभिहितेषु बलाढ्याः कीटनराम्बुचराः पशवश्च ॥ १७ ॥

टीका–१ । ४ । ७ । १० इन भावों के नाम कण्टक केन्द्र चतुष्टय ये ३ हैं, इन में कीट मनुष्य जलचर पशु ये राशि क्रम से बलवान् होती

हैं, जैसे कीट राशि वृश्चिक सप्तम स्थान में बलवान् होती है, और मिथुन तुला कन्या कुम्भ और धन का पूर्वार्द्ध ये मनुष्य राशि हैं लग्नमें बलवान् होतेहैं और कर्क मीन मकर का उत्तरार्द्ध जलचर राशि हैं चतुर्थ भाव में बलवान् हैं; और मेष सिंह वृष धन का उत्तरार्द्ध और मकर का पूर्वार्द्ध ये चतुष्पद राशि हैं दशम स्थान में बलवान् होती हैं ॥ १७ ॥

वसंततिलका।

केन्द्रात्परं पणफरं परतस्तु सर्व-
मापोक्लिमं हिबुकमम्बु सुखञ्च वेश्म ।
जामित्रमस्तभवनं सुतभं त्रिकोणं
मेषूरणन्दशमत्र च कर्म विद्यात् ॥ १८ ॥

टीका–चार केन्द्र १ । ४ । ७ । १० से उपरान्त २ । ५ । ८ । ११ इन भावों का नाम पणफर है, इन से उपरान्त ३ । ६ । ९ । १२ इन का नाम आपोक्लिम है, चतुर्थ भाव के नाम अंबु सुख वेश्म और सप्तम भाव के नाम जामित्र अस्त, पंचम भाव का नाम त्रिकोण, दशम भाव का नाम मेषूरण तथा कर्म ॥ १८ ॥

शार्दूलविक्रीडितम् ।

होरा स्वामिगुरुज्ञवीक्षितयुता नान्यैश्च वीर्योत्कटा
केंद्रस्था द्विपदादयोऽह्नि निशि च प्राप्ते च सन्ध्याद्वये ।
पूर्वार्द्धे विषयादयः कृतगुणा मानं प्रतीपञ्च त-
द्दुश्चिक्यं सहजन्तपश्च नवमं त्र्याद्यं त्रिकोणञ्च तत् ॥ १९ ॥

टीका–लग्नेश लग्न में होवे अथवा लग्नको देखै अथवा बुध बृहस्पति से युक्त वा दृष्ट होवे तो वह राशि वीर्योत्कट बलवान् होती है ऐसेही पाप-ग्रहों से हीनबल और दोनों प्रकार से युक्त होवे तो मध्य होतीहै " केन्द्रस्था

द्विपदादयः" केन्द्र में द्विपद राशि ३ । ७ । ६ । बलवान् होती हैं, वैसेही पणफर २ । ५ । ८ । ११ में चतुष्पद १ । २ । ५ । ९, और आपोक्लिम ३ । ६ । ९ । १२ में कीट राशि ४ । ८ । १० । ११ । १२ बलवान् होती हैं, किसी आचार्य का मत है कि केन्द्र में सभी राशि बलवान् होती हैं, पणफर में मध्य बली और आपोक्लिम में हीन बली होती हैं और द्विपद राशि ३ । ७ । ६ और धन का पूर्वार्द्ध ये दिन को बलवान् हैं और चौपया राशि १ । २ । ५ और मकर का पूर्वार्द्ध, धन का उत्तरार्द्ध ये रात्रिमें बलवान् हैं और कीट जलचर ४ । ८ ११ । १२ । और मकर का उत्तरार्द्ध ये सन्ध्या काल में बलवान् हैं अब लग्न प्रमाण कहते हैं। विषयादयः ५ । ६ । ७ । ८ । ९ । १० । इन अङ्कों को चौगुना करके मेषादिसे कन्या पर्यन्त और उलटे क्रम से तुलादिसे मीन पर्यन्त लग्न भाग होते हैं उनको भी १० गुणा करनेसे लग्न खण्ड होते हैं पश्चात् अपने २ देशोंके पलभानुसार स्वस्वदेशीय लग्न खण्ड बनाये जाते हैं इनको विस्तार पूर्वक चक्र में लिखा है। इन अङ्कों का प्रयोजन लग्नखण्डोंही पर नहीं है किन्तु ह्रस्व, दीर्घ मध्य मान लग्न राशियोंका है प्रश्नादि में द्रव्यादि के रूप छोटा बडा वा लम्बा वा गोल वा चौखुंटा स्थूल वा सूक्ष्म इत्यादि विचार के काममें आते हैं और दुश्चिक्य सहज तृतीय भाव का नाम है, तप और त्रिकोण नवम भाव का नाम है ॥ १९ ॥

लग्नमानचक्रम् ।

१	२	३	४	५	६	क्रमराशि
१२	११	१०	९	८	७	व्युत्क्रमराशि
५	६	७	८	९	१०	लग्नमान
२०	२४	२८	३२	३६	४०	चतुर्गुणमान
२००	२४०	२८०	३००	३६०	४००	दशगुणानि लग्नख.

मंदाक्रांता ।

रक्तःश्वेतश्शुकतनुनिभः पाटलो धूम्रपाण्डु-
श्चित्रः कृष्णः कनकसदृशः पिङ्गलः कर्वुरश्च ।
बभ्रुः स्वच्छः प्रथमभवनाद्येषु वर्णा प्लुवत्वं
स्वाम्याशाख्यं दिनकरयुताद्भाद्द्वितीयं च वेशि ॥ १० ॥

इति श्रीमदावन्तिकाचार्यवराहमिहिरविरचिते बृहज्जातके
राशिभेदाध्यायः प्रथमः ॥ १ ॥

टीका—राशियों के रंग का वर्णन ॥ मेष रक्त, वृष श्वेत, मिथुन शुक तनु अर्थात् हरित, कर्क (पाटल) रक्तश्वेत मिला हुआ, सिंह (धूम्रपाण्डु) थोडा श्वेत धूम्र, कन्या चित्र अर्थात् अनेक वर्ण, तुला कृष्ण, वृश्चिक कनक सदृश, धन पिङ्गल अर्थात् पीला, मकर कर्वुर अर्थात् चितकवरा, कुंभ बभ्रुः नकुलका सा रंग, मीन मछली का सा रंग जिस राशि के स्वामी की जो दिशा है वह उस राशि की प्लुव संज्ञा दिशा होती है जसे १ । ८ का स्वामी मंगल इस्की दिशा दक्षिण यह १ । ८ की प्लुव संज्ञा दक्षिण है सविस्तर चक्र में लिखा है जिस भाव में सूर्य्य है उस से दूसरे भावकी संज्ञा वेशि है ॥ २० ॥

राशि	१ ८	२ ७	६ ३	४	१२ ९	१० ११	५
राशिस्वा.	भौ०	शु०	बु०	चं०	बृ०	श०	सू०
प्लुवदि०	दक्षिण	आग्न	उत्तर	वायव्य	ईशान्य	पश्चिम	पूर्व

भाव संज्ञा और प्रकार से—दोहा ।

मर्त्ति अङ्ग तनु उदय वपु, कल्प आदि इति नाम । वरन चिह्न साहस वयस, प्रथम लग्न इह काम ॥१॥ कोष अर्थ परिवारगी, दूजे घर के नाम । स्वर्ण रत्न व्यापार रस, यामें देखो वाम ॥ २ ॥ सहज भाव दुश्चिक्य पुनि

पाराकरम तिरतीय । भाई चाकर जीविका, यासों जानो जीय ॥ ३ ॥ मात सौख्य तूरज हिबुक, मित्र वाह जल खात । घर भूमी वाहन सुहृद, चौथे देखो मात ॥ ४ ॥ विद्या मन्तर पुत्र अरु, वाणी समज सुनाम । विद्या बुद्धी सन्तती, यामें है अभिराम ॥ ५ ॥ छत अरि मातुल रोग इति, छठयें के हैं नाम । क्रूर कर्म रिपु रोग का, मूल पुरुष यह धाम ॥ ६ ॥ अस्त स्मर यामित्र मद, घून नाम घर सात । वनिता वणज प्रवेश गम, चेत कहो सब बात ॥ ७ ॥ याम्य रंध्र लय मृत्यु अरु आयू अष्टम भाव । दुर्ग शस्त्र जीवन वयस, या घर सोध बताव ॥ ८ ॥ धर्म पुण्य गुरु भाग्य तप, मार्ग नवमके नाम । तीरथ शील सुकर्म अरु, भाग्योदय अभिराम ॥ ९ ॥ राज्य तात आस्पद करम, मेषूरण के नाम । राजा आज्ञा गगन हैं यही विचारो काम ॥ १० ॥ एकादश के नाम यह, आगम भव अरु आय । विद्या गुण सम्पत्कला लाभ कहो समुझाय ॥ ११ ॥ अन्त रिष्फ द्वादश भवन, कहैं महीधर नाम । हानि दान बन्धन हरन, याके हैं यह काम ॥ १२ ॥

इति श्रीमहीधरविरचितायां बृहज्जातकभाषाटीकायां
राशिभेदाध्यायः प्रथमः ॥ १ ॥

अथ ग्रहभेदाध्यायः २.

शार्दूलविक्रीडितम् ।

कालात्मा दिनकृन्मनस्तुहिनगुस्सत्त्वं कुजो ज्ञो वचो
जीवो ज्ञानसुखे सितश्च मदनो दुःखन्दिनेशात्मजः ॥
राजानौ रविशीतगू क्षितिसुतो नेता कुमारो बुधः
सूरिर्दानवपूजितश्च सचिवौ प्रेष्यस्सहस्रांशुजः ॥ १ ॥

टीका-(कालात्मा)समय रूपी पुरुष के अङ्ग विभाग राशियोंके पहिले कहे गये हैं अब ग्रह स्थानका वर्णन किया जाता है । सूर्यतो शरी

है चन्द्रमा मन, मंगल सत्त्व, बुध वाणी, बृहस्पति ज्ञान और सुख, शुक्र कामदेव, शनि दुःख, जो ग्रह बलवान् है उस्का अंग पुष्ट और निर्बलका निर्बल । मंगल नेता अर्थात् सेनापति, बुध युवराज, बृहस्पति शुक्र मन्त्री हैं और शनि दूत, जो ग्रह फल देनेवाले हैं वह वैसेही अधिकारी के द्वारा फल देते हैं ॥ १ ॥

शालिनी ।

हेलिस्सूर्य्यश्चन्द्रमाश्शीतरश्मिर्हेम्नो विज्ज्ञो बोधनश्चेन्दुपुत्रः ।
आरो वक्रः क्रूरदृक्चावनेयः कोणो मन्दः सूर्यपुत्रोऽसितश्च॥२॥

टीका–ग्रहों के नाम । सूर्य का नाम हेलि, चन्द्रमा का शीतरश्मि; बुध का हेमन, वित्, ज्ञ, बोधन, चन्द्रपुत्र ५; मंगलका आर, वक्र, क्रूरदृक्, आवनेय ४; शनिका मन्द, कोण, सूर्यपुत्र, असित ४; नाम हैं ॥ २ ॥

वसंततिलका ।

जीवोङ्गिराः सुरगुरुर्वचसांपतीज्यः
शुक्रो भृगुर्भृगुसुतः सित आस्फुजिच्च ।
राहुस्तमोगुरसुरश्च शिखी च केतुः
पर्यायमन्यमुपलभ्य वदेच्च लोकात् ॥ ३ ॥

टीका–बृहस्पति के नाम । जीव अङ्गिरा, सुरगुरु, वाचस्पति, ईज्य ५; शुक्र का भृगु, भृगुसुत, सित, आस्फुजित् ४; राहु का तम, अगु, असुर ३; केतु का शिखी, सूर्यादि ९ ग्रहोंके नाम अनेक हैं ग्रन्थ बढने के कारण यहां सूक्ष्म लिखे गये हैं अन्य ग्रन्थ कोष एवं जातकादि से जानने ॥ ३ ॥

शालिनी ।

रक्तश्यामो भास्करो गौर इन्दुर्नात्युच्चांगो रक्तगौरश्च वक्रः ।
दूर्वाश्यामो ज्ञो गुरुर्गौरगात्रः श्यामः शुक्रो भास्करिः कृष्णदेहः॥

टीका—ग्रहों के रङ्ग, रक्त और श्याम अर्थात् पाटलीपुष्प के समान सूर्य, चन्द्रमा गौर, मङ्गल छोटा शरीर और रक्त गौर अर्थात् कमलका—सा रङ्ग, बुध दूर्वादल का रङ्ग, बृहस्पति गौर, शुक्र न अति गोरा न अति काला, शनि कृष्णशरीर हैं जो ग्रह सबसे बलवान् हो उसीका सा रंग मनुष्य या वस्तु मात्रका होता है ॥ ४ ॥

शार्दूलविक्रीडितम् ।

वर्णास्ताम्रसितातिरक्तहरितव्यापीतचित्रासिता
वह्न्यम्ब्वग्निजकेशवेन्द्रशचिकाः सूर्यादिनाथाः क्रमात् ।
प्रागाद्या रविशुक्रलोहिततमःसौरेन्दुवित्सूरयः
क्षीणेन्द्वर्कमहीसुतार्कतनयाः पापा बुधस्तैर्युतः ॥ ५ ॥

टीका—प्रश्न में जन्म में वस्तु बतलाने के लिये वर्ण स्वामी कहे जाते हैं । जैसे ताम्र वर्ण का स्वामी सूर्य, श्वेत का चन्द्रमा, अतिरक्त का मंगल, हरित का स्वामी बुध, पीले का बृहस्पति, चित्र (अनेक रंगका) शुक्र, कृष्ण वस्तु का शनि । अब ग्रहों के स्वामी कहते हैं । सूर्य का स्वामी अग्नि, चन्द्रमा का अम्बु (जल), मंगल का कुमार (कार्त्तिकेय), बुधका विष्णु, बृहस्पति का इन्द्र, शुक्रकी शची (इन्द्राणी), शनि का ब्रह्मा । अब दिशाओं के स्वामी । पूर्व का स्वामी सूर्य, आग्नेय का शुक्र, दक्षिण का मंगल, नैर्ऋत्य का राहु, पश्चिम का शनि, वायव्य का चन्द्रमा, उत्तर का बुध, ईशान का बृहस्पति । ग्रहों की शुभ पाप संज्ञा—"क्षीणचन्द्रमा सूर्य्य

मंगल और शनि ये पापग्रह हैं और पूर्ण चंद्रमा, बुध, बृहस्पति और शुक्र ये शुभ ग्रह हैं पापयुक्त बुध पाप ही होता है ॥ ५ ॥

त्रोटकम् ।

बुधसूर्यसुतौ नपुंसकाख्यौ शशिशुक्रौ युवती नराश्च शेषाः ।
शिखिभूखपयोमरुद्गणानामधिपा भूमिसुतादयः क्रमेण ॥ ६ ॥

टीका—बुध शनि नपुंसक हैं, चन्द्रमा शुक्र स्त्री ग्रह हैं, शेष—सूर्य मङ्गल बृहस्पति पुरुष ग्रह हैं, जन्म और प्रश्न में बलवान ग्रह का रूप कहना अग्नि तत्त्व का स्वामी मङ्गल, भूमि तत्त्व का बुध, आकाश तत्त्व का बृहस्पति, जलतत्त्वका शुक्र, वायु तत्त्व का शनि ये तत्त्वोंके स्वामी हैं और इन ग्रहों के तत्त्व भी यही हैं ॥ ६ ॥

उपजातिः ।

विप्रादितः शुक्रगुरू कुजार्कौ शशी बुधश्चेत्यसितोंत्यजानाम् ।
चन्द्रार्कजीवा ज्ञसितौ कुजार्की यथाक्रमं सत्त्वरजस्तमांसि॥७॥

टीका—शुक्र बृहस्पति ब्राह्मणों के स्वामी, मंगल सूर्य क्षत्रियों के, चन्द्रमा वैश्योंके, बुध शूद्रोंके, शनि अन्त्यज(चाण्डालादि) का स्वामी, जन्म में प्रश्न में और चोर बतलाने में बलवान् ग्रह का वर्ण कहना, चन्द्र सूर्य बृहस्पति इन का सत्त्वगुण स्वभाव है, बुध शुक्र की राजस प्रकृति, मंगल शनि का तमोगुण है ॥ ७ ॥

अब ४ । ५ । ६ । ७ इन श्लोकों का प्रयोजन विस्तरपूर्वक चक्र में लिखता हूं ॥

ग्रहाः	सू०	चं०	मं०	बु०	बृ०	शु०	श०	रा०
रङ्ग	रक्त श्याम	गौर	रक्त गौर	दूर्वा श्याम	पीत	चित्र	कृष्ण	कृष्ण
वर्ण रङ्ग	ताम्र	श्वेत	अति रक्त	हरित	पीत	चित्र	कृष्ण	कृष्ण
देवता पति	अग्नि	जल	कुमार	विष्णु	इन्द्र	इन्द्राणी	ब्रह्मा	राक्षस
दिशा पति	पूर्व	वायव्य	दक्षिण	उत्तर	ईशान	आग्नेय	पश्चिम	नैर्ऋत्य
पाप शुभ	पाप	शुभक्षीणेपाप	पाप	शु. पाप यु. पाप	शुभ	शुभ	पाप	पाप
पु. स्त्री नपुं०	पुरुष	स्त्री	पुरुष	नपुंसक	पुरुष	स्त्री	नपुं०	[illegible]
महाभूतपति	अग्नि	जल	अग्नि	भूमि	आकाश	वायु	आकाश	[illegible]
वर्णाधीश	राजा	वैश्य	राजा	वैश्य	ब्राह्मण	ब्राह्म.	अंत्यज	अंत्यज राक्षस
सत्वादिगुण	सत्व	सत्व	तम	राजस	सत्व	राजस	तम	[illegible]

त्रोटकम् ।

मधुपिङ्गलदृक् चतुरस्रतनुः पित्तप्रकृतिः सविताल्पकचः ।
तनुवृत्ततनुर्बहुवातकफः प्राज्ञश्च शशी मृदुवाक् शुभदृक् ॥ ८ ॥

टीका—सूर्य्य का रूप—शहत समान रंग के नेत्र और चतुरस्र तनु अर्थात् चौखुंटा शरीर (दोनों हात लम्बे करके जितना हो उतनाही सिर से पैरों तक) पित्त स्वभाव और थोडे केश । चन्द्रमा का रूप दुर्बल और गोल सब अङ्ग, वात कफ प्रकृति, बुद्धिमान्, मधुर वाणी, सुन्दर नेत्र ॥ ८ ॥

स्वागता ।

क्रूरदृक् तरुणमूर्तिरुदारः पैत्तिकः सुचपलः कृशमध्यः ।
श्लिष्टवाक् सततहास्यरुचिर्ज्ञः पित्तमारुतकफप्रकृतिश्च ॥ ९ ॥

टीका—मङ्गल का रूप—क्रूरदृक् नित्य युवावस्था, उदारता, पित्त स्वभाव, अति चपल, पतली कमर वाला । बुध का—सुन्दर गद्गद वाणी वारंवार हँसने वाला ठट्ठा करने वाला मसखरा वात पित्त कफ तीनों स्वभाव ॥ ९ ॥

वंशस्थम् ।

बृहत्तनुः पिङ्गलमूर्द्धजेक्षणो बृहस्पतिः श्रेष्ठमतिः कफात्मकः ।
भृगुः सुखी कान्तवपुः सुलोचनः कफानिलात्माऽसितवक्रमूर्द्धजः १०

टीका—बृहस्पति का रूप—बडा लम्बा शरीर, शिरके केश और नेत्र भूरे, श्रेष्ठ बुद्धि कफ स्वभाव । शुक्र-सुखी, सुन्दर रमणीय शरीर, सुन्दर नेत्र वायु कफ प्रकृति शिर के बाल काले मुरेहुये ॥ १० ॥

वसंततिलका ।

मन्दोऽलसः कपिलदृक् कृशदीर्घगात्रः
स्थूलद्विजः परुषरोमकचोऽनिलात्मा ।
स्नाय्वस्थ्यसृक्त्वगथ शुक्रवसा च मज्जा
मन्दार्कचन्द्रबुधशुक्रसुरेज्यभौमाः ॥ ११ ॥

टीका—शनि का रूप—आलसी, कपिलनेत्र, पतला और उँचा शरीर, नख और दांत मोटे रूखे केश, वायु स्वभाव । अब इनके धातु कहते हैं—शनिका

नस (नसी), सूर्य का हड्डी, चन्द्रमा का रुधिर, बुध का त्वचा, शुक्र का वीर्य्य, बृहस्पति का मेदा, मंगल का मज्जा सार है ॥ ११ ॥

शार्दूलविक्रीडितम् ।

देवाम्ब्वग्निविहारकोशशयनक्षित्युत्करेशाः क्रमात्
वस्त्रं स्थूलमभुक्तमाग्निकहतं मध्यं दृढं स्फाटितम् ।
ताम्रं स्यान्मणिहेमयुक्तिरजतान्यर्काच्च मुक्तायसी
द्रेष्काणैः शिशिरादयः शशुरुचज्ञाग्वाङ्दिपूद्यत्सु वा १२॥

टीका—अब इनके स्थान कहते हैं—सूर्य का देव स्थान, चन्द्रमाका जल स्थान, मंगल का अग्नि स्थान, बुध का क्रीडा स्थान, बृहस्पति का भण्डार स्थान, शुक्र का शयन स्थान, शनि का ऊषर स्थान । अब इनके वस्त्र कहते हैं—सूर्य का मोटा, चन्द्रमा का नवीन, मंगल का एक कोना [दग्ध] जरा हूआ, बुध का जल से निचोडा, बृहस्पति का न अति नया और न अति पुराना, शुक्र का मजबूत, शनी का जीर्ण । अब इनकी धातु कहते हैं—सूर्य का तांबा, चन्द्रमाका मणि, मंगल का सुवर्ण, बुधका कांशी, गुरु का चांदी, शुक्र का मोती, शनि का लोहा । अब इन के ऋतु कहते हैं—शनिकी शिशिर, शुक्र की वसन्त, मंगल की ग्रीष्म, चन्द्रमा की वर्षा, बुध की शरद, गुरु की हेमन्त, सूर्यकी ग्रीष्म । यह विचार नष्टजातक और चौरविचार में काम आता है, लग्न में जो ग्रह हो उसके द्रेष्काणपति की ऋतु कहते हैं—लग्न में बहुत ग्रह हों तो जो उन में बलवान् हो । जब लग्न में कोई ग्रह न हो तो लग्न में जिसका द्रेष्काण है उसकी ऋतु जानना॥ १२॥

प्रहर्षिणी ।

त्रिदशत्रिकोणचतुरस्रसप्तमान्यवलोकयन्ति चरणाभिवृद्धितः ।
रविजामरेज्यरुधिरापरे च ये क्रमशो भवन्ति किल वीक्षणेऽधिकाः॥

टीका-ग्रह दृष्टि-जिस भाव में ग्रह बैठा है उससे (त्रि) ३ (दश) १० इन स्थानों में (पाद) चौथाई दृष्टि, त्रिकोण ९।५ इन में आधी दृष्टि, चतुरस्र ४।८ इन में ३ भाग दृष्टि, सप्तम में पूर्ण दृष्टि, सभी ग्रह देखते हैं, कोई ऐसा अर्थ कहते हैं कि रविज (शनि) दृष्टि फल, (पाद) चौथाई देता है, अमरेज्य (बृहस्पति) आधा फल, रुधिर (मंगल) तीन भाग फल, अपरे (और ग्रह) चं०बु०शु० सूर्य ये पूर्ण फल दृष्टि का देते हैं और बहुसम्मत यह अर्थ है कि शनि ३।१० भाव में दृष्टि का पूर्ण फल देता है और बृहस्पति ९।५ भाव में, मंगल ४।८ भाव में और ग्रह चं० बु० शु० सू० ये सप्तमभाव में दृष्टि का पूर्ण फल देते हैं ॥ १३ ॥

ग्रहाणां स्थानादिचक्रम्।

	सू०	चं०	मं०	बु०	बृ०	शु०	श०
ग्रहस्थान	देवालय	जलाशय	अग्निस्थान	क्रीडाभूमि	भण्डार	शयन	खान
वस्त्र	मोटा	नया	दग्ध	जलहत	अदृढ	दृढ	स्फाटित
धातु	ताम्र	मणि	सुवर्ण	रौप्य कांस्य	सुवर्ण	मोती	लोह शीश
ऋतु	ग्रीष्म	वर्षा	ग्रीष्म	शरद्	हेमन्त	वसंत	शिशिर
निसर्गदृष्टि	७	७	४।८	७	५।९	७	३।१०
रस	कटु	लवण	तीता	मिश्र	मीठा	खट्टा	क्वाथ

अयनक्षणवासरर्तवो मासार्द्धश्च समाश्च भास्करात्।
कटुकलवणतिक्तमिश्रिता मधुराम्लौ च कषाय इत्यपि ॥ १४ ॥

टीका-सूर्य से अयन-उत्तरायण, दक्षिणायन, चन्द्रमा से मुहूर्त, मङ्गल-से दिन, बुध से ऋतु, बृहस्पति से महीना, शुक्रसे पक्ष, शनि से वर्ष, कहते हैं, चौरप्रश्न, यात्रा, युद्ध, लाभ, गर्भाधान, कार्यसिद्धि, प्रवासी का आगम

निर्गम इतने कामों में यह विचार है जैसा लग्न में जो नवांश है उसका स्वामी उस नवांश से जितने नवांश पर स्थित है उतने संख्यक अयनादि काल ग्रह वश से उस कार्य को कहना बुद्धिमान् इतनेही के विचारसे नष्ट जन्म पत्री बना लेते हैं। अब ग्रहों के रस कहते हैं। सूर्य का कडुवा, चन्द्रमा का लवण (सलोना) मंगल का तीता, बुध का मिलाव, बृहस्पति का मीठा शुक्र का अम्ल, (काञ्जिक आदिक, शनि का कषाय, (कसैला)१४

शार्दूलविक्रीडितम् ।

जीवो जीवबुधौ सितेन्दुतनयौ व्यर्का विभौमाः क्रमात्
वीन्द्वर्का विकुजेन्द्वश्च सुहृदः केषाञ्चिदेवं मतम् ।
सत्योक्ते सुहृदस्त्रिकोणभवनात्स्वात्स्वान्त्यधीधर्मपा-
स्स्वोच्चायुःसुखपाः स्वलक्षणविधेर्नान्यैर्विरोधादिति ॥१५॥

टीका-सूर्यादिकों के मित्र शत्रु नैसर्गिक-सूर्यके बृहस्पति मित्र, चन्द्रमा के बृहस्पति, बुध, मंगल के शुक्र, बुध, बुध के सूर्य विना सब ग्रह मित्र, बृहस्पतिके विना मंगलके सब ग्रह मित्र, शुक्र के विना सूर्य चन्द्रमाके सब ग्रह मित्र, शनि के चन्द्र भौम विना सब ग्रह मित्र हैं, यह मत किसी का है। सत्याचार्य के मत से सभी ग्रहों के अपने २ मूल त्रिकोण जो पहिले कहे हैं उन से दूसरे बारहवें पांचवें नवें आठवें चौथे राशि के और अपनी उच्च राशि के स्वामी मित्र होते हैं और सब शत्रु हैं। जैसे मंगल का मेष मूलत्रिकोण है इससे चौथे का स्वामी चन्द्रमा, पांचवें का सूर्य, नवीं बारहवीं का स्वामी बृहस्पति ये मित्र हुये मेष से ३। ६ राशि का पति बुध अनुक्तसे शत्रु, मेष से २। ७ का शुक इन में २ उक्त ७ अनुक्त होने से शुक्र सम मेष से१०। ११ अनुक्त हैं इन में १० उच्च होने से उक्त हुवा ११ अनुक्त रहा उक्तानुक्त होने से शनि सम, जहां दो प्रकार उक्त सो मित्र २ प्रकार अनुक्त शत्रु उक्त अनुक्त सो सम, इसी प्रकार सब ग्रहोंका जानो यह अर्थ स्वलक्षणविधि इस पद का है॥ १५॥

शार्दूलविक्रीडितम्।

शत्रू मन्दसितौ समश्च शशिजो मित्राणि शेषा रवे-
स्तीक्ष्णांशुर्हिमरश्मिजश्च सुहृदौ शेषाः समाः शीतगोः।
जीवेन्दूष्णकराः कुजस्य सुहृदो ज्ञोऽरिः सितार्की समौ
मित्रे सूर्यसितौ बुधस्य हिमगुः शत्रुस्समाश्चापरे॥ १६॥

टीका—अब मुख्यतासे मित्र सम शत्रु कहते हैं—सूर्य्य के शनि शुक्र शत्रु, बुध सम, चं० मं० बृ० मित्र चंद्रमाके सूर्य्य, बुध मित्र, और मं० बृ० श० सम, शत्रु कोई नहीं। मंगल के बृहस्पति चन्द्रमा सूर्य मित्र, बुध शत्रु, शुक्र शनि सम। बुधके सूर्य शुक्र मित्र, चन्द्र शत्रु, मं० बृ० श० सम॥ १६॥

शार्दूलविक्रीडितम्।

सूरेस्सौम्यसितावरी रविसुतो मध्योऽपरे त्वन्यथा
सौम्यार्की सुहृदौ समौ कुजगुरू शुक्रस्य शेषावरी।
शुक्रज्ञौ सुहृदौ समस्सुरगुरुस्सौरस्य चान्येऽरयो
ये प्रोक्ताः स्वत्रिकोणभादिषु पुनस्तेऽमी मया कीर्तिताः १७

टीका—बृहस्पति के बुध शुक्र शत्रु, शनि सम, सू० चं० मं० मित्र, शुक्र के बुध शनि मित्र, मङ्गल बृहस्पति सम, सूर्य चन्द्र मङ्गल शत्रु; शनि के शुक्र बुध मित्र, बृहस्पति सम, सूर्य चन्द्र मङ्गल शत्रु; ये दो श्लोक पुनः उदाहरण के निमित्त कहे गये हैं मूल प्रयोजन वही है जो पहिले "त्रिकोणभवनात्स्वात्स्वांत्यधीधर्मपाः" कहे हैं॥ १७॥

शार्दूलविक्रीडितम्।

अन्योन्यस्य धनव्ययायसहजव्यापारबन्धुस्थिता-
स्तत्काले सुहृदः स्वतुंगभवनेऽप्येकेऽरयस्त्वन्यथा।
द्व्येकानुक्तभपान्सुहृत्समारिपून्सञ्चिन्त्य नैसर्गिकां-
स्तत्काले च पुनस्तु तानधिसुहृन्मित्रादिभिः कल्पयेत॥१८॥

टीका-जन्मादि समय में एक ग्रह से दूसरा ग्रह दूसरे बारहवें ग्यारहवें तीसरे दशवें चौथे स्थानों में हो तो वे आपस में मित्र होते हैं और जो ग्रह जिस्के उच्चराशि में बैठा है वह उस्का तत्काल मित्र होता है यह भी किसीका मत है और सब शत्रु होते हैं मैत्री एवं तत्कालमैत्री में जो दोनों जगे मित्र हैं वह अधिमित्र हुवा ॥ १८ ॥

दोधकम् ।

स्वोच्चसुहृत्स्वत्रिकोणनवांशैः स्थानबलं स्वगृहोपगतैश्च ।
दिक्षु बुधाङ्गिरसौ रविभौमौ सूर्यसुतः सितशीतकरौ च ॥ १९ ॥

टीका-ग्रहबल-अपने उच्च में तत्काल मित्र घर में अपने मूलत्रिकोणमें वा अपने नवांशक में अपनी राशि में जो ग्रह स्थित है वह स्थानबली कहलाता है । अब दिग्बल कहते हैं-(दिक्षु) लग्नादि ४ दिशा केन्द्रों में जैसे लग्न में बुध बृहस्पति, चौथे शुक्र चन्द्रमा, सप्तम शनि, दशम सूर्य मङ्गल बली होते हैं; उक्त स्थानों से सातवीं जगे हीनबली बीच में अनुपात करते हैं इस प्रकार दिग्बल होता है ॥ १९ ॥

दोधकम् ।

उदगयने रविशीतमयूखौ वक्रसमागमगाः परिशेषाः ।
विपुलकरा युधि चोत्तरसंस्थाश्चेष्टितवीर्ययुताः परिकल्प्याः ॥२०॥

टीका-चेष्टाबल-उत्तरायण १० । ११ । १२ । १ । २ । ३ । राशियों के सूर्यमें सूर्य चन्द्रमा चेष्टाबली होते हैं और भौमादि ग्रह (वक्रसमागमगाः) समागम चन्द्रमा के साथ होने से तथा वक्रगति में चेष्टाबल पाते हैं अथवा अन्योन्य युद्ध में जो जीतै वह चेष्टाबल पाता है युद्ध में जीत के लक्षण यह हैं कि जो ग्रह युद्ध करके उत्तर शर होवै और विपुलकर अर्थात् कान्ति तेज होवे यद्वा शीघ्रकेन्द्रके द्वितीय तृतीय पद में होवै क्योंकि वह वक्रहोने के समीप रहता है वह बलवान् होता है जो ग्रह हारता है वह दक्षिण शर और कम्पायमान माडा विकराल कान्तिरहित विरूप रहता है

वह चेष्टाबल नहीं पाता और यह भी स्मरण चाहिये कि शुक्र हार के दक्षिण सर में भी कान्तिमान ही रहता है ॥ २० ॥

मालिनी ।

निशि शशिकुजसौराः सर्वदा ज्ञोऽह्नि चान्ये
बहुलसितगताः स्युः क्रूरसौम्याः क्रमेण ।
अयनदिवसहोरा मासपैः कालवीर्यं
शरुबुगुशुचराद्या वृद्धितो वीर्यवन्तः ॥ २१ ॥

इत्यावन्तिकाचार्य्यवराहमिहिरविरचिते बृहज्जातके ग्रहभेदाध्यायो द्वितीयः ॥ २ ॥

टीका—कालबल कहते हैं—चन्द्रमा मंगल शनि रात्रि में और रवि बृहस्पति शुक्र ये दिन में और बुध दिनरात दोनो में बल पाता है । तथा पापग्रह सूर्य० मं० श० कृष्ण पक्ष में शुभग्रह चं० बु० बृ० शु० शुक्ल पक्ष में बल पाते हैं । जिस ग्रह का जो वर्ष है वैसाही अपने २ वार काल होरा, मास, में सभी बल पाते हैं। अब नैसर्गिक बल कहते हैं—शनि से उलटे क्रम से उत्तरोत्तर सभी बली हैं जैसे शनि से अधिक बली मंगल, मंगलसे बुध, बुधसे बृहस्पति, इससे शुक्र, शुक्रसे चन्द्रमा, चंद्रमासे (रवि) सूर्य, क्रम से बल पाते हैं यह नैसर्गिक बल है ये षड्वर्ग केशवीप्रभृति ग्रन्थों में गणित क्रमपूर्वक कठिन हैं यहां अति सुगम रीति से कहे गये हैं बुद्धि का श्रममात्र चाहिये ॥ २१ ॥

इति श्रीमहीधरकृतायां बृहज्जातकभाषाटीकायां ग्रहभेदाध्यायो द्वितीयः ॥ २ ॥

वियोनिजन्माध्यायः ३.

वसंततिलका ।

क्रूरग्रहैः सुबलिभिर्विबलैश्च सौम्यैः क्लीबे चतुष्टयगते तदवेक्षणाद्वा ।
चन्द्रोपगद्विरसभागसमानरूपं सत्त्वं वदेद्यदि भवेत्स वियोनिसंज्ञः

टीका–प्रश्न वा जन्म समयमें जिस द्वादशांश में चन्द्रमा होवै उसके समान वियोनि का जन्म बतलाना वियोनि कीट पक्षी स्थावर वृक्षादियोंको कहते हैं। जैसे मेष द्वादशांश में–चन्द्रमा हो तो बकरा भेडी मेंढा का जन्म कहना। वृषद्वादशांश में गौ बैल भैंसाका जन्म, कर्क में कछवाआदि, सिंह में सिंह मृग कुत्ता बिल्ली आदि, वृश्चिक में सर्प बिच्छू आदि, धन उत्तरार्द्ध में मेडक छिपकली आदि मीनमें मत्स्यादि, इतना विचार चन्द्रद्वादशांशका तब चाहिये जब कुण्डली में वियोनि योग देख पडें वह योग यह है पाप ग्रह बलवान् होवै और शुभग्रह निर्बल होवै (शनि बुध) नपुंसक ग्रह केन्द्र में होवै यह एक योग है चन्द्रमा क्रूर द्वादशांश में होवै शुभग्रह निर्बल होवै बुध शनि लग्न चन्द्रमा को देखैं यह दूसरा योग है। इन योगों के अभावमें चन्द्रमा किसी द्वादशांश में हो मनुष्य का ही जन्म कहना॥ १ ॥

वैतालीयम् ।

पापा बलिनः स्वभागगाः पारक्ये विबलाश्च शोभनाः ।
लग्नं च वियोनिसंज्ञकं दृष्ट्वा वापि वियोनिमादिशेत् ॥ २ ॥

टीका–पापग्रह बलवान् अपने नवांश में होवैं शुभ ग्रह हीनबली पर नवांशमें होवैं और लग्न वियोनिसंज्ञक मेष वृषादि पूर्वोक्त होवै तो वियोनि-जन्म चन्द्रद्वादशांश के समान कहना यह तीसरा योग है ॥ २ ॥

उपजातिः ।

क्रियः शिरो वक्त्रगलो वृषोऽन्ये पादांशकम्पृष्ठमुरोऽथ पार्श्वे ।
कुक्षिस्त्वपानांघ्र्यथ मेढ्रमुष्कौ स्फिक्पुच्छमित्याह चतुष्पदाङ्गे ३

टीका–जैसा पहिले कालाङ्ग राशिविभाग मनुष्य के शरीर में कहा है

वैसा ही पशु के शरीर में भी राशि विभाग कहते हैं—पशु, चौपया उपल-क्षण मात्र हैं तिर्य्यगादि सभी के जानने चाहिये पक्षियोंके अग्रपाद के स्थान में पक्षपाली पंख निकलनेके स्थान जो बाहु सरीखों में वे गिने जाते हैं अङ्ग-विभाग मेष शिर, वृष मुख व कण्ठ, मिथुन अगले पैर व कन्धा, कर्क पीठ, सिंह चूतड व छाती, कन्या कुक्षि, तुला पुच्छमूल, वृश्चिक गुदा, धन पिछले पैर, मकर लिंग वृषण, कुम्भ स्फिज पेट दोनों तर्फ, मीन पुच्छ ॥ ३ ॥

वैश्वदेवी ।

लग्नांशकाद्ग्रहयोगेक्षणाद्वा वर्णान् वदेद्बलयुक्ताद्वियोनौ ।
दृष्ट्या समानां प्रवदेत् स्वसंख्यया रेखां वदेत् स्मरसंस्थैश्च पृष्ठे ४॥

टीका—लग्न में जो ग्रह हो उसका वर्ण ताम्रसितातिरिक्तेत्यादि वियोनि जीव का वा नष्टादि वस्तु का रंग कहना । जो लग्न में ग्रह न हो तो जो ग्रह लग्न को पूर्ण देखै उसका वर्ण कहना, जब लग्न किसी से युक्त दृष्ट न हो तौ लग्न में जो नवांश है उसका रङ्ग, जब लग्न में बहुत ग्रह हों तो बहुत ही रङ्ग कहना उन्में जो बलवान् है उसका रङ्ग अधिक कहना, स्वस्वामियुक्त दृष्ट राशि का नवांश लग्न में हो तो सब को छोडकर उसी का रङ्ग कहना, लग्न में सप्तम स्थान में बलवान् ग्रह हो तो वियोनि जीवके पीठ पर रेखादि चिह्न कहना यहां ग्रहों के रङ्ग बृ० पीला, चं०शु० विचित्र, सू० मं० रक्त, श० कृष्ण, बु० हरा इस प्रकार जानना ॥ ४ ॥

वंशस्थम् ।

खगे दृकाणे बलसंयुतेन वा ग्रहेण युक्ते चरभांशकोदये ।
बुधांशके वा विहगाः स्थलाम्बुजाः शनैश्चरेन्द्वीक्षणयोगसम्भवाः५॥

टीका—पक्षीद्रेष्काण लग्न में होवै तो पक्षी का जन्म कहना यहां भी दो भेद हैं उस द्रेष्काण पर शनि की दृष्टि वा उसी पर स्थित होवै तो स्थल-चारी पक्षी और चन्द्रमा युत वा दृष्ट होवै तो जलचारी पक्षी कहना पक्षी द्रेष्काण मिथुन का दूसरा द्रेष्काण सिंह का प्रथम तुला का दूसरा, कुम्भ

का प्रथम यह है अन्ययोग (चरभांशकोदये) लग्न में चरनवांश हो बलवान् ग्रह से युक्त दृष्ट हो शनि से युक्तदृष्ट हो तो स्थलजलपक्षी और बुध का नवांश लग्न में हो बली ग्रह और शनि ये युत दृष्ट हो तो स्थलपक्षी चन्द्रमा से युक्त दृष्ट हो तो जलपक्षी ॥ ५ ॥

वसन्ततिलका ।

होरेन्दुसूरिरविभिर्विबलैस्तरूणां तोये स्थले तरुभवोंशकृतः प्रभेदः ।
लग्नाद्ग्रहः स्थलजलर्क्षपतिस्तुयावांस्तावन्तएवतरवःस्थलतोयजाताः

टीका—लग्न चन्द्रमा बृहस्पति सूर्य निर्बल हों तो प्रश्न में वृक्ष जन्म कहना, राश्यंशक जलराशि हो तो जलजवृक्ष स्थलराशि हो तो स्थलजवृक्ष कहना और लग्नांश स्थलजलचारी जैसा हो उसका स्वामी लग्न से जितने स्थान में हो उतनी ही संख्या वृक्षों की कहते हैं विशेष यह है कि उच्च वक्र स्वगृह ग्रह से तिगुनी अपने अंशक में द्विगुणी वृक्षसंख्या कहनी ॥ ६ ॥

मंदाक्रांता ।

अन्तस्सारान् जनयति रविर्दुर्भगान् सूर्यसूनुः
क्षीरोपेतांस्तुहिनकिरणः कण्टकाढ्यांश्च भौमः ।
वागीशज्ञौ सफलविफलान् पुष्पवृक्षांश्च शुक्रः
स्निग्धानिन्दुः कटुकविटपान् भूमिपुत्रश्च भूयः॥ ७ ॥

टीका—लग्नांशकापति सूर्य हो तो (अन्तस्सार भीतर की लकड़ी पुष्ट अर्थात् शिंशपा (शीशम) आदि वृक्ष कहना शनि हो तो (दुर्भगान्)देखनेमें बुरे कुश आदि चन्द्रमा क्षीरयुक्त ईख आदि, भौम कण्टक वृक्ष खैर आदि बृहस्पति सफल आम आदि बुध विफल जो केवल पुष्पमात्र देते हैं शुक्र पुष्पवृक्ष जात्यादि और चन्द्रमा मलाईदार चीड़ देवदारु आदि भी जनता है मङ्गल कटुक भिलावा नीम आदि ॥ ७ ॥

वंशस्थम्।

शुभोऽशुभर्क्षे रुचिरं कुभूमिजं करोति वृक्षं विपरीतमन्यथा।
परांशके यावति विच्युतस्स्वकाद्भवन्ति तुल्यास्तरवस्तथाविधाः ८

इति बृहज्जातकेऽध्यायस्तृतीयः ॥ ३ ॥

टीका–शुभग्रह अशुभ राशि में पूर्वोक्त अंशेश हो तो रमणीय वृक्ष दुष्ट भूमि में उत्पन्न होवै, जो पापग्रह शुभराशिनवांश में होवै तो अशोभनवृक्ष सुन्दर भूमिमें होवै, शुभ से शुभ अशुभ से अशुभ वृक्ष तथा भूमि कहना वह ग्रह अपने अंश से चल के जितने अंश पर गया हो उतने ही प्रकार (वृक्षजाति) कहते हैं ॥ ८ ॥

इति महीधरकृतबृहज्जातकभाषाटीकायां वियोनिजन्माध्याय-स्तृतीयः ॥ ३ ॥

निषेकाध्यायः ४.

वंशस्थम्।

कुजेन्दुहेतुः प्रतिमासमार्तवं गते तु पीडर्क्षमनुष्णदीधितौ।
अतोन्यथास्ते शुभपुंग्रहेक्षिते नरेण संयोगमुपैति कामिनी ॥ १ ॥

टीका–गर्भाधानाधिकार जो स्त्रियों का महीने २ आर्तव रजोदर्शन होवा है उस्के हेतु चन्द्रमा और मङ्गल हैं क्योंकि, मङ्गल रुधिरमय पित्त और चन्द्रमा जलमय है जिस रजोदर्शन में स्त्री की जन्मराशि से अनुपचय ३। ६। १०। ११ इन से रहित १। २। ४। ५। ७। ८। ९। १२ इन में चन्द्रमा हो और गोचर में मङ्गल की पूर्ण दृष्टि हो तो ऐसे समय का रज गर्भधारणयोग्य होता है चन्द्रमा उपचय राशिमें वा भौमदृष्टि रहित में रज निष्फल होता है इस समय में पुरुषका भी योग चाहिये

कि, पुरुष की जन्मराशि से चंद्रमा उपचय ३ । ६ । १० । ११ में होवै और बृहस्पति पूर्ण देखे ऐसे समय के स्त्री पुरुष संयोग में अवश्य गर्भधारण होता है इत्यादि विचार बाल वृद्ध रोगी नपुंसक पुरुष और बाँझ स्त्रीसे अन्य को है ॥ १ ॥

इन्द्रवज्रा ।

यथास्तराशिर्मिथुनं समेति तथैव वाच्यो मिथुनप्रयोगः ।
असद्ग्रहालोकितसंयुतेऽस्ते सरोष इष्टैस्सविलासहासः ॥ २ ॥

टीका–प्रश्न अथवा आधान लग्न से सप्तमभाव में जो राशि है उसी की नांई मैथुन हुआ कहना, जैसे सप्तम में मेष होवै तो बकरा की नांई मैथुन कहना ऐसे ही सभी का समझना चाहिये और सप्तम में पाप ग्रह हो वा पापदृष्ट हो तो सरोष गुस्से झगडे में या बलात्कार से मैथुन और शुभग्रह हों वा सप्तम में शुभदृष्टि हो तो विलास हास सुन्दर ठट्ठा खेल से प्रेमपूर्वक संयोग कहना ॥ २ ॥

वंशस्थम् ।

रवीन्दुशुक्रावनिजैः स्वभागगैर्गुरौ त्रिकोणोदयसंस्थितेऽपि वा ।
भवत्यपत्यं हि विबीजिनामिमे करा हिमांशोर्विदृशामिवाफलाः॥ ३॥

टीका–आधान वा प्रश्नकाल में सूर्य चंद्रमा शुक्र मङ्गल अपने अपने नवांशकों में हों तो अवश्य गर्भ रहा है कहना, अथवा ये सब ऐसे नहीं तौ भी पुरुष के उपचय में सूर्य शुक्र अपने नवांश में हों तौ गर्भसम्भव कहना अथवा स्त्री के उपचय में मङ्गल चन्द्रमा अपने अपने नवांश में हों तौ भी गर्भ सम्भव कहना, अथवा बृहस्पति लग्न नवम पञ्चम में हो तौ भी गर्भसम्भव कहना और जो नपुंसक है उस को ये सब योग निष्फल हैं जैसे चंद्रमा के सुन्दर अमृतमय किरणों की शोभा अन्धे को विफल है इतने सभी योग सम्बन्ध विचार के जो पुरुष ऋतुसमय में स्त्री गमन करते हैं उनका अवश्य गर्भ रहता है ॥ ३ ॥

वंशस्थम् ।

दिवाकरेन्द्वोः स्मरगौ कुजार्कजौ गदप्रदौ पुङ्गलयोषितोस्तदा ।
व्ययस्वगौ मृत्युकरौ युतौ तथा तदेकदृष्टया मरणाय कल्पितौ॥४॥

टीका—आधान वा प्रश्न लग्न में सूर्य से सप्तमस्थान में मङ्गल शनि हों तो अपने महीने में ग्रह, पुरुष को कष्ट देता है, चन्द्रमा से सप्तम श० मं० हों तो उसी प्रकार स्त्री को कष्ट देता है और सूर्य से दूसरे बारहवें शनि मङ्गल हों तो पुरुष को अपने उक्त महीने में मृत्यु देता है, ऐसे ही चन्द्रमा २ । १२ भावमें शनि मङ्गल हों तो स्त्री को मृत्यु देते हैं ऐसे ही सूर्य मं० श० में से एक से युक्त एक से दृष्ट हो तो पुरुष को मृत्यु चन्द्रमा मं० श० में से एकसे युक्त एकसे दृष्ट हो तो स्त्री को मरण देते हैं महीनों की गिनती आगे कहेंगे ॥ ४ ॥

वंशस्थम् ।

दिवार्कशुक्रौ पितृमातृसंज्ञितौ शनैश्चरेन्दू निशि तद्विपर्ययात् ।
पितृव्यमातृष्वसृसंज्ञितौ च तावथौजयुग्मर्क्षगतौ तयोः शुभौ ॥५॥

टीका—दिन के आधान में सूर्य पिता, शनि ताऊ चाचा, शुक्र माता, चन्द्रमा मातृष्वसृ (माकी बहिन) और रात के आधान में शनि पिता सूर्य ताऊ चाचा चन्द्रमा माता शुक्र माकी बहिन ये संज्ञा इस कारण से हैं कि दिन के आधान में सूर्य विषम राशिमें पिताको शुभ रात्रिके आधान में पितृव्य को शुभ सम राशि में हो तो दिन के गर्भमें माता को शुभ, रात के गर्भ में मां की बहिन को शुभ और श० विषम राशि में रात के गर्भ में पिता को शुभ दिन के में (पितृव्य) ताऊ चाचा को शुभ, चन्द्रमा, समराशि में रात के में माता को शुभ, दिन के में मां की बहिन को शुभ, शुक्र दिन के गर्भ में समराशि में माता को शुभ रात के में मां की बहिन को, इत्यादि उक्त राशि व दिन रात के विपरीत होने में शुभाशुभ फल भी उलटा कहना ॥ ५ ॥

जगतीभेद ।

अभिलषद्भिरुदयर्क्षमसद्भिर्मरणमेति शुभदृष्टिमयाते ।
उदयराशिसहिते च यमे स्त्री विगलितोडुपतिभूसुतदृष्टे ॥ ६ ॥

टीका—लग्न राशि में पापग्रह आने वाला हो और लग्न को कोई शुभग्रह न देखे तो स्त्री गर्भिणी मृत्यु पाती है, दूसरा योग यह है कि शनि लग्न में हो मङ्गल और क्षीण चन्द्रमा पूर्ण देखें तो गर्भिणी मृत्यु पावै ॥६॥

वैतालीयम् ।

पापद्वयमध्यसंस्थितौ लग्नेन्दू न च सौम्यवीक्षितौ ।
युगपत्पृथगेव वा वदेन्नारी गर्भयुता विपद्यते ॥ ७ ॥

टीका—लग्न और चन्द्रमा दोनों अथवा एक भी राशियों से वा अंशोसे पापग्रहों के बीच हों और शुभ ग्रह न देखें तो गर्भिणी स्त्री और उसका गर्भ एकही वार अथवा अलग अलग नाश पावें॥ ७ ॥

वैतालीयम् ।

क्रूरैः शशिनश्चतुर्थगैर्लग्नाद्वा निधनाश्रिते कुजे ।
बन्ध्वन्तगयोः कुजार्कयोः क्षीणेन्दौ निधनाय पूर्ववत् ॥ ८ ॥

टीका—पापग्रह चन्द्रमा से चतुर्थ हो और अष्टम स्थान में मङ्गल हो एक योग अथवा लग्नसे चौथे पापग्रह और अष्टम मङ्गल दूसरा योग अथवा लग्न से चौथा मङ्गल बारहवां सूर्य और चन्द्रमा क्षीण हो यह तीसरा योग । इन तीनों का वही पहिलेवाला फल सगर्भा स्त्री का नाशक है ॥ ८ ॥

वैतालीयम् ।

उदयास्तगयोः कुजार्कयोर्निधनं शस्त्रकृतं वदेत्तदा ।
मासाधिपतौ निपीडिते तत्काले स्रवणं समादिशेत् ॥ ९ ॥

टीका—लग्नमें मङ्गल सप्तम स्थान में सूर्य होवै तो शस्त्र से गर्भिणी का मरण होवै और मासाधिपति ग्रह निपीडित होतो उस महीने में गर्भस्राव होवै ग्रह युद्ध में पराजित ग्रह और केतु से धूमित ग्रह और उल्कापात

वाला ग्रह और सूर्य चन्द्रमा पापयुक्त अथवा ग्रहण से युक्त इतने लक्षण पीडित के हैं ॥ ९ ॥

वंशस्थम् ।

शशांकलग्नोपगतैः शुभग्रहैस्त्रिकोणजायार्थसुखास्पदस्थितैः ।
तृतीयलाभर्क्षगतैश्च पापकैः सुखी च गर्भो रविणा निरीक्षितः १०॥

टीका—चन्द्रमा के साथ अथवा लग्न में शुभग्रह हों अथवा लग्न चन्द्र शुभयुक्त हो अथवा त्रिकोण ९ । ५ जाया ७ अर्थ २ सुख४ आस्पद १० इन स्थानों में चन्द्रमा से वा लग्न से शुभग्रह हों और लग्न चन्द्रमा से पापग्रह तृतीय ३ लाभ ११ स्थान में हों और लग्न को अथवा चन्द्रमा को सूर्य देखे तो गर्भ पुष्ट और सुखी होता है, कोई सूर्य के स्थान में (गुरुणा) ऐसा पाठ करिकै बृहस्पति की दृष्टि कहते हैं सो अयुक्त है जिसलिये आदिके ग्रंथोंमेंभी "सारावलीमें" निरीक्षितो रविणा ऐसे ही पाठ है ॥ १० ॥

शार्दूलविक्रीडितम् ।

ओजर्क्षे पुरुषांशके सुबलिभिर्लग्नार्कगुर्विन्दुभिः
पुंजन्म प्रवदेत्समांशकगतैर्युग्मेषु वा योषितः ।
गुर्वर्कौ विषमे नरं शशिसितौ वक्रश्च युग्मे स्त्रियं
द्व्यङ्गस्था बुधवीक्षिताश्च यमलौ कुर्वन्ति पक्षे स्वके ॥११॥

टीका—बलवान् लग्न सूर्य बृहस्पती चन्द्रमा विषमराशि विषम नवांशकों में आधान वा प्रश्नकाल में हों तो पुरुष जन्मेगा कहना, जो ये ग्रह समराशि सम नवांश कों में हों तो कन्याजन्म कहना, अथवा बृहस्पति सूर्य विषमराशि में बलिष्ठ हों तो पुरुषजन्म और चं० शु० मं० बलवान् समराशि में हों तो कन्याजन्म कहना यहां नवांशका भी काम नहीं और द्विस्वभाव राशि द्विस्वभाव नवांश में बृहस्पति सूर्य शुक्र मङ्गल हों और बुध की दृष्टि हो तो यमल (दो) जन्मैंगे कहना, इन में भी पुरुषांश कों में सभी हों तो २ पुरुष, सभी स्त्री नवांशकों में हों तो २ कन्या, कुछ पुरुषांश में

कुछ स्त्री अंशकमें हों तो १ कन्या १ पुत्र का जन्म कहना बली ग्रह सर्वत्र पूरा फल देता है ॥ ११ ॥

उपेन्द्रवज्रा ।

विहाय लग्नं विषमर्क्षसंस्थः सौरोऽपि पुंजन्मकरो विलग्नात् ।
प्रोक्तग्रहाणामवलोक्य वीर्य्यं वाच्यः प्रसूतौ पुरुषोंगना वा॥१२

टीका–शनैश्चर लग्न छोडकर विषम भाव ३ । ५ । ७ । ९ । ११ में हो तो पुरुषजन्म कहना समभाव में कन्या जन्म, जो पु० क० योग कहे हैं इनमें कोई योग कन्या जन्म का कोई पुरुषजन्म का जब पड़े तो ग्रहों का बल देखना जो ग्रह अधिक बली हो उसका फल कहना ॥ १२ ॥

शार्दूलविक्रीडितम् ।

अन्योन्यं यदि पश्यतः शशिरवी यद्यार्किसौम्यावपि
वक्रो वा समगं दिनेशमसमे चन्द्रोदयौ चेत् स्थितौ ।
युग्मौजर्क्षगतावपींदुशशिजौ भूम्यात्मजेनेक्षितौ
पुम्भागे सितलग्नशीतकिरणाः षट् क्लीबयोगास्स्मृताः ॥ १३ ॥

टीका–अथ नपुंसक योग । समराशि में बैठा चन्द्रमा विषमराशि के सूर्य को पूर्ण देखे सूर्य भी चन्द्रमा को देखै एक योग १ शनि समराशि में बुध विषम में दोनों परस्पर देखें तो दूसरा योग २, मङ्गल विषम में हो सूर्य समराशि में दोनो परस्पर देखें तो तीसरा योग ३, लग्न चन्द्रमा विषम राशि में हो और समराशि में बैठा मङ्गल चन्द्रमा दोनों को देखै यह चौथा योग ४, सम में चन्द्रमा विषममें बुध हो और मङ्गल देखै तो यह पांचवां योग ५, शुक्र लग्न चन्द्रमा पुंभागमें (विषम नवांशों में) हों तो यह छठा योग है ६, ये योग प्रश्न वा आधान में पडैं तो नपुंसक जन्मैगा जन्मपत्री में भी ऐसे योग हों तो वह हतवीर्य्य वा हिजड़ा होगा ॥ १३ ॥

शार्दूलविक्रीडितम् ।

युग्मे चन्द्रसितौ तथौजभवने स्युर्ज्ञारजीवोदया
लग्नेंदू नृनिरीक्षितौ च समगौ युग्मेषु वा प्राणिनः ।

कुर्युस्ते मिथुनं ग्रहोदयगतान्द्व्यंगांशकान् पश्यति
स्वांशे ज्ञे त्रितयं ज्ञगांशकवशाद्युग्मं च मिश्रैः समम् ॥ १४ ॥

टीका—चन्द्रमा शुक्र समराशि में हों बुध मङ्गल बृहस्पति लग्न ये सब विषम राशियों में हों तो (मिथुन) एक कन्या एक पुत्र जन्म कहना और लग्न चन्द्रमा समराशियों में हों पुरुष ग्रह देखैं तौ भी वही फल कहना अथवा बु० मं० बृ०लग्न समराशि और बलवान् हों तो भी वही फल और पूर्वोक्त सभी ग्रह बु० मं० बृ० लग्न द्विस्वभावराशि के अंशकों में हों और बुध की दृष्टि हो तो गर्भ से तीन बालक पैदा होंगे इसमें भी बुध विशेष है क्यों कि बुध जिस नवांश में है उस नवांश राशिके रूप का बालक होगा जैसे मेष से चौपाया वृश्चिक से सर्प विच्छू आदि जो बुध मिथुनांशक में बैठ कर पूर्वोक्त योग कर्त्ता ग्रहों को देखै तो गर्भ में २ पुत्र १ कन्या है और द्विस्वभावांशक में बुध बैठ कर पूर्वोक्त ग्रहों को देखै तो २ कन्या १ पुत्र है जो बुध मिथुन नवांशक में बैठकर मिथुन धन नवांश वाले लग्नगत ग्रहों को देखै तो ३ पुत्र गर्भ में हैं जो बुध कन्यांश में बैठकर कन्या मीनांश वाले लग्नगत पूर्वोक्त ग्रहों को देखे तो ३ कन्या गर्भ में हैं कहना ॥ १४ ॥

उपजातिः ।

धनुर्द्धरस्यान्त्यगते विलग्ने ग्रहैस्तदंशोपगतैर्बलिष्ठैः ।
ज्ञेनार्किणा वीर्ययुतेन दृष्टे सन्ति प्रभूता अपि कोशसंस्थाः १५॥

टीका— धनलग्न धननवांश हो और ग्रह पूर्वोक्त योग कर्नेवाले ९।१२ अंशकों में हों और बलवान् बुध शनि लग्न को देखैं तो प्रभूता (गर्भमें बहुत बच्चे) ३ उपरान्त १० पर्यन्त हैं कहना यह गर्भ जिस महीने का पति निपीड़ित हो उसी महीने में पतन होगा बहुत होने में पूरा प्रसव नहीं होता पतन होजाता है ॥ १५ ॥

कुटकवृत्तम् ।

कललघनांकुरास्थिचर्मांगजचेतनपाः
सितकुजजीवसूर्यचन्द्रार्किबुधाः परतः ।
उदयपचन्द्रसूर्यनाथाः क्रमशो गदिता
भवन्ति शुभाशुभञ्च मासाधिपतेस्सदृशम् ॥ १६ ॥

टीका–गर्भाधान जब होगया तो प्रथम एक एक महीने पर्यन्त कलल रुधिर और शुक्र (वीर्य) मिलते हैं इस मास का स्वामी शुक्र होता है, दूसरे महीने में घन वह रुधिर शुक्र जमकर पिण्डसा बनता है इसका स्वामी मङ्गल है, तीसरे में उस पिण्डपर अंकुर मुख हाथ पैर निकलते हैं इसका स्वामी बृहस्पति है, एवं चौथे में हड्डी पैदा होती है सूर्य स्वामी है, पांचवें में चर्म (खाल) चन्द्रमा स्वामी, छठे में रोम स्वामी शनि है, सातवें में चैतन्य हाथ पैर हिलाना स्वामी बुध, उपरान्त आठवें नवेंमें अशन (मांकी खाई हुई वस्तु) का असर उस पर भी होता है मासाधिपति लग्नेश है, नवें में उद्वेग (चलने के नाईं) हाथ पैर हिलाना इसका स्वामी चन्द्रमा, दशवें में प्रसव जन्म स्वामी सूर्य है, मासाधिपति ग्रह पीडित हो तो अपने महीने में गर्भपात करता है अस्तङ्गत (निर्बल) हो तो उस महीनेमें पीडा देता है निर्मल (बलवान्)हो, तो पुष्टिकरता है ॥ १६ ॥

वंशस्थम् ।

त्रिकोणगे ज्ञे विबलैस्तथापरैर्मुखाङ्घ्रिहस्तैर्द्विगुणस्तदा भवेत् ।
अवाग्गवीन्दावशुभैर्भसन्धिगैः शुभेक्षितश्चेत् कुरुते गिरञ्चिरात् १७॥

टीका–बुध त्रिकोण ९ । ५ में और सब ग्रह निर्बल हों तो बालक के शिर वा हाथ पैर दूने हों गे, २शिर,४हाथ,४पैर इत्यादि चन्द्रमा वृष में हो और सभी ग्रह भसन्धि कर्क वृश्चिक मीन इनके अन्त्य नवांशों में हों तो वह गर्भ (बालक) मूक (गूंगा) होगा इस योग में चन्द्रमा पर शुभ ग्रह की दृष्टि भी हो तो बहुत वर्षों में वाणी बोलेगा पाप दृष्टि से वाणीहीन होता है ॥ १७ ॥

मन्दाक्रान्ता।

सौम्यर्क्षांशे रविजरुधिरौ चेत्सदन्तोत्र जातः
कुब्जः स्वर्क्षे शशिनि तनुगे मन्दमाहेयदृष्टे।
पंगुर्मीने यमशशिकुजैर्वीक्षिते लग्नसंस्थे
सन्धौ पापे शशिनि च जडः स्यान्न चेत्सौम्यदृष्टिः॥ १८॥

टीका—शनि और मङ्गल बुध के राशि नवांशक में हों तो बालक के गर्भ ही से दाँत जमे आवेंगे बुध के राशि ३। ६ वा अंश एक में भी श० मं० हों तो भी यह योग होता है और कर्क का चन्द्रमा लग्न में हो श० मं० पूर्ण देखैं तो कुब्ज अर्थात् बालक कुबड़ा होगा और मीन का चन्द्रमा लग्न में श० मं० चं० की दृष्टि सहित हो तो पंगु (लंगड़ा) होगा और चन्द्रमा और पाप ग्रह सन्धि में अर्थात् कर्क वृश्चिक मीन के अन्त्य नवांशों में हों तो जड़ (मूर्ख) होगा ये चारों योग शुभ ग्रह की दृष्टि न होनेमें पूरे फलते हैं शुभ ग्रह की दृष्टि से बुरा फल पूरा नहीं होता ॥ १८ ॥

दोधकवृत्तम्।

सौरशशाङ्कदिवाकरदृष्टे वामनको मकरान्त्यविलग्ने।
धीनवमोदयगैश्च दृकाणैः पापयुतैरभुजाङ्घ्रिशिराः स्यात्॥ १९॥

टीका—लग्न मकर हो और मकरकाही नवांश (वर्गोत्तम) हो और उस पर शनि चन्द्रमा सूर्य की दृष्टि हो तो बालक वामन अर्थात् ५२ अंगुल का (छोटे शरीरका) होगा और लग्न मे भी दूसरा द्रेष्काण हो श० चं० सू० देखें तो उस बालक के हाथ नहीं होंगे, जो लग्न में तीसरा द्रेष्काण और श० चं० सू० की दृष्टि हो तो बालक के पैर नहीं होंगे लग्न प्रथम द्रेष्काण और श० चं० सू० की दृष्टि हो तो बालक विनाशिर का होगा अथवा और प्रकार अर्थ है कि लग्न में प्रथम द्रेष्काण और दूसरे तीसरे द्रेष्काण पाप युक्त हों तो हाथ नहीं होंगे और लग्न में दूसरा द्रेष्काण प्रथम तृतीय

द्रेष्काण पाप युक्त हो तो पैर नहीं होंगे और लग्न में तीसरा द्रेष्काण प्रथम द्वितीय द्रेष्काण पाप युक्त हो तो शिर नहीं होगा तीसरे प्रकारका अर्थ यह है कि आधान वा प्रश्नकालीन लग्नसे पञ्चमराशिमें जो द्रेष्काण है वह मङ्गल से युक्त हो और श० चं० सू० देखै तो हाथ रहित और लग्न में जो द्रेष्काण है वह भौम युक्त तथा श० चं० सू० से दृष्ट हो तो शिर रहित और नवम स्थान में जो द्रेष्काण है वह भौमयुक्त श० चं० सू० से दृष्ट हो तो पादरहित होगा यह तीसरा अर्थ और ग्रन्थों से भी पुष्ट होता। अत एव यही ठीक है ॥ १९ ॥

हरणीवृत्तम् ।

रविशशियुते सिंहे लग्ने कुजार्किनिरीक्षिते
नयनरहितः सौम्या सौम्यैः सबुद्बुदलोचनः ।
व्ययगृहगतश्चन्द्रो वामं हिनस्त्यपरं रवि-
र्न शुभगदिता योगा याप्या भवन्ति शुभेक्षिताः॥ २० ॥

टीका—सिंह लग्न में सूर्य चन्द्रमा हों और मङ्गल शनि देखैं तो नेत्र रहित अर्थात् अन्धा होता है, जो सिंह लग्न में केवल सूर्य हो और मङ्गल शनि से दृष्ट हो तो दाहिना नेत्र नहीं होगा; जो सिंह का चन्द्रमा लग्न में श० मं० से दृष्ट हो तो बायां नेत्र नहीं होगा जो इन योगोंके होनेमें शुभ ग्रहों की दृष्टि भी हो तो बुद्बुदलोचन एक आंख छोटी(वा कातर)वारवार हिलनेवाली अथवा फूलेवाली होगी लग्न से बारहवां पापयुक्त चन्द्रमा हो तो बांयी आंखरहित और सूर्य दाहिनी रहित करते हैं । जितने बुरे योग कहे हैं उन योगकर्त्ता ग्रहों पर शुभ ग्रहों की दृष्टि हो तो सम्पूर्ण बुरा फल नहीं होता उपाय करने से अच्छे भी हो जाते हैं ॥ २० ॥

वसन्ततिलका ।

तत्कालमिन्दुसहितो द्विरसांशकोय-
स्तत्तुल्यराशिसहिते पुरतः शशांके ।

यावानुदेति दिनरात्रिसमानभाग-
स्तावद्गते दिननिशोः प्रवदन्ति जन्म ॥ २१ ॥

टीका—आधान समय में वा प्रश्न समयमें चन्द्रमा जिस द्वादशांश पर है मेषादि गणना से उतनेही संख्यक राशि के चन्द्रमा में जन्म होगा दूसरा अर्थ यह है कि जिस राशि में चन्द्रमा है उसी से गिन कर जितने द्वादशांश पर चन्द्रमा है उतनी ही राशि के चन्द्रमा में जन्म होगा नक्षत्र के भुक्त निकालने का यह अनुपात है एक चन्द्र राशि की १८०० लिप्ता होती हैं अब चन्द्रमा ने कितनी द्वादशांश की कला भुक्ती हैं कितनी भोगनी बाकी हैं इनका त्रैराशिक करनसे नक्षत्र भुक्त मिलता है उससे इष्टकाल और ग्रहकुण्डली बन जाती है दिन रात्रि जन्म ज्ञान के लिये तत्काल लग्न जो दिवाबली शीर्षोदय हो तो दिन में जन्म रात्रिबली पृष्ठोदय हो तो रात्रि जन्म कहते हैं लग्न के हेतु तत्काल लग्न में जो द्वादशांश है उतनी संख्या के उसी से गिनने पर जो आता है वह लग्न जन्म में होगा कोई कहते हैं कि चन्द्रमा के द्वादशांश से लग्न और लग्न द्वादशांश वश से चन्द्रमा जन्म समय के मिलते हैं और भी युक्ति और ग्रन्थों में बहुतहैं सब में मुख्य यही है इसमें भी दो तीन वा बहुत प्रकार से एक ठीक जब हो जावै तब ठीक कहना यह गर्भकुण्डलीका प्रश्न मैंने बहुत वार अच्छे प्रकारसे देखाहै सत्यहै ठीक मिलताहै परन्तु इसमें तथा नष्ट जन्म पत्रीमें दो इष्ट सिद्ध चाहियें एक तो अपने इष्ट देवताकी कृपा तदुत्तर इष्ट काल बुद्धि की चतुराई सब जगे काम आतीहै अब नक्षत्र भुक्त इष्ट काल निकालने का उदाहरण लिखता हूं किसी के प्रश्न समय में चैत्र शुदी ४ दिन २७ शनिवार इष्टकाल घडी २० । ५ चन्द्र स्पष्ट १ । ८ । ११ । २६ लग्न स्पष्ट ४ । ५ । ५८ । १४, चन्द्र स्पष्ट में द्वादशांश चौथा है वृष से गिन कर चौथे सिंहके चन्द्रमा में नवें वा दशवें महीने में जन्म होगा अब नक्षत्र के लिये चन्द्र स्पष्ट में ३ द्वादशांश गतहै अर्थात् ७ अंश ३० कला भुक्त

हो गई है इसको स्पष्ट में घटाया शेष १।४।१।२६ अंश की कला १०१।२६ एक राशि की कला १८००से गुणा किया १८२५८० एक द्वादशांश की कला १५० से भाग लिया लब्धि १२१७।१२ यह [illegible] प्रमाण पिण्ड है इसमें एक नक्षत्र प्रमाण ८०० घटाये शेष ४१७।१२ [illegible] चरण प्रमाण ४०० घटाया शेष १७।१२ रहे, पहिले एक नक्षत्र घटे- में मघा भुक्त होगई फिर चरण प्रमाण २ घटाये तो पूर्वाफाल्गुनी के २ चरण भी भुक्त हो गये अब तीसरे चरण के लिये शेष अंक १७। १२ को चरण प्रमाण घटी १५ से गुणा किया और २०० से भाग लिया तो लब्धि १ घ० २ पल तीसरे चरण की भुक्त हुई इसको गत दो चरणों- की घटी ३० में जोडा तो पूर्वाफाल्गुनी नक्षत्र भुक्त ३१ घ० २ प० हुवा। दिन रात्रि के निमित्त लग्न में नवांश वृष रात्रिबली है तो जन्म रात- में होगा, इष्टकाल के हेतु ल० स्प० ४।५।५८।१४ में भुक्त नवांश ३।२० अंशादि घटाया २।३८।१४ रात्रिमान २८।६ से गुणा किया ४४।४६ चरण कला प्रमाण २०० से भाग लिया लाभ २२।१३ यह रात्रि का इष्ट काल हुआ ज्येष्ठ शुदी ६ रात्रि गत घटी २२। पल १३ में जन्म होगा रीति यही है प्रश्न विचार और प्रकार से भी मिला लेना चाहिये ॥ २१ ॥

मालिनी।

उदयति मृदुभांशे सप्तमस्थे च मन्दे
यदि भवति निषेकः सूतिरब्दत्रयेण।
शशिनि तु विधिरेष द्वादशेब्दे प्रकुर्या-
न्निगदितमिति चिन्त्यं सूतिकालेपि युक्त्या ॥ २२ ॥

इति बृहज्जातके चतुर्थोध्यायः ॥ ४ ॥

टीका—आधान लग्न में जो शनि का नवांश हो और शनि सप्तम हो तो वह प्रसव ३ वर्ष में होगा जो लग्न में कर्क नवांश और चन्द्रमा सप्तम होवे

तो प्रसव १२ वर्ष में होगा। इस अध्याय में जो अङ्ग हीनाधिक वा पित्रादि कष्टके योग कहे हैं वे जन्म में भी विचार के युक्ति से कहना॥ २२॥

इति बृहज्जातके भाषाटीकायां महीधरकिरचितायां
निषेकाध्यायश्चतुर्थः॥ ४॥

सूतिकाध्यायः ५.

पहिले फलादेशकामूल इष्टकाल सच्चा होना चाहिये जो सभीका ठीक-नहीं रहता क्योंकि बहुधा स्त्री लोग सूतिकागृह में बालक के उत्पन्न होनेपर अच्छी तरह कन्या वा पुत्र आप देख लेती हैं उपरान्त बाहर कहती हैं उस समय ज्योतिषी उपस्थित रहता है तौ भी उन्ही के कहने पर इष्ट मानता है किसी ग्रन्थ में शीर्षोदय अर्थात् बालक का शिर देखे जानेपर यद्वा कंधा अथवा हाथ दखेजानेपर इष्ट काल मानना लिखा है परन्तु और प्रमाणग्रन्थोंसे तथा विज्ञान शास्त्र के अनुभव करने से मैं समझता हूं कि वह इष्ट कभीकभी ठीक होगा क्योंकि कभी बालक का शिर देखे जानेसे १ घड़ी उपरान्त सारा उत्पन्न हो सकता है दूसरे कोई बालक पूर्णोत्पन्न होने पर भी श्वास नहीं लेता जब उसका नाल सूत्र से बांध देते हैं तब श्वास लेने लगता है तीसरे यह है कि मैंने कई एकबार खूब देखलिया है कि गर्भप्रश्न से जो इष्टकाल मिला है वह शीर्षोदय समय पर नहीं मिलता इष्ट शोधन से भी शीर्षोदय कभी ठीक नहीं होता कुछ घट बढ जाता है इसका कारण यह निश्चय होता है कि प्राण नाम वायु का है जब बालक श्वास लेने लगता है तब उस पर प्राण पडता है वही समय ठीक इष्ट है इसमें कोई प्रतीति न लावें तो प्रत्यक्ष परीक्षा कर देखें इसकी परीक्षामें भी मेरेतरह बहुत वर्षों पर्यन्त अनुमान व विचार करना पडेगा जब कोई शङ्का करे कि बालक के श्वास लेने पर प्राण पडा तो पहिले गर्भ में क्या वह मृतक था इसका यह उत्तर है कि गर्भमें मृतक नहींथा परन्तु प्राण जुदा नहीं था अपनी माता के प्राण के साथ वह जीवित रहता है नाभी में जो एक नश जिस्को नाल कहते हैं वह उस्की जड है जैसे वृक्षका फल

अपने भैराहू (डण्ठल) द्वारा वृक्ष का रस पाकर पुष्ट होता है ऐसा ही बालक भी गर्भ में नाल के द्वारा मांके शरीर से पुष्टि पाता है रुधिर बराबर मांके व बालक के शरीर में नाल द्वारा चलता रहता है जो कुछ वस्तु मांने खाई उसका सार जो मांके रुधिर में मिलकर सर्वाङ्ग में फैलता है वही बालक के शरीर में भी पहुंचता है मांके श्वास लेने पर उसको पृथक् श्वासा लेने की आवश्यकता नहीं पडती पैदा होनेपर उसका नाल काट दिया वा सूत्रसे बांध दिया तो मांके शरीरका रुधिर जो उसके शरीर में पहुचता था वह बन्द होजाता है तब वह पृथकही श्वास लेने लगता है और प्रकार भी धर्मशास्त्र से पुष्टता है कि बालक गर्भ में १० महीने जब रहता है तो छः महीने उपरान्त उसके पिता को सूतक होता है जब जन्म होगया तो १० दिन आदि सूतक होता है और जन्म क्षणमें जातकर्म कर्ना उक्त है यह सूतक में कैसे होता है। इसका निश्चय यह है कि " जातमात्रस्य पुत्रस्य पिता जातकर्म्म कुर्यात् नालच्छेदनात्पूर्वं संपूर्णसन्ध्यावन्दनादिकर्मणि नाशौचम्" इति धर्मसिन्धौ० " अच्छिन्ननाभि कर्त्तव्यं श्राद्धं वै पुत्रजन्मनि" इति मनुमतम् इत्यादि वाक्यों से उस समय नालच्छेदनपर्यन्त सूतक नहीं रहता गर्भ का सूतक तो बालक के गर्भ से निकल जाने से न रहा और जन्म का सूतक नाल न काटे जाने से नः हो सका जब शीर्षोदयही इष्ट है तो जन्म से ही सूतक हो जाना था फिर जातकर्म कैसे होसकता है धर्मशास्त्र का भी यही तात्पर्य है कि नालच्छेदन पर्यन्त सूतक ही क्या नहीं हुवा किन्तु जन्म ही पूरा न हुवा अब इसमें शङ्का है कि नालच्छेदन जब कोई २ । ४ घण्टे वा १ दिन पर्यन्त करें तो क्या उसका जन्म तबतक न हुवा इस्का उत्तर यह है कि, धर्मशास्त्र में लिखा है कि एक तो बाहर निकलने से एक मुहूर्त्त अर्थात् दो घड़ी पर्यन्त सूतक नहीं होता और नालच्छेदन विलम्ब से होगा तो वह बालक मांके शरीर की रुधिर गति बन्द हो जानेसे और अपने शरीर में उसकी यथायोग्य गति न होने से जीवित

ही न रहैगा नालच्छेदन में विलम्ब होता देख कर स्त्री लोग छेदन से जो कार्य होता है उसे पहिले ही बांधने से लेलेती हैं काटने से वा बांधने वा अकस्मात् बाहर निकसते २ उस नाल नस पर कोई प्रकार पीडन अर्थात् रगड वा दाब लग जाने में नाल द्वारा रुधिर मांके शरीर से पहुंचना बन्द होकर वह बालक अलग श्वासा लेने लगता है इससे भी वही श्वासालेनेका समय इष्ट काल मानना ठीक है और योगशास्त्रादि सब शास्त्रोंसे भी यही दृढहै कि जीवितकी गिनती केवल श्वासाओंपर है जब जन्तु देह छोड़ता है तो केवल श्वासालेनाही छोड़ताहै अन्यसावयवशरीर यथावत् रहनेपरभी श्वासलेना बन्द होने मात्रसे मर गया कहते हैं न कि दाह वा प्रवाह आदि करनेपर जब श्वासा बन्द होने पर आयु पूरी हुई तो आयु का आरम्भ भी जन्ममें श्वासा लेनेहीसे हुआ गर्भ से शिर वा देह बाहर निकलने पर नहीं इससे भी शीर्षोदय इष्ट काल मानना ठीक नहींहै श्वासालेने ही पर जन्म इष्ट काल मानना निश्चयहै ३ । वैद्यशास्त्र से भी यही पुष्ट होता है कि अति दौडनेसे अति बोलनेसे अति श्रमसे आयु क्षीण होती है कारण यहहै कि ऐसे कामों के करने में श्वास बहुत व्यय होतेहैं आयु प्रमाण केवल श्वासाओं पर है बहुत श्वासा खरच होगये तो उतने जीवित में कमी पड़ती है जन्म से मरणपर्यन्त जितने श्वासा जीव लेता है उतनी ही आयुहै श्वासा पूरे होने पर जैसे मरजाता है वैसेही प्रथम श्वासालेने पर जन्मता भी है ॥ ४॥ यदि कोई विज्ञजन जन्म शब्दका पदार्थ जायते इति जन्म' अर्थात् जब पैदा होगया तभी जन्म है श्वासा लेने पर प्रयोजन नहीं है कहैं तो मुख्य तो ज्योतिश्शास्त्र के अनभिज्ञ पण्डित ऐसे पदार्थ ढूंढेंगे उनके ऐसे अभिप्रायको मैं काटता नहीं हूं किन्तु इतना व्यवधान है कि जैसे ५ घटी रात्रि शेष अरुणोदयसे दिनके बराबर कृत्य सन्ध्यावन्दनादि करनेकी आज्ञा है परंतु दिनका उदयेष्ट० घ ० पल तो सूर्यके अर्द्धोदय ही से होगा न कि 'पञ्च पञ्च उषःकाल' इत्यादि वचनोंसे ५ घड़ी रात्रि शेषसे दिन मानेंगे अरुणोदयसे सब कृत्य दिनका हुवा

किन्तु दिन तो विना सूर्योदय नहीं होसका सूर्य बिम्बके अरुणोदयपर्यन्त इष्ट काल पूर्व दिनका ही ५९ घ० ५९पला पर्यन्त लिखाजाताहै ऐसे ही बालक पैदा होनेपर जन्म प्रसव मात्र तो हुआ आयु का आरम्भ विना श्वासा लिये न होसका विद्वान् लोग तो अपनी बुद्धिबलसे इन बातों को आपही समझ सकते हैं किन्तु जिनके हृदय कमल होरा शास्त्रके सूक्ष्म विचार विना मुकुलित है उनके विकाशके निमित्त इतने उदाहरण यहां लिखे गये हैं॥६॥ ऐसे ऐसे प्रमाण बहुत से हैं कि जिनसे श्वासालेने का समय इष्ट काल ठीक होता है अब इस समय में ज्योतिषी लोगों के कहे फल पूरे ठीक नहीं मिलते जिसपर बहुधा लोग कहते हैं कि ज्योतिश्शास्त्र कुछ चीज नहीं ब्राह्मणों ने अपने लाभार्थ यह पाखण्ड किया है परन्तु यह विचार विना उस्के हेतु समझे अच्छा नहीं, फलमें विपरीतता होनेका कारण यह है कि एक तो बहुधा लोग थोडा कुछ देख सुन पढ़के चमत्कार फल अपने लाभ निमित्त कहने लग जाते हैं विना शास्त्रके मूल पूर्वापर ग्रहों के अवस्था बलाबल की न्यूनाधिकता विचारे फल ठीक क्यों होना है दूसरे इष्ट काल सब का ठीक नहीं रहता जो कोई विचारे कि जन्म समय में अच्छा ज्योतिषी सूतिकागार के बाहर खड़ा था इससे इष्टकाल ठीक होगा तो इसमें भी ठीक होना असम्भव है क्यों कि वह समय तो स्त्रियों के हाथ है ज्योतिषी तो उन्हीं के कहेपर इष्ट साधन अनेक प्रकारके यन्त्रों से करता है, ठीक तब होगा कि कोई सुघड़ स्त्री वहां रह कर बालक के श्वासालेनेके समय अति शीघ्र खबर करदेवै कि उस समय को बाहर कोई ठीक करलेवै तब इष्ट काल ठीक होगा उपरान्त सूक्ष्म विचार जो कुछ थोडा पहिले कहा गया है इत्यादि से सभी ठीक होंगे।

अनुष्टुप्।

पितुर्जातः परोक्षस्य लग्नमिंदावपश्यति।
विदेशस्थस्य चरभे मध्याद्भ्रष्टे दिवाकरे॥ १॥

टीका-सूतिकागारके लक्षण जो जन्म लग्न को चन्द्रमा नहीं देखै तो उसका पिता उस समय परोक्ष होगा इस में भी यह विशेष है कि लग्न को चन्द्रमा न देखै और सूर्य चरराशि में और ८।९।११। १२। स्थानमें हो तो पिता विदेश में था जो सूर्य स्थिरराशि में उन्हीं स्थानों में से किसी में होवै चन्द्रमा लग्न को न देखै तो उसी देश में था परन्तु उस समय परोक्ष था द्विस्वभाव में हो तो मार्ग चलता था कहना ॥ १ ॥

अनुष्टुप्।

उदयस्थेपि वा मन्दे कुजे वास्तं समागते।
स्थिते वान्तः क्षपानाथे शशाङ्कसुतशुक्रयोः ॥ २ ॥

टीका-लग्न में शनि हो तो पिता परोक्ष कहना यदि मङ्गल सप्तम होवै तौ भी परोक्ष और चन्द्रमा बुध शुक्रके राशियों के वा अंशों के मध्य हो तौ भी पिता परोक्ष कहना ॥ २ ॥

अनुष्टुप्।

शशाङ्के पापलग्ने वा वृश्चिके सत्रिभागगे।
शुभैः स्वायस्थितैर्जातः सर्पस्तद्वेष्टितोऽपि वा ॥ ३ ॥

टीका-चन्द्रमा मङ्गल के द्रेष्काण में और शुभग्रह २। ११ स्थानमें हो तो वह बालक सर्परूप होगा और लग्न पापग्रह की राशि का हो और चन्द्रमा भौम द्रेष्काण में हो २। ११ स्थान में पाप हो तो बालकसर्प अथवा सर्पवेष्टित होगा ॥ ३ ॥

अनुष्टुप्।

चतुष्पदगते भानौ शेषैर्वीर्यसमन्वितैः।
द्वितनुस्थैश्च यमलौ भवतः कोशवेष्टितौ ॥ ४ ॥

टीका-सूर्य चतुष्पदराशि १। २।५ वा धन परार्द्ध मकर के पूर्वार्द्ध में होवै और सभी ग्रह द्विस्वभाव राशियों में बलवान् हों तो यमल दो बालक एक जरायु से वेष्टित होंगे ॥ ४ ॥

अनुष्टुप् ।

छागे सिंहे वृषे लग्ने तत्स्थे सौरेऽथ वा कुजे ।
राश्यंशसदृशे गात्रे जायते नालवेष्टितः ॥ ५ ॥

टीका—लग्न में मेष वृष सिंह राशि का मङ्गल वा शनि हो तो बालक नालसे वेष्टित होगा लग्न में जो नवांश है वह राशि का लग्न पुरुषाङ्ग में जिस अङ्ग पर हो उसी अङ्ग में वेष्टित कहना ॥ ५ ॥

वंशस्थम् ।

न लग्नमिन्दुञ्च गुरुर्निरीक्षते न वा शशांङ्कं रविणा समागतम् ।
सपापकोर्केण युतोथवा शशी परेण जातम्प्रवदन्ति निश्चयात् ॥६॥

टीका—लग्न और चन्द्रमा को बृहस्पति न देखे तो वह बालक जार पुत्र होगा अथवा सूर्य चन्द्रमा इकट्ठे हों और बृहस्पति न देखे तो भी वही फल है अथवा सूर्य चन्द्रमा एक राशि में शनि मङ्गल से युक्त हों तौ भी वही फल है ॥ ६ ॥

वैतालीयम् ।

क्रूरर्क्षगतावशोभनौ सूर्याद्द्यूननवात्मजास्थितौ
बद्धस्तु पिता विदेशगः स्वे वा राशिवशादथो पथि ॥ ७ ॥

टीका—पाप ग्रह शनि वा मङ्गल क्रूर राशि २ । ५ । ८ । १० । ११ में हों और सूर्य से ७ वा ८ वा ५ भाव में हो तो बालक का पिता बन्धन में है कहना इसमें भी सूर्य चर राशि में हो तो परदेशमें बँधा है, स्थिर राशि में स्वदेश में, द्विस्वभाव से मार्ग में बँधा होगा, ॥ ७ ॥

वैतालीयम् ।

पूर्णे शशिनि स्वराशिगे सौम्ये लग्नगते शुभे सुखे ।
लग्ने जलजेस्तगेपि वा चन्द्रे पोतगता प्रसूयते ॥ ८ ॥

टीका—पूर्ण चन्द्रमा कर्क राशिमें और बुध लग्न में बृहस्पति चतुर्थ भाव में हो तो वह प्रसव नौका वा पुल के ऊपर हुआ है अथवा लग्न में जलचर राशि हो और चन्द्रमा सप्तम हो तौ भी वही फल होगा ॥ ८ ॥

वैतालीयम् ।

आप्योदयमाप्यगः शशी सम्पूर्णः समवेक्षतेथ वा ।
मेषूरणबन्धुलग्नगः स्यात्सूतिः सलिले न संशयः ॥ ९ ॥

टीका–यदि लग्न में जलचर राशि हो चन्द्रमा भी जलचर राशि का हो तो प्रसव जल के ऊपर हुवा कहना अथवा पूर्णचन्द्रमा लग्न को पूर्ण देखे तो यही फल होगा अथवा जलचर राशि का चन्द्रमा दशम वा चतुर्थ वा लग्न में हो तौ भी वही फल कहना ॥ ९ ॥

वैतालीयम् ।

उदयोडुपयोर्व्ययस्थिते गुप्त्याम्पापनिरीक्षिते यमे ।
अलिकर्कियुते विलग्नगे सौरे शीतकरेक्षितेऽवटे ॥ १० ॥

टीका–शनि लग्न व चन्द्रमा से वारहवां हो और उसको पापग्रह देखे तो कारागार में जन्म हुवा होगा और शनि कर्क वृश्चिक राशि का लग्न में हो चन्द्रमा भी देखै तो (खाई) खाती वा खंदकमें जन्म कहना ॥ १०. ॥

वैतालीयम् ।

मन्देऽब्जगते विलग्नगे बुधसूर्येन्दुनिरीक्षिते क्रमात् ।
क्रीडाभवने सुरालये प्रवदेज्जन्म च सोषरावनौ ॥ ११ ॥

टीका–शनि जलचर राशि का लग्न में हो और उसको बुध देखे तो नृत्यशाला में जन्म कहना, उसी शनि को सूर्य देखे तो देवालय में और उसी को चन्द्रमा देखे तो ऊषर भूमि में जन्म कहना ॥ ११ ॥

उपजातिः ।

नृलग्नगं प्रेक्ष्य कुजः श्मशाने रम्ये सितेन्दू गुरुरग्निहोत्रे ।
रविर्नरेन्द्रामरगोकुलेषु शिल्पालये ज्ञः प्रसवं करोति ॥१२॥

टीका–मनुष्य राशि लग्न में हो शनि भी लग्न का हो और मङ्गल की दृष्टि शनि पर हो तो प्रसव श्मशान में हुवा होगा और नृराशि लग्न गत शनि को शुक्र चन्द्रमा देखे तो सुन्दर रमणीय घर में जन्म हुवा और ऐसे

ही शनि को बृहस्पति देखे तो अग्निहोत्र वा हवनशाला वा रसोई के स्थान में जहां नित्य अग्नि रहती है वहां जन्म कहना और ऐसे ही शनि को सूर्य देखे तो राजघर वा देवालय वा गौशाला में जन्म होगा और उसी शनि को बुध देखे तो शिल्पालय में जन्म कहना ॥ १२ ॥

वैतालीयम् ।

राश्यंशसमानगोचरे मार्गे जन्म चरे स्थिरे गृहे ।
स्वर्क्षांशगते स्वमन्दिरे बलयोगात्फलमंशकर्क्षयोः ॥ १३ ॥

टीका–लग्न राशि नवांशक जैसा हो वैसीही भूमि में जन्म, चरराशि नवांशकमें मार्ग में, स्थिर से घर में जन्म, जो लग्न वर्गोत्तम हो तो अपने घर में जन्म कहना, लग्न नवांशक में से बलवान् का फल होता है पूर्व योगों के अभाव में यह योग देखना ॥ १३ ॥

वैतालीयम् ।

आरार्कजयोस्त्रिकोणगे चन्द्रेऽस्ते च विसृज्यतेऽम्बया ।
दृष्टेऽमरराजमन्त्रिणा दीर्घायुः सुखभाक् च स स्मृतः॥१४॥

टीका–मङ्गल सूर्य एक राशि के हों और इनसे नवम वा पञ्चम वा सप्तम भाव में चन्द्रमा हो तो वह बालक माता से अलग हो जाता है और ऐसे योग में चन्द्रमा पर बृहस्पति की दृष्टि भी हो तो बालक माता का त्यागा हुआ भी दीर्घायु व सुखी होगा ॥ १४ ॥

वसंततिलका ।

पापेक्षिते तुहिनगावुदये कुजेऽस्ते
त्यक्तो विनश्यति कुजार्कजयोस्तथाऽऽये
सौम्येऽपि पश्यति तथाविधहस्तमेति
सौम्येतरेषु परहस्तगतोऽप्यनायुः ॥ १५ ॥

टीका–लग्नमें चन्द्रमा हों पापग्रह उसे देखैं और सप्तम मङ्गल हों तो माता का त्यागा हुवा वह बालक मरजायगा और लग्न में चन्द्रमा हों और

शुभग्रह भी देखें शनि मङ्गल ग्यारहवें स्थान में हों तो मातृत्यक्त बालक जिस वर्ण के शुभग्रह की दृष्टि चन्द्रमा पर है उसी वर्ण ब्राह्मण आदि के हाथ लगेगा और बचेगा जो चंद्रमा पर शुभ ग्रह की दृष्टि और पापग्रह की भी दृष्टि हो और पूर्वोक्त योग भी पूरा हो तो बालक किसी के हाथ लग कर मर जायगा ॥ १५ ॥

वैतालीयम् ।

पितृमातृगृहेषु तद्बलात्तरुशालादिषु नीचगैः शुभैः ।
यदि नैकगतैस्तु वीक्षितौ लग्नेन्दू विजने प्रसूयते ॥ १६ ॥

टीका—पितृसंज्ञक ग्रह सूर्य शनि बलवान् हों तो पिता वा ताऊ चचा के घर में जन्म कहना, जो मातृसंज्ञक ग्रह चंद्रमा शुक्र बलवान् हों तो माँ वा माता की बहिनों के घर में जन्म कहना, जो शुभग्रह नीच राशियों में हों तो वृक्ष में वा वृक्ष के नीचे वा काष्ट के घर में जन्म वा पर्वत नदी आदि में कहना, जो शुभग्रह नीच में और लग्न चंद्रमाको तीन से ऊपर ग्रह न देखें तो जङ्गल में वा जहां कोई मनुष्य न हो ऐसे स्थान में जन्म, जो लग्न चन्द्रमा को बहुत ग्रह देखें तो बस्ती में बहुत मनुष्योंके समुदाय में जन्म कहना ॥ १६ ॥

मंदाक्रांता ।

मन्दर्क्षांशे शशिनि हिबुके मन्ददृष्टेऽब्जगे वा
तद्युक्ते वा तमसि शयनं नीचसंस्थैश्च भूमौ ।
यद्वद्राशिर्व्रजति हारिजं गर्भमोक्षस्तु तद्व-
त्पापैश्चन्द्रस्मरसुखगतैः क्लेशमाहुर्जनन्याः ॥ १७ ॥

टीका—चन्द्रमा शनि के राशि वा अंशक में हो तो सूतिका के घरमें दीवा नहीं था अन्धेरे में जन्म हुवा और जो चौथा चन्द्रमा हो तौ भी वही फल, जो चन्द्रमा को शनि पूर्ण देखै तौभी वही और चन्द्रमा जलचर राशि के अंश में हो अथवा चन्द्रमा शनि के साथ हो तौभी अन्धेरे में जन्म हुवा

सूर्ययुक्त चंद्रमा का यही फल है इन योगों के होने में सूर्य बलवान हो मङ्गल देखे तो सब योगों का फल कट जाता है दीप सहित घर में जन्म कहना जो तीन से उपरान्त ग्रह नीच राशि में हों अथवा लग्न में वा चतुर्थ में नीच ८ का चन्द्रमा हो तो भूमि में जन्म कहना । (यद्वद्राशि) शीर्षोदय राशि लग्न में हो तो बालक का मुख प्रसव समय में आकाशकी ओर उत्तान था पृष्ठोदय में अधोमुख पृथ्वी की ओर करके पैदा हुवा, मीन लग्न दोनों प्रकार का है इसमें जन्में तो तिर्छा एक हाथ ऊपर एक हाथ नीचे पृथ्वी की ओर कहना और लग्न वा लग्न नवांश वा लग्नस्थ ग्रह वक्र हो तो उलटा प्रसव पहिले पैर पीछे शिर होगा चन्द्रमा पापयुक्त सप्तम वा चतुर्थ स्थानमें हो तो प्रसव समय में माता को वडा कष्ट हुवा होगा, प्रसव कहीं खाट (चारपाई) में कहीं दोमंजले तीमंजले घर में कहीं भूमि में होते हैं और दिन में विना दीपक भी अन्धेरा नहीं रहता इत्यादि विचार जाति कुल देश की रीति बुद्धि विचार से सब जगह फल कहना ॥१७॥

इन्द्रवज्रा ।

स्नेहः शशांकादुदयाच्च वर्तिर्दीपोर्कयुक्तर्क्षवशाच्चराद्यः ॥
द्वारञ्च तद्वास्तुनि केंद्रसंस्थैर्ज्ञेयं ग्रहैर्वीर्यसमन्वितैर्वा ॥१८॥

टीका—चंद्रमा से तेल—जैसे राशि के प्रारम्भ में जन्म होगा तो दीये में तेल भरा था, मध्य राशि में हो तो आधा था अन्त्य राशि में हो तो तेल नहीं रहा था कहना ऐसे लग्न प्रारम्भ में जन्म होगा तो दीये पर बत्ती पूर्ण थी, मध्य लग्न में आधी दग्ध अन्त्य लग्न में बत्ती थोडी रही थी, सूर्य चर राशिमें हो तो दीवा एक जगे से दूसरे जगे धरा गया, स्थिर में स्थिर द्विस्वभाव में चालित कहना सूर्य की राशि जिस दिशा की है उस दिशा में दीवा होगा वा सूर्य ८ प्रहर आठ दिशों में घूमता है उस समय जहां हो उधर ही दीवा कहना इन योगों में पाप युक्त में तैलादि मलिन शुभ युक्त से निर्मल और राशियों के रङ्ग समान रङ्ग कहना, केन्द्र में जो ग्रह हो उसकी जो

दिशा है उस ओरको सूतिकाघर का द्वार होगा बहुत ग्रह केन्द्र में हों तो बलवान् की दिशा और केन्द्रों में कोई भी न हो तो लग्न राशिकी दिशा अथवा लग्न द्वादशांश की दिशा में द्वार कहना मुख्य बलवान् ग्रह फल देता है ॥ १८ ॥

शार्दूलविक्रीडितम् ।

जीर्णं संस्कृतमर्कजे क्षितिसुते दग्धं नवं शीतगौ
काष्ठाढ्यं न दृढं रवौ शशिसुते तन्नैकशिल्प्युद्भवम् ।
रम्यंचित्रयुतं नवं च भृगुजे जीवे दृढं मन्दिरं
चक्रस्थैश्च यथोपदेशरचनां सामन्तपूर्वां वदेत् ॥ १९ ॥

टीका—शनि बलवान् हो तो सूतिका का घर पुराना और अच्छा होगा मङ्गल बलवान् हो तो अग्निदग्ध, चन्द्रमा से नवीन और शुक्ल पक्ष हो तो सुन्दर लीपा पोता भी होगा, सूर्य्य से कच्चा और काष्ठ से भरा हुआ बुध से अनेक प्रकार चित्र विचित्र, शुक्र से सुन्दर रमणीय रङ्गदार बृहस्पति से दृढ पक्का, बलवान् ग्रह जिस्से घर का लक्षण पाया है उस्के समीप व आगे पीछे जितने ग्रह हों उतनी कोठरियां उस घर में आगे पीछे होंगी आचार्य ने यहां शाला प्रमाण नहीं कहा अत एव मैं और ग्रंथों से लिख देता हूं बृहस्पति दशम स्थान में कर्क के ५ अंशके भीतर आरोही हो तो तिपुरा घर होगा, ५ अंश से उपरान्त अवरोही हो तो दोपुरा परमोच्च ५ अंश पर हो तो चौपुरा और लग्न में धन राशि बलवान् हो तो तिपुरा और जो द्विस्वभाव ३ । ६ । १२ राशि हैं इन में दोपुरा कहना ॥ १९ ॥

दोधकम् ।

मेषकुलीरतुलालिघटैः प्रागुत्तरतो गुरुसौम्यगृहेषु ।
पश्चिमतश्च वृषेण निवासो दक्षिणभागकरौ मृगसिंहौ ॥२०॥

टीका—लग्न में १ । ४ । ७ । ८ । ११ ये राशियां वा इन के अंश हों तो उस घरमें वास्तु से पूर्व जन्म और ९ । १२ । ३ । ६ ये राशियां

वा इनके अंश हो तो उत्तर को, २ से पश्चिम ओर, ४ । १० से दाक्षिण की ओर प्रसव हुआ कहना ॥ २० ॥

वैतालीयम् ।

प्राच्यादिगृहे क्रियादयो द्वौद्वौ कोणगता द्विमूर्तयः ।
शय्यास्वपि वास्तुवद्वदेत्पादैः षट्त्रिनवान्त्यसंस्थितैः॥ २१ ॥

टीका–सूतिका स्थान घरके किस ओर था कहने में १ । २ राशि लग्न में हो तो घर के पूर्व, और ३ से आग्नेय, ४।५ दाक्षिण, ६ नैर्ऋत्य,७।८ पश्चिम, ९ वायव्य, १० । ११ उत्तर, १२ ईशान, जैसा पहिले वास्तु कहा वैसाही यहां जानना, लग्न द्वितीय राशि के स्थान में खाट का शिर तीसरी बारहवीं के स्थान में शिराने के २ पावे इनमें तीसरे से दाहिना बारहवें से बांयां और छठी और नवीं राशि के सदृश पायन्त के पावे इनमें भी छठे से दाहिना नवीं से बायां और राशियों से और अङ्ग ये खाट के लक्षण इस कारण से हैं कि जहां द्विस्वभाव राशि वहां विन त्वचा कच्ची लकड़ी अथवा कील होगी जिस राशि में पाप ग्रह हो उस अङ्ग में भी यही फल कहना ॥ २१ ॥

अनुष्टुप् ।

चन्द्रलग्नान्तरगतैर्ग्रहैः स्युरुपसूतिकाः ।
बहिरन्तश्चचक्रार्द्धे दृश्यादृश्येन्यथापरे ॥ २२ ॥

टीका–लग्न से उपरान्त चन्द्रमा पर्यन्त बीच में जितने ग्रह हों उतनी वहां उपसूतिका (सूतिका घर में और स्त्री) होंगी उनके रूप वर्ण आयु उन्हीं ग्रहों के सदृश कहना और (चक्रार्द्धे) लग्न से सातवें स्थान पर्य्यन्त जितने ग्रह हों उतनी स्त्रियां समीप भीतरही होंगी सप्तम से द्वादशपर्यन्त जितने हों उतनी घर से बाहर होंगी यहाँ कोई आचार्य बाहर भीतरमें उलटा मानतेहैं– यथा लग्नसे सप्तम पर्यन्त जितने ग्रह हों उतने बाहर और सप्तमसे द्वादश पर्यन्त जितने ग्रह हों उतने भीतर इतने में कोई ग्रह अपने उच्च वा वक्र का हो तो

तिगुणी स्त्री कहनी और कोई ग्रह उच्चांश स्वांश स्वीय द्रेष्काण में हो तो द्विगुणी स्त्री कहनी ॥ २२ ॥

दोधकम्।

लग्ननवांशपतुल्यतनुः स्याद्वीर्ययुतग्रहतुल्यवपुर्वा।
चन्द्रसमेतनवांशपवर्णः कादिविलग्नविभक्तभगात्रः ॥ २३ ॥

टीका–लग्न में जो नवांश हैं उसके स्वामी के तुल्य रूप बालकका होगा, रूप (मधुपिङ्गलदृक्) इत्यादि पहिले कहे है, अथवा सब से बहुत बल जिस ग्रह का है उस का स्वरूप होगा राशि बल विशेष हो तो लग्न नवांश के तुल्य और ग्रह बल विशेष हो तो ग्रह के तुल्य और चन्द्रमा जिस नवांश पर है उस्के स्वामी के तुल्य वर्ण "रक्तश्यामो भास्करो" इत्यादि पहिले वह ग्रह दीर्घ राशि का स्वामी हो और दीर्घ राशि में बैठा हो तो उस राशि के तुल्य अङ्ग दीर्घ होगा, वैसे ही ह्रस्व में ह्रस्व, मध्य में मध्य कहना ॥ २३ ॥

शार्दूलविक्रीडितम्।

कंदृक्छ्रोत्रनसाकपोलहनवो वक्त्रं च होरादय-
स्ते कंठांशकबाहुपार्श्वहृदयक्रोडानि नाभिस्ततः।
बस्तिः शिश्नगुदे ततश्च वृषणावूरू ततो जानुनी
जंघांघ्रीत्युभयत्र वाममुदितैर्द्रेष्काणभागैस्त्रिधा ॥ २४ ॥

टीका–लग्न द्रेष्काणके वशसे ३ भागों में चिह्नादि होते हैं पहिला द्रेष्काण हो तो लग्न राशि शिर, दूसरी बारहवीं नेत्र, ३। ११ कान, ४।१० नाक,५।९ गाल,६।८हनु (ठोडी)७मुख इन में लग्नसे सप्तम पर्यन्तकी दाहिनी ओर के अङ्ग और सप्तमसे द्वादश पर्यन्त वाम अङ्ग सर्वत्र यह विचार कहना दूसरा द्रेष्काण हो तो कण्ठ लग्न राशि १।, और २।१२ कन्धा, ३। ११ बाहु, ४।१० बगल, ५।९ हृदय, ६।८ पेट, ७ नाभि वाम दक्षिण विभाग पूर्ववत् तीसरा द्रेष्काण हो तो लग्न बस्ति लिङ्ग और नाभिके मध्य,

२।१२ लिङ्ग और गुदा, ३ । ११ वृषण, ४।१० ऊरु, ५।९ जानु,६।८ घुटने, ७ पैर इसी प्रकार द्रेष्काणों के विभाग हैं ॥ २४ ॥

शार्दूलविक्रीडितम् ।

तस्मिन् पापयुते व्रणं शुभयुते दृष्टे च लक्ष्मादिशे-
त्स्वर्क्षांशे स्थिरसंयुतेषु सहजः स्यादन्यथागंतुकः ।
मंदे श्मानिलजोऽग्निशस्त्रविषजो भौमे बुधे भूभुवः
सूर्ये काष्ठचतुष्पदेन हिमगौ शृंग्यब्जजोन्यैः शुभम् ॥ २५ ॥

टीका–जिस राशिके द्रेष्काण में पाप ग्रह है वह राशि तुल्य अङ्ग में चोट वा छिद्र करती है, उस पापग्रह के साथ शुभग्रह भी हो वा शुभग्रह देखै तो लक्ष्म (तिल लाखन मसा) आदि होवै, जो वही ग्रह अपनी राशि वा अंश में हो वा स्थिर राशि नवांश में हो तो उस अङ्ग में तिलादि चिह्न जन्महीसे होगा, इस से विपरीत हो तो वह चिह्न पीछे होगा, यदि वह चिह्नकर्ता ग्रह शनि हो तो पाषाण पत्थर से वा अग्नि से चिह्न होगा सूर्य मङ्गल हो तो अग्नि वा शस्त्र वा विष से, बुध होतो पृथ्वी पर गिर जाने से, सूर्य होतो काष्ठसे, चन्द्रमा होतो सींग वाले वा जलचर जीवसे, और ग्रह शुभ होते हैं व्रणकारक नहीं हैं ॥ २५ ॥

हरिणीवृत्तम् ।

समनुपतिता यस्मिन्भागे त्रयः सबुधा ग्रहा
भवति नियमात्तस्यावाप्तिः शुभेष्वशुभेषु वा ।
व्रणकृदशुभः षष्ठे देहे तनोर्भसमाश्रिते
तिलकमसकृद्दृष्टः सौम्यैर्युतश्च स लक्ष्मवान् ॥ २६ ॥

इति बृहज्जातके सूतिकाध्यायः ॥ ५ ॥

टीका–बुध संयुक्त तीन ग्रह और शुभ या पाप जैसे हों बुध संयुक्त ४ होनेसे वाम दक्षिण जिस विभाग में बैठें उस अंङ्ग पर अवश्य चिह्न करें उन में भी जो ग्रह अधिक बली है उस्की दशा में वह व्रण चोट होगा,

और कोई पाप ग्रह छठा हो तो "कालाङ्गानीति" श्लोक प्रकार से जिस अङ्ग में है उसपर व्रण करैगा वह पाप ग्रह अपनी राशि अंश में वा शुभ युक्त हो तो वह व्रण गर्भ ही से होगा और प्रकार से पीछे होने वाला कहना, लक्ष्म रोमों की पुञ्जी को कहते हैं ॥ २६ ॥

इति महीधरविरचितायां बृहज्जातकभाषाटीकायां
सूतिकाऽध्यायः पञ्चमः ॥ ५ ॥

अरिष्टाध्यायः ६.

विद्युन्माला ।

संध्यायां हिमदीधितिहोरा पापैर्भान्तगतैर्निधनाय ।
प्रत्येकं शशिपापसमेतैः केंद्रैर्वा स विनाशमुपैति ॥ १ ॥

टीका–सूर्य बिम्ब के आधा अस्त होने से डेढ़ घड़ी पहिलेसे डेढ घड़ी पीछे तक सन्ध्या कहते हैं ऐसे समय में जिसका जन्म हो और लग्न में चन्द्रमा की होरा हो और कोई भी पापग्रह राशि के अन्त्य नवांशक में हो तो वह बालक नहीं बचेगा, अथवा चन्द्रमा केन्द्र में पापयुक्त हो और तीनों केन्द्रों में पापग्रह हों तौ भी वही फल होगा ॥ १ ॥

इन्द्रवज्रा ।

चक्रस्य पूर्वोत्तरभागगेषु क्रूरेषु सौम्येषु च कीटलग्ने ।
क्षिप्रं विनाशं समुपैति जातः पापैर्विलग्नास्तमयाभितश्च २॥

टीका–कुण्डली में लग्न से सप्तमपर्यन्त पूर्व भाग है परन्तु लग्न के जितने नवांश भुक्त हों उतने ही चतुर्थ के भी पूर्वार्द्ध में यहां गिनती नहींहै चक्र पूर्वार्द्ध में पापग्रह हों और उत्तरार्द्ध में शुभ ग्रह हों और लग्न में कर्क वा वृश्चिक राशि हो तो वह बालक शीघ्र ही नष्ट हो जावे, अथवा बारहवां पापग्रह लग्न में आने को हो और छठा पापग्रह सप्तम में जाने को हो तो मृत्यु योग है ऐसे ही दूसरे आठवें पापग्रह वक्र हो तो मृत्यु योग है और प्रकार अर्थ है कि लग्न में वा सप्तम में पाप कर्त्तरी हो तो मृत्यु योग है॥२॥

अनुष्टुप् ।

पापावुदयास्तगतौ क्रूरेण युतश्च शशी ।
दृष्टश्च शुभैर्न यदा मृत्युश्च भवेदचिरात् ॥ ३ ॥

टीका-पापग्रह लग्न और सप्तम में हो और चन्द्रमा पापयुक्त हो शुभ ग्रह चन्द्रमा को न देखे तो बालक शीघ्र मर जावे ॥ ३ ॥

अनुष्टुप् ।

क्षीणे हिमगौ व्ययगे पापैरुदयाष्टमगैः ।
केन्द्रेषु शुभाश्च न चेत् क्षिप्रं निधनं प्रवदेत् ॥ ४ ॥

टीका-क्षीण चन्द्रमा बारहवां हो और लग्न और अष्टम स्थान में पापग्रह हो और किसी केन्द्र में भी शुभग्रह न हो तो बालक की मृत्यु कहनी ॥ ४ ॥

अनुष्टुप् ।

क्रूरसंयुतः शशी स्मरान्त्यमृत्युलग्नगः ।
कण्टकाद्बहिः शुभैरवीक्षितश्च मृत्युदः ॥ ५ ॥

टीका-चन्द्रमा पापयुक्त ७ । १२ । ८ । १ इन भावों में हो और चन्द्रमा को शुभ ग्रह न देखे और शुभग्रह केन्द्र में हों तो बालक की मृत्यु कहनी ॥ ५ ॥

पृथ्वीछन्दः ।

शशिन्यरिविनाशगे निधनमाशु पापेक्षिते
शुभैरथ समाष्टकन्दलमतश्च मिश्रैः स्थितिः ।
असद्भिरवलोकिते बलिभिरत्र मासं शुभे
कलत्रसहिते च पापविजिते विलग्नाधिपे ॥ ६ ॥

टीका-चन्द्रमा छठा वा आठवां हो पापग्रह उसे देखें तो शीघ्र मृत्यु होगी और उसी चन्द्रमा को शुभग्रह भी देखें तो आठ वर्ष में होगी, शुभ पापी की दृष्टि बराबर चन्द्रमा पर हो तो ४ वर्ष बचैगा, चन्द्रमा पर ६ । ८

भाव में किसी की भी दृष्टि न हो तो आरिष्ट भी नहीं होगा, जिस का कृष्ण पक्ष में दिन का जन्म वा शुक्ल पक्ष में रात्रि का जन्म हो और चन्द्रमा पापयुक्त ६। ८ में भी हो तौ भी आरिष्ट नहीं होगा, जो छठे आठवें स्थान में बुध वा बृहस्पति वा शुक्र हो और उसे बलवान् पापग्रह देखें। तो वह बालक १ महीने बचेगा जिसका लग्नेश पापयुक्त वा पापजित अर्थात् ग्रहयुद्ध में हारा हुवा हो तो एक महीना बँचै उपरांत मरै ॥ ६ ॥

मन्दाक्रांता ।

लग्ने क्षीणे शशिनि निधनं रन्ध्रकेन्द्रेषु पापैः
पापान्तस्थे निधनहिबुकद्यूनसंस्थे च चन्द्रे ।
एवं लग्ने भवति मदनाच्छिद्रसंस्थैश्च पापै-
र्मात्रा सार्द्धं यदि न च शुभैर्वीक्षितः शक्तिभृद्भिः ॥ ७ ॥

टीका--लग्न में क्षीण चन्द्रमा हो और अष्टम और केन्द्रों १।४।७।१० में पापग्रह हों तो बालकका शीघ्र मृत्यु होवै और पाप ग्रहों के बीच चन्द्रमा अष्टम चतुर्थ सप्तम भाव में हो तौभी मृत्यु कहना और लग्न में पापान्तःस्थ चन्द्रमा सातवें वा आठवें स्थान में हो और चन्द्रमा को बलवान् शुभग्रह न देखें तो बालक तथा उस्की माता साथ ही मरें चन्द्रमा पर शुभग्रहों की दृष्टि भी हो तो बालक मरे और माता बँच जाय ॥ ७ ॥

इन्द्रवज्रा ।

राश्यन्तगे सद्भिरवीक्ष्यमाणे चन्द्रे त्रिकोणोपगतैश्च पापैः ।
प्राणैः प्रयात्याशु शिशुर्वियोगमस्ते च पापैस्तुहिनांशुलग्ने ॥ ८ ॥

टीका--चन्द्रमा किसी राशि के अन्त्य नवांशक में हो शुभग्रह न देखें पापग्रह त्रिकोण ९।५ में हो तो बालक शीघ्र मरे लग्न में चन्द्रमा सप्तम में पाप हो तो मृत्यु होवै ॥ ८ ॥

हरिणीवृत्तम् ।

अशुभसहिते ग्रस्ते चन्द्रे कुजे निधनाश्रिते
जननिसुतयोर्मृत्युर्लग्ने रवौ तु सशस्त्रजः ।
उदयति रवौ शीतांशौ वा त्रिकोणविनाशगै-
र्निधनमशुभैर्वीर्य्योपेतैः शुभैर्न युतेक्षिते ॥ ९ ॥

टीका—शनि राहु के साथ चन्द्रमा लग्नमें हो और मङ्गल अष्टम स्थानमें हो तो मा बेटा दोनों की मृत्यु होवै इस योग में सूर्य्य भी साथ हो तो उनकी मृत्यु शस्त्र से होवै वा शनि बुध युक्त ग्रस्त सूर्य लग्न में और मङ्गल अष्टम हो यह भी अर्थ है ग्रस्त, सूर्य अमावस्या के दिन राहु केतु युक्त को कहते हैं और लग्न में सूर्य वा चन्द्रमा हो त्रिकोण ९ । ५ अष्टम में पाप-ग्रह हो बलवान् शुभग्रह न देखे न युक्त हो तो मृत्यु होवै ॥ ९ ॥

अपरवक्त्रम् ।

असितरविशशाङ्कभूमिजैर्व्ययनवमोदयनैधनाश्रितैः ।
भवति मरणमाशु देहिनां यदि बलिना गुरुणा न वीक्षिताः॥१०॥

टीका—बारहवां शनि नवम सूर्य लग्न का चन्द्रमा अष्टम मङ्गल हों इन को बलवान् बृहस्पति न देखै तो बालक की शीघ्र मृत्यु होवै बृहस्पति किसी को देखे किसी को न देखे तो आरिष्ट मात्र कहना, पञ्चम बृहस्पति इन सबको देखे परन्तु बलहीन हो तो दोषपरिहार नहीं करता ॥ १० ॥

पुष्पिताग्रा ।

सुतमदननवान्त्यलग्नरन्ध्रेष्वशुभयुतो मरणाय शीतरश्मिः ।
भृगुसुतशशिपुत्रदेवपूज्यैर्यदि बलिभिर्न विलोकितो युतो वा ॥११॥

टीका—क्षीण चन्द्रमा पाप युक्त लग्न वा पञ्चम वा सप्तम वा नवम वा अष्टम हो और उसे बलवान् शुक्र बुध बृहस्पति न देखें तो बालक की मृत्यु होवै ॥ ११ ॥

भ्रमरविलसितम् ।

योगे स्थानं गतवति बलिनश्चन्द्रे स्वं वा तनुगृहमथवा ।
पापैर्दृष्टेबलवति मरणं वर्षस्यान्ते किल मुनिगदितम् ॥ १२ ॥

इति बृहज्जातकेऽरिष्टाध्यायः ॥ ६ ॥

टीका—जिन योगों के फल का समय नहीं कहा उनमें योग करनेवाले ग्रहों में से जो बलवान् है उस्की स्थित राशि पर जब चन्द्रमा आवै तब अरिष्ट होगा अथवा चन्द्रमा जो पुनः उसी अपनीवाली राशि में जब आवै परंतु इतने विचार एक वर्ष के भीतर चाहियें जिन योगों का समय नहीं कहा उनका फल वर्ष भीतर हो जाता है ॥

अरिष्टाध्याय के पीछे अरिष्ट भङ्ग सर्वत्र रहता है परंतु यहां आचार्य ने कुछ इसी अध्याय और कुछ राज योगों में अंतर्भाव कर दिया यह सर्वसाधारण में नहीं जाने जाते इस कारण मैं कुछ अरिष्ट हारक योगों को दोहों में लिखता हूं ।

दोहा ।

प्रथमभवन में देव गुरु, अति बलवन्त जो होय । योग अरिष्ट जहां वहां, छिनमें देवै खोय ॥ १ ॥ जोरवन्त तनु भावपति, पाप न देखे कोय । शुभ देखें धन जन सहित, दीरघजीवी होय ॥ २ ॥ देव दैत्य गुरु चन्द्र सुत, दरखाने में चंद । जौ भी अष्टम पाप युत, करै बुरा फल बन्द ॥ ३ ॥ शुभराशी में पूण शशि, शुभ ग्रहों के बीच । देखे उशना रिष्टको, कूट बहावै कीच ॥ ४ ॥ विधुसुत अरु दोनों गुरू, कण्टक में बलवन्त । जौ भी पाप सहाय हों, करैं दुरित का अन्त ॥ ५ ॥ शुक्लपक्ष निशि जन्म में, चन्दा पूर्ण शरीर । बैठा अष्टम षष्ठ में, करै नहीं कछु पीर ॥ ६ ॥ शुभराशी द्रेष्काण पुनि, शुभराशी शुभथान । शुभ खेचर शुभ देत हैं, दवै मृत्यु की खान ॥ ७ ॥ चन्द्रराशि पति शुभखचर, केन्द्रकोणमें होय । योगजनित सब दुष्ट फल, रहै न पूरा कोय ॥ ८ ॥ सफल अशुभ शुभ वर्ग में, देखें गुरु बलवन्त ।

सबहिं बुराई दूरकर, करते सौख्य नितन्त ॥ ९ ॥ उपचय में राहू बसे, देखें शुभ बलवान । बाल अरिष्ट विनाश के, आयू देत निदान ॥ १० ॥ सर्व गगनचर जन्ममें, शीर्षोदयके होय । नष्ट होतहै सब दुरित, वक्रगती जु नाहिं कोय ॥ ११ ॥ लग्न चन्द्रको सातही, देखे ग्रहगत लाज । कहत मही वह बालका, सुखी करैगा राज ॥ १२ ॥

इति महीधरकृतायां बृहज्जातकभाषाटीकायामरिष्टाऽ-
ध्यायः षष्ठः ॥ ६ ॥

आयुर्दायाऽध्यायः ७.

पुष्पिताग्रा ।

मययवनमणित्थशक्तिपूर्वैर्दिवसकरादिषु वत्सराः प्रदिष्टाः ।
नवतिथिविषयाश्विभूतरुद्रदशसहिता दशाभिः स्वतुङ्गभेषु ॥१॥

टीका—दशा अंशायु पिण्डायु निसर्गायु तीन प्रकारकी कहते–हैं यहां आचार्य ने पहिले और आचार्यों के मत २ प्रकार काटकर आप बहुत ग्रन्थोंसे प्रमाण जानकर अंशायु दशा स्थापन करी है वह पीछे लिखी जायगी, परन्तु उस में अनुपात की रीति प्रकट नहीं यहां पूर्वमत में प्रकट है अत एव पहिले वही मत जो मयनाम आचार्य यवनाचार्य मणित्थाचार्य शक्ति, पराशर आदियोंने कहा सो लिखा जाता है, दशा के लिये सूर्यादि ग्रहों के वर्षसूर्य्य के ९ दश सहित १९, चन्द्रमा १५ दश सहित २५, एवं दश सहित सब के हैं मङ्गल १५, बुध १२, बृहस्पति १५, शुक्र २१, शनि २० ये वर्ष प्रमाण हैं ॥ १ ॥

मन्दाक्रान्ता ।

नीचेऽतोऽर्द्धं ह्रसति हि ततश्चान्तरस्थेऽनुपातो
होरा त्वंशप्रतिममपरे राशितुल्यं वदन्ति ।

हित्वा वक्रं रिपुगृहगतैर्हीयते स्वत्रिभागः
सूर्याच्छन्नद्युतिषु च दलं प्रोह्य शुक्रार्कपुत्रौ ॥ २ ॥

टीका-जो ग्रह परम उच्च हो वह पूरे वर्ष पाता है और परम नीच में आधा पाता है जैसे सूर्य मेष के १० अंश पर होगा तो १९ वर्ष पूरे दशा पावैगा जो परम नीच तुलाके १० अंश पर हो तो आधा (९ वर्ष ६ महीने) पावैगा इनके बीच हो तो (अनुपात) त्रैराशिक की रीति से करना उच्चके समीप तत्काल ग्रह स्पष्ट हो तो उच्चराश्यादि के साथ, नीच के समीप हो तो नीच राश्यादिके साथ त्रैराशिक की रीतिसे अनुपात कर्ना । यथा ग्रह स्पष्ट अपने नीच स्पष्ट में घटाके जो अंक रहै उससे उसी ग्रहके उक्त वर्षों का आधा अर्थात् नीच वर्षको गुण दे ६ राशिसे भाग दे जो लब्धि हो उसे उसी ग्रहके नीच वर्षों में जोडदे जो हो वह उस ग्रह की वर्षादि दशा होती है । यदि ग्रह स्पष्ट उच्चके समीप होकर उच्चसे आगे हो तो ग्रहस्पष्टमें उच्चको घटावे, यदि ग्रहस्पष्ट उच्चसे पीछे हो तो ग्रहस्पष्ट हीको उच्चमें घटावे शेषसे उसी ग्रहके उक्त वर्षका आधा अर्थात् नीच वर्षको गुणदे और छः राशिसे भागदे जो लब्ध वर्षादि हो उसको उसीग्रहके उच्च वर्षमें घटा देनेसे दशा होगी।और यदि ग्रहस्पष्ट नीचके समीपहोकर नीचसे आगे हो तो ग्रहस्पष्टमें नीचको घटावे, यदि ग्रहस्पष्ट नीच से पीछे होतो । उदाहरण शुक्र स्पष्ट ३।२५।१७।३८ शु० उच्च ११। २७।०।० नीच ५।२७।०।० उच्चवर्ष २१।०।० नीच वर्ष १० । ६।०।० नीचमें ग्रह स्पष्ट घटाया २।१।४२।२२ नीच वर्षसे गुण दिया भागहार क्षेपक ६।०।०।० छः राशिसे भाग लिया लब्धि ३।७।५।४९ शुक्रका नीच वर्षों १०।६ में जोडा तो १४।१।५।४९ शुक्र दशा हुई जब नीच में स्पष्ट न घटै तो उदाहरण भौमस्पष्टः४।९।४५।५३ उच्च ९ । २८ ।०।० नीच ३।२८।०।० उच्च वर्ष १५।०।०।० नीच वर्ष ७।६।०।० स्पष्ट में नीच घटाया ०।११।४५।५३ इस से, नीच वर्ष गुणाकर क्षेपक ६।०।०।० से भाग लिया लब्धि ०।५।२६।२८ नीच वर्षों में जोड दिया ७।११।२६।२८

भौम दशा हुई, ऐसाही सब का जानना। लग्न दशा के हेतु जितने नवांशक लग्न के भुक्त हुये हों उतने ही वर्ष लग्न की दशा होती है जैसे लग्न स्पष्ट ७। २५। १०। १७ है २३। २० अंशपर्यन्त ७ नवांश भुक्त हुये यही ७ वर्ष मिले अवशेष १। ५० का त्रैराशिक जैसा १।५० को १२ से गुण दिया ३। २० से भाग लिया लब्धि ६ महीने हुये शेष १२० को ३० से गुण दिया ३। २० अंश की कला २०० से भाग लिया लब्धि १८ दिन हुये शेष कुछ नहीं है यदि होता तो ६० से गुणकर २०० के भाग देने से घडी मिलती यह वर्ष ७ मास ६ दिन १८ घटी० लग्न की दशा हुई और किसी का मत है कि लग्न स्पष्ट में जितनी राशियां भुक्ति गईं उतने वर्ष लग्न दशा होती है जैसे इसी लग्न स्पष्ट में ७ राशि भुक्त हुई यही ७ वर्ष हुये बाकी २५।१०।१७ हैं इनका विकल पिण्ड ९०६१७ महीना प्रमाण १२ से गुण दिया १०८७४०४ अंश ३० का विकला पिण्ड १०८००० भाग दिया तो लब्धि मास १० दिन २ घड़ी ३ हुये महीनाः मिले उपरान्त शेष अंक को ३० से गुणाकर १०८००० से भाग दिया लब्धि दिन फिर भी शेषांक को ६० से गुण दिया उसी भागहार से भाग दिया तो लब्धि घड़ी मिलेंगी इस रीति से लग्न दशा ७।१०।२।३ हुई अब यहां दो प्रकार की लग्न दशा कही है इसमें निश्चय यह है कि षड्वर्ग में लग्नेश का बल बहुत हो तो राशि तुल्य वर्ष और लग्न नवांशेष विशेष बलवान् हो तो राशि को छोड़ कर अंश तुल्य वर्ष लग्नदशा होती है। जो ग्रह शत्रु राशि में हो तो उसका तीसरा भाग घटा देना परन्तु मङ्गल शत्रु राशि में भी नहीं घटता है; दूसरा प्रकार यह है कि जो ग्रह वक्र हो रहा है वह शत्रुराशि में भी हो तो तीसरा भाग नहीं घटता यही अर्थ ठीक है। जो ग्रह अस्तङ्गत है उसका अपने वर्षों का आधा घट जाता है परन्तु शुक्र और शनि अस्त हुये में भी पूरे ही रहते हैं आधे नहीं घटते ॥ २ ॥

प्रहर्षिणी ।

सर्वार्द्धत्रिचरणपञ्चषष्ठभागाः क्षीयन्ते व्ययभवनादसत्सु वामम् ।
सत्स्वर्द्धं ह्रसति तथैकराशिगानामेकोंशं हरति बली तथाह सत्यः ३

टीका—जो पाप ग्रह बारहवां हो उसके पूरे वर्ष घट जाते हैं, ग्यारहवेंके आधे, दशमके तीसरा भाग, नवम के चौथाई, आठवें के पञ्चमांश, सप्तमके छटा भाग घटता है और शुभग्रह का आधा घटेगा यथा बारहवेंमें आधा ग्यारहवांमें चौथाई, दशवांमें छठा भाग, नवांमें आठवां भाग, अष्टममें दशमांश, सातवांमें बारहवां भाग घटता है जो एक ही स्थान में दो तीन वा बहुत ग्रह हों तो सब का भाग नहीं घटता जो उनमें सब से बलवान् है उसीका एक भाग घटता है अर्थात् जिस भावमें जिस पाप वा शुभ में जितना घटता है उतना एकही बलवान् ग्रह घटेगा और यह भी स्मरण रखना चाहिये कि क्षीण चन्द्रमा और पाप युक्त बुध क्रूर तो हैं परन्तु यहां उन का पाप वाला काम नहीं होगा अर्थात् पूरा भाग नहीं घटेगा आधा घटेगा ॥ ३ ॥

वसन्ततिलका ।

साद्धोंदितोदितनवांशहतात्समस्ता-
द्भागोष्टयुक्तशतसंख्यमुपैति नाशम् ।
क्रूरे विलग्नसहिते विधिना त्वनेन
सौम्येक्षिते दलमतः प्रलयं करोति ॥ ४ ॥

टीका—अब और संस्कार कहते हैं—उदित नवांश साद्धोंदित करना अर्थात् लग्न के जितने नवांश भुक्त हुये हों वे उदित नवांश कहाते हैं जिस नवांश में जन्म भया वह जितना भुक्त हुवा है उसपरसे त्रैराशिकसे जो फल मिले वह उदित नवांश में जोड देनेसे साद्धोंदित उदित नवांश होता है इस्का पिण्ड करके लग्न में जो पापग्रह है उसकी दशा का पिण्ड गुणना १०८ के भाग लेनेसे जो वर्ष मिलें वह उस ग्रह के दशा वर्षादि में घटाय देना जो उस

लग्नस्थ पापग्रह पर शुभग्रहकी पूर्ण दृष्टि हो तो उस फल का आधा न्यून करना पूरा नहीं घटाना। उदाहरण लग्न स्पष्ट ७।२५।१०।१७॥२३ अंश २० कला पर्यन्त ७ नवांश भुक्त हुये शेष आठवें नवांशक के १ अंश ५० कला हैं इनका त्रैराशिक १। ५० का कला पिण्ड ११० को२०० से भाग दिया लब्धि० शेष ११० को १२ से गुणा किया २०० से भाग दिया लाभ ६ बाकी १२० को ३० से गुणा किया २०० से भाग लिया फल १८ शेषको ६० से गुण कर वही हारसे भाग लेना चौथा फल मिलेगा यहां अंक शेष न रहा लब्धि० अब लाभके ४ अंक ०।६।१८।०। में गत नवांश ७ को जोड दिये ७।६।१८।० यह सार्द्धोदित उदित नवांशहुआ लग्न में पापग्रह शनि के दशा वर्षादि १३।८।१४।४५ इसमें ७। ६। १८। ० घटा दिये ६। १।२६। ४५ ये शनि की दशा हुई लग्न के इस शनि पर शुभग्रह की दृष्टि है इस कारण सार्द्धोदित उदित नवांश का आधा ३। ९। ९। ० घटाया ९।११।५।४५ यह शनि की दशा हुई जब लग्न में पापग्रह वा शुभग्रह २ वा ३ वा ४। ५। ६ हो तो जो ग्रह अंशोंमें लग्नांशकों के समीप है वही घटेगा तभी ग्रहों की दशा नहीं घटेगी और इस संस्कार में कोई ऐसा अर्थ करते हैं कि जो सार्द्धोदित उदित नवांश है उससे सम्पूर्ण ग्रहों के आयुयोग गुणना, १०८ से भाग लेना जो लब्धि हो समस्तायु पिण्ड में घटा देना जो लग्न में शुभग्रह की दृष्टि भी हो तो उस फल का आधा घटाना घटाय के जो शेष रहै वह समस्त ग्रह दशायु होती है उपरान्त दशा ही की गणना से सब ग्रहों के दशा वर्षादि लेने। जैसे शनिकी दशा निकालनी हो तो शनिकी दशा वर्षादि जो पहिले गणित से आई है उससे समस्त ग्रह दशायु पिण्ड जो मिला है उसको गुणना १२० वर्ष ५ दिन से भाग लेना जो लब्धि मिलै वह शनि की दशा हुई इसी प्रकार सभी ग्रहोंकी दशा बनैगी; जो लग्न में बहुत ग्रह हों तो लग्नांशक के समीप

कोई पापग्रह हो तो तब यह संस्कार करना नहीं तो इसका कुछ उदाहरण आगे 'यस्मिन्योगेत्यादि' आठवें श्लोक की टीका में भी लिखा जायगा यही अर्थ ठीक है ॥ ४ ॥

शिखरिणी ।

समाः षष्टिर्द्विघ्ना मनुजकरिणां पञ्च च निशा
हयानां द्वात्रिंशत् खरकरभयोः पञ्चककृतिः ।
विरूपा साप्यायुर्वृषमहिषयोर्द्वादश शुनां
स्मृतच्छागादीनां दशकसहिताः षट् च परमम् ॥ ५ ॥

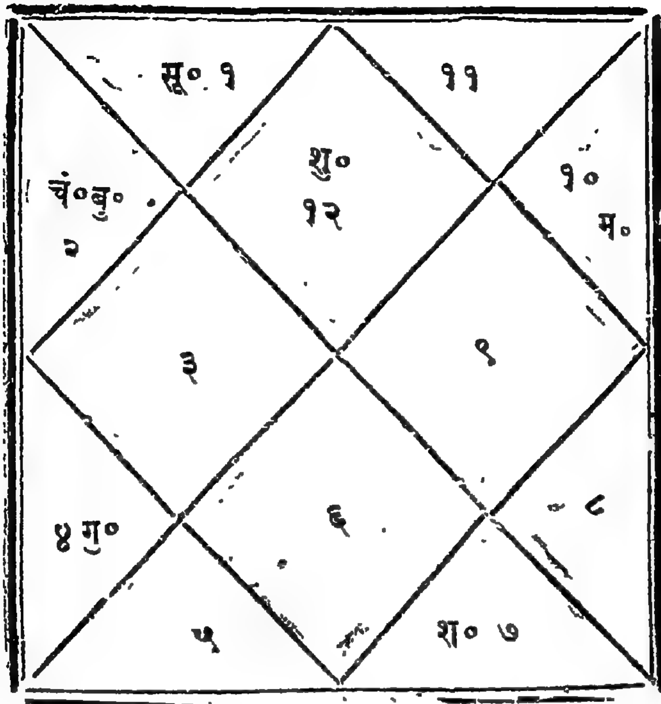
टीका–परमायु प्रमाण कहते हैं–मनुष्य और हाथी की परमायु १२० वर्ष ५ दिन है, घोडे की ३२ वर्ष, गधा व ऊंटकी २५ वर्ष गो बैल भैंसकी २४ वर्ष और कुत्ते आदि नखियों की १२ वर्ष, बकरे भेडी आदिकी १६ वर्ष यह परमायु प्रमाण पूरा नहीं होता केवल गणित के हेतु निरूपित है घोडे आदि कों की दशामें जो काम मनुष्यों के १२० वर्ष ५ दिनसे किया जाता उसी रीति से ३२ आदि वर्षों से करना ॥ ५ ॥

पुष्पिताग्रा ।

अनिमिषपरमांशके विलग्ने शशितनये गवि पञ्चवर्गलिप्ते ।
भवति हि परमायुषः प्रमाणं यदि सकलास्सहितास्स्वतुङ्गभेषु॥६॥

टीका–जब मीन लग्न नवमनवांशक पर हो और बुध वृषके २५ कलामें हो सभीग्रह अपने अपने परमोच्चोंमें हों तो पूर्णायु जैसे मनुष्यों के १२० वर्ष ५ दिन हैं पूरी आयु मिलती है यहां अनुपातादि गणितों के प्रकट समझने के लिये फिर भी उदाहरण लिखा जाताहै ॥

सू०	चं०	मं०	बु०	बृ०	शु०	श०	ल०
०	१	९	१	३	११	६	११
९	२	२७	२५	४	२६	१९	२९



परमोच्चगत होने से सूर्यने १९ चन्द्रमाने २५ वर्ष पाये मङ्गल को उच्चगत होने से पूरे १५ वर्ष मिले परन्तु ग्यारहवें भावमें होने से चक्रपात क्रम कर्के आधा घट गया शेष ७ वर्ष ६ महीने रहे, बृहस्पति के १५ शुक्र के २१ शनि के १६ वर्ष लग्न अंशतुल्य ९ वर्ष अब बुध का उच्च कन्या है यहां सूर्य मेषका है तो बुध कन्या में होना असम्भव है, क्योंकि निरक्षदेश (ध्रुवके समीपवर्ती) देशोंको छोडके अन्यदेशोंमें बुध शुक्र सूर्य से १ । २ राशि से उपरान्त अलग नहीं होते कदाचित् शुक्र तीन राशि पर भी पहुंच सक्ता है यहां बुध १ । ० । २५ स्पष्ट है नीच के समीप होने से नीच ध्रुवक ११ । १५ । ० बुध स्पष्ट में वटाया १ । १५ । २५ रहा इसका लिप्तापिण्ड २७२५ अब त्रैराशिक जैसे बुध के परमनीच वर्ष ६ से बुध स्पष्ट लिप्तापिण्ड २७२५ गुणदिया भगणार्द्ध लिप्ता १०८०० से

भागदिया लब्धि १ । ६ । ५ को बुध के परम नीच वर्षों ६ में जोडदिया ७। ६ । ५ यह बुधने आयु पाई इन सब के आयु जोड़ के १२० वर्ष ५ दिन होते हैं जिसके ऐसे ग्रह पड़ेंगे उसकी परमायु पूरी मिलेगी यह आयुप्रमाण सर्वदा ठीक नहीं है केवल त्रैराशिक के लिये प्रमाण कहे हैं यही ठीक होवे तो इतने से ऊपर आयु कभी नहीं मिलती जब पूर्वोक्त ग्रह स्पष्ट उतने ही हों और बुध १ । ४ । ० । ० स्पष्ट पर हो तो पूर्वोक्त रीतिसे त्रैराशिक करके वर्ष १ मास ७ दिन १८ बुध पाता है यह नीच वर्ष ६ में जोड दिया ७ वर्ष ७ महीने १८ दिन हुये और ग्रहों के पूर्वोक्त ही रहे तो सब का जोड़ १२० वर्ष १ महीना २३ दिन हुये यह पूर्वोक्त परमायु १२० । ० । ५ से अधिक होगया कोई ऐसा अर्थ कहते हैं, कि बुध वृषके २५ कला पर और सभी उच्चराशियों में हो तौभी यह योग पूर्णायु देनेवाला हो जाता है परन्तु यह केवल उनकी बुद्धि का चातुर्य है ॥ ६ ॥

शालिनी ।

आयुर्दायं विष्णुगुप्तोऽपि चैवंदेवस्वामी सिद्धसेनश्च चक्रे ।
दोषस्तेषांजायतेष्टावरिष्टं हित्वा नायुर्विंशतेः स्यादधस्तात् ॥७॥

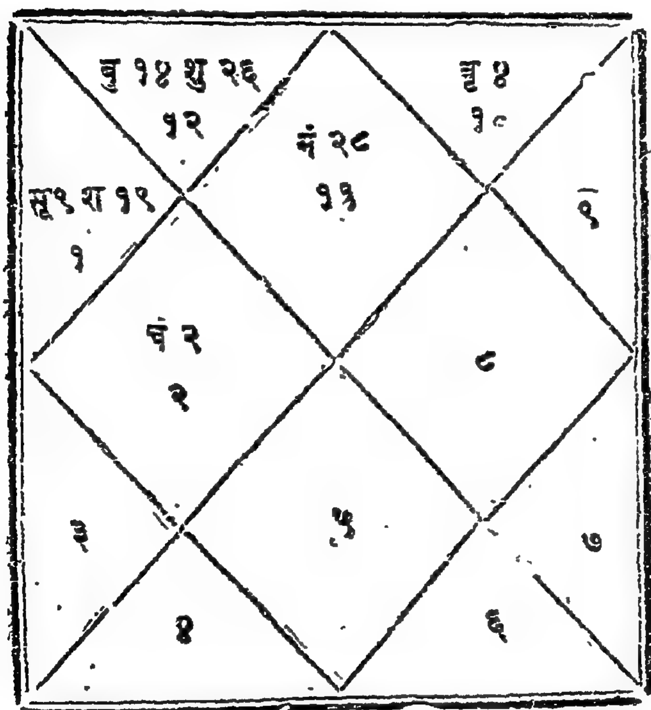
टीका—इस प्रकार दशायु मय यवनादिसे तो पूर्व पठितही है परन्तु विष्णुगुप्त देवस्वामी सिद्धसेन ये आचार्य भी इस पूर्णायुको प्रमाण कर्ते हैं और सत्याचार्य इसमें दूषण रखता है कि एक तो दशा गणनामें अनेक आचार्यों के अनेक मत हैं वराहमिहिर ने एक निश्चय स्थापन नहीं किया कौनसा प्रमाण मानना दूसरे यह है कि बालारिष्ट केवल ८ वर्ष पर्य्यन्त कहे हैं और ये दशा आयु २० वर्षसे किसी किसी की नहीं आती अब जो कि अनेक मनुष्य ८ वर्षसे ऊपर २० वर्षसे नीचे मरजाते हैं उनकी मृत्यु विना बाल्यारिष्ट वा बिनादशायु कैसे हुई यह प्रत्यक्ष दोष है ॥ ७ ॥

शालिनी ।

यस्मिन्योगे पूर्णमायुः प्रदिष्टं तस्मिन्प्रोक्तं चक्रवर्त्तित्वमन्यैः ।
प्रत्यक्षोयंतेषु दोषोऽपरोपि जीवन्त्यायुः पूर्णमर्थैर्विनापि ॥८॥

टीका-और भी दूषण कहते हैं-कि अनिमिष परमांशके विलग्ने इत्यादि योग में १२० वर्ष ५ दिन पूर्णायु कही है-इस योगमें ६ ग्रह उच्च के होते हैं उतने उच्चस्थ होने में चक्रवर्ती योगभी कहा है परञ्च बहुतसे लोग निर्द्धनी पूर्णायु पर्यन्त जीवित देखे जाते हैं ६ ग्रह उच्च का फल पूर्णायु है तो चक्रवर्ती राजा भी होना था सो दरिद्री होकर आयु व्यतीत करते हैं यह भी प्रत्यक्ष दोष है परन्तु ये शालिनी छंद के श्लोक २ जो दूषणवाले हैं और को दूषण देते हैं मैं जानताहूं कि दूषण तो इन्हीं पर है ये श्लोक वराहमिहर कृत नहीं हैं और किसीके मतके उन्होंने लिख दिये हैं क्योंकि आचार्य की प्रतिज्ञा और मतोंको काटकर स्थापन करने की नहीं है जिस प्रकार ये दो श्लोक असम्बद्ध हैं प्रत्यक्ष निरूपण लिखता हूं कि " सार्द्धोदितोदितनवांशहृतात्समस्तात्" इत्यादि से लग्न में पाप ग्रह होने से आयु पात जो किया तो २० वर्षसे कम भी होजाती है पूर्व श्लोक में लिखा है कि आयु २० वर्षसे कम नहीं होती तो कैसे कम नहीं होती इसका उदाहरण यह है कि ग्रह चक्र में राश्यादि लिखे हैं लग्न अंश होने से आयु लग्न ने नहीं पाई मङ्गल तात्कालिक १० । २८ परमोच्च ९ । २८ घटाया शेष १ । ० इसका लिप्तापिण्ड १८०० इससे भौम नीच के महीने ९० गुणदिये भगणार्द्ध लिप्ता १०८०० से भाग दिया लब्धि महीने १५ । ८ यह भौम परमोच्च वर्ष १५ में घटाये १ ३ मास ८ दिन २२ यह मङ्गल ने दशापाई अब बृहस्पति बारहवां होनेसे चक्र पातक्रमसे आधा घटाया शेष वर्ष ३ मास ८ दिन २२ बृहस्पति की दशा हुई ।

सू.	चं.	मं.	बु.	बृ.	शु.	श.	ल.
०	१	१०	११	९	११	०	१०
९	२	२८	१४	४	२६	१९	०
०	०	०	०	०	०	७	०



अब परमोच्च वा परम नीच गतग्रहका शत्रु क्षेत्रमें तीसरा भाग और अस्तमें आधा घटते हैं ऐसा कहा है तो यहां "अनिमिषपरमांशके" इसमें चन्द्रमा के वृष राशिमें होनेसे तीसरा भाग घटता है वो पूर्णायु नहीं होती तात्कालिक मित्रामित्र से यह अयुक्त है यहां शुक्र चंद्रमाका मित्र तात्कालिक नहीं है १२ के शुक्र होने में वृष का चन्द्रमा शत्रु होता है शत्रु होने से तीसरा भाग घटाया तो पूर्णायु नहीं होती अतएव यहां आचार्य का कहना केवल शृङ्गग्राहि न्याय है यहां तो उच्च वा नीच

गत ग्रह शत्रु क्षेत्र में त्रिभाग अस्त में आधा नहीं घटाया जायगा एवं-प्रकार से पूर्वोक्त त्रैराशिक प्रकार से सब ग्रहों के वर्षादि ये हैं सू० १९ वर्ष, चंद्र २५ वर्ष, मं० १३ वर्ष, श० १० वर्ष, लग्न के० अंश होनेसे कुछ नहीं इन सब का जोड़ ९८ वर्ष ६ महीने हुये अब लग्न में मङ्गल पाप ग्रह होनेसे साद्धोंदितेत्यादि कार्य करना चाहिये कुंभ लग्न कुछ भी भुक्त नहीं यहां, मतांतर विधि से मकर की संख्या १० को राशि नवमांश संख्या ९ से गुण दिये तो ९० साद्धोंदित उदित नवांश हुये इसमें उदित गत नवांश १ जोड़ दिया ९१ साद्धोंदित उदित नवांश हुये इससे सर्वायु पिंड ९८ वर्ष ६ मासको गुण दिये नष्ट करने पर ८९६३ । ६ हुये इसमें १०८ का भाग लिया फल वर्ष ८२ मास ११ दिन २८ घड़ी २० हुये, यह सर्वायु पिण्ड ९८ । ६ में घटाया तो शेष वर्ष १५ मास ६ दिन १ घटी ४० आयु हुई अब सब की दशाओंकी मिश्र व्यवहार की रीति होगी । प्रयोजन यह है कि "नायुर्विंशतेः स्यादधस्तात्" । जो कहा सो यहां तो १६ वर्ष हो गई अब वह श्लोक कैसे असङ्गत न हुआ जब कोई वितर्क करै कि वराहमिहिरने पाप रहित मीन लग्न कहा है तो धन लग्न में क्षीण चन्द्रमा २० अंश पर किसी के जन्म समय में है बुध अस्तङ्गत है और सभी ग्रह अपने २ नीचों में हैं तो चक्रपात क्रम से आयु बहुत घटती है जैसा बुधका पूर्ववत् विधि करने से वर्ष १० मास १० लग्न के शून्य अंश होने से कुछ न मिले चन्द्रमा का क्षीण होनेसे पाप सम्बन्ध हुवा यद्वा बारहवां होने से चक्रपात क्रम से कुछ भी आयु न हुई । सूर्य का ग्यारहवां होने से आधा घटा

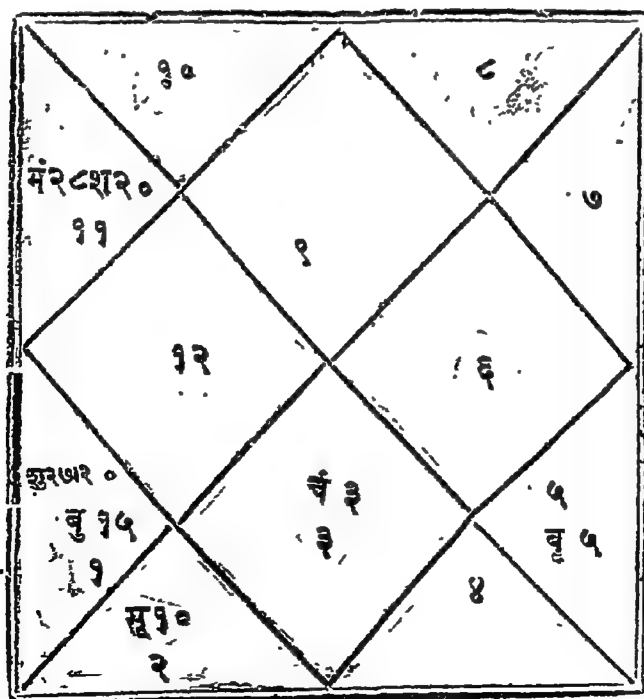
सू०	चं०	मं०	बु०	बृ०	शु०	श०	ल०
६	७	३	६	९	५	०	८
९	२०	२७	१४	४	२६	१९	०

शेष वर्ष ४ मास ९ बुध अस्त होनेसे आधा वर्ष ५ मास ५ शुक्र दशम होने से तीसरा भाग घटना था सौम्य होने से तीसरे भागका आधा घटा तो

वर्ष ८ मास ९, मङ्गल अष्टम होने से पांचवां भाग घटा वर्ष ६ रहे। इसी प्रकार सूर्य के वर्ष ४ मास ९ चन्द्रमा ०।० मङ्गल ६।० बुध ५।५ बृहस्पति वर्ष ७ मा० ६ शुक्र व० ८ मा० ९ शनैश्वर व० १०।० लग्न ०।० सब का योग वर्ष ४२ मास ५ हुये इसमें अस्त का आधा घटाना था वह पहिलेही घटाया गया इस उदाहरण में सब कमी आयुवाले हैं तौभी ४२ वर्ष से कमी आयु नहीं होती जो पूर्व लिखा है कि आयु २० से कम नहीं होती तो यहां सब प्रकार कमवाले हैं तौभी ४२ से कम न हुई। उसने २० का प्रमाण कैसे किया पाप रहित मीन लग्न से कहा था तो यहां भी धन लग्न निष्पाप ही है इसमें भी उस श्लोक की असंबद्धता प्रगट होती है कोई ऐसा भी कहते हैं कि जो "अष्टावरिष्टं हित्वा नायुर्विंशतेः स्यादधस्तात्" अर्थात् अरिष्टाध्यायवाले ८ वर्ष छोड कर २० वर्ष भीतर भी मरे देखे जाते हैं वह विनारिष्ट वा विना दशायु कैसे मरे तो मृत्युयोग और प्रकार के भी जो ८ वर्ष के ऊपर२० वर्षके भीतर आय पडते हैं वह भी जिन आचार्योंने अनेक प्रकार आयु विधान करे हैं उन्होंने मृत्युयोग भी कहे हैं। जैसे "षष्ठाष्टमस्थो रिपुदृष्टमूर्तिः पापग्रहः पापगृहे यदि स्यात्। स्वान्तर्दशायां मरणाय जन्तोर्ज्ञेयः स युद्धे विजितो यदान्यैः"।१। पापग्रह छठा वा आठवां हो शत्रु की दृष्टि हो और युद्ध में हारा हो पाप राशि में हो तो अपनी अन्तर्दशा में मृत्यु देता है।१। और "षष्ठाष्टमस्थो रिपुदृष्टरौद्रः पापैः सुहृत्स्थानगतश्च दृष्टः। स्वान्तर्दशायां प्रकरोति मृत्युं पाशाध्वबन्ध्यादिपरिक्षयाद्वा"।६।८। वा ४ भाव में पाप ग्रह पाप दृष्ट हो तो अपनी अंतर्दशा में फांसी वा बन्धन वा मार्गसे मृत्यु देता है।२। "क्रूरदशायां क्रूरः प्रविश्य चान्तर्दशां यदा कुरुते। पुंसां स्यात्संदेहस्तदारियोगो हि सदैव महान्", ३ पाप ग्रह की दशा में पाप ग्रह का अन्तर होनेमें मृत्यु फल है।३। रवितनयस्य दशायां क्षितिजस्यान्तर्दशा यदा भवति। बहुकालजीविनामपि

मरणं निःसंशयं वाच्यम्" ४ शनिकी दशा में मङ्गल की अन्तर्दशा मृत्यु देती है॥४॥"क्रूरराशौ स्थितः पापः षष्ठे वा निधनेऽपि वा ।तत्रस्थेन वारिणा दृष्टः स्वपाके मृत्युदो ग्रहः" ।५। छठे आठवें में क्रूरराशिका क्रूरग्रह जो शत्रु युक्त वा दृष्ट हो तो अपनी दशामें मृत्यु देता है ।५। यो लग्नाधिपतेश्शत्रुर्लग्नस्यान्तर्दशां गतः । करोत्यकस्मान्मरणं सत्याचार्यः प्रभाषते " ।६। लग्नेशका शत्रु लग्नदशाके अन्तर्दशा में अकस्मात् मृत्यु देता है ।६। एवम्प्रकार जिनके लग्न में पाप नहीं हैं उनके ८ वर्ष उपारान्त २० वर्ष भीतर दशान्तर विचार से मृत्यु होती ही है । इस से भी वह सातवां श्लोक दूषणवाला असम्बद्ध है, आठवें श्लोक में जो लिखा है कि जिस योग से पूर्णायु होती है उसी से चक्रवर्ती भी होना चाहिये । तो यह इस प्रकार असम्बद्ध है कि (उदाहरण) किसी के जन्म में सूर्य वृष के १० अंश पर चन्द्रमा मिथुनके ३ अंशपर मङ्गल कुंभके २८ अंश पर बुध मेषके १५ अंश बृहस्पति सिंह के ५ अंश, शुक्र मेषके २७ । २० अंश शनि कुंभके २० अंश और लग्न धनुके २९ अं ५९ क० पर है इनका पूर्वोक्त प्रकारसे दशा वर्षादि सूर्य १७।५ चन्द्रमा २२ । ११ मं० १३।९ । बु० ७ । ० बृ० १३ । ९ शुक्र, १२।१९।२३ शनि १३।४ लग्न ९।० हुये इन में बृहस्पति चक्रपात क्रमसे आठवां भाग घटाके शेष वर्ष १२ मास० दिन ११ घटी १५ चन्द्रमा छठा भाग घटायके १९ । १ । ५ सूर्य शत्रु राशि में त्रिभाग घटाना था परंतु यहां तत्काल मित्र है अपने मूलत्रिकोण से नवम होने के कारण न घटा ऐसे ही चन्द्रमा भी मित्र क्षेत्र होने से न घटा "इन्दोर्बुधे देवगुरुश्च विंद्यात् " इस वचन से अब मङ्गल का शनि शत्रु है तत्काल में एक घर में रहनेसे अधिक शत्रु हुवा तीसरा भाग घटना था परन्तु "हित्वा वक्रं रिपुगृह"इत्यादि वचन से मङ्गल नहीं घटा।बुध मित्र गृहमें होने से न घटा । बृहस्पति का सूर्य मित्र है इस से यह भी न घटा । शनि स्वक्षेत्र होनेसे न घटा सब संस्कार करके ग्रहायु यह हुई ।

मू० १७। ५ चं० १९।१।५ मं० १३।९ बु० ७।० बृ० १२।०।११।१५ शु० १९।२।२३ श० १३।४ ल० ९।० सब का योग वर्ष ११० मा० १० दि० ९ घ० १५ हुये जब चन्द्रमा २२वर्ष ११महीने भी हुवा तो योग वर्ष ११४मा० ८ दि० ४ घ० १५ इतनी आयु होती है चक्रवर्ती योग भी हुवा तो अब देखो कि यहां केमद्रुम योग भी है चन्द्रमा से बारहवां सूर्य नाभस योगों में "हित्वार्कं सुनफानफा" इत्यादि श्लोक से नहीं गिना जाता, दशा से ११५ वर्ष बचैगा परन्तु केमद्रुम योग के फल से मलिन दुःखित नीच निर्द्धन प्रेष्य खल अवश्य होना ही है तो "यस्मिन्योगे पूर्णमायुः" इत्यादि श्लोक का दूषण कस ठीक रहा। यह श्लोक भी असम्बद्ध होने से वराहमिहिर कृत नहीं समझा जाता, जो कि आचार्य की प्रतिज्ञा है कि केवल अपना नहीं सब के मतों को लिखता हूं।



अब कोई इसमें शंका करे कि चन्द्रमा के केन्द्र में होने से केमद्रुम नहीं होता तो यहां चन्द्रमा नहीं गिना जायगा। क्योंकि चन्द्रमा लग्न की गिनती में है। कहा भी है कि 'मूर्तिंश्च होरां शशिनश्च विंद्यात्' चन्द्रमा लग्न ही है। चन्द्रमा के साथ अन्य गृहका योग करना चाहिये यहां तो आपही तो योग कारक है आपही बाधक कैसे होगा और लग्न से चन्द्रमा सप्तम होने से केमद्रुम योग नहीं घटता ॥ ८ ॥

उपच्छन्दः ।

स्वमतेन किलाह जीवशर्म्मा ग्रहदायम्परमायुषः स्वरांशम् ।
ग्रहभुक्तनवांशराशितुल्यं बहुसाम्यं समुपैति सत्यवाक्यम् ॥९॥

टीका-और आचार्योंने ग्रहों के दशा वर्ष सूर्य के १९ चन्द्रमा के २५ इत्यादि उच्च में और नीच में इनके आधे कहे हैं जीवशर्म्मा नाम आचार्य ने परमायु के सात विभाग करके सातही ग्रहों के कह दिये हैं जैसे परमायु १२० वर्ष ५ दिनका सप्तमांश वर्ष १७ मास १ दिन २२ घटी ८ पल ३४ प्रत्येक ग्रह उच्च में पाता है और नीच में इसका आधा ८।६।२६।४।१७ बीच में अनुपात कहा है। और कर्म चक्रपातादि पूर्ववत् ही कहा है परन्तु यह मत जीवशर्म्मा ने केवल अपनी युक्ति से कहा है। और किसी का सम्मत नहीं है इस कारण यह ठीक नहीं जो यवनेश्वर तथा सत्याचार्य मत के सम्मत वराहमिहिरने प्रमाण किया ठीक वही है कि "ग्रहभुक्तनवांशेत्यादि" । पहिले पिण्डायु कही गई । अब अंशायु कहते हैं कि जितने नवांश मेषादि गणना से ग्रह ने भुक्ते हों उतने ही वर्ष हुये जो वर्त्तमान नवांश है उसका त्रैराशिक करने से मासादि होते हैं, उदाहरण, जैसे किसी ग्रह का स्पष्ट ७।२५।१०।१७ है २३।२० अंशपर्य्यंत ७ नवांश भुक्त हुये हैं यही ७वर्ष पाये अवशेष ३।५० का त्रैराशिक जैसे ३।५० अंशकला को १२ से गुण दिया ३।२० की कला २०० से भाग लिया लब्धि ५ महीने हुये शेष १२०को३०

से गुणाकर २०० से भाग दिया लब्धि १८ दिन हुये शेष० इस से घटी पलके जगे ०।० मिले इसी रीति से सब, ग्रहों का करना, यहां उदाहरण में ७ नवांश के ७ वर्ष केवल रीति समझने को लिखा है वर्षों की गिनती मेषादि है जैसे मेष नवांश हो तो १ वर्ष वृष में २ वर्ष एवम् मीन में १२ वर्ष पावैगा । परन्तु यह अर्थ कल्पित है चरितार्थ नहीं क्योंकि इस में राशियां छूट गई हैं आचार्य वचन "राश्यंशकचारयोगात्" ऐसा है। इस से राशि अंश कला का पिण्ड करके एक नवांश के कला२००से पिण्ड में भाग लेने से वर्षादि मिलेंगे यह युक्ति आचार्य ने सर्वसम्मत होने से प्रमाण की है इस्को विस्तारपूर्वक उदाहरण सहित अगले श्लोक में लिखताहूं । वही अंशायु दशा ठीक है ॥ ९ ॥

आर्या।

सत्योक्ते ग्रहमिष्टं लिप्तीकृत्वा शतद्वयेनाप्तम् ।
मण्डलभागविशुद्धेऽब्दाः स्युः शेषात्तु मासाद्याः ॥ १० ॥

टीका–सत्याचार्य के मत से आयु विधान ऐसा है कि तात्कालिक ग्रह लिप्ता पर्यन्त पिण्ड करना २०० से भाग लेकर जो मिले वह वर्ष के जगे स्थापन करना १२ ऊपर हों तो १२ से तष्ट कर देना। जो रहा उस्को १२ से गुण कर २०० के भाग देनेसे महीने मिलेंगे शेष को ३० से गुण कर २०० से भाग लेने से दिन मिलेंगे ऐसे ही शेष अंक को ६० से गुण कर २०० से भाग देने से घटी, शेष से पल मिलते हैं. उदाहरण–स्पष्ट तात्कालिकराश्यादि १।८।४५ इस्का लिप्ता पिण्ड २३२५ इसमें२००का भाग देने से लब्धि११ये वर्ष हुये, १२ से ऊपर होते तो १२ से तष्ट करना था यहां पहिले ही कम है, शेष अंक १२५ मास १२ से गुण दिया १५०० इसमें २०० से भाग लेकर लब्धि ७ मास हुये शेष १०० इस्को ३० से गुण३०००का दोसौ से भाग लिया१५दिन मिले शेष कुछ न रहा घटी पल ०।० हुये वर्ष ११ मास ७ दिन१५घटी०

पल० समस्त फल हुये अब " मण्डलभागविशुद्धे " यह संस्कार करना है कि इन ११।७।१५।०।० को पहिले १२ से गुण दिया१३२।८४।१८० इन को फिर ९ से गुण दिया ११८८।७५६।१६२० अब लिप्ता१६२० में ६० से भाग दिया बाकी घटी रही यहां विकला के स्थान में ० है अङ्क होता तो उसे भी १२ और ९ से गुण कर ६० से ऊपर चढाना था अब घटी स्थान० से लब्धि २७ ऊपर के अङ्क ७५६ में जोड दिया७८३ इसमें ३० से भाग लेकर शेष ३ दिन हुये लब्धि २६ को ऊपर का अङ्क ११८८ में जोड़ दिया १२१४ इसमें १२ से भाग लेकर शेष २ महीने रहे लब्धि ११ में से भाग लेना था भाग न जाने से ११ ही रहे यह वर्ष हुये एवम् दशा वर्ष ११ मास २ दिन ३ घटी० पल० हुये इतना संस्कार करके तब 'स्वतुङ्गवक्रेत्यादि' श्लोकोक्तसंस्कार करना १२० वर्ष दिन से पर होने का आश्चर्य नहीं है इसकी व्यवस्था छठे श्लोक की टीका में लिखी है और अनुपात त्रैराशिक का उदाहरण भी लिखा गया है. शीघ्रबोध के लिये यहां प्रकारांतर से लिखा यह सत्याचार्य का मत यवनेश्वर आस्फुजित बादरायण वराहमिहिरादि बहुतों का सम्मत होने से यही ठीक है ॥ १० ॥

वंशस्थम् ।

स्वतुङ्गवक्रोपगतैस्त्रिसंगुणं द्विरुत्तमस्वांशकभत्रिभागगैः ।
इयान् विशेषस्तु भदन्तभाषिते समानमन्यत्प्रथमेष्युदीरितम्॥ ११॥

टीका—सत्याचार्योक्त दशा में संस्कार पूर्व लिखित ही हैं इतना विशेष है कि, जो ग्रह अपने उच्च में हैं, वा वक्र गति हैं उनके दशा वर्षादि जो मिले वह त्रिगुणी करनी चाहिये, जो ग्रह वर्गोत्तमांश वा अपने नवांश वा अपनी राशि वा अपने द्रेष्काण में हैं वह द्विगुण करना और सब कर्म पूर्वोक्त करना जैसे जो ग्रह शत्रु राशि में है वह तीसरा भाग घटता है मङ्गल शत्रु क्षेत्रगत भी नहीं घटता और शुक्र शनि विना अस्तङ्गत ग्रह आधा घटता है "सर्वार्द्धेति" चक्रपात भी करना ॥ ११ ॥

इन्द्रवज्रा ।

किंत्वत्र भांशप्रतिमं ददाति वीर्यान्विता राशिसमं च होरा ।
क्रूरोदये योऽपचयः स नात्र कार्यं च नाव्दैः प्रथमोपदिष्टैः ॥ १२ ॥

टीका—सत्यमतानुसारी लग्नायुर्दाय कहते हैं कि " होरा स्वामिगुरुज्ञवीक्षितयुता " इत्यादि से लग्नेश बलोत्कट हो तो लग्नने जितनी राशि मेषादि भुक्त कीहैं उतने वर्ष मिले शेष जो अंशादि हैं उनसे पूर्वोक्त रीतिके अनुसार मासादि लेने जो लग्नांशमें अधिक बली हो तो जितने नवांश भोगे गये उतने वर्ष मिले वर्तमान नवांशसे मासादि लेने, लग्नमें पाप ग्रह होने में पूर्व जो सार्द्धोदित उदित नवांशसे आयुपिण्डपातन किया गया वह कर्म यहां न करना ॥ १२ ॥

इन्द्रवज्रा ।

सत्योपदेशो वरमत्र किन्तु कुर्वन्त्ययोग्यं बहुवर्गणाभिः ।
आचार्यकत्वं च बहुघ्नतायामेकं तु यद्भूरि तदेव कार्यम् ॥ १३ ॥

टीका—सत्याचार्यका मत श्रेष्ठ है परन्तु इसमें शंका यह है कि कोई ग्रह स्वगृह में है तो द्विगुणा हुवा पुनः वही ग्रह स्वनवांश में भी है तो फिर द्विगुणा हुवा ऐसे ही अपने द्रेष्काण में भी हो तो पुनः द्विगुण और वर्गोत्तमांश में भी हो तो भी द्विगुण वही ग्रह वक्र भी हो तो त्रिगुण और जो उच्चराशि में भी हो तो पुनः त्रिगुण एवम्प्रकार इसकी अनवस्था होती है इस शंका निवृत्ति के अर्थ श्लोकोत्तरार्द्ध है कि बहुत वर्गणा में द्विगुण की प्राप्ति ३ वा ४ बार पाई जाय तो उतने ही बार द्विगुण नहीं होता जायगा जो अवस्था मुख्य है उसके तुल्य एक बार द्विगुण होगा ऐसेही त्रिगुण की प्राप्ति में एकही वार त्रिगुण होगा घटानेके क्रम भी बहुत की प्राप्ति में एकही बार घटेगा चक्रपात जुदा है वह सब का होना ही है जहां द्विगुण और त्रिगुण की भी प्राप्ति है वहां एक बार त्रिगुण ही होगा द्विगुण न होगा, जहां घटाने की अर्थात् आधा वा त्रिभाग हीन करने की प्राप्ति है वहां एक बार

जो विशेष है उसी कर्म से घटेगा अर्थात् २ भाग ३ भाग घटाने में २ भाग ही घटेगा जहां किसी प्रकार घटता है और किसी प्रकार बढता भी है तो पहिले घटने का मुख्य भाग घटाके वृद्धिके मुख्य भाग से वृद्धि करना। घटाने के कर्म में पहिले चक्रपात से हानि कर लेनी पीछे और क्रम से घटाना वृद्धि इस से भी पीछे करनी यह अंशायु दशा है आचार्यने पिण्डायु निसर्गायु छोड कर यही अंशायु प्रमाण करी है औरोंके मत में लग्न अधिक बली होने में अंशायु सूर्य अधिक बली होने में पिण्डायु कोई चन्द्रमा के बली होने में निसर्गायु भी कहते हैं। उसका विधान अगले अध्याय में कह जावैगा। दशाका न्यास जो ग्रह पहिले जो पीछे दशा में लिखा जाता है वह भी आगे लिखा जायगा अंशायु पिण्डायु दोनों प्रमाण हैं अन्तर्दशा इन्हीं की कहनी चाहिये यहां अन्तर्दशा की पाचक संज्ञा लिखी है ॥ १३ ॥

पुष्पिताग्रा।

गुरुशशिसहित कुलीरलग्ने शशितनये भृगुजे च केन्द्रगे वा।
भवरिपुसहजोपगैश्च शेषैरमितामिहायुरनुक्रमाद्विना स्यात् १४॥

इति आयुर्दायाऽध्यायः सप्तमः ॥ ७ ॥

टीका—जिस योग में आयु प्रमाण नहीं समझा जाता उसे कहते हैं कि कर्क लग्न में बृहस्पति और चन्द्रमा हो और बुध शुक्र केन्द्र में हों और सब ग्रह सूर्य मङ्गल शनि तीसरे छठे ग्यारहवें में से किसीमें हों तो ऐसे योगके होनेमें गणित विनाही पूर्णायु होगी इस शास्त्र के क्रम से आनी हुई आयुके उपरान्त कोई नहीं बचता और आचार युक्त रहै तो उतनी से कम भी आयु नहीं भोगता अनाचार से नियत आयु भी क्षीण होजाती है "पारदार्यनायुष्यं" इत्यादि वेद भी कहता है और रसायन प्रयोग से वा योगाभ्यासने गणितागत नियतायु को उल्लंघन करके दीर्घजीवी भी हो जाते हैं वह कर्म जुदे हैं॥ १४॥

इति महीधरविरचितायां बृहज्जातकभाषाटीकायामायु-
र्दायाऽध्यायस्सप्तमः ॥ ७ ॥

दशांतर्दशाध्यायः ८.

मालिनी।

उदयरविशशांकप्राणिकेन्द्रादिसंस्थाः
प्रथमवयसि मध्येऽन्ते च दद्युः फलानि।
न हि न फलविपाकः केन्द्रसंस्थाद्यभावे
भवति हि फलपक्तिः पूर्वमापोक्लिमेऽपि॥ १॥

टीका—एवम्प्रकार दशा प्रत्येक ग्रह की गणित से नियत करके पहिले किस की दशा चाहिये उसका वर्णन इस प्रकारसे है कि, सूर्य लग्न चन्द्रमा में से जो अधिक बलवान् हो उसकी पहिले लिखना उसके पीछे जो ग्रह केन्द्र में हो उसको लिखना तत्पश्चात् जो पणफर में हो और उसके भी पीछे जो दशापति से आपोक्लिम में है उसकी दशा लिखनी चाहिये जब एक स्थान में बहुत ग्रह हों तो पहिले बलाधिक्य पीछे न्यूनबली लिखने फल भी दशापति से केन्द्रवाला ग्रह प्रथम अवस्था अर्थात् दशा के पूर्व भाग से फल देता है पणफरवाला आधी अवस्था में, आपोक्लिम का अन्त्यावस्था में, जब केन्द्र में कोई नहीं है तो पणफरवाला प्रथम फल देगा, पणफर में कोई न हो तो आपोक्लिमवाला प्रथमादि सभी अवस्थाओं में फल देगा, आपोक्लिम में न हो तो केन्द्रस्थ प्रथम फल देगा, पणफर आपोक्लिम में न हो तो केन्द्रवाला सर्वदा फल देगा, जो केन्द्र और आपोक्लिम में हो पणफर में न हो तो पहिले केन्द्रवाला पीछे आपोक्लिमवाला देगा, सभी केन्द्र में हों तो सभी अवस्था में वही फल देंगे ऐसा ही सर्वत्र जानना॥ १॥

इन्द्रवज्रा।

आयुष्कृतं येन हि यत्तदेव कल्प्या दशा सा प्रबलस्य पूर्वा।
साम्ये बहूनाम्बहुवर्षदस्य तेषां च साम्ये प्रथमोदितस्य॥ २॥

टीका–इस प्रकार लग्न चन्द्रमा सूर्य में से बलवान् की दशा प्रथम उपरान्त दशेशसे केन्द्रस्थ की, उससे उपरान्त पणफरवाले की, उसके पीछे आपोक्लिम वाले की स्थापन करके और भी विचार करना है कि जब केन्द्र में बहुत ग्रह हों तो प्रथम बलवान् को लिखकर पीछे उस से हीन-बली, उपरान्त उस से भी हीनबली, एवं प्रकार लिखना। बलाधिक्य षड्बलैक्य से जाना जायगा। जब बल से भी कोई ग्रह समान हों तो उनमें से जो प्रथम उदय हुआ है उसको प्रथम लिखना, उदय भी दो प्रकार के होते हैं एक तो तारा उदय नित्य प्रति जो प्रथम उदय होता है दूसरा अस्तङ्गत से जो प्रथम उदय हुआ है, यहां सूर्यके साथ अस्तङ्गत होने से उदय जो है वही उदय गिना जायगा ॥ २ ॥

वसंततिलका।

एकर्क्षगोर्द्धमपहृत्य ददाति तु स्वं
त्र्यंशं त्रिकोणगृहगः स्मरगः स्मरांशम्।
पादम्फलस्य चतुरस्रगतः सहोरा-
स्त्वेवम्परस्परगताः परिपाचयन्ति ॥ ३ ॥

टीका–अन्तर्दशा के निमित्त दशापति के साथ एक राशि में जो ग्रह है वह दशापति की आयु का आधा लेकर अपने दशा गुण के अनुसार फल देता है दशापति से त्रिकोण ९।५ में जो ग्रह है वह उसका तीसरा भाग ले के अपने दशा गुणों से फल देता है, इस प्रकार दशापति से सातवां ग्रह सप्तमांश ले कर अपना फल देता है, दशेशसे चतुरस्र ४। ८ भाव में जो ग्रह है वह चतुर्थांश ले अपना फलदेता है एवंप्रकार लग्न सहित सभी ग्रह अन्तर्दशा पाते हैं इस विधान में जो एक स्थान में बहुत ग्रह हों उन में से जो अधिक बली है वही पाचक दशा अर्थात् अन्तर्दशा पावेगा। यहां वराहमिहिरादि अनेक आचार्योंका एक वचन निर्देश है इस कारण उतने ही ग्रह पाचक होंगे सभी न होंगे उनका न्यास सभी पूर्वोक्त विधि से

करना जैसे पहिले साथवाला पीछे त्रिकोणवाला उसके उपरान्त सप्तमवाला तिस पीछे अष्टम–चतुर्थवाला अन्तर पावेगा। जो एक जगह बहुत ग्रह हों तो पहिले बलवान् पश्चात् उस से हीनबल तदुत्तर और हीनबल एवंप्रकार सब की अन्तर्दशा होगी, आदि में दशेश का अन्तर उपरान्त पाचकवालों के अन्तर पूर्वोक्त क्रम से लिखे जाँयगे इस्का विस्तार उदाहरण सहित अगले श्लोक में लिखा है ॥ ३ ॥

इन्द्रवज्रा ।

स्थानान्यथैतानि सवर्णयित्वा सर्वाण्यधश्छेदविवर्जितानि ।
दशाब्दपिण्डे गुणका यथांशच्छेदस्तदैक्येन दशाप्रभेदः ॥ ४ ॥

टीका–स्थान शब्द से अर्द्धादिक भाग जाने जाते हैं उनकी सवर्णना अर्थात समच्छेद करना फिर समच्छेद को छोड़ देना और नये अंश जो उत्पन्न हुये उनकी गुणक संज्ञा और गुणकों के योग को भाग पर समझना दशाके वर्षादि अलग गुणकारों से गुणाकर भागहारसे भाग लेकर जो वर्षादि मिलेंगे वह अन्तरदशा होगी ।

उदाहरण–जब दशापति के साथ कोई ग्रह है और पूर्वोक्त स्थानों में कोई ग्रह नहीं है तो वही १ अंश हारक होता है तो दशापति १ हारक अंश जो हरण होना है वह $\frac{1}{2}$ ऐसा रूप है इनका न्यास $\frac{1}{1}$ $\frac{1}{2}$ इनका छेद गुणा किया तो $\frac{2}{2}$ $\frac{1}{2}$ यह समच्छेद हुआ अब छेद को त्याग दिया २ । १ ये गुणक हुए, इनका योग ३ यह भागहार हुआ, दशापतिकी आयु वर्षादि ३।०।०।० यह २ से गुणा भागहार से भाग लिया । फल २ यह तो मूल दशापति की अन्तर्दशा हुई । फिर मूल दशापति ३।०।०।० एक १ से गुणा कर हार ३ से भाग लिया फल वर्षादि १।०।०।० यह दशापति के साथ जो ग्रह है उसने अन्तर्दशा पाई । मूल दशापति की अन्तर्दशा है उसका आधा साथवाले ग्रहने पाचक पाया, दोनो का जोड़ वही ३।०।०।० दशायु होती है ॥ १ ॥

जब दशापति से त्रिकोण ५।९ स्थानोंमें से किसी एकस्थानमें कोई ग्रह है और दूसरा तथा ४।८।७ इन में वा उस के साथ कोई ग्रह नहीं है

तो न्यास $\frac{१}{१}\frac{१}{३}$ छेद से परस्पर गुण दिये $\frac{३}{३}\frac{१}{३}$ छेद हीन ३।१ ये गुणाकार हुये इनका योग ४ भागहार हुआ मूल दशापति दशा वर्षादि ४।०।०।० को ३ से गुणा ४ से भाग दिया फल ३।०।०।० यह मूल दशापति की अन्तर्दशा हुई। फिर उसकी दशा ४।०।०।०। को एक से गुणा कर ४ से भाग लिया लब्धि १।०।०।०यह त्रिकोणवाले की अन्तर्दशा त्रिभाग छोड़ कर हुई॥ २॥

जब दशापतिसे चतुरस्र४।८स्थानोंमेंसे किसी एक स्थान में कोई ग्रहहै और दूसरा तथा वा उसकेसाथ९।५।७ में कोई नहीं है तो न्यास $\frac{१}{१}\frac{१}{४}$ गुणित $\frac{४}{४}\frac{१}{४}$ छेदहीन ४।१ ये गुणाकार इन का योग५भाग हार मूलदशापति ५।०।०० चार से गुणा किया २०।०।०।० पांच से भाग लिया फल४।०।०।० यह मूलदशेश का अन्तर्दशा काल हुआ फिर उसीकी दशा ५।०।०।० को एकसे गुण दिया ५ से भाग लिया १।०।०।० यह ४ वा ८ स्थान वाले की अन्तर्दशा चौथाई घटाकर हुई। इनका योग ५।०।०।० वही मूल दशापति की दशा वर्षादि हुई ॥ ३ ॥

अथवा दशापति से ७ भाव में कोई ग्रह हो और उसके साथ वा ९। ५।४।८ में कोई न होतो न्यास $\frac{१}{१}\frac{१}{७}$ छेद गुणित $\frac{७}{७}\frac{१}{७}$ छेदहीन ७।१ ये गुणक इनका योग ८ भागहार दशापतिकी दशा वर्ष८।०।०।०को गुणक ७से गुणा तो ५६ हुआ हार ७ से भाग लिया फल ७।०।०।० यह दशापति का अन्तर हुआ फिर उसकी दशा८।०।०।०को पिछले गुणकएकसे गुणकर हार ८ से भाग लिया १।०।०।० यह सप्तम स्थानवाले ने अन्तर पाया इनका योग वही दशापति की दशा ८।०।०।० इतने दो के विकल्प हुए ॥ ४ ॥

पहिले दशापति का अन्तर तब अंशहारकं का होता है जो दशापति के साथ कोई ग्रह हो और ९ वा ५ मेंभी कोई ग्रह हो और ४।८।७ में कोई न हो तो न्यास $\frac{१}{१}\frac{१}{२}\frac{१}{३}$ अन्योन्यछेदहत $\frac{६}{६}\frac{३}{६}\frac{२}{६}$ छेदहीन ६।३।२ गुणाकार, इनका योग ११ भागहार, दशापति की दशा ११।०।०।० को

६ से गुणकर ११ से भाग लिया ६।०।०।०। यह मूल दशापति की अन्तर्दशा हुई फिर ११।०।०।०। को ३ से गुण कर ११ से भाग लिया ३।०।०।०। यह साथवाले अर्द्ध पाचक की हुई। पुनः ११।०।०।०। को २ से गुणा, ११ से भाग लिया २।०।०।० यह त्रिकोणवाले ने पाई। इन सबका जोड़ ११।०।०।० मूलदशा हुई ॥५॥

जो कोई ग्रह दशेश के साथ और कोई ४ वा ८ में भी है और ९। ५। ७ में कोई नहीं है तो $\frac{१}{१}$ $\frac{२}{१}$ $\frac{१}{४}$ छेदहत $\frac{८}{८}$ $\frac{४}{८}$ $\frac{२}{८}$ छेदहीन ८।४।२ ये गुणक, इन का योग १४ भागहार, दशापति की दशा १४।०।०।० को आठ से गुण कर १४ से भाग लिया ८।०।०।० यह दशापतिका अन्तर फिर १४।०।०।० को ४ से गुणा १४ से भाग लिया ४।०।०।०। यह अर्धपाचक ने पाया। पुनः १४।०।०।० को २ से गुणा १४ से भाग २।०।०।० यह चतुर्थ भाग पाचक ने पाया सब का जोड़ १४।०।०।० यही मूल दशा हुई ॥ ६ ॥

जो दशापति के साथ कोई ग्रह है और सातवें में भी कोई है और पूर्वोक्त स्थानों में कोई न हो तो न्यास $\frac{१}{१}$ $\frac{१}{२}$ $\frac{१}{७}$ परस्पर छेदहत $\frac{१४}{१४}$ $\frac{७}{१४}$ $\frac{२}{१४}$ छेदहीन १४।७।२ ये गुणक, योग २३ भागहार दशापति वर्ष२३।०।०।० को गुणक १४ से गुणा कर २३ से भाग लिया १४।०।०।० यह दशापतिने अन्तर पाया, फिर दूसरे गुणक ७ से गुणा २३ से भाग लिया ७।०।०।० यह जो उसके साथ में है उस ने पाया, फिर २ से गुणा कर २३ से भाग लिया २।०।०।० यह सप्तमस्थित ग्रह ने पाया, सब का जोड़ वही मूल दशा २३।०।०।० हुई ॥ ७ ॥

जो दशापति के कोई ९ और ५ में भी है और पूर्वोक्त में नहीं है तो न्यास $\frac{१}{१}$ $\frac{१}{३}$ $\frac{१}{३}$ परस्पर छेदहत $\frac{९}{९}$ $\frac{३}{९}$ $\frac{३}{९}$ छेदहीन ९।३।३ गुणक इनका योग १५ भागहार दशापति दशा ५।०।०।० नौ से गुण कर १५ से भाग लिया ३।०।०।० यह मूल दशेश ने पाया फिर ३ से गुणाकर १५ से भाग लिया १।०।०।० यह त्रिकोण वाले ने पाया, ऐसा

ही दूसरे ने पाया, तीनों का जोड ५ । ० । ० । ० यही मूलदशा ॥८॥

जो दशेश से ९ वा ५ में और ४ । ८ में भी कोई ग्रह हों और कहीं न हों तो न्यास $\frac{१}{१}$ $\frac{१}{३}$ $\frac{१}{४}$ छेदहत $\frac{१२}{१२}$ $\frac{४}{१२}$ $\frac{३}{१२}$ छेदहीन १२ । ४। ३ ये गुणक, इन का योग १९ भागहार, दशापति की दशा वर्ष १९ । ० । ० को पहिले गुणक ७।१२ से गुणा कर १९ से भाग दिया १२ । ० ।०।० यह मूल दशेश का अन्तर हुआ, फिर ४ से गुणाकर १९ से भाग दिया ४ । ० ० । ० त्रिकोण वाले ने पाया, फिर ३ से गुणाकर १९ से भाग दिया ३ ० । ० । ० यह चतुरस्रवाला चतुर्थांशहारक ने पाया सब का जोड़ १९ ० । ० । ० मूलदशा ॥ ९ ॥

जो दशापति से ५ वा ९ में कोई हो और सप्तममेंभी कोई ग्रह हो और शेष पूर्वोक्तों में नहीं हों तो न्यास $\frac{१}{१}$ $\frac{१}{३}$ $\frac{१}{७}$ परस्पर छेदहत $\frac{२१}{२१}$ $\frac{७}{२१}$ $\frac{३}{२१}$ छेदहीन २१ । ७ । ३ गुणक गुणकों का जोड ३१ भागहार हुआ, दशापति ३१ ० । ० । ० गु० २१ से गुणकर ३१ से भाग लिया तो २१ । ० । ० । ० यह दशापति की अन्तर्दशा हुई, फिर उसी दशा को ७ से गुण कर ३१ से भाग लिया तो ७ । ० । ० । ० त्रिभाग पाचक ने पाया और ३ से गुणकर ३१ से भाग लिया ३ । ० । ० । ० सप्तम भाग पाचक ने पाया सब का जोड़ ३१ । ० । ० । ० मूलदशा ॥ १० ॥

जो दशापति से ४।८ दोनों में ग्रह हों और पूर्वोक्त स्थानों में नहींहों तो न्यास $\frac{१}{१}$ $\frac{१}{४}$ $\frac{१}{४}$ छेद से गुणे $\frac{१६}{१६}$ $\frac{४}{१६}$ $\frac{४}{१६}$ छेदहीन १६ । ४ । ४ गुणक, इनका जोड २४ भागहार हुआ, मूलदशापति वर्ष ६ । ० । ० । ० सोलह से गुणे २४ से भाग लिया ४ । ० । ० । ० चतुर्थांश दशेश का अन्तर भया, तब ४ से गुणा कर २४ से भाग लिया१।०।०।०पाचक का अन्तर हुआ, दूसरे का भी इतनाही हुआ तीनों का जोड़ ६ । ० । ० । ० वहाँ मूलदशा हुई ॥ ११ ॥

जो दशापति से ४ वा ८ में कोई ग्रह हो और ७ में भी हो और जगे न हो तो न्यास $\frac{१}{१}$ $\frac{१}{४}$ $\frac{१}{७}$ छेदहत $\frac{२८}{२८}$ $\frac{७}{२८}$ $\frac{४}{२८}$ छेदहीन २८।७।४गृणक हुआ और गुणकों का जोड़ ३९ भागहार भया दशापति वर्ष३६।०।०।० इन्हे२८ से

गुण कर ३९ से भागलिया २५। १०। ४। ३६ मूल दशेशने पाया ऐसे ही ७ से गुण ३९ से भाग दिया ६। ५। १६। ९ चतुरस्र वाले ने पाया, ४ से गुणा ३९ से भागलिया तो ३। ८। ९। १५ सातवें ने पाया तीनों का जोड ३६। ०।०। ० वही मूलदशा इस प्रकार त्रिविकल्प हुये॥ १२॥ जो दशापति के साथ कोई ग्रह और त्रिकोण ९। ५ में भी हो और जगे ४। ८। ७ में न हों तो न्यास $\frac{१}{१} \frac{१}{२} \frac{१}{३} \frac{१}{३}$ परस्पर छेदहर $\frac{१८}{१८} \frac{९}{१८} \frac{६}{१८} \frac{६}{१८}$ छेदहीन १८। ९। ६। ६ ये गुणक, इनका जोड ३९ भागहार हुआ मूलदशापति १३। ०। ०। ० पूर्ववद्विधि से ४ अन्तर्दशाओं का योग १३। ०। ०। ० यही मूलदशा हुई॥ १३॥

जो दशापतिके साथ कोई ग्रह और २। ० में से एक में कोई हो और ४। ८ में से भी एक में ग्रह हो तो न्यास $\frac{१}{१} \frac{१}{२} \frac{१}{३} \frac{१}{४}$ छेदहत $\frac{२४}{२४} \frac{१२}{२४} \frac{८}{२४} \frac{६}{२४}$ छेदहीन २४।१२।८।६ गुणकोंका योग५०भागहारमूलदशा ३६। ०।०।० पूर्ववद्विधि से चारों की दशा का योग ३६।०।०।०यही मूलदशा॥ १४॥

जो दशा पति के साथ कोई ग्रह और ९। २ में से एक में और ७ में भी ग्रह हों और जगे न हों तो न्यास $\frac{१}{१} \frac{१}{२} \frac{१}{३} \frac{१}{७}$ परस्पर छेदगुणे $\frac{४२}{४२} \frac{२१}{४२} \frac{१४}{४२} \frac{६}{४२}$ छेदहीन ४२। २१। १४।६ यहगुणक, इन गुणकोंका जोड ८३ हार, मूल दशा १६।०। ०। ० पूर्ववत् चारों की अन्तर्दशाओं का योग मूलदशा तुल्य मिलैगा॥ १५॥

जो एक ग्रह दशेश के साथ है और ४। ८ में भी ग्रह हों तो न्यास $\frac{१}{१} \frac{१}{२} \frac{१}{४} \frac{१}{४}$ गुणित $\frac{३२}{३२} \frac{१६}{३२} \frac{८}{३२} \frac{८}{३२}$ छेदहीन ३२। १६। ८।८ गुणक और इन गुणकोंका योग ६४ भागहार, मूल दशा ३६।०।०। ० से पूर्ववत् रीतिसे चारों की अन्तर्दशा पहिले की १८। ०। ०। ० दूसरेकी ९।०।०।० तीसरेकी ४। ६। ०।० चौथेकी। ४। ६। ०। ० सब का योग ३६। ०। ०। ० वही मूल दशा॥ १६॥

जो दशेश के साथ कोई ग्रह ४ वा ८ में और कोई ७ में भी ग्रह हो तो न्यास १/१ १/२ १/४ १/७ छेदहत ५६/५६ २८/५६ १४/५६ ८/५६ छेदहीन ५६ । २८ । १४।८ गुणाकर जोडदिये १०६ यहभागहार हुआ दशेश वर्ष ३६ । ०।०।० प्राग्वत् क्रमसे पहिले दशा १९ । ० । ६ । ४८ दू० ९।६। ३।२४ । ती० ४ । ९ । १ । ४२ । चौ० २ । ८ । १८ । ६ सब का जोड ३६।०। ० । ० मूलदशा ॥ १७ ॥

जो दशेश से ५। ९ में कोई ग्रह और ४ वा ८ में कोई हो तो न्यास १/१ १/३ १/३ १/४ गुणित ३६/३६ १२/३६ १२/३६ ९/३६ छेदहीन ३६ । १२ । १२ । ९ । गुणकोंका जोड ६९ भागहार मूलदशा २३ । ० ।० । ० पूर्ववत् चारों प्र० १२ ०।० ।० द्वि० ४। ० । ०।० तृ० ४ । ० । ० ।० च० ।३।० ।०।० जोड वही २३ । ० । ० । ० मूलदशा ॥ १८ ॥

जो दशेश से ९ वा ५ में कोई हो और ४ । ८ दोनों में कोई हो तो न्यास १/१ १/३ १/४ १/४ गु० ४८/४८ १६/४८ १२/४८ १२/४८ छेदहीन ४८।१६।१२। १२गु० जोड ८८ भागहार मूलदशा २२।०।०। ० पूर्ववत् अन्तर्दशा पाहिलेवालेकी १२ ० । ० । ० दू० ४। ०।०।० ती० ३ । ० । ०। ० चौ० ३।०।० ।० जोड मूलदशा २२ । ० । ० । ० ॥ १९॥

जो दशेश से ९ । ५ में से एक में कोई ग्रह हो और ४ । ८ में से एक में वो और सात में भी ग्रह हो तो १/१ १/३ १/४ १/७ छेद गु० ८४/८४ २८/८४ २१/८४ १२/८४ छेदहीन ८४।२८।२१।१२ गु०योग १४५ भागहार, मूलदशा ३६।०।०। ० पूर्ववत् कर्म से पहिले वाले की २०।१०।७।५१ दू० ६।११।१२। ३८ ती० ५।२।१६।५८ चौ० २। ११।२२ । ३३ सबका योग ३६ । ०। ० । ० । मूलदशा ॥ २० ॥

जो दशेश से ४ । ८ । ७ तीनों में ग्रह हों तो न्यास १/१ १/४ १/४ १/७ छेदहत ११२/११२ २८/११२ २८/११२ १६/११२ छेदहीन११२ ।२८ । २८ । १६ ये गुणक, जोड़ दिये १८४ भागहार मूल दशा ३६ । ० । ० । ० । पूर्ववत् कर्म से पहिले की दशा २१ । १० । २८ । ४२ दू० ५ । ५ । २२ । १० ती०

५ । ५ ।२२ १० चौ० ३ ।१।१६।५८। इन चारों का योग ३६ । ० । ० । ० वही मूलदशा ये चार विकल्प हुये ॥ २१ ॥

- अब पांच विकल्प कहते हैं–इसमें न्यास ही से ग्रह स्थान समझने चाहिये न्यास $\frac{१}{१}\frac{१}{२}\frac{१}{३}\frac{१}{३}\frac{१}{४}$ छेद २४ गुणक २४ ।१२ ।८। ८।६ भागहार ५८ ॥ २२ ॥

न्यास $\frac{१}{१}\frac{१}{२}\frac{१}{३}\frac{१}{३}\frac{१}{४}$ इस छेद से गुणाकार ४२ । २१ । १४ । ६ भाग हार ८७ ॥ २३ ॥

न्यास $\frac{१}{१}\frac{१}{२}\frac{१}{३}\frac{१}{४}\frac{१}{४}$ छेद २४ से गुणाकार ।२४ । १२।८।६ । ६ भागहार ५६ ॥ २४ ॥

न्यास $\frac{१}{१}\frac{१}{२}\frac{१}{३}\frac{१}{४}\frac{१}{७}$ छेद ५६ से गुणाकार ५६ । २८ । १४ । १४ । ८ भागहार १२० ॥ २५ ॥

न्यास $\frac{१}{१}\frac{१}{२}\frac{१}{४}\frac{१}{४}\frac{१}{७}$ छेद ८४ से गुणाकार ८४ ।४२ ।२८। २१ । १२ भागहार १८७ ॥ २६ ॥

न्यास $\frac{१}{१}\frac{१}{३}\frac{१}{३}\frac{१}{४}\frac{१}{४}$ छेद १४४ से गुणाकार १४४ । ४८ । ४८ । ३६। ३६, भागहार ३१२ ॥ २७ ॥

न्यास $\frac{१}{१}\frac{१}{३}\frac{१}{३}\frac{१}{४}\frac{१}{७}$ छेद ८४ से गुणाकार ८४ । २८ । २८ । २१ १२भागहार १७३ ॥ ये पांच विकल्प हैं २८ ॥

अब छः विकल्प न्यास $\frac{१}{१}\frac{१}{२}\frac{१}{३}\frac{१}{३}\frac{१}{४}\frac{१}{७}$ छेद २५२ गुणाकार २५२ १२६ । ८४ । ८४ । ६३ । ३६ भागहार ६४५ ॥ २९ ॥

न्यास $\frac{१}{१}\frac{१}{२}\frac{१}{३}\frac{१}{४}\frac{१}{४}\frac{१}{७}$ छेद १६८ से गुणक १६८। ८४ । ५६ । ४२ । ४२ । २४ भागहार ४१६ ॥ ३० ॥

न्यास $\frac{१}{१}\frac{१}{२}\frac{१}{३}\frac{१}{३}\frac{१}{४}\frac{१}{४}$ छेद ९६ गुणक ९६ । ४८ । ३२ । ३२। २४। २४ भागहार २५६ ॥ ३१ ॥

न्यास $\frac{१}{१}\frac{१}{३}\frac{१}{३}\frac{१}{४}\frac{१}{४}\frac{१}{७}$ छेद ८४ से गुणक ८४ । २८ । २८ । २१ ।२१ १२ भागहार १२४ ॥ ये छः विकल्प हुये ३२ ॥

अब सातवां विकल्प एकही है न्यास $\frac{१}{१}$ $\frac{१}{२}$ $\frac{१}{३}$ $\frac{१}{३}$ $\frac{१}{४}$ $\frac{१}{४}$ $\frac{१}{७}$ छेद १६८ गुणाकार १६८।८४।५६।५६ ४२।४२।२४ भागहार ४७२ ॥ ३३ ॥ इति ।

जहां तक कर्म होता है वहीं पर्यन्त उदाहरण भी है इनसे उपरान्त स्थानों-वाला ग्रह अन्तर्दशा नहीं पाता इस उदाहरण में एक विकल्प नहीं है दूसरे के ४ भेद, तीसरे के ८ भेद, चौथे के ९ भेद, पांचवें के ७ भेद, छठे के ४ भेद सातवें का एकही एवम् सर्व विकल्प ३३ होते हैं। जहां बहुत ग्रह पाचक हैं तहां पहिले दशापति अन्तर दशा पाचक उपरान्त जो क्रम दशा न्यास में लिखाहै वैसी ही रीति से यहां अन्तर्दशा में भी ग्रह क्रम लिखना एक स्थान में बहुत ग्रह हों तो पूर्व बलवान् पश्चात् हीनवीर्य लिखना ॥४॥

वैतालीयम्।

सम्यग्बलिनः स्वतुङ्गभागे सम्पूर्णा बलवर्जितस्य रिक्ता।
नीचांशगतस्य शत्रुभागे ज्ञेयानिष्टफला दशा प्रसूतौ ॥ ५ ॥

टीका—जन्मकाल में जो ग्रह षड्बल में पूर्णबली है उस की दशा संपूर्ण नाम की होती है, जो ग्रह उच्च वा उच्चांशक में हैं और बली ग्रह के साथ है तो उसकी दशा भी संपूर्ण नाम की, यह दशा वा अन्तर्दशा शरीरारोग्य, धनवृद्धि करती है। पूर्ण बल से थोडा हीन में भी वही संपूर्ण होती है। केवल जो उच्च में है और बल नहीं पावै तो पूर्ण नाम धन लाभवाली होती है। जो ग्रह बलरहित है और जो नीच राशि में है उसकी दशा रिक्ता नाम की, धन हानि करती है। ऐसे ही नीच राशि वा नीच नवांशक वालेकी और शत्रु राशि नवांशवाले की दशा बुरा फल देती है ॥ ५ ॥

इन्द्रवज्रा।

भ्रष्टस्य तुङ्गादवरोहिसंज्ञा मध्या भवेत्सा सुहृदुच्चभांशे।
आरोहिणी निम्नपरिच्युतस्य नीचारिभांशेष्वधमा भवेत्सा॥६॥

टीका—जो ग्रह परमोच्चांश से उतर गया उसकी दशा परम नीचांश पर्यन्त अवरोही संज्ञक होती है अनिष्ट फल देती है, इसमें भी उच्चांश वा मित्रांश वा स्वांश में हो तो मध्यम फल देगी। जो ग्रह परम नीच से उतर गया है उसकी दशा परमोच्चांश पर्यन्त आरोही होती है उसकी दशा भी शुभ फल देती है। इस में भी नीचांश शत्रु राशि नवांश में हो तो वह दशा अधम फल देती है ॥ ६ ॥

उपजातिः।

नीचारिभांशे समवस्थितस्य शस्ते गृहे मिश्रफला प्रदिष्टा।
संज्ञानुरूपाणि फलान्यथैषां दशासु वक्ष्यामि यथोपयोगम् ॥७॥

टीका—उच्च मूल त्रिकोण स्वक्षेत्र मित्रक्षेत्र में जो ग्रह बैठा है वही नीचांशक वा शत्रु नवांशक में हो तो उसकी दशा मिश्रफल अर्थात् शुभ और अशुभ भी देती है जैसे रोग भी धन लाभ भी। और जो शत्रु नीच राशियों में है वही उच्च मूल त्रिकोण मित्रांशक में हो तो वह भी वैसाही मिश्रफल देता है। शुभ, रिक्त संपूर्ण, मध्यम मिश्र, अधमादि जैसे नाम वैसे ही इन के फल भी हैं पृथक् फल आगे कहैंगे ॥ ७ ॥

वैतालीयम्।

उभयेऽधममध्यपूजिता द्रेष्काणैश्चरभेषु चोत्क्रमात्।
अशुभेष्टसमाः स्थिरे क्रमाद्धोरायाः परिकल्पिता दशा ॥ ८ ॥

टीका—लग्न दशाके हेतु जो द्विस्वभाव लग्न हो तो प्रथम द्रेष्काणवाले की दशा अधम, दूसरे वाले की मध्यम, तीसरे वाले की उत्तम, चर राशि लग्न में प्रथम द्रेष्काण हो तो उत्तम, दूसरा हो तो मध्यम, तीसरा हो तो अधम। स्थिर राशि लग्न में प्रथम द्रेष्काण हो तो लग्नदशा अशुभ दूसरा हो तो मध्यम तीसरा हो तो उत्तम इस प्रकार द्रेष्काण से लग्न दशा के फल यथाक्रम हैं ॥ ८ ॥

शार्दूलविक्रीडितम् ।

एकं द्वौ नव विंशतिर्धृतिकृती पञ्चाशदेषां क्रमा-
च्चन्द्रारेन्दुजशुक्रजीवदिनकृद्दैवाकरीणां समाः ।
स्वैःस्वैः पुष्टफला निसर्गजनितैः पक्तिर्दशायाः क्रमा-
दंते लग्नदशा शुभेति यवना नेच्छन्ति केचित्तथा ॥ ९ ॥

टीका-अब नैसर्गिक दशा कहते हैं यहां ग्रहोंके वर्ष निसर्ग अर्थात स्वभावही से नियत हैं कि जन्म समय से १ वर्ष तक चन्द्रमा की दशा रहती है उपरान्त २ वर्ष मङ्गल की तब ९ वर्ष बुध के,इसके उपरान्त २०वर्ष शुक्र के, इस के पीछे १८ बृहस्पति के, तिस के परे२०सूर्य के, इनके आगे ५०वर्ष शनि के, सब का जोड़ १२० वर्ष निसर्गायु होती है। जो बली ग्रह है उस की दशा में शुभ फल, हीन बली दशा अशुभ फल देती है यह सर्वत्र ही ज्ञापक है, पूर्वोक्त दशा में जो ग्रह वर्तमान है वही नैसर्गिक में भी जब आय पडे तो उसका फल पुष्ट होजाताहै। १२० वर्षउपरान्त जो कोई बचे तो वह जीवनकाल लग्न की नैसर्गिक दशाका होता है मृत्यु समय नियत१२० वर्ष सर्वसाधारण से उपरान्त शुभ फल देती है । जिसकी आयु १२०वर्षसे ऊपर नहीं है उसकी लग्न दशा भी नहीं है जिसकी ७० वर्ष से ऊपर आयु नहीं है उसकी नैसर्गिक दशा शनि की भी नहीं है जिसकी५०वर्ष से ऊपर आयु नहीं है उसकी सूर्य की दशा कुछ नहीं है इसी प्रकार सब जानना चाहिये १२०परमायु केवल त्रैराशिक के निमित्त है इसका विस्तार पहिले लिखा है पुष्टता के लिये और भी लिखता हूं कि जो कोई मीन लग्न अन्त्य नवांशक में जन्मेगा और सब ग्रह उच्च और वक्री होंगे तो मीन लग्न ने १२ वर्ष पाये वही बलवान् हो तो द्विगुणा होगा २४ हुए, ग्रह भी मीनांश होने में १२ वर्ष पाता है वक्र और उच्चगत होने से त्रिगुण हुआ ३६, सूर्य मेष मध्यांश में होने से २७ वर्ष चन्द्रादि ६ ग्रहों के इसी प्रकार ११६ होते हैं सब का जोड २६७ आयु होती है। परन्तु इतना

कोई बचता नहीं देखा गया क्योंकि ऐसा योग ही दुर्लभ है अतएव "नेच्छन्ति केचित्तथा" कोई लग्नदशा को निर्बल होनेसे अन्त में मृत्यु-रूप अनिष्ट फल वाली कहते हैं ॥ ९ ॥

शार्दूलविक्रीडितम् ।

पाकस्वामिनि लग्नगे सुहृदि वा वर्गस्य सौम्येऽपि वा
प्रारब्धा शुभदा दशा त्रिदशषड्लाभेषु वा पाकपे ।
मित्रोच्चोपचयत्रिकोणमदने पाकेश्वरस्य स्थित-
श्चन्द्रःसत्फलबोधनानि कुरुते पापानि चातोऽन्यथा ॥१०॥

टीका—सौर, सावन, नाक्षत्र और चान्द्र ये ४ प्रकार के मान होते हैं इसमें दशा विचार सावन मान से होता है वह रविके उदय से उदय पर्यन्त एकदिन होताहै और ३० दिनका महीना गिना जाता है ३६० दिन का जन्म दिनसे एक वर्ष होता है । जन्मकालिक खण्ड खाद्य में समस्त दशा के दिन बनाके जोड दिये वह दशा प्रवेश के समय का खण्ड खाद्य होगा ॥ इसी प्रकार अन्तर्दशा वालीकाभी करना । जिस ग्रह की अन्तर्दशा प्रवेश है वह पाकस्वामी कहाता है, वह लग्न में हो वा अपने पूर्वोक्त वर्ग में हो वा तात्कालिक मित्र राशि में हो तो उसकी दशा शुभ फल देती है, जो शुभ-ग्रह लग्नगत है उसकी दशा भी शुभ फल देती है और दशेश तात्कालिक लग्न से ३ । १० । ६ । ११ स्थान में हो तो दशा शुभ फल देती है, शत्रु अधिशत्रु के राश्यादि में अशुभ फल देती है अधिमित्र राशि में अति शुभ अन्यत्र सम । जब किसी ग्रह का अन्तर ४ वर्ष पर्यन्त रहता है तो तब तक क्या एकही फल होगा अत एव यह कहते हैं "मित्रोच्चोपचय" दशेश के मित्र और उच्च तथा उपचय और त्रिकोण और सप्तम स्थान में जब गोचर का चन्द्रमा हो तो शुभ फल और नीच और शत्रुराशि में उससे अन्यत्र २। १।४।८।१२ में अशुभ फल होगा ॥ १० ॥

शार्दूलविक्रीडितम् ।

प्रारब्धा हिमगौ दशा स्वगृहगे मानार्थसौख्यावहा
कौजे दूषयति स्त्रियं बुधगृहे विद्यासुहृद्वित्तदा ।

दुर्गारण्यपथालये कृषिकरी सिंहे सितर्क्षेऽन्नदा
कुस्त्रीदा मृगकुम्भयोर्गुरुगृहे मानार्थसौख्यावहा ॥ ११ ॥

टीका–अन्तर्दशा प्रवेश समयमें चन्द्रमा कर्क का हो तो वह अन्तर्दशा सौख्य और धन देगी, जो चन्द्रमा मङ्गलकी राशि में हो तो स्त्रीको व्यभिचारादि दूषण देती है, बुध की राशि में विद्या, मित्र धन देती है, जो चन्द्रमा सिंहका हो तो जङ्गल मार्ग और घरके समीप कृषिकर्म देती है शुक्र की राशिमें अन्न मिष्टादि पदार्थ भोजन देती है, शनि के घरमें बुरी स्त्री देती है और ऐसे ही दशान्तर्दशा प्रवेश समयमें चन्द्रमा बृहस्पति की राशि में हो तो सौख्य मान पूजा धन देती है। शुभदशा शुभकाल में प्रवेश हो तो अति शुभ फल और अशुभ दशा अशुभ काल में प्रवेश हो तो अति नेष्ट फल मिश्र में मिश्र फल युक्तिसे कहना ॥ ११ ॥

शार्दूलविक्रीडितम्।

सौर्यां स्वन्नखदन्तचर्मकनकक्रौर्य्याध्वभूपाहवै–
स्तैक्ष्ण्यन्धैर्यमजस्रमुद्यमरतिः ख्यातिः प्रतापोन्नतिः।
भार्यापुत्रधनारिशस्त्रहुतभुग्भूपोद्भवा व्यापद–
स्त्यागी पापरतिः स्वभृत्यकलहो हृत्क्रोडपीडामयाः॥१२॥

टीका-सूर्य की दशा का फल–इसके दशा या अन्तर्दशा में भी सुगन्धिद्रव्य हस्तिदन्तादि, व्याघ्रादि चर्म, सुवर्ण, क्रूरता, मार्ग, राजा, संग्राम इनसे धन लाभहोता है और उग्रस्वभाव, धैर्यता, वारंवार उद्यमतामें रति, कीर्ति, प्रताप की वृद्धि, शत्रुनिग्रह, भीति इतने फल सूर्य के पूर्वोक्त शुभ दायक दशा में होते हैं। अशुभ दशा में स्त्री पुत्र धन शत्रु शस्त्र अग्नि राजा इनों से आपत्ति प्राप्त होती है और त्यागी शुभ दशा में शुभ स्थान काम में व्यय करै अशुभ दशा हो तो अशुभ काम में व्यय होवे और पापासक्त रहै, अपने चाकरों के साथ कलह होवै और हृदय, पेट में पीडा होवै, रोगोत्पत्ति होवै । मिश्र दशा में मिश्र फल होते हैं ॥ १२ ॥

शार्दूलविक्रीडितम् ।

इन्दोः प्राप्य दशां फलानि लभते मन्त्रान्द्विजात्युद्भवा-
दिक्षुक्षीरविकारवस्त्रकुसुमक्रीडातिलान्नश्रमैः ।
निद्रालस्यमृदुद्विजामररतिः स्त्रीजन्ममेधाविता
कीर्त्यर्थोपचयक्षयौ च बलिभिर्वैरं स्वपक्षेण च ॥ १३ ॥

टीका—चन्द्रमा की शुभदशा में ब्राह्मणों से मन्त्र पावे और इक्षुविकार गुडादि और दुग्धविकार दधि आदि और वस्त्र, पुष्प, क्रीडा, तिल, अन्न, पराक्रम इन से शुभ लाभादि होवें अशुभ दशा हो तो निद्रा आलस्य होवे शरीरपीडाहो । ब्राह्मण, गुरु, देवता इनके आराधन में मति होवै । कन्या उत्पन्न होवै । बुद्धि बढै । कीर्ति, धन, वृद्धि और क्षय भी होवे, बन्धुवर्ग में वैर होवे । मिश्र बली हों तो फल भी मिश्र होंगे । बल का तारतम्य देख कर बुद्धि से फल कहना ॥ १३ ॥

शार्दूलविक्रीडितम् ।

भौमस्यारिविमर्दभूपसहजक्षित्याविकाजैर्धनं
प्रद्वेषस्सुतदारमित्रसहजैर्विद्वद्गुरुद्वेष्टृता ।
तृष्णासृग्ज्वरपित्तभङ्गजनिता रोगाः परस्त्रीकृताः
प्रीतिः पापरतैरधर्मनिरतिः पारुष्यतैक्ष्ण्यानि च ॥ १४ ॥

टीका—भौम की दशा शुभ हो तो शत्रुमर्दन से और राजा, भाई, पृथ्वी, भेड, बकरी, ऊनवाले जीव इतने से धन प्राप्ति होवै । अशुभ हो तो पुत्र, स्त्री, मित्र, भाई, पण्डित, गुरु इन से वैर होवै । तृष्णा, क्षुधासे पीडित रहै । रुधिरविकार, ज्वर, पित्त, विस्फोटक वा अङ्गभङ्ग इन से कष्ट होवे परस्त्री सङ्गम होवे, उसी सङ्गम से रोग वा उपद्रव होवे, पापिष्ठों के साथ प्रीति, अधर्म में प्रीति होवे, क्रूर वचन, उग्र स्वभाव होवे । ये फल मङ्गल की पाप दशा में हैं । मिश्र में मिश्र फल बुद्धि से कहना ॥ १४ ॥

शार्दूलविक्रीडितम् ।

बौध्यां दौत्यसुहृद्गुरुद्विजधनं विद्वत्प्रशंसायशो
युक्तिद्रव्यसुवर्णवेसरमहीसौभाग्यसौख्याप्तयः ।
हास्योपासनकौशलं मतिचयो धर्मक्रियासिद्धयः
पारुष्यं श्रमबन्धमानसशुचः पीडा च धातुक्षयात् ॥ १५ ॥

टीका—बुधशुभदशा में दूतकर्म से, मित्र, गुरु, पूज्य ब्राह्मणों से धन लाभ । पण्डितों से प्रशंसा और यश । द्रव्य कांस्यादि सुवर्ण और वेसर अश्व विशेष, भूमि, सौभाग्य सुख मिलते हैं और परोपहास और कुशलता, बुद्धि-वृद्धि, धर्मक्रिया की सिद्धि होती है । बुध अशुभ हो तो कठोर वचनता, खेद, बन्धन, शोक, दुश्चित्तता, त्रिदोष से कष्ट, ये फल होते हैं । मिश्र में मिश्र ॥ १५ ॥

शार्दूलविक्रीडितम् ।

जैव्याम्मानगुणोदयो मतिचयः कान्तिः प्रतापोन्नति-
र्माहात्म्योद्यममन्त्रनीतिनृपतिस्वाध्यायमन्त्रैर्धनम् ।
हेमाश्वात्मजकुञ्जराम्बरचयः प्रीतिश्च सद्भूमिपैः
सूक्ष्मोहागहनश्रमः श्रवणरुग्वैरं विधर्माश्रितैः ॥ १६ ॥

टीका—बृहस्पति की शुभ दशा में पूजा, विद्या शौर्यादि उदय होते हैं । बुद्धि और कान्ति की वृद्धि प्रताप और पुरुषार्थ से उन्नति, शत्रु को अपनी भीति, परोपकारशीलता, गर्वजनन और मन्त्र, नीति, नृपति, स्वाध्याय से धन और सुवर्ण, घोडा, पुत्र, हाथी, वस्त्र इनकी वृद्धि होती है । गुणवान् राजाओं से प्रीति (स्नेह) बढ़ै । जो बृहस्पति अशुभ हो तो सूक्ष्म वस्तु की प्राप्ति में महान् श्रम हो, कर्णरोग, धर्मबाह्य नास्तिकादिकों से वैर होते हैं । मिश्र में मिश्र ॥ १६ ॥

शार्दूलविक्रीडितम् ।

शौक्र्यां गीतरतिः प्रमोदसुरभिर्द्रव्यान्नपानाम्बर-
स्त्रीरत्नद्युतिमन्मथोपकरणज्ञानेष्टमित्रागमाः ।

कौशल्यं क्रयविक्रये कृषिनिधिप्राप्तिर्धनस्यागमो
वृन्दोर्वीशनिषादधर्मरहितैर्वैरं शुचः स्नेहतः ॥ १७ ॥

टीका—बली शुक्र की दशा में गीतादि गायन से प्रसन्नता, धन, अन्न, पेय वस्तु और वस्त्र,स्त्री,रत्न, (मणि) कान्ति और कामोपभोग्य शय्यादि योगशास्त्रप्रिय मित्र इतने वस्तुओं का लाभ, क्रयविक्रयमें कुशलता कृपि, और निधि (भूमिगत द्रव्य)प्राप्ति होती है। शुक्र अशुभ हो तो बहुत लोगों से और राजा से व्याधों से पापियोंसे वैर स्नेहवशसे शोक ये फल होते हैं। मिश्र दशा बल स्थानादि से हो तो फल भी मिश्र ॥ १७ ॥

शार्दूलविक्रीडितम् ।

सौरीम्प्राप्य खरोष्ट्रपक्षिमहिषीवृद्धाङ्गनावाप्तयः
श्रेणीग्रामपुराधिकारजनिता पूजा कुधान्यागमः ।
श्लेष्मेर्ष्यानिलकोपमोहमलिनव्यापत्तितन्द्राश्रमान्
भृत्यापत्यकलत्रभर्त्सनमपि प्राप्नोति च व्यङ्गताम् ॥ १८ ॥

टीका—शनि की शुभ दशा में गधे, ऊंट, पक्षी (बाजआदि),महिषी,वृद्धा स्त्री इतनी वस्तुओं की प्राप्ति,समान जाति बहुतों के अधिकार में नियोग, गांव वा नगरके अधिकार से पूजा, मँडुवा और बाजराआदि अन्न की प्राप्ति ये फल हैं। अशुभ दशामें श्लेष्मसे और ईर्षा से व वायु से व गुस्सा से, चित्त मलिनता से विपत्ति होवे तन्द्रा आलस्य खेद । थकावट पाता है और भृत्य (चाकर) पुत्र बेटी स्त्री इन से तर्जन अर्थात् उलाहना वा झिडकी पाता है अङ्ग हीनता वा रोग से अङ्गशिथिलता होती है। शनि बल और स्थानसे मिश्र हो तो फल भी बुद्धि की युक्ति से मिश्र कहना॥ १८

उपजातिः ।

दशासु शस्तासु शुभानि कुर्वन्त्यनिष्टसंज्ञास्वशुभानि चैवम्॥
मिश्रासु मिश्राणि दशाफलानि होराफलं लग्नपतेस्समानम् १९

टीका—जो ग्रह उपचय राशि में हैं और अस्त नहीं हैं और उच्चादि शुभ वर्ग में हैं उनकी दशा शुभ होती है फल भी शुभ ही देती है। जो ग्रह अस्तङ्गत, वा रूक्ष, युद्ध में जीते हुये, नीचादि अनिष्ट वर्ग में हैं उनकी दशा

(अनिष्ट) अशुभ फल देती है। लग्न दशा का फल लग्नेश के तुल्य होता है पूर्व द्रेष्काण से भी कहा है यहां बलाधिक्यता से फल होगा ॥ १९ ॥

शालिनी। संज्ञाध्याये यस्ययद्द्रव्यमुक्तं कर्माजीवोयश्चयस्योपदिष्टः।
भावस्थानालोकयोगोद्भवं च तत्तत्सर्वं तस्य योज्यं दशायाम्॥२०॥

टीका-जिस ग्रहका संज्ञाध्यायमें जो द्रव्य ताम्रादि कहाहै उस ग्रहकी शुभ दशा में उसी द्रव्य का लाभ, अशुभ दशामें उसी की हानि होगी वैसाही जिस ग्रहका कर्माजीव आगे जिस वस्तुसे लिखीहै उसीका लाभ वा हानि दशा शुभाशुभसे कहना और भावफल, दृष्टिफल,और योग यह सर्वदा फलदेतेहैं॥ २० ॥

इन्द्रवज्रा-छायाम्महाभूतकृताञ्च सर्वेऽभिव्यञ्जयंति स्वदशामवाप्य।
कम्ब्वग्निवाय्वम्बरजान्गुणांश्चनासास्यदृक्त्वक्छ्रवणानुमेयान् ॥ २१॥

टीका-जिसकी जन्म दशा ज्ञात नहीं है उसकी पञ्च महाभूत-पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु, आकाश की छाया से दशापति ग्रह प्रकारान्तर से जानी जाती है कि, पृथ्वी तत्त्वका गुण गन्ध है वह नाकसे प्रकट होता है, जल तत्त्व का गुण रस है जिह्वा से प्रकट होता है,अग्नि तत्त्व का गुण रूप दृष्टि से अनुमेय है। वायु तत्त्व का गुण स्पर्शहै वह त्वचा से अनुमेय है, आकाश तत्त्व का गुण शब्द कर्ण से अनुमेय है, जिसकी प्राप्ति है वह जिस ग्रह का धातु है उसकी दशा जाननी जैसे अकस्मात् सुगन्धप्राप्त हो उसकी बुध की पार्थिव छाया जाननी,जो मीठा भोजन प्रिय हो तो चन्द्रमा या शुक्रकीछाया जलकृत जो कान्ति वर्द्धन हो तो सूर्य मङ्गल की छाया अग्नि कृत होवै, जोस्पर्श में मृदु कोमल होवे तो शनिकृत वायु छाया जो शब्द कर्ण रसायन हो तो बृहस्पति की नाभस छाया जिसकी छाया हो उसी की दशा जाननी शुभ छाया से शुभ दशा अशुभ छाया से अशुभ दशा जाननी ॥ २१ ॥

मालिनी-शुभफलददशायां तादृगेवान्तरात्मा
बहु जनयति पुंसां सौख्यमर्थागमञ्च।
कथितफलविपाकैस्तर्कयेद्वर्तमानां
परिणमति फलाप्तिस्स्वप्नचिन्तास्ववाक्यैः ॥ २२ ॥

टीका-और प्रकार दशा लक्षण जान कहते हैं कि जैसी शुभ वा अशुभ दशा हो वैसा ही अन्तरात्मा चित्त भी प्रसन्न वा खिन्न रहता है और बहुत प्रकार सुख धन लाभ होते हैं। वा अशुभ हैं तो इनकी हानि होती है। मिश्र में मिश्र फल ऐसे फलों में जैसा फल पुरुष को वर्तमान है वैसी ही ग्रह की दशा होगी ये फल अन्तर्दशा के फलों में मिलाने चाहियें जहां मिलैं उसकी दशा होगी, इस में भी स्मरण चाहिये कि जो ग्रह अल्पवीर्य है उसका शुभ फल स्वप्न में वा चिन्ता मन की गिनती में मिल जाता है प्रत्यक्ष नहीं हो सक्ता। शुभ दशा में अन्तर भी शुभ हो तो सौख्य व धनागम बहुत होते हैं, अशुभ में उलटा फल होगा। मिश्र में मिश्र फल और जहां दशेशावाले के फलों में विरुद्धता है वहां अन्तर वाले का फल प्रबल होगा॥ २२॥

वसंततिलका।

एकग्रहस्य सदृशे फलयोर्विरोधे
नाशं वदेद्यदधिकं परिच्यते तत्।
नान्यो ग्रहः सदृशमन्यफलं हिनस्ति
स्वांस्वां दशामुपगताः स्वफलप्रदाः स्युः॥ २३॥

इति श्रीवराहमिहिरविरचिते बृहज्जातके दशा-
न्तर्दशाध्यायोऽष्टमः॥ ८॥

टीका-जब दशा में एक ग्रह के फल में विरोध है तो दोनों फल नाश हो जाते हैं जैसे कोई ग्रह किसी योग से सुवर्ण देने वाला है वही ग्रह और प्रकार अष्टकवर्ग दृष्टिप्रभृति में सुवर्णनाशक भी है तो दोनों फलों का नाश कहना, न तो सुवर्ण मिले न वो नष्ट हो जो दो फल देने की युक्ति हैं उन में से जो युक्ति बलवान् हो वह नष्ट नहीं होगी, फल नाश तुल्यबल विरोध में है जैसे कोई ग्रह दो प्रकार से सुवर्ण देने वाला है एक प्रकार से सुवर्ण नाश करने वाला है तो प्राप्ति ही होगी। जब एक ग्रह देने वाला और अन्य हरण करने वाला है तो अपनी २ दशाओं में अपने ही फल देंगे॥ २३॥

इति महीधरविरचितायां बृहज्जातकभाषाटीकायां दशान्तर्दशानिरूपण दशाफलकथनं नामाष्टमोऽध्यायः॥ ८॥

अष्टकवर्गाऽध्यायः ९.

शार्दूलविक्रीडितम् ।

स्वादर्कः प्रथमायबन्धुनिधनद्व्याज्ञातपोद्यूनगो
वक्रात्स्वादिव तद्वदेव रविजाच्छुक्रात्स्मरान्त्यारिगः ।
जीवाद्धर्मसुतायशत्रुषु दशत्र्यायारिगः शीतगो-
रेष्वेवान्त्यतपःसुतेषु च बुधाल्लग्नात्सबन्ध्वन्त्यगः ॥ १ ॥

टीका—अब गोचरफल के निमित्त अष्टवर्ग (७ ग्रह आठवां लग्न) सहित कहते हैं—कि, जो ग्रह जन्म में जिस राशि में है वह उसका स्थान हुआ सूर्य अपने स्थान से १ । ११ । ४ । ८ । २ । १० । ९ । ७ इतने स्थानों में गोचर का शुभ फल देताहै और जगह अशुभ फल मङ्गलसे सूर्य १ । ११ । ४ । ८ । २ । १० । ९ । ७ इन स्थानों में शुभ अन्यत्र अशुभ ऐसा ही सर्वत्र जानना शनि से सूर्य १ । ११ । ४ । ८ । २ । १० । ९ । ७ । शुभ, शुक्र से सूर्य ७ । १२ । ६ स्थानों में शुभ । बृहस्पति से सूर्य ९ । ५ । ११ ।६ में शुभ, चन्द्रमा से सूर्य १० । ३ । ११ । ६ । में शुभ, बुध से सूर्य १० । ३ । ११ । ६ । १२ । ९ । ५ शुभ, लग्न से सूर्य १० । ३ । ११ । ६ । ४ । १२ में शुभ ॥ १ ॥

शार्दूलविक्रीडितम् ।

लग्नात् षट्त्रिदशायगः सधनधीधर्मेषु चाराच्छशी
स्वात्सास्तादिषु साष्टसप्तसु रवेः षट्त्र्यायधीस्थो यमात् ।
धीत्र्यायाष्टमकण्टकेषु शशिजाज्जीवाद्व्ययायाष्टगः
केन्द्रस्थश्च सितात्तु धर्मसुखधीत्र्यायास्पदानङ्गगः ॥ २ ॥

टीका—चन्द्रमा का अष्टक वर्ग चन्द्रमा लग्न से ६ । ३ । १० । ११ में शुभ, मङ्गल से चन्द्रमा ६ । ३ । १० । ११ । २ । ५ । ९ में, चन्द्रमा अपने स्थान से ६ । ३ । १० । ११ । ७ । १ में, और सूर्य से ६ । ३ ।

१० । ११ । ८ । ७ में, शनि से ६ । ३ । १ २ से ५ ।३।
११ । ८ । १ । ४ । ७ । १० में, बृहस्पति से १२ । ११ । ८ । १ । ४ ।
७ ।१० में, शुक्र से ९ । ४ । ५ । ३ ।११ ।१० । ७ में शुभ ॥ २ ॥

शार्दूलविक्रीडितम् ।

वक्रस्तूपचयेष्विनात् सतनयेष्वाद्याधिकेषूदया-
च्चन्द्रादिग्विफलेषु केन्द्रनिधनप्राप्त्यर्थगः स्वाच्छुभः ।
धर्मायाष्टमकेन्द्रगोऽर्कतनयाज्ज्ञात् षट्त्रिधीलाभगः
शुक्रात् षड्व्ययलाभमृत्युषु गुरोः कर्मान्त्यलाभारिषु ॥ ३ ॥

टीका—मङ्गल के अष्टकवर्ग—सूर्य से मङ्गल ३ । ६ । १० । ११ । ५ में शुभ, लग्न से मङ्गल ३ ।६।१०।११।१ में, चन्द्रमा से ३।६।११ में, अपने स्थान से मङ्गल १।४।७।१०।८।११।२ में, शनि से ९।११।८।१। ४।७।१० में, बुधसे ६। ३ । ५ । ११में, शुक्रसे ६।१२ । ११।८ में, बृहस्पति से १० । १२।११ । ६ । में शुभ अन्यत्र अशुभ ॥ ३ ॥

शार्दूलविक्रीडितम् ।

द्व्याद्यायाष्टतपःसुखेषु भृगुजात्सत्र्यात्मजेष्विन्दुजः
साज्ञास्तेषु यमारयोर्व्ययरिपुप्राप्ताष्टगो वाक्पतेः ।
धर्मायारिसुतव्ययेषु सवितुः स्वात्साद्यकर्मत्रिगः
षट्स्वायाष्टसुखास्पदेषु हिमगोः साद्येषु लग्नाच्छुभः ॥ ४ ॥

टीका—बुधाष्टक वर्ग- शुक्र से बुध २।१।११।८।९।४।३।५ में, शनि से २।१।११।८।९।४।१०।७में, मङ्गल से २।१।११।८।९।४।१०।७में, बृहस्पति से १२ । ६ ।११ ।८में, सूर्य से९।११।६।५।१२में, अपने स्थान से ९।११।६।५।१२।१।१०।३में, चन्द्रमा से ६।२।११।८।४।१० में, लग्न से ६।२।११।८।४।१०।१ में शुभ और अन्यत्र अशुभफल देता है ॥ ४ ॥

शार्दूलविक्रीडितम् ।

दिक्स्वाद्याष्टमदायबन्धुषु कुजात् स्वात्सात्रिकेष्वङ्गिराः
सूर्यात्सात्रिनवेषु धीस्वनवदिग्लाभारिगो भार्गवात् ।

जायायार्थनवात्मजेषु हिमगोर्मन्दात्त्रिषड्धीव्यये
दिग्धीषट्स्वसुखायपूर्वनवगो ज्ञात्ससमरश्चोदयात् ॥ ५ ॥

टीका—बृहस्पतिका अष्टकवर्ग—मङ्गल से बृहस्पति १०।२।१।८।७।११। ४ में, अपने स्थान से १०।२।१।८।७।११।४।३ में, सूर्य से १०।२।१।८। ७।११।४।३।९ में, शुक्र से ५।२।९।१०।११।६ में, चन्द्रमा से ७।११।२।९।५ में, शनि से ३।६।५।१२ में, बुध से १०।५।६।२।४।११।१।९ में, लग्न से १०। ५।६।२।४।११।९।७ में शुभ ॥ ५ ॥

शार्दूलविक्रीडितम् ।

लग्नादासुतलाभरन्ध्रनवगः सान्त्यश्शशांकात्सितः
स्वात्साज्ञेषु सुखत्रिधीनवदशाच्छिद्राप्तिगः सूर्यजात् ।
रन्ध्रायव्ययगो रवेर्नवदशप्रास्याष्टधीस्थो गुरो-
र्ज्ञाद्धीत्र्यायनवारिगस्त्रिनवषट्पुत्रायसान्त्यः कुजात् ॥ ६ ॥

टीका—शुक्राष्टकवर्ग—लग्न से शुक्र १।२।३।४।५।११।८।९ में, चन्द्रमा से १।२।३।४।५।११।८।९।१२ में, अपने स्थान से १।२।३।४।५।११।८ ९।१० में, शनि से ४।३।५।९।१०।८।११ में, सूर्य से ८।११।१२ में बृहस्पति से ९।१०।११।८।५ में, बुध से ५।३।११।९।६ में, मङ्गल से ३।९।६।५।११। १२ में शुभ, अन्यत्र अशुभ ॥ ६ ॥

शार्दूलविक्रीडितम् ।

मन्दः स्वात्त्रिसुतायशत्रुषु शुभः साज्ञान्त्यगो भूमिजा-
त्केन्द्रायाष्टधनेष्विनादुपचयेष्वाद्ये सुखे चोदयात् ।
धर्मायारिदशान्त्यमृत्युषु बुधाच्चन्द्रात्त्रिषड्लाभगः
षष्ठायान्त्यगतः सितात्सुरगुरोः प्रास्यन्तधीशत्रुषु ॥ ७ ॥

टीका—शनि के अष्टकवर्ग-शनि अपनें स्थान से ३।५।११।६ मङ्गल से ३।५।११।६।१०।१२ सूर्य से १।४।७।१०।११।८।२ लग्न से ३।६।१०।११।१।४ बुध से ९।११।६।१०।१२।८ चन्द्रमा से ३।६। ११ शुक्र से ६।११।१२ बृहस्पति से ११।१२।५।६ शुभ ॥ ७ ॥

सूर्याष्टकवर्गः ४८

र.	चं.	मं.	बु.	बृ.	शु.	श.	ल.
१	१०	१	१०	९	७	१	१०
११	३	११	३	५	१२	११	३
४	११	४	११	११	६	४	११
८	६	८	६	६	०	८	६
२	०	२	१२	०	०	२	४
१०	०	१०	९	०	०	१०	१२
९	०	९	५	०	०	९	०
७	०	७	०	०	०	०	०

चन्द्राष्टकवर्गः ४९

सू.	चं	मं.	बु.	बृ.	शु.	श.	ल.
६	६	६	५	१२	९	६	६
३	३	३	३	११	४	३	३
१०	१०	१०	११	८	५	११	१०
११	११	११	८	१	३	५	११
८	७	२	१	४	११	०	०
७	१	५	४	७	१	०	०
०	०	९	७	१०	७	०	०
०	०	०	१०	०	०	०	०

भौमाष्टकवर्गः ३९

र.	चं.	मं.	बु.	बृ.	शु.	श.	ल.
३	३	१	६	१०	६	९	३
६	६	४	३	१२	१२	११	६
१०	११	७	५	११	११	८	१०
११	०	१०	११	६	८	१	११
५	०	८	०	०	०	४	१
०	०	११	०	०	०	७	०
०	०	२	०	०	०	१०	०

बुधाष्टकवर्गः ५४

र.	चं.	म.	बु.	बृ.	शु.	श.	ल.
९	६	२	९	१२	२	२	६
११	२	१	११	६	१	१	२
६	११	११	६	११	११	११	११
५	८	८	५	८	८	८	८
१२	४	९	१२	०	९	९	४
०	१०	४	१	०	४	४	१०
०	०	१०	१०	०	३	१०	१
०	०	७	३	०	५	७	०

गुरोरष्टकवर्गः ५६

र.	चं.	म.	बु.	बृ.	शु.	श.	ल.
१०	७	१०	१०	१०	५	३	१०
२	११	२	५	२	२	६	५
१	२	१	६	१	९	५	६
८	९	८	२	८	१०	१२	२
७	५	७	४	७	११	०	४
११	०	११	११	११	६	०	११
४	०	४	९	४	०	०	९
३	०	०	१	३	०	०	७
९	०	०	०	०	०	०	०

शुक्राष्टकवर्गः ५२

र.	चं.	मं.	बु.	बृ.	शु.	श.	ल.
८	१	३	५	९	१	४	१
११	२	९	३	१०	२	३	२
१२	३	६	११	११	३	५	३
०	४	५	९	८	४	९	४
०	५	११	६	५	५	१०	५
०	११	१२	०	०	११	८	११
०	८	०	०	०	८	११	८
०	९	०	०	०	९	०	९
०	१२	०	०	०	१०	०	०

शनेरष्टकवर्गः ३९

र.	च.	मं.	बु.	बृ.	शु.	श.	ल.
१	३	३	९	११	६	३	३
४	६	५	११	१२	११	५	६
७	११	११	६	५	१२	११	१०
१०	०	६	१०	६	०	६	११
११	०	१०	१२	०	०	०	१
८	०	१२	८	०	०	०	४
२	०	०	०	०	०	०	०
०	०	०	०	०	०	०	०

लग्नाष्टकवर्गः ४९

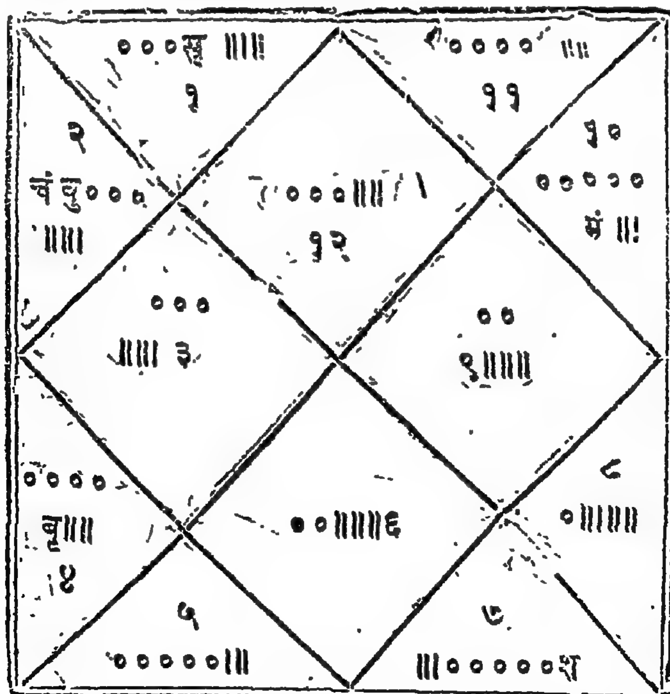
र.	चं	म.	बु.	बृ.	शु.	श.	ल.
३	३	१	१	२	१	१	३
४	६	३	२	४	२	३	६
६	१०	६	४	५	३	४	१०
१०	११	१०	६	६	४	६	११
११	०	११	८	७	५	१०	०
१२	०	०	१०	९	८	११	०
०	०	०	११	१०	९	०	०
०	०	०	०	११	११	०	०

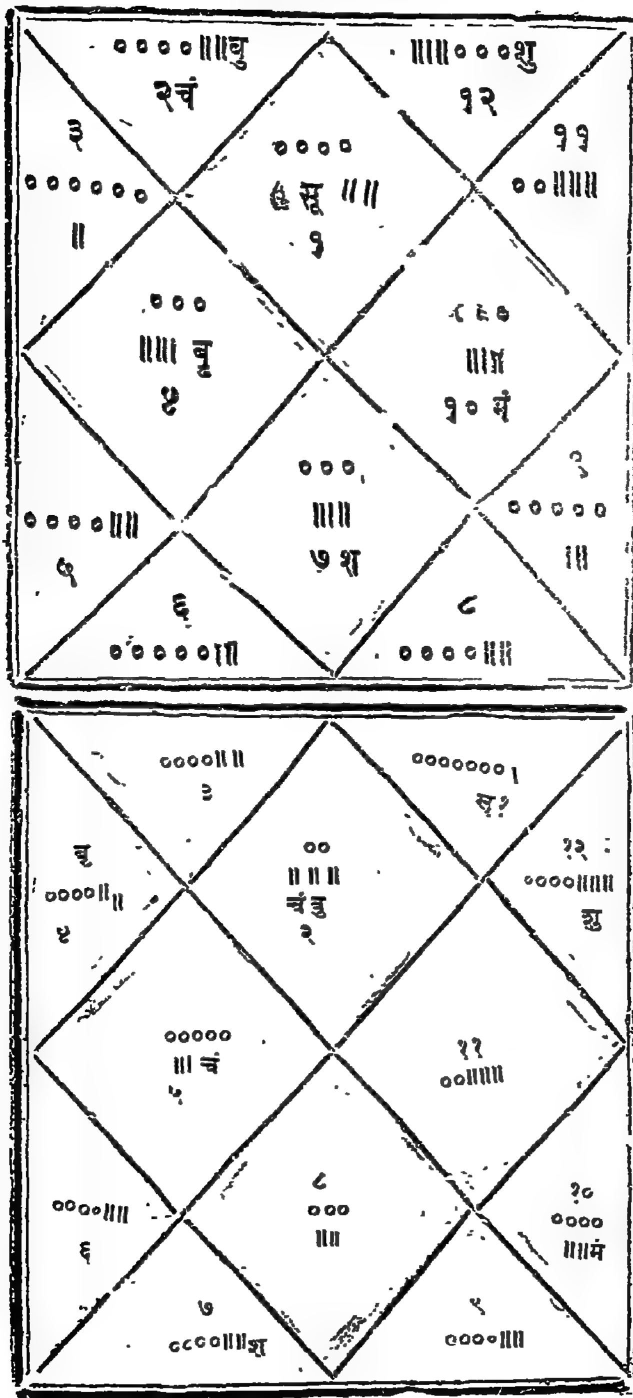
मालिनी।

इतिनिगदितमिष्टंनेष्टमन्यद्विशेषादधिकफलविपाकंजन्मभात्तत्रदद्युः।
उपचयगृहमित्रस्वोच्चगैःपुष्टमिष्टंत्वपचयगृहनीचारातिगैर्नेष्टसम्पत् ८

इति श्रीवराहमिहिरविरचिते बृहज्जातके अष्टक-
वर्गाऽध्यायो नवमः ॥ ९ ॥

टीका—इतने में जो उक्त स्थान हैं उनमें शुभ फल अनुक्तों में अशुभ फल सभी ग्रह जन्म राशि से गोचर में देते हैं, जो शुभ स्थान कहे हैं उनमें बिन्दु अनुक्तों में रेखा लक्षण कुण्डलियों में किये जाते हैं उदाहरणार्थ कुण्डली लिखी है शुभ का जोड और अशुभ का जोड करना जो अधिक हो उस का फल अधिक होगा जहां ८ बिन्दु हों वहां शुभ पूर्ण होगा, ६ बिन्दु में फल चौथाई कम होगा, ४ बिन्दु में आधा फल होगा, २ बिन्दु में चौथाई फल होगा, ऐसा हीं अशुभ फलों का विचार रेखाओं से करना, बिन्दु रेखाक्रम कुंडलियों में देखना चाहिये।




००००||||बु
२चं
||||०००शु
१२
३
००००००
||
००००
६ सू ||||
१
११
००|||||
०००
|||| बृ
४
८६०
|||गु
१० मं
०००
||||
७ श
२
०००००
|||
००००||||
५
६
०००००|||
८
००००||||
००००||||
३
०००००००|
सू?
बु
००००||||
४
००
|| || ||
चं शु
२
१२
००००|||||
शु
०००००
||| चं
५
११
००||||||
००००||||
६
८
०००
|||
१०
००००
||||मं
७
००००|||श
९
००००||||

उदाहरण में मेष की ५ रेखा ३ बिन्दु रेखा ३ बिन्दु ३ बराबर गये शेष रेखा २ अशुभ भाग २ बचने से मङ्गल अशुभ होता है, वृष में रेखा ५ बिन्दु तीन ३ । ५ में से घटाकर २ रेखा बचीं यहां भी वृष का मङ्गल अशुभ हुआ, मिथुन में रेखा ५ बिन्दु ३ घटा के शेष २ रेखा बचने से मिथुन का मङ्गल भी अशुभ, कर्कट में बिन्दु रेखा तुल्य होने से मध्यम फल, सिंह में बिन्दु ५ रेखा ३ घटा के २ बिन्दु बचे इस से सिंह का मङ्गल सर्वदा शुभ, कन्या में रेखा ६ बिन्दु २ रेखा ४ बचीं इस कारण कन्या का मङ्गल सर्वदा अशुभ, तुला में रेखा ३ बिन्दु ५ तुल्य घटा के शेष २ बिन्दु बचे इस लिये तुला का मङ्गल चतुर्थांश शुभ होता है वृश्चिक में बिन्दु १ रेखा ७ बिन्दु १ रेखा ६ बचीं वृश्चिक का मङ्गल सर्वदा अशुभ, धन में रेखा ६ बिंदु २ रे० ४ बचीं अशुभ, मकर में रे० ३ बिं० ५ बचे २ बिन्दु मकर का मंगल सर्वदा शुभ, कुम्भ में तुल्यताके कारण सम फल हुआ मीन में रेखा ५ बिं० ३ घटा के बचीं रेखा २ मीन का मङ्गल अशुभ,जहां ८ बिन्दु वहां अति शुभ, जहां रेखा बहुत वहां अशुभ, जहां बिंदु बहुत वहां शुभ फल सर्वत्र जानना जो "एकग्रहस्य सदृशे फलयोर्विरोधेत्यादि" से दशा फल और यह गोचर फल मिलाकर युक्तिसे कहना चाहिये ॥ ८ ॥

यहां शुभ में बिन्दु अशुभ में रेखा लिखी हैं ये बिन्दु रेखा शुभाशुभ गणना के संकेत चिह्नमात्र हैं शुभ में बिन्दु अशुभ में रेखा अथवा अशुभ में बिन्दु शुभ में रेखा स्थापन करो जैसे अपने को सुगम जान पडे । प्रयोजन इनका यहां तो शुभाशुभ मात्र लिखा है मुख्य प्रयोजन इनका सामुदायु और भिन्नायु हैं जिनसे आयुनिर्णय दशाशुभाशुभ प्रत्यक्ष फल गोचरका ठीक २ मिलता है आयुनिर्णय इस विधानसे प्रत्यक्ष मिलता है।

इति श्रीमहीधरकृतायां बृहज्जातकभाषाटीकायामष्टकवर्गा-
ध्यायो नवमः ॥ ९ ॥

इसको सविस्तर सोदाहरण भा० टी० सहित शंभुहोराप्रकाशकी भा० टी० करनेपर अलाहिदा लिखनेकी इच्छा है.

कर्माजीवाऽध्यायः १०.

प्रहर्षिणी ।

अर्थाप्तिः पितृपितृपत्निशत्रुमित्रभ्रातृस्त्रीभृतकजनाद्दिवाकराद्यैः ।
होरेन्द्वोर्दशमगतैर्विकल्पनीया भेन्द्वर्कास्पदपतिगांशनाथवृत्त्या १॥

टीका–आजीविका कहते हैं–लग्न से वा चन्द्रमा से दशम स्थान में जो ग्रह हो उसके द्रव्य सदृश कर्मसे मनुष्य की आजीविका होती है। जैसे लग्न वा चंद्रमा से सूर्य दशम हो तो पिता से धन प्राप्ति. लग्न से चंद्रमा दशम हो तो पिता की पत्नी से, मंगल हो तो शत्रु से, बुध हो तो मित्र से, बृहस्पति हो तो भाई से, शुक्र हो तो स्त्री से, शनि हो तो सेवक से, जो लग्न से कोई ग्रह और चंद्रमा से भी कोई ग्रह दशम हो तो अपनी अपनी दशा में दोनों फल देते हैं, जब दशम में बहुत ग्रह हों तो अपनी अपनी दशाओं में सभी फल देते हैं; जो लग्न से और चंद्रमा से कोई ग्रह दशम न हो तो लग्न, चंद्र और सूर्य इन से दशम भावका स्वामी जिस नवांशमें है उस नवांश का स्वामी जो ग्रह है उसके सदृश फल होगा ॥ १ ॥

प्रहर्षिणी ।

अर्कांशे तृणकनकोर्णभेषजाद्यैश्चन्द्रांशे कृषिजलजाङ्गनाश्रयाच्च ।
धात्वग्निप्रहरणसाहसैःकुजांशे सौम्यांशे लिपिगणितादिकाव्यशिल्पैः

टीका–प्रत्येक ग्रहों के नवमांशके वश से वृत्ति कहते हैं–लग्न, चन्द्र और सूर्य इनसे दशमस्थान को स्वामी सूर्य के अंश में हो तो तृण, सुगन्धिद्रव्य, सुवर्ण ऊन पशमीने का काम,औषधादि से आजीविका होती है, चन्द्रमा के अंश में हो तो कृषि कर्म, शङ्ख, मोती, आदि, स्त्री आश्रयादि से, मङ्गल के अंश में हो तो धातु (मृत्तिका, तांबा, सुवर्णादि, वा मनशिल, हरिताल आदि) और अग्नि कर्म, शस्त्र, बाण खड्गादि और साहस के कर्म से,बुध के अंश में हो तो लिखनेसे और गणितशास्त्र काव्यशास्त्र औरशिल्प (चित्र आदि कारीगरी)के कामसे धन पाता है ॥ २ ॥

प्रहर्षिणी ।

जीवांशे द्विजविबुधाकरादिधर्मैः काव्यांशे मणिरजतादिगोकुलाद्यैः ।
सौरांशे श्रमवधभारनीचशिल्पैः कर्मेशाध्युषितनवांशकर्मसिद्धिः ३

टीका–बृहस्पति के अंश में हो तो ब्राह्मण, देवता या पण्डित खान, वा हाथी घोडा के उत्पत्तिस्थान धर्म(यज्ञ दानादि) से धन पाताहै शुक्र के अंश में होतो मणि (हीरा पद्मरागादि) रजत (चांदी)गौ भैंस वा "महिष्यैः" (ऐसा पाठ है) अर्थात् महिषी राजपत्नियों से शनि के नवमांशमें हो तो परिश्रम (मार्ग गमनादि) वा व्याधवृत्ति से, वा शरीरताडन भारवाहादि कर्म से, तथा नीच कर्मसे धन पाता है दशमेश जिस ग्रह के नवांशकमें है उसके उक्त प्रकारसे कर्माजीविका मनुष्य की होती है ॥ ३ ॥

प्रहर्षिणी ।

मित्रारिस्वगृहगतैर्ग्रहैस्ततोर्थान्तुङ्गस्थेबलिनिचभास्करेस्ववीर्यात् ।
आयस्थैरुदयधनाश्रितैश्चसौम्यैःसंचिन्त्यंबलसहितैरनेकधास्वम् ४॥

इति श्रीबृहज्जातके कर्माजीवाध्यायो दशमः ॥१०॥

टीका–जन्मकाल में दशमस्थ जो ग्रह हैं वा उसके अभाव में चन्द्रमा वा सूर्य से दशम जो ग्रह हैं वे यदि मित्र राशि में हों तो अपनी दशा में मित्र से धन देते हैं, शत्रुगृह में हों तो शत्रु से अपने घर में हों तो उक्त प्रकार से धन देते हैं जिसके सूर्य मेष का और तीन चार ग्रह बलवान् हों तो अपने पराक्रम से धन मिलता है जिसके ग्यारहवें वा लग्न धन स्थान में बलवान् शुभ ग्रह हो तो अनेक प्रकार से धन पाता है ॥ ४ ॥

इति महीधरकृतायां बृहज्जातकभाषाटीकायां दशमोऽध्यायः ॥ १० ॥

राजयोगाऽध्यायः ११.

वैतालीयम्।

प्राहुर्यवनाः स्वतुङ्गगैः क्रूरैः क्रूरमतिर्महीपतिः।
क्रूरैस्तु न जीवशर्म्मणः पक्षे क्षित्यधिपः प्रजायते॥ १॥

टीका--अब राजयोग कहते हैं तीन ग्रह उच्च होने से मनुष्य स्वकुलानुसार राजा होता है यह सब जातकों में प्रसिद्ध है। इसमें यवन मत है कि, उच्चवर्ती ३ ग्रह पाप हों तो राजा क्रूर बुद्धि होवे, शुभ ग्रह हों तो सद्बुद्धि होवे, मिश्र में मिश्र स्वभाव कहना जीवशर्म्मा का पक्ष है कि, पाप ग्रहों के उच्चवर्ती होने में राजा नहीं होता किन्तु राजा के तुल्य और धनवान् होता है आचार्य ने पूर्वमत विहित कहा है॥ १॥

वसंततिलकम्।

वक्रार्कजार्कगुरुभिः सकलैस्त्रिभिश्च
स्वोच्चेषु षोडशनृपाः कथितैकलग्ने।
द्व्येकाश्रितेषु च तथैकतमे विलग्ने
स्वक्षेत्रगे शशिनि षोडशभूमिपाः स्युः॥ २॥

टीका–मंगल, शनि, सूर्य, बृहस्पति चारों अपने २ उच्च राशियों में हों और इनमें कोई ग्रह लग्न में उच्चराशि का हो तो ४ प्रकार के राज योग होते हैं, जो तीन ग्रह उच्चके हों और उन्ही में से एक ग्रह लग्न में हो तो १२ प्रकारके राजयोग होते हैं, इस प्रकार से १६ योग हुए। चंद्रमा कर्क में हो और मंगल, सूर्य, शनि, बृहस्पति में से २ ग्रह उच्चके हों तौ भी वही १२ प्रकारके राजयोग होते हैं, और उन्ही ग्रहोंमें से एक ग्रह उच्चराशि में लग्न गत हो तो ४ प्रकारके राजयोग होते हैं, सब ३२ विकल्प हैं। उदाहरण मेष लग्न में सूर्य, कर्क का गुरु, तुला का शनि, मकर का मंगल, एक १ योग हुआ। कर्क लग्न से दूसरा, तुला से तीसरा, मकर से चौथा। जो तीन ग्रह उच्च के हों जैसे मेष लग्न में सूर्य, कर्क में गुरु, तुला में शनि,

१, कर्क लग्नसे२, तुला लग्न से ३, सब योग७ । जो मेष लग्न में सूर्य कर्क में गुरु मकर में मङ्गल हो तो १, कर्क से २, मकर से ३, सब १० । जो मेष लग्न में सूर्य, तुला में शनि, मकर का मङ्गल १, तुला में २, मकर में ३, सब १३ । कर्क में गुरु, तुला में शनि, मकर में मङ्गल हो तो कर्क लग्न से १, तुला से २, मकर से ३, सब१६ "द्व्येकाश्रितेषु"इत्यादि में कर्क का चन्द्रमा हो तो योग ही नहीं होता जैसे मेष लग्न में सूर्य, कर्क के चन्द्रमा गुरु हों तो १, कर्क लग्न हो तो२, मेष का सूर्य कर्क का चन्द्रमा तुला का शनि हो तो मेष में ३, तुला में ४; जो मेष का सूर्य कर्क का चन्द्रमा मकर का मङ्गल हो तो मेष से, ५, मकर से६, कर्क के चं० बृ०, तुला का शनि हो तो कर्क में ७, तुला में ८, कर्क में चं० बृ० मकर का मङ्गल हो तो कर्क से ९, मकर से १०, तुला में शनि मकर में मङ्गल कर्क में गुरु हो तो तुला से ११, मकरसे १२ ये " द्वेयकाश्रितेषु" इत्यादि से कर्क में चन्द्रमा मेष का सूर्य लग्न में १, कर्क लग्न में चं० बृ० २, तुला लग्न में शनि कर्क का चन्द्रमा ३, मकर का मङ्गल लग्न में कर्क में चन्द्रमा ४, सब १६ हुये, श्लोकोक्त पूर्ववाले १६ मिलाके ३२ विकल्प हुये॥२॥

अनुष्टुप् ।

वर्गोत्तमगते लग्ने चन्द्रे वा चन्द्रवर्जिते ।
चतुराद्यैर्ग्रहैर्दृष्टे नृपा द्वाविंशतिः स्मृताः ॥ ३ ॥

टीका-जन्म लग्न वर्गोत्तम अर्थात् जो लग्न वही नवांशक हो और चन्द्रमाको छोड कर ४ वा ५ वा६ग्रह देखें तो २२ प्रकार राजयोग होते हैं और चन्द्रमा वर्गोत्तमांश में हो और चार आदि ग्रहों से दृष्ट हो तो २२ प्रकार राजयोग होते हैं । समस्त योग ४४ हैं । यहां लग्न वा चन्द्रमा वर्गोत्तममेंहो उनपर ४ ग्रहों की दृष्टि हो तो १५ विकल्प होते हैं, ५ ग्रह देखें तो ६ विकल्प, ६ ग्रहों के देखने में १ विकल्प है । जैसे लग्न वा चन्द्रमा वर्गोत्तमीपर सूर्य, भौम, बुध, बृहस्पति की दृष्टि हो तो १ विकल्प । र० मं०

बु० शु० से २, र० मं० बु० श० से ३, र० मं० बृ० शु० से ४. र० मं० बृ० श० से ५, र० मं० शु०श०से ६, र० बु० बृ० शु० से ७.र० बु० बृ० श० से ८, र० बु० शु० श० से ९, र० बृ० शु० श० से १०, मं० बु० बृ० शु० से ११, मं० बु० बृ० श० से १२, मं० बु० शु० श० से १३, मं० बृ० शु० श० से १४, बु० शु० शु० श० से १५, ये तो ४ ग्रहोंके १५ विकल्प हुये। अब ५ के विकल्प जैसे र० मं० बु० बृ० शु० से १, र० मं० बु० बृ० श० से २, र० मं० बु० शु० श० से३, र० मं०बृ० शु० श० से ४, र० बु० बृ० शु० श० से ५ मं० बु० बृ० शु० श० से ६। षट्विकल्प एकही है। जैसे र० मं० बु० बृ० शु० श० से१, ये सब २२ विकल्प हुये लग्न से २२ चन्द्रमा से सब४४ होते हैं, ये ४४ भेदसंख्या एवं गणित दिखाने के लिये लिखेहैं, जब चन्द्रमा की राशि वर्गोत्तमस्थितिनिरूपण करके गणित किया तो २६४ भेद और इतने ही लग्न से ५२८ विकल्प सब होते हैं॥ ३॥

शिखरिणी।

यमे कुम्भेऽर्केऽजे गवि शशिनि तैरेव तनुगै-
र्नृयुक्सिंहालिस्थैः शशिजगुरुवक्रैर्नृपतयः।
यमेन्दू तुङ्गेऽङ्ग सवितृशशिजौ षष्ठभवने
तुलाजेन्दुक्षेत्रैः ससितकुजजीवैश्च नरपौ॥ ४॥

टीका—शनि कुम्भ में, सूर्य मेष में, चन्द्रमा वृषमें, बुध मिथुन का, सिंह का, वृहस्पति, वृश्चिक का मङ्गल हो और शनि सूर्य चन्द्रमा में से एक ग्रह लग्न में हो तो ५ प्रकार राजयोग होते हैं॥ जैसे कुम्भ लग्न से १, मेष से २, वृष से ३ आर शनि चन्द्रमा अपने २ उच्चों में हों, सूर्य बुध कन्या में हों, जैसे तुला का शनि, वृष का चन्द्रमा कन्या में सूर्य बुध और तुला में शुक्र मेष में मङ्गल कर्क में बृहस्पति इस प्रकार ग्रह होने में तुला लग्न से १, वृषलग्न से २, ये सब ५ राजयोग हुये॥ ४॥

शिखरिणी ।

कुजे तुङ्गेऽर्केन्द्वोर्धनुषि यमलग्ने च कुपतिः
पतिर्भूमेश्चान्यः क्षितिसुतविलग्ने सशशिनि ।
सचन्द्रे सौरेऽस्ते सुरपतिगुरौ चापधरगे
स्वतुङ्गस्थे भानावुदयमुपयाते क्षितिपतिः ॥ ५ ॥

टीका–मङ्गल उच्च का सूर्य चन्द्रमा धन में और मकर या कुम्भलग्नमें, हो तो वह मनुष्य राजा होता है। और मकर लग्न में चन्द्रमा मङ्गल हों और सूर्य धनका हो तो राजा होता है शनि चन्द्रमा के साथ सप्तम में हो बृहस्पति धन का और सूर्य मेषका लग्न में हो तो राजा होवै इस श्लोक में ३ राजयोग पृथक् कहते हैं विकल्प नहीं है ॥ ५ ॥

शिखरिणी ।

वृषे सेन्दौ लग्ने सवितृगुरुतीक्ष्णांशुतनयैः
सुहृज्जायाखस्थैर्भवति नियमान्मानवपतिः ।
मृगे मन्दे लग्ने सहजरिपुधर्मव्ययगतैः
शशाङ्काद्यैः ख्यातः पृथुगुणयशाः पुंगलपतिः ॥ ६ ॥

टीका–अब दो राजयोग कहते हैं–वृषका चन्द्रमा लग्न में हो, सिंह का सूर्य, वृश्चिक का बृहस्पति, कुम्भ का शनि हो तो अवश्य राजा होवै १ और मकर का शनि, तीसरा चन्द्रमा, छठा मङ्गल, नवम बुध, बारहवां बृहस्पति हो तो विख्यात और बडे गुण यशवाला राजा होवे २ । ये २ योग हैं ॥ ६ ॥

शिखरिणी ।

हये सेन्दौ जीवे मृगमुखगते भूमितनये
स्वतुङ्गस्थौ लग्ने भृगुजशशिजावत्र नृपती ।

सुतस्थौ वक्रार्को गुरुशशिसिताश्चापि हिबुके
बुधे कन्यालग्ने भवति हि नृपोन्योऽपि गुणवान् ॥ ७॥

टीका–अब ३ राजयोग कहते हैं–धन का बृहस्पति चन्द्रमा सहित और मङ्गल मकर का और बुध शुक्र अपने २ उच्च में लग्नगत हों तो गुणवान् राजा होवे, इस योगमें मीन लग्न से १, कन्या लग्न से १, ये २ विकल्प हैं, मङ्गल शनि पञ्चम स्थान में, बृहस्पति चन्द्रमा शुक्र चतुर्थ स्थान में और कन्या लग्न में बुध हो तो गुणवान् राजा होवे ३, ये ३ योग हैं ॥ ७ ॥

शिखरिणी।

झषे सेन्दौ लग्ने घटमृगमृगेन्द्रेषु सहितै-
र्यमाराकैर्योऽभूत्स खलु मनुजः शास्ति वसुधाम् ।
अजे सारे मूर्तौ शशिगृहगते चामरगुरौ
सुरेज्ये वा लग्ने धरणिपतिरन्योपि गुणवान् ॥ ८ ॥

टीका–मीन का चन्द्रमा लग्न में और कुम्भ का शनि मकर का मङ्गल सिंह का सूर्य जिसके जन्म में हों वह भूमि पालन करनेवाला राजा होता है१ । मेष का मङ्गल लग्न में; कर्क का बृहस्पति हो तो बलवान् राजा होताहै २ ।कर्क का गुरु लग्न में और मेष का मङ्गल हो तो अन्य कुलोत्पन्न भी गुणवान् राजा होता है। ३ । ये ३ योग हैं ॥ ८ ॥

विद्युन्माला ।

कर्किणि लग्ने तत्स्थे जीवे चन्द्रसितज्ञैरायप्राप्तैः ।
मेषगतेर्के जातं विद्याद्विक्रमयुक्तं पृथ्वीनाथम् ॥ ९ ॥

टीका–कर्क लग्न में बृहस्पति और ग्यारहवें स्थान में वृष का चन्द्रमा, शुक्र, बुध और मेष का सूर्य दशम स्थान में हो तो पराक्रमी राजा होवे ॥९॥

द्रुतविलंबितम् ।

मृगमुखेर्कतनयस्तनुसंस्थः क्रियकुलीरहरयोधिपयुक्ताः ।
मिथुनतौलिसहितौ बुधशुक्रौ यदि तदा पृथुयशाः पृथिवीशः॥१०॥

टीका–मकर लग्न में शनि, मेषका मङ्गल, कर्क का चन्द्रमा, सिंहका सूर्य, मिथुन का बुध,तुला का शुक्र,हो तो महान् यशस्वी राजा होता है१०॥

अनुष्टुप् ।

स्वोच्चसंस्थे बुधे लग्ने भृगौ मेषूरणाश्रिते ।
सजीवेस्ते निशानाथे राजा मन्दारयोः सुते ॥ ११ ॥

टीका–कन्याका बुध लग्नमें और दशम शुक्र, सप्तम बृहस्पति चन्द्रमा हों, और शनि मङ्गल पञ्चम हों तो राजा होवै ॥ ११ ॥

मालिनी ।

अपि खलकुलजाता मानवा राज्यभाजः
किमुत नृपकुलोत्थाः प्रोक्तभूपालयोगैः ।
नृपतिकुलसमुत्थाः पार्थिवा वक्ष्यमाणै-
र्भवति नृपतितुल्यस्तेष्वभूपालपुत्रः ॥ १२ ॥

टीका–जितने राजयोग कहे गये हैं इनमें जन्मनेवाले मनुष्य नीच वंशवाले भी राजा होते हैं फिर राजवंशवालोंको तो क्या कहना है ? अब जो योग कहे जावेंगे उनमें राजपुत्र ही राजा होते हैं और इतर राजा नहीं किन्तु राजा के तुल्य होते हैं ॥ १२ ॥

औपच्छन्दासिकम् ।

उच्चस्वत्रिकोणगैर्बलस्थैस्त्र्याद्यैर्भूपतिवंशजा नरेन्द्राः ।
पञ्चादिभिरन्यवंशजाता हीनैर्वित्तयुता न भूमिपालाः ॥१३॥

टीका–उच्च के वा मूलत्रिकोण के ३ । ४ ग्रह बलवान् हों तो राजवंशीय राजा होते हैं और जातिवाले धनवान् होते हैं । जो यही ३ । ४ ग्रह उच्च वा मूल त्रिकोणमें बलरहित हों तो राजवंशी भी राजा नहीं होते हैं किन्तु धनवान् होते हैं, जब ५ । ६ । ७ ग्रहें उच्च वा मूल त्रिकोणमें हों तो अन्यवंशीय भी राजा होते हैं ॥ १३ ॥

विद्युन्माला ।

लेखास्थेर्केजेन्दौ लग्ने भौमे स्वोच्चे कुम्भे मन्दे
चापप्राप्ते जीवे राज्ञः पुत्रं विन्द्यात्पृथ्वीनाथम् ॥ १४ ॥

टीका-मेषके सूर्य चन्द्रमा लग्न में हों और मङ्गल मकर का और शनि कुम्भ का, बृहस्पति धन का हो तो राजवंशीय राजा होवै और जातीय धनी होवै कोई यहां "लेखास्थे" के जगह "लेयस्थे" पाठ कहते हैं कि सिंह का सूर्य और मेष का चन्द्रमा लग्न में और यथोक्त हों ऐसा भी पाठ योग्य ही है॥ १४॥

विद्युन्माला।

स्वर्क्षे शुक्रे पातालस्थे धर्मस्थानं प्राप्ते चन्द्रे।
दुश्चिक्याङ्गप्राप्तिप्राप्तैः शेषैर्जातः स्वामी भूमेः॥ १५॥

टीका--शुक्र अपनी राशि २। ७ का चतुर्थ भाव में और नवम स्थान में चन्द्रमा हो और ग्रह सभी ३। १। ११ में यथासम्भव होवें तो कुम्भ से १, कर्क लग्न से २ ये दो विकल्प होते हैं ऐसे योग में राजपुत्र राजा, अन्य धनी होवै॥ १५॥

नवमालिका।

सौम्ये वीर्य्ययुते तनुयुक्ते वीर्याढ्ये च शुभे शुभयाते।
धर्मार्थोपचयेष्ववशेषैर्द्धर्मात्मा नृपजः पृथिवीशः॥ १६॥

टीका-बलवान् बुध लग्न में और बलवान् शुक्र वा बृहस्पति नवम स्थान में कोई "सुखयाते" पाठ भेद कहते हैं कि शुभ ग्रह चतुर्थ में हों और शेष ग्रह यथासम्भव ९।२।३।६।१०।११में से किसी में हों तो राजपुत्र धर्मात्मा राजा होवै और वर्ण को यह योग पड़े तो धनवान और मानी होवै॥१६॥

वंशस्थम्।

वृषोदये मूर्त्तिधनारिलाभगैः शशाङ्कजीवार्कसुतापरैर्नृपः।
सुखे गुरौ खे शशितीक्ष्णदीधिती यमोदये लाभगतैर्नृपोपरैः॥१७॥

टीका-दो राज योग कहते हैं-वृष का चन्द्रमा लग्न में और मिथुन का बृहस्पति, तुला का शनि और मीन राशि में अन्य रवि, मङ्गल, बुध, शुक्र, हों तो राजपुत्र राजा, और वर्ण धनी होवें १। और शनि लग्न में, बृहस्पति चौथा, सूर्य चन्द्रमा दशम, मङ्गल, बुध, शुक्र ग्यारहवें हों तो भी वही फल होगा। ये २ राजयोग हैं॥ १७॥

वसंततिलका।

मेषूरणायतनुगाः शशिमन्दजीवा
ज्ञारौ धने सितरवी हिबुके नरेन्द्रम्।
वक्रासितौ शशिसुरेज्यसितार्कसौम्या
होरासुखास्तशुभखातिगताः प्रजेशम् ॥ १८ ॥

टीका–दो राजयोग–दशम चन्द्रमा, ग्यारहवां शनि, लग्न का बृहस्पति दूसरा बुध मङ्गल, चतुर्थ सूर्य शुक्र हों तो राजपुत्र राजा, अन्य धनी होवे यद्वा मङ्गल शनि लग्न में, चतुर्थ चन्द्रमा, सप्तम बृहस्पति, नवम शुक्र, दशम सूर्य, ग्यारहवें बुध हो तो वही फल होगा ॥ १८ ॥

स्वागता।

कर्मलग्नयुतपाकदशायां राज्यलब्धिरथ वा प्रबलस्य।
शत्रुनीचगृहयातदशायां छिद्रसंश्रयदशा परिकल्प्या ॥ १९ ॥

टीका–राजयोग करनेवाले ग्रहोंमेंसे जो ग्रह दशम वा लग्न में हो उस की दशान्तर्दशा में राज्यलाभ होगा, जब दोनों स्थानों में ग्रह हों तो उनमें से जो अधिक बलवान् है उसकी दशान्तर्दशा में। जो लग्न दशम में बहुत ग्रह हों तो उनमें जो सर्वोत्तम बली हो उसकी दशान्तर्दशा में राज्यलाभ होगा। अथवा उनमें से प्रबल ग्रह जब गोचर में अधिक बली होगा तब राज्यलाभ होगा, बलवान् ग्रहके दिये राज्य में भी छिद्रदशा भी राज्य नाश करती है, वह जन्मकालिक शत्रु वा नीच गृहगत ग्रह की अन्तर्दशा छिद्रदशा कहाती है इस में भी राज्ययोगकारक ग्रहों में से कोई नीच वा शत्रु राशि का हो वह राज्यभंग करैगा अन्य कुछ हानि नहीं करते हैं ॥ १९ ॥

मालिनी।

गुरुसितबुधलग्ने सप्तमस्थेऽर्कपुत्रे
वियति दिवसनाथे भोगिनां जन्म विद्यात्।

शुभबलयुतकेन्द्रैः क्रूरसंस्थैश्च पापै-
र्व्रजति शबरदस्युस्वामितामर्थभाक् च ॥ २० ॥
इति श्रीवराहमिहिरविरचिते बृहज्जातके
राजयोगाऽध्यायः ॥ ११ ॥

टीका—बृहस्पति शुक्र बुध की राशियां ९।१२।७।२।३।६लग्न में हों और सातवां शनि, दशम सूर्य हो तो मनुष्य धन रहित भी भोगवान् होता है पराये पीछे अच्छे भोग भोगता है और केन्द्रगत ग्रह पाप राशियों में होवें अथवा सौम्य राशियोंमें पाप ग्रह हों ऐसी विधि से योगकारक हों तो मनुष्य शबर (झीवर) और चोरों का राजा होगा ॥ २० ॥

इति महीधरविरचितायां बृहज्जातकभाषाटीकायां राज-
योगाऽध्यायः ॥ ११ ॥

नाभसयोगाऽध्यायः १२.

औपच्छन्दसिकम्।

नवदिग्वसवस्त्रिकाग्निवेदैर्गुणिता द्वित्रिचतुर्विकल्पजाः स्युः।
यवनैस्त्रिगुणा हि षट्शतीसा कथिता विस्तरतोत्र तत्समासः॥ १ ॥

टीका—अब नाभस योग कहते हैं—इनके चार विकल्प हैं आकृति योग १, आकृति योग संख्या योग २, आकृति संख्या आश्रय योग, ३ आकृति संख्या आश्रय दल योग ४। आकृति योग २० हैं, संख्या योग ७, आश्रय योग ३, दल योग २, सब ३२ भेद हैं। इस प्रकार से ९।१०। ८ को ३। ३। ४ से क्रम करके गुण दिया तो २७। ३०। ३२ होते हैं अर्थात् द्विविकल्प के २७ योग त्रिविकल्प के ३०, चतुर्विकल्प के ३२। यवनाचार्य ने १८०० भेद इन के कहे हैं और कोई आचार्य असंख्य भेद कहते हैं, इस ग्रन्थ में विस्तार नहीं समास से ३२ योगों के फल कहे हैं क्योंकि मुख्य यही है और भेद जो १८०० हैं उनका फल इनही ३२ में अन्तर्भाव होगया है ॥ १ ॥

औपच्छन्दसिकम् ।

रज्जुर्मुशलन्नलश्चराद्यैः सत्यश्चाश्रयजानजगाद योगान् ।
केन्द्रैः सदसद्युतैर्दलाख्यौ स्रक्सर्पौ कथितौ पराशरेण ॥ २ ॥

टीका-आश्रय योग ३ ये हैं-कि सभी ग्रह चर राशियों में हों तो रज्जु योग होताहै और यदि सब ग्रह स्थिर राशिमें हों तो मुशल योग २ और सभी ग्रह द्विस्वभाव राशियोंमें हों तो नलयोग ३, होता है । दल योग दो ऐसे हैं-कि,सभी शुभ ग्रह केन्द्रों में हों और पापग्रह केन्द्रों में न हों तो माला योग और जो केन्द्रों में सभी पाप ग्रह हों शुभग्रह न हों तो सर्प योग होताहै२

उपजातिः ।

योगा व्रजन्त्याश्रयजाः समत्वं यवाब्जवज्राण्डजगोलकाद्यैः ।
केन्द्रोपगैः प्रोक्तफलौ दलाख्यावित्याहुरन्ये नपृथक्फलौ तौ३॥

टीका-यव,अब्ज, अण्डज, गोलक और गदा, शकट योग ये आश्रय और संख्या योगों के सम हैं, फल बराबर होता है इस कारण किसी ने अलग नहीं कहे । वराहमिहिर ने तो कहे हैं, इसका कारण अगले अध्याय के अन्त में कहैंगे, दल योग किसी ने नहीं कहे परन्तु इनका फल केन्द्र के शुभ ग्रहोंमें शुभ फल, पापों में पाप फल, पृथक् उन उन ने भी कहा ही है । केवल स्रक् सर्प नाममात्र नहीं कहे ॥ ३ ॥

वसंततिलका ।

आसन्नकेन्द्रभवनद्वयगैर्गदाख्यास्तन्वस्तगेषुशकटंविहगः खबन्ध्वोः
शृंङ्गाटकं नवमपञ्चमलग्नसंस्थैर्लग्नान्यगैर्हलमिति प्रवदन्तितज्ज्ञाः४

टीका-समीपके केन्द्र दोनों में सभी ग्रह हों तो गदा योग होता है इस के ४ विकल्प हैं जैसे लग्न और चतुर्थमें१, चतुर्थ सप्तममें२, सप्तम दशम में ३, दशम और लग्नमें ४, लग्न और सप्तम में सभी ग्रह हों तो शकट योग होता है और दशम चतुर्थ में सभी ग्रह हों तो विहग योग होता है, नवम पञ्चम और लग्न में सभी ग्रह हों तो शृंगाटक योग होता है; जो परस्पर त्रिकोणमें लग्न छोडके सभी ग्रह हों तो हल योग होता है, इस के ३ भेद हैं कि-२।६

।१० स्थानों में सभग्रिह हों तो १ और ३।७।११ में २ और ४।८।१२ में।३। ये भेद हैं ॥४॥

वैतालीयम् ।

शकटाण्डजवच्छुभाशुभैर्वज्रं तद्विपरीतगैर्यवः ।
कमलन्तु विमिश्रसंस्थितैर्वापी तद्यदि केन्द्रबाह्यतः ॥ ५ ॥

टीका–शकटवत् शुभ ग्रह और अण्डजवत् पाप ग्रह होने से वज्र योग होता है, जैसे लग्न सप्तम में शुभग्रह, चतुर्थ दशम में पाप ग्रह और स्थानों में कोई ग्रह न हो तो वज्र योग और वही उलटे होनेसे यव योग जैसे लग्न सप्तम में पाप, चतुर्थ दशम में शुभ और स्थानों में कोई न हों तो यव योग होता है। जो शुभ पाप सभी ग्रह केन्द्रों में हों और पणफर आपोक्लिममें न हों तो कमल योग और जो केन्द्रों में कोई भी ग्रह न हों सभी ग्रह केन्द्रबाह्य हों तो वापी योग होता है ॥ ५ ॥

अनुष्टुप् ।

पूर्वशास्त्रानुसारेण मया वज्रादयः कृताः।
चतुर्थे भवने सूर्याज्ज्ञासितौ भवतः कथम् ॥ ६ ॥

टीका–आचार्योक्ति है कि– ये वज्रादि योग मय, यवनादिकों के कहने से मैनें भी कहे हैं और इनके होने में प्रत्यक्ष दोष यह है कि, इन योगोंमेंसे पहिले वज्र योग लग्न सप्तम में शुभ ग्रह, चतुर्थ दशम में पाप होने से होता है, पापों के साथ ४ । १० । में सूर्य हो तो १ । ७ में शुभ ग्रहों के साथ बुध शुक्र होने चाहिये तो सूर्य से चौथे स्थान में बुध शुक्र का होना असम्भव है ऐसे ही सब कमल वापी योगों में भी है । इसका कारण यहहै कि, ध्रुवसे जितने समीप वर्ती देशहैं उनमें बुध शुक्र दूर और जितनें दूर दूर देश हैं उनमें बुध० शु० समीप ही देखे जातेहैं ॥ ६ ॥

अनुष्टुप् ।

कण्टकादिप्रवृत्तैस्तु चतुर्गृहगतैर्ग्रहैः ।
यूपेषु शक्तिदण्डाख्या होराद्यैः कण्टकैः क्रमात् ॥ ७ ॥

टीका—लग्न से लेकर चार चार स्थानों में सभी ग्रह हों तो यूप, इषु, शक्ति, दण्ड ये ४ योग क्रमसे होते हैं जैसे १।२।३। ४ भावों में सभी ग्रह हों तो यूप योग, ४।५।६।७ में सभी ग्रह हों तो इषु योग, और ७।८।९।१०। में शक्ति योग, १०।११।१२।१ में दण्ड योग होता है ॥ ७ ॥

अनुष्टुप् ।

नौकूटच्छत्रचापानि तद्वत्सप्तर्क्षसंस्थितैः ।
अर्द्धचन्द्रस्तु नावाद्यैः प्रोक्तस्त्वन्यर्क्षसंस्थितैः ॥ ८ ॥

टीका—लग्न से सप्तमपर्यन्त प्रत्येक भाव में एक एक ग्रह करके सातों स्थानोंमें सातों ग्रह हों तो नौयोग और इसी प्रकार चतुर्थ से दशम पर्यन्त हों तो कूट योग, एवम् सप्तम से लग्नपर्यन्त छत्र योग, दशम से चतुर्थ-पर्यन्त चाप योग होता है, इन से विरुद्ध स्थानों में इसी प्रकार ग्रह हों तो अर्द्धचन्द्र योग होता है उस के ८ भेद यह हैं कि—द्वितीय भावसे अष्टम-भावपर्यन्त निरंतर एक एक ग्रह एक एक भाव में होने से १ भेद, ३ से ९ पर्य्यन्त २, और ५ से ११ पर्यन्त ३, और ६ से १२ पर्यन्त ४, एवम् ८ से २ पर्यन्त ५, एवम् ९ से ३ पर्यन्त ६, एवम् ११ से ५ पर्यन्त ७, एवम् १२ से ६ पर्यन्त ८, ये ८ भेद हैं ॥ ८ ॥

अनुष्टुप् ।

एकान्तरगतैरर्थात्समुद्रः षड्गृहाश्रितैः ।
विलग्नादिस्थितैश्चक्रमित्याकृतिजसङ्ग्रहः ॥ ९ ॥

टीका—द्वितीय से द्वादश पर्यन्त बीच में एक एक भाव छोड कर सभी ग्रह हों तो समुद्र योग होता है अर्थात् २।४।६।८।१०।१२। इनमें सातों ग्रह हों और लग्न से एकादशपर्यन्त इसी प्रकार एकान्तर अर्थात् १।३।५।७।९।११में सातों ग्रह हों तो चक्रयोग होता है इस प्रकार आकृति योगों का संग्रह आचार्यों ने किया है ॥ ९ ॥

शालिनी ।

सङ्ख्यायोगाः स्युः सप्तसप्तर्क्षसंस्थैरेकापायाद्वल्लकीदामिनी च ।
पाशःकेदारश्शूलयोगो युगश्चगोलश्चान्यान्पूर्वमुक्तान् विहाय॥ १०॥

टीका--अब सात संख्यायोगों के भेद कहते हैं कि सातों ग्रह सातही स्थानों में जहां तहां हों तो वल्लकी योग, जो सातों ग्रह ६ स्थानों में हों तो दामिनी योग, एवम् ५ स्थानों में हों तो पाश योग, ४ स्थानोंमें हों तो केदार योग, ३ स्थानों में हों तो शूल योग, २ स्थानों में हों तो युग योग, एकही स्थानमें सभी ग्रह हों तो गोल योग, इस प्रकार संख्यायोग हैं, जहां संख्या योग की प्राप्ति में पूर्वोक्त आश्रय योग की प्राप्ति है वहां आश्रय योग फल देगा संख्या योग नहीं देगा, जहां संख्या योग होने में आश्रयोक्तकी प्राप्ति नहीं है तहां संख्यायोग फल देगा ॥ १० ॥

वसन्ततिलका ।

ईर्ष्युर्विदेशनिरतोऽध्वरुचिश्च रज्वां
मानी धनी च मुसले बहुकृत्यशक्तः ।
व्यङ्ग स्थिराढ्यनिपुणो नलजः स्रगुत्थो
भोगान्वितो भुजगजो बहुदुःखभाक् स्यात् ॥ ११ ॥

टीका--अब आश्रयादि योगोंके फल कहते हैं—रज्जु योग जिसका हो वह ईर्ष्यावान् (मत्सरी--अर्थात् पराई भलाईसे जलनेवाला) और निरंन्तर परदेशमें रहनेवाला, मार्ग चलनेमें रुचि बहुधा होवै । मुशल योग जिसका हो वह मानी, गर्वित और धनवान् और बहुत कार्य करनेवाला होता है । नल योगवाला मनुष्य व्यङ्ग अर्थात् कोई कोई अंगहीन और दृढ़ निश्चयवाला और धनवान् और सभी कार्य में सूक्ष्मदृष्टिवाला होवे ये आश्रय के ३ योगों के फल हुये। अब दल योगों के फल कहते हैं कि, अर्थात् माला योगवाला भोगी (अनेक अच्छे २ भोग भोगने वाला) होता है । सर्पयोगवाला नाना प्रकार दुःख भोगता है ॥ ११ ॥

अनुष्टुप् ।

आश्रयोक्तास्तु विफला भवन्त्यन्यैर्विमिश्रिताः ।
मिश्रा यैस्ते फलं दद्युरमिश्राः स्वफलप्रदाः ॥ १२ ॥

टीका–आश्रय योगकी प्राप्ति में यवादि योग की भी प्राप्ति हो तो मिश्र होने से आश्रय योग विफल होताहै, ऐसे ही औरों से भी मिश्र होने से निष्फल होता है, जिससे मिश्र हुवा उसी का फल मिलता है, ये योग दशाही में फल देने वाले नहीं सर्वदा फल देते हैं आश्रय योग में जब किसी यवादि की प्राप्ति न हो तो अपना फल देता है ॥ १२ ॥

वसंततिलका ।

यज्वार्थभाक्सततमर्थरुचिर्गदायां
तद्वृत्तिभुक्छकटजः सरुजः कुदारः ।
दूतोऽटनः कलहकृद्विहगे प्रदिष्टः
शृङ्गाटके चिरसुखी कृषिकृद्धलाख्ये ॥ १३ ॥

टीका–गदादि योगों के फल कहते हैं–प्रथम गदायोगवाला मनुष्य यज्ञ करने वाला और धन भोगने वाला, धन संग्रह में उद्यमी होता है । शकट योग वाला गाड़ी रथ छकड़े आदि के काम से आजीवन कर्ता है और नित्यरोगी, उसकी स्त्री निंदा के योग्य होती है, विहग योगवाला पराये भेजने से परकार्य को जाने आने वाला और भ्रमण करने वाला और कलह करने-वाला होता है, शृङ्गाटक योगवाला बहुत काल पर्यन्त अर्थात् बुढापे पर्यन्त भी सुखी रहता है, हल योगवाला कृषि कर्म अर्थात् पशु पालना खेती करना इत्यादि कार्य कर्ता है ॥ १३ ॥

वसंततिलका ।

वज्रेन्त्यपूर्वसुखितः सुभगोतिशूरो
वीर्य्यान्वितोऽप्यथ यवे सुखितो वयोंतः ।
विख्यातकीर्त्यमितसौख्यगुणश्च पद्मे
वाप्यां तनुस्थिरसुखो निधिकृन्न दाता ॥ १४ ॥

टीका—वज्रयोगवाले बालक वृद्ध और प्रथम अवस्था में सुखी और युवावस्थामें दुःखी और सब मनुष्यों के प्यारे, अति शूर होते हैं। यव योग में पराक्रमी और बाल वृद्ध अवस्था में दुःखी, तरुणावस्था में सुखी होता है। पद्म योगमें सर्वत्र विदितकीर्ति और अगणित सुख, गुण और विद्या एवं पराक्रम वाला होता है। वापी योग वाला बहुत काल पर्यन्त थोडे सुखवाला और भूमि में धन गाड़नेवाला और कृपण होता है ॥ १४ ॥

वसंततिलका ।

त्यागात्मवान्क्रतुवरैर्यजते च यूपे
हिंस्रोऽथ गुप्त्यधिकृतः शरकृच्छराख्ये ।
नीचोलसः सुखधनैर्वियुतश्च शक्तौ
दण्डे प्रियैर्विरहितः पुरुषोन्त्यवृत्तिः ॥ १५ ॥

टीका—यूप योगवाला मनुष्य दानी और प्रमाद न करनेवाला, उत्तम यज्ञ करने वाला होवे। शर योगवाला जीवघाती, कैद खाने का मालिक और बाण, बन्दूक, गोली आदि बनानेवाला होवे। शक्तियोगवाला नीच कर्म करनेवाला और आलसी और भोग और धन से वर्जित होवे। दण्ड योगवाला पुत्रादिसे रहित, दास कर्म करनेवाला होता है ॥ १५ ॥

वसंततिलका ।

कीर्त्या युतश्चलसुखः कृपणश्च नौजः
कूटेऽनृतप्लवनबन्धनपश्च जातः ।
छत्रोद्भवः स्वजनसौख्यकरोन्त्यसौख्यः
शूरश्च कार्मुकभवः प्रथमान्त्यसौख्यः ॥ १६ ॥

टीका—नौयोगवाला मनुष्य यशस्वी, कभी सुखी कभी दुःखी और कृपण होवे। कूट योगवाला झूंठ बोलनेवाला व बन्धन स्थान का रक्षा करनेवाला होवे। छत्र योगवाला अपने जनों को सुख करनेवाला और बुढ़ापे में सुखी होवै। चाप योगवाला संग्राम में शूर, बाल्य व वृद्धावस्था में सुखी होवे ॥ १६ ॥

वसंततिलका ।

अर्द्धेन्दुजस्सुभगकान्तवपुःप्रधानस्तोयालयेनरपतिप्रतिमस्तुभोगी।
चक्रे नरेंद्रमुकुटद्युतिरञ्जितांघ्रिर्वीणोद्भवश्च निपुणप्रियगीतनृत्यः १७

टीका-अर्द्धचन्द्र योगवाला सुभग, सर्वजन प्रिय दर्शनीय, बहुतों में श्रेष्ठ होता है। समुद्र योगवाला राजतुल्य ऐश्वर्यवान् और भोगवान् मनुष्य होता है। चक्र योगवाला तपोज्ञानादिसे राजाओं करके प्रणाम करने योग्य होताहै। वीणा योगवाला सूक्ष्मदृष्टि-बारीकी विचार करनेवाला, गीत नाच को प्यारा मानता है ॥ १७ ॥

वसंततिलका ।

दातान्यकार्यनियतः पशुपश्च दाम्नि
पाशे धनार्जनविशीलसभृत्यबन्धुः ।
केदारजः कृषिकरः सुबहूपयोज्यः
शूरः क्षतो धनरुचिर्विधनश्च शूले ॥ १८ ॥

टीका-दाम अर्थात् रज्जुयोगवाला उदार, परोपकारमें तत्पर,पशु पालनेवाला होता है 'बहुप' ऐसा पाठ होने से ग्रामाधिपति होता है। पाशयोगवाला असन्मार्ग से धन संग्रह करनेवाला और बंधु भृत्य भी इसके ऐसेही कर्त्ता होते हैं। केदारयोगवाला कृषि खेती करनेवाला और बहुतों का उपकार करनेवाला होताहै। शूल योगवाला शूर, रणमें अंगमें चोट लगी हुई होवे, अत्यन्त धनकी इच्छा करनेवाला दरिद्री होता है ॥ १८ ॥

हरिणीवृत्तम् ।

धनविरहितः पाखण्डी वा युगे त्वथ गोलके
विधनमलिनोऽज्ञानोपेतः कुशिल्प्यलसाऽटनः ।
इति निगदिता योगाः सार्द्धं फलैरिह नाभसा
नियतफलदाश्चिन्त्या ह्येते समस्तदशास्वपि ॥ १९ ॥

इति श्रीवराहमिहिरकृते बृहज्जातके नाभ-
सयोगाऽध्यायो द्वादशः ॥ १२ ॥

टीका-युग योगवाला धन रहित और पाखण्डी(तीनों मार्गों से बहिष्कृत) होता है गोलक योगवाला निर्द्धन,मलिन, अज्ञानी, निन्द्यशिल्प करनेवाला, आलसी, भ्रमण करनेवाला होता है इस प्रकार नाभस योग फलों सहित कहे हैं ये योग केवल दशा ही में नहीं किन्तु सर्वकाल फल देने वाले हैं, तथापि गोचर फल प्रबल ही रहता है उस समय में और प्रबलकारक दशा में ये योग भी मिश्रफल देते हैं। इस अध्याय में पहिले प्रतिज्ञा है कि, इन योगों का विस्तार अध्याय के अन्त्य में लिखेंगे वह यह है कि, दल और आकृति योगों को समकाल स्थिति नहीं है जैसे दलयोग में संख्यायोगकी प्राप्ति जहां होगी वहां दल ही फल देगा, आश्रय आकृति की समकाल प्राप्ति होने में आकृति फल देगा,ऐसेही आकृति संख्या की तुल्य प्राप्ति में आकृति फल देगा, संख्या और आश्रय योग आकृति योग में अन्तर्भाव हो जाते हैं और जो यवन मत से १५० भेद नाभस योगों के कहे हैं उनका विस्तार कहते हैं-वराहमिहिर ने आकृति योग २० ही कहे हैं परन्तु उन में से गदा योग के भेद ४-लग्न चतुर्थ में सर्व ग्रह होने से गदा, और ४। ७ में सर्वग्रह होने से शंख, ऐसे ही ७।१० में वज्रुक, १०।१ में ध्वज, अब शंख वज्रुक ध्वज ये ३ भेद मिला कर आश्रय के भेद २३ होवे हैं, संख्यायोग के भेद १२७ होते हैं ये सब १५० हुये, बारह राशिके प्रत्येक भेद होने से सब १८०० भेद होते हैं।संख्यायोग के१२७भेद ये हैं कि, पहिले"द्वित्रिचतुर्विकल्पजाः स्युः" ऐसा लिखा है तो द्विविकल्प२१हैं,त्रिविकल्प३५,चतुर्विकल्प ३५, पंचविकल्प २१, षड्विकल्प ७, सप्तविकल्प १, प्रथम विकल्प ७ ये सब १२७ हुये, इन विकल्पों का गणित प्रस्तार क्रम से वराहसंहिता में उत्तम प्रकार सब के समझने के योग्य लिखा है, ग्रन्थ बढ़ने के कारण मैंने यहां छोड़ दिया तथापि वही मत लेकर ग्रहगणना लिखता हूं कि, प्रथम विकल्प रवि। चन्द्र। मङ्गल। बुध। बृहस्पति। शुक्र। शनि। यथाक्रमसे एक विकल्प र० चं० र० भौ०। र० बु०। र० बृ०। र० शु०। र०

शा० । सूर्य सहित ६, चं० मं० । चं० बु० । चं० बृ० । चं० शु० । चं० श० । चन्द्र सहित ५ । मं० बु० । मं० बृ० । मं० शु० । मं० श० । मङ्गल सहित ४ बु० बृ० । बु० शु० । बु० श० । बुध सहित ३ बृ० शु० । बृ० श० । गुरु सहित २, शु० श० । शुक्र सहित १ । ये २१ भेद दूसरे विकल्प के हुये २ । र० चं० मं० । र० चं० बु० । र० चं० बृ० । र० चं० शु० । र० चं० श० । ५ । र० मं० बु० । र० मं० बृ० र० मं० शु० । र० मं० श० । ४ । र० बु० बृ० । र० बु० शु० । र० बु० श० । ३ । र० बृ० शु० । र० बृ० श० । । २ । र० शु० श० । १ । ये तीसरे विकल्प में सब १५ भेद हुये । चं० मं० बु० । चं० मं० बृ० । चं० मं० शु० । चं० मं० श० । ४ । चं० बु० बृ० । चं० बु० शु० चं० बु० श० । ३ । चं० बृ० शु० । चं० बृ० श० । २ । चं० शु० श० । १ । ये उसी में से १० भेद हुये मं० बु० बृ० । मं० बु० शु० । मं० बु० श० । ३ । मं० बृ० शु० । मं० बृ० श० । २ । मं० शु० श० । १ । ये उसी में से ६ हुये । बु० बृ० शु० बु० बृ० श० । २ । बु० शु० श० । १ । बृ० शु० श० । १ । ये सब मिला के तीसरे के भेद के ३५ विकल्प हुये । ३ । अथ । र० चं० मं० बु० । र० चं० मं० बृ० । र चं० मं० शु० । र० चं० मं० श० । ४ । र०चं०बु० बृ० । र० चं० बु० शु० । र०चं० बु० श० । ३ । र०चं० बृ० शु० । र०चं० बृ० श० । २ । र० चं० शु० श० । १ । र० मं० बु० बृ० । र० मं० बु० शु० । र० । मं० बु० श० ।३। र मं० बृ० शु० । र० मं० बृ० श० २ । र० मं० शु० श० । १ । र० बु० बृ० शु० । र० बु० बृ० श० । २ । र० बु० शु० श० । र० बृ० शु० श० । २ । एवम् सूर्य सहित २० हुये । चं० मं० बु० बृ० । चं० मं० बु० शु० । चं० मं० बु० श० । ३ । चं० मं० बृ० शु० । चं०मं० बृ०श० । २ । चं०मं०शु० । श० । १ । चं० बु०बृ० शु० । चं० बु० बृ० श० । चं०बु०शु०श० । १ । चं० बृ० शु० श० ।१। एवम् चन्द्रमा सहित १० ।

भौ० बु० बृ० शु० । मं० बु० बृ० श० । मं० बृ० शु० श० । एवम् मङ्गल सहित ४ । बु० बृ० शु० श० । बुध सहित १ । एवम् ३५ भेद चाथे विकल्प के हुये । ४ । र० चं० मं० बु० बृ० । र० चं० मं० बु० शु० । र चं० मं० बु० श० । र० चं० भौ० बु० शु० । र० चं० मं० बृ० श० । र० चं० मं० शु० श० । र० चं० बु० बृ० शु० र० चं० बु० बृ० श० । र० चं० बु० शु० श० । र० चं० बृ० शु० श० । र० मं० बु० बृ० शु० । र० मं० बु० बृ० श० । र० मं० बु० शु० श० । र० मं० बृ० शु० श० । र० बु० बृ० शु० श० एवम् सूर्य सहित १५ । चं० मं० बु० बृ० शु० । चं० मं० बु० बृ० श० । चं० मं० बु० शु० श० । चं० मं० बृ० शु० श० । चं० बु० बृ० शु० श० । एवम् चन्द्र सहित । ६ मं० बु० बृ० शु० श० । एवम् सब योग २१ ये पांच विकल्प हुये । र० चं० मं० बु० बृ० शु० । र० चं० मं० बु० बृ० श० । र० मं० बु० बृ० शु० श० । चं० मं० बु० बृ० शु० श० । ये छः विकल्प हुये । र० चं० मं० बु० बृ० शु० श० । १ । सातवां विकल्प एक ही है इन सब का जोड १२७ संख्या योग के भेद हुये आश्रय के २३ जोड़ने से १५० होते हैं ॥ १९ ॥

इति महीधरविरचितायां बृहज्जातकभाषाटीकायां नाभसयोगाऽध्यायो द्वादशः ॥ १२ ॥

चंद्रयोगाऽध्यायः १३.

मालिनी ।

अधमसमवरिष्ठान्यर्ककेन्द्रादिसंस्थे
शशिनि विनयवित्तज्ञानधीनैपुणानि ।
अहनि निशि च चन्द्रे स्वेऽधिमित्रांशके वा
सुरगुरुसितदृष्टे वित्तवान्स्यात्सुखी च ॥ १ ॥

टीका-अब चंद्रयोगाध्याय कहते हैं-जिसके जन्म में चन्द्रमा सूर्यसे केन्द्र १।४।७। १० में हो तो विनय (सुशीलता) धन, ज्ञान और शास्त्र का बोध, बुद्धिनैपुण्य (कार्य में सूक्ष्म विचार) इतने अधम अर्थात् उस को इतनी वस्तु न होंगी। जिसके जन्म में चन्द्रमा सूर्यसे पणफर २ । ५ । ८ । ११ में हो तो पूर्वोक्त विनयादि मध्यम अर्थात् थोडे थोडे होंगे। जिसके जन्म में चन्द्रमा सूर्यसे आपोक्लिम ३ । ६ । ९ । १२ में हो तो वही पूर्वोक्त विनयादि उत्तम अर्थात् अच्छे होंगे, जिस का जन्म दिन का हो और चन्द्रमा अपने वा अधिमित्र के अंशक में हो बृहस्पति देखे तो वह धनवान् और सुखी होगा, जिसका जन्म रात्रिका हो और चन्द्रमा अपने वा अधिमित्रांशक में हो और शुक्र की दृष्टि हो तो भी धनवान् और सुखी होगा ॥ १ ॥

वसन्ततिलका ।

सौम्यैः स्मरारिनिधनेष्वधियोग इन्दो-
स्तस्मिंश्च मूपसचिवक्षितिपालजन्म ।
सम्पन्नसौख्यविभवाहतशत्रवश्च
दीर्घायुषो विगतरोगभयाश्च जाताः ॥ २ ॥

टीका-चन्द्रमा से बुध बृहस्पति शुक्र ६ । ७ । ८ भाव में हों इन भावों में से ये शुभ ग्रह तीनोंमें वा २ स्थानों में वा एकहीमें हों तो अधियोग होता है, इसके ७ विकल्प होते हैं जैसे सब शुभ ग्रह ६ में हों तो १, सप्तम में २, अष्टममें ३, छठे सातवे में सभी हों तो ४, जो ६ । ८में हों तो५, जो ७ । ८ में हों तो ६, जो ६ । ७ । ८ में हों तो ७, ये सात विकल्प हैं, इस अधियोग का फल यह है कि, सेनापति वा मन्त्री वा राजा हो इन में भी विचार चाहिये कि वे योगकर्ता शुभ ग्रह उत्तमबली हों तो राजा मध्यम बली हो तो मन्त्री, हीन बली हो तो सेनापति होगा और अति सौख्य ऐश्वर्यसे युक्त होंगे, शत्रु नष्ट रहेंगे, दीर्घायु और रोगरहित और निर्भय अधि योगवाले मनुष्य रहते हैं ॥ २ ॥

शार्दूलविक्रीडितम् ।

हित्वार्कं सुनफानफादुरुधुराः स्वान्त्योभयस्थैर्ग्रहैः
शीतांशोः कथितोऽन्यथा तु बहुभिः केमद्रुमोन्यैस्त्वसौ ।
केन्द्रे शीतकरेऽथवा ग्रहयुते केमद्रुमो नेष्यते
केचित्केन्द्रनवांशकेषु च वदन्त्युक्तिप्रासिद्धा न ते ॥ ३ ॥

टीका–सूर्यको छोडके चन्द्रमा से दूसरा कोई ग्रह हो तो सुनफा योग से ही चन्द्रमा से १२ में सूर्य छोडके भौमादियों में से कोई ग्रह हों ो अनफा योग और २ । १२ दोनों स्थानों में ग्रह हों तो दुरुधुरा योग- ता है, इन ३ योग कारक ग्रहोंके साथ सूर्य भी हो तो योग भङ्ग नहीं ता किन्तु सूर्य आप योग नहीं करसकता है और चन्द्रमासे २ । २ इन दोनों में कोई भी ग्रह नहो तो केमद्रुम योग होता है परन्तु न से केन्द्र में सूर्य चन्द्र विना और कोई ग्रह हो और न्द्रमा के साथ भी कोई ग्रह हो तो केमद्रुम योग भङ्ग हो जाता है । कोई हते हैं कि चन्द्रमा के केन्द्र व नवांशक में भी ये योग होते हैं जैसे चन्द्रमा चौथे भौमादियों में से कोई एक १ वा बहुत ग्रह हों तो सुनफा योग ही चन्द्रमा से दशम में हो तो अनफा, दोनो जगे हो तो दुरुधुरा, । १० में से कहीं भी ग्रह न हो तो केमद्रुम योग होता है और न्द्रमा जिस नवांश पर बैठा है उस से दूसरी राशि पर कोई ग्रह आदि हो तो सुनफा, ऐसे ही बारहवें में अनफा, दोनों में दुरुधुरा दोनों ानों मैं न हो तो केमद्रुम होता है ऐसा किसी २ आचार्यों का मत है त उनका कहना प्रसिद्ध नहीं है ॥ ३ ॥

इन्द्रवज्रा ।

त्रिंशत्सरूपाः सुनफानफाख्याः षष्टित्रयं दौरुधुरे प्रभेदाः ।
इच्छाविकल्पैःक्रमशोभिनीयाऽऽनीतेनिवृत्तिःपुनरन्यनीतिः॥४॥

टीका—सुनफा अनफा योगोंके ३१ । ३१ भेद हैं! दुरुधुरा के १८० भेद हैं। इनका प्रस्तार क्रमपूर्व नाभसयोगाध्याय में कहा है इच्छा विकल्प करके क्रमसे उन विकल्पों को बनाय के निवृत्ति होती है. फेर और रीति स्थानान्तर चालन की होती है। जैसे सुनफा अनफा योग मं० बु० बृ० शु० श० इन पांचों से होते हैं तो इच्छा विकल्प पांचही हुये पूर्ववत्प्रस्तार क्रम से निवृत्ति। ५। ४। ३। २। १ अथवान्यनीति प्रथम विकल्प ५ द्वितीय १० तृतीय १० च० ५ पञ्चम १ जैसे चन्द्रमा से दूसरे मं० बु० बृ० शु० श० प्रथम विकल्प ५ मं० बु० । मं० बृ० । मं० शु० मं० श० । बुध बृहस्पति । बुध शुक्र । बुध शनैश्वर।बृहस्पति शुक्र।बृहस्पति शनैश्वर । शुक्र । शनैश्वर। २ विकल्प १० मंगल बुध बृहस्पति । मंगल बुध शुक्र । मंगल बुध शनैश्वर ।मं० बृ० शु० । मं० बृ० श० । मं० शु० श०। बु० बृ० शु० । बु० बृ० श० । बु० शु० श० ।बृ० शु० श०।३ विक० १० । मंगल बुध बृहस्पति शुक्र । मंगल बुध बृहस्पति शनैश्वर । मंगल बृहस्पति शुक्र शनैश्वर । मंगल बुध शुक्र शनैश्वर । बुध बृहस्पति शुक्र शनैश्वर । ४ विक० ५ मंगल बुध बृहस्पति शुक्र शनैश्वर ५ विक ० १ ये सब ३१ सुनफा के भेद हैं। ऐसेही ३१ अनफा के भेद होते हैं। अब दुरुधुरा के भेद कहते हैं—पूववत्प्रस्तार क्रमसे एक दूसरेमें दूसरा बारहवे में पहिला बारहवेंमें दूसरा दूसरे में जैसे मंगल बुध१, बुध मंगल २, मंगल बृहस्पति३, बृहस्पति मंगल ४,मंगल शुक्र ५, शुक्र मंगल ६, मंगल शनैश्वर ७, शनैश्वर मंगल८,बुध बृहस्पति ९, बृहस्पति बुध १०, बुध शुक्र ११, शुक्र बुध १२, बुध शनैश्वर १३, शनैश्वर बुध १४, बृहस्पति शुक्र १५, शुक्र बृहस्पति १६, बृहस्पति शनैश्वर १७, शनैश्वर बृहस्पति १८, शुक्र शनैश्वर १९, शनैश्वर शुक्र २० । अब दूसरे में एक बारहवें में दो दूसरेमें २ बारहवें में १ । जैसे—मंगल । बुध बृहस्पति १ । बुध। बृहस्पति मंगल २। बृहस्पति । शुक्र बुध ३।बुध। शुक्र मंगल४।मंगल बुध शनैश्वर ५। बुध शनैश्वर

मंगल ६ । मंगल । बृहस्पति शुक्र ७ । बृहस्पति । शुक्र मंगल ८। मंगल । बृहस्पति शनैश्चर९। बृहस्पति । शनैश्चर मंगल १०।मंगल शुक्र शनैश्चर ११ शुक्र शनैश्चर मंगल १२ । बुध । मंगल बृहस्पति १३ । बृहस्पति । मंगल बुध । १४। बुध मङ्गल शुक्र १५ । मङ्गल। शुक्र बुध १६ बुध। मं०श० १७ मंगल।

५	४	३	२	१
१	२	३	४	५

शनैश्चर बुध १८ बुध । बृहस्पति शुक्र १९ बृहस्पति शुक्र बुध २० बुध। बृहस्पति शनैश्चर २१ बृहस्पति । शनैश्चर बुध २२ बुध। शुक्र शनैश्चर २३ शुक्र। शनैश्चर बुध २४ बृहस्पति । मंगल बुध २५। मंगल। बुध बृहस्पति २६। बृहस्पति। मंगल शुक्र २७ । मंगल। शुक्र बृहस्पति २८ बृहस्पति मंगल शनैश्चर २९ । मंगल । शनैश्चर बृहस्पति ३० । बृहस्पति । बुध शुक्र ३१ । बुध । शुक्र बृहस्पति ३२ बृहस्पति। बुध शनैश्चर ३३ । बुध । शनैश्चर बृहस्पति ३४ । बृहस्पति । शुक्र शनैश्चर ३५ । शुक्र । शनैश्चर बृहस्पति ३६ । शुक्र । मंगल बुध ३७ । मंगल। बुध शुक्र ३८ । शुक्र । मंगल बृहस्पति ३९ । मंगल बृहस्पति शुक्र ४० । शुक्र मंगल शनैश्चर ४१ । मंगल । शनैश्चर शुक्र ४२ । शुक्र । बुध बृहस्पति ४३ । बुध । बृहस्पति शुक्र ४४ । शुक्र । बुध शनैश्चर ४५ । बुध शनैश्चर शुक्र ४६ । शुक्र । बृहस्पति शनैश्चर ४७ । बृहस्पति । शनैश्चर शुक्र ४८ । शनैश्चर । मंगल बुध ४९ । मंगल । बुध शनैश्चर ५० । शनैश्चर । मंगल बृहस्पति ५१ । मंगल । बृहस्पति शनैश्चर ५२ । शनैश्चर। मंगल शुक्र ५३ । मंगल । शुक्र शनैश्चर ५४ । शनैश्चर । बुध बृहस्पति ५५ । बुध । बृहस्पति शनैश्चर ५६ । शनैश्चर । बुध शुक्र ५७ । बुध । शुक्र शनैश्चर ५८ । शनैश्चर । बृहस्पति शुक्र ५९ । बृहस्पति । शुक्र शनैश्चर ६० । ये सब ८० एक दूसरे में, ३ बारहवें में । ३ दूसरेमें एक बारहवें में। जैसे मंगल । बुध बृहस्पति शुक्र १। बुध बृहस्पति शुक्र । मंगल २ । मंगल । बुध बृहस्पति शनैश्चर ३ । बुध बृहस्पति शनैश्चर । मंगल ४ । मंगल। बुध शुक्र शनैश्चर ५ । बुध शुक्र शनैश्चर मंगल६ । मंगल । बृहस्पति शुक्र

शनैश्वर ७। बृहस्पति शुक्र शनैश्वर । मंगल ८ । बुध । मंगल बृहस्पति शुक्र ९ । मंगल बृहस्पति शुक्र । बुध १० । बुध । मंगल बृहस्पति शनैश्वर ११ । मंगल बृहस्पति शनैश्वर । बुध १२ । बुध । मंगल शुक्र शनैश्वर १३ । मंगल शुक्र शनैश्वर । बुध १४ । बुध । बृहस्पति शुक्र शनैश्वर १५ । बृहस्पति शुक्र शनैश्वर । बुध १६ । बृहस्पति । मंगल बुध शुक्र १७ । मंगल बुध शुक्र । बृहस्पति १८ । बृहस्पति । मंगल बुध शनैश्वर १९ । मंगल बुध शनैश्वर । बृहस्पति २० । एवमेकत्र १०० । बृहस्पति । मंगल शुक्र शनैश्वर १ । मंगल शुक्र शनैश्वर । बृहस्पति २ । बृहस्पति । बुध शुक्र शनैश्वर ३ । बुध शुक्र शनैश्वर । बृहस्पति ४ । शुक्र । मंगल बुध बृहस्पति ५ । मंगल बुध बृहस्पति । शुक्र ६ । शुक्र । मंगल बुध शनैश्वर ७ । मंगल बुध शनैश्वर । शुक्र ८ । शुक्र । मं० बृ० शनैश्वर ९ । मं० बु० श० । शु० १० । शु० । बु० ।बु० । श० । ११ । बु० बृ० शु० । श० १२ । श० । मं० बु० बृ० १३ । मं० बु०बृ० श० १४ । श० । मं० बु० शु० १५ । मं० बु०शु०श० १६ । श० मं० बृहस्पति शुक्र १७ । मंगल बृहस्पति शुक्र । शनैश्वर १८ । शनैश्वर बुध बृहस्पति शुक्र १९ । बुध बृहस्पति शुक्र । शनैश्वर २० । एवमेकत्र १२० ॥ अब दूसरेमें । एक बाहरवें चार, दूसरेमें ४ बाहरवें एक जैसे मंगल । बुध बृ० शुक्र श० १ । बुध बृ० शुक्र श० । मं० २ । बुध । मं० बृ० शुक्र श० ३ । मं० बृ० शुक्र श० । बुध ४ । बृ० । मंगल बुध शुक्र श० ५ । मं० बुध शुक्र श० बृ०६ । शुक्र । मं० बुध बृ०श० ७ । मं० बुध बु० श० । शुक्र । ८ । श० । मं० बुध बृ० शुक्र ९ । मं० बुध बृ० शु० । श० १० । एवमेकत्र ॥१३० अब २ बाहरवें दो दूसरे । जैसे मं० बुध । बृ० शुक्र १। बृ०शुक्र मं० बुध २ । मं० बुध । बृ० श० ३ । बृ० श० । मं० बुध ४ । मं० बुध । शुक्र श० ५ । शुक्र श० । मं० बुध ६ । मं० बृ० । शुक्र बुध ७। शुक्र बुध । मं० बृ० ८ । मं० बृ० । बुध श० ९ । बुध श० । मं० बृ०

१० । मं० बु० । शुक्र श० ११ । शुक्र श० । मं० बु० १२ । मं० शुक्र । बुध बृ० १३ । बुध बृ० । मंगल शु० १४ । मं० शु० । बृ० श० १५ । बुध श० । मं० शु० १६ । मं० शु० । बृ० श० १७ । बृ० श० मंगल शु० १८ । बुध बृ० । मंगल श० १९ । मं० श० । बुध बृ० २० । एवमेकत्र १५० ॥ मं० श० । बुध शु० १ । बृ० शु० । मं० श० २ । मंगल श० । बु० शु० ३ । बु० शु० । मंगल श० ४ । बुध बृ० । शु० श० ५ । शु० श० । बुध बृ० ६ । बृ० शु० । बृ० श० ७ । बृ० श० । बु० शु० ८ । बृ० शु० । बु० श० ९ । बु० श० । बृ० शु० १० । एवमेकत्र १६० ॥ अब २ दूसरे, ३ बारहवें । ३ दूसरे, २ बारहवें । जैसे मं० बुध । बृह० शु० श० १ । बृ० शुक्र श० । मंगल बुध २ । मंगल बृहस्पति । बुध शुक्र शनैश्चर ३ । बुध शुक्र शनैश्चर । मंगल बृहस्पति ४ । मंगल शुक्र । बुध बृहस्पति शनैश्चर ५ । बुध बृहस्पति शनैश्चर । मंगल शुक्र ६ । मंगल शनैश्चर । बुध बृहस्पति शुक्र ७ । बुध बृहस्पति शुक्र । मंगल शनैश्चर ८ । बुध बृहस्पति । मंगल शुक्र शनैश्चर ९ । मंगल शुक्र शनैश्चर । बुध बृहस्पति १० । एवमेकत्र १७० ॥ बुध शुक्र । मंगल बृहस्पति शनैश्चर १ । मंगल बृहस्पति शनैश्चर । बुध शुक्र २ । बुध शनैश्चर । मंगल बृहस्पति शुक्र ३ । मंगल । बृहस्पति शुक्र । बुध शनैश्चर ४ । बृहस्पति शुक्र । मंगल बृ० श० ५ । मं० बुध श० । बृ० शु० ६ । बृ० श० । मं० बु० शुक्र ७ । मंगल बुध शुक्र । बृ० श० ८ शुक्र श० । मंगल बुध बृ० ९ । मं० बुध बृ० । शु० श १० । एवमेकत्र १८० इस प्रकार दुरुधुराके १८० भेद हैं ॥ ४ ॥

मालिनी ।

स्वयमधिगतवित्तः पार्थिवस्तत्समो वा
भवति हि सुनफायां धीधनख्यातिमांश्च ।
प्रभुरगदशरीरः शीलवान्ख्यातकीर्त्ति-
र्विषयसुखसुवेषो निर्वृतश्चानफायाम् ॥ ५ ॥

टीका-अब सुनफाअनफा इन दोनों के फल कहते हैं सुनफायोगवाला मनुष्य अपने बाहुबल से कमाये हुये धन सहित राजा अथवा राजा के तुल्य और बुद्धिमान् विख्यात कीर्ति वाला होता है । अनफायोगवाला जिसकी आज्ञा को कोई भङ्ग न करे और निरोगी, विनयवान्, गुणवान्, ख्यात कीर्ति, सब में प्रमाण, शब्द स्पर्श रूप रस गन्धादि सुख भोगनेवाला, सुन्दर शरीरवाला मानसी दुःखों से रहित होता है ॥ ५ ॥

वसंततिलका।

उत्पन्नभोगसुखभुग्धनवाहनाढयस्त्यागान्वितोदुरुधुराप्रभवःसुभृत्यः
केमद्रुमेमलिनदुःखितनीचनिःस्वःप्रेष्यःखलश्चनृपतेरपिवंशजातः ६

टीका-दुरुधुरा योगवाला मनुष्य यथासम्भव उत्पन्न भोग भोगनेसे सुखी और धन तथा घोडा आदि वाहनों से युक्त, दाता, अच्छे चाकरोंवाला होता है । केमद्रुम योगवाला मलिन (स्नानादिक में आलसी), अनेक दुःखों से युक्त, नीच (अधम कर्म करने वाला), दरिद्री, प्रेष्य (दास कर्म करने वाला), दुष्टस्वभाव, ऐसे फलों में से किसी २ वा सभी फलवाला मनुष्य राजवंश में उत्पन्न हुवा हो तो भी होता ही है ॥ ६ ॥

वसंततिलका।

उत्साहशौर्य्यधनसाहसवान्महीजः
सौम्यः पटुः सुवचनो निपुणः कलासु ।
जीवोऽर्थधर्मसुखभुङ् नृपपूजितश्च
कामी भृगुर्बहुधनो विषयोपभोक्ता ॥ ७॥

टीका-इन्हीं योगोंके विशेष फल प्रत्येक ग्रहवश से कहते हैं-कि, इन योगों में योगकर्त्ता मङ्गल हो तो उत्साही (नित्य उद्यमी) शौर्यवान् रणप्रिय धनवान् साहसी (साहस कार्य करनेवाला) होवे । बुध योगकर्ता हो तो चतुर सुन्दर वाणीवाला, सब कलाओंमें निपुण, गीत, बाजे, नाच, चित्रकार, पुस्तक इतने कामों में सूक्ष्म दृष्टिवाला होता है । बृहस्पति हो तो धन का पात्र, धर्म में तत्पर सुखी राजमान्य होता है। शुक्र हो तो अतिकामी (स्त्रियों में चञ्चल) बहुत धनवान् विषय भोगनेवाला होता है ॥ ७ ॥

पुष्पिताग्रा ।

परविभवपरिच्छदोपभोक्ता रवितनयो बहुकार्यकृद्गणेशः ।
अशुभकृदुडुपोऽह्नि दृश्यमूर्तिर्गलिततनुश्च शुभोन्यथान्यदूह्यम् ॥ ८ ॥

टीका-शनि योगकारक हो तो पराये ऐश्वर्य, घर, वस्त्र, वाहन, परिवार का भोगनेवाला, अनेक कार्य करनेवाला, बहुत समुदायोंका स्वामी होता है। यहां अनफा सुनफा दुरुधुरा योगों में एक एक ग्रह का फल कहा, जहां २ । ३ । ४ योग कारक हों तहां फल भी उतनाही अधिक कहना और फल कहते हैं कि चन्द्रमा दिन के जन्म में दृश्य चक्रार्ध में हो तो अशुभ फल देता हैं, अर्थात् वह पुरुष दुःख दरिद्र से युक्त रहेगा । अदृश्य चक्रार्द्ध में हो तो शुभ फल अर्थात् ऐश्वर्यादि युक्त होगा और प्रकार हो तो और फल कहना ॥ ८ ॥

वसंततिलका ।

लग्नादतीववसुमान्वसुमाञ्छशाङ्का-
त्सौम्यग्रहैरुपचयोपगतैः समस्तैः ।
द्वाभ्यां समोल्पवसुमांश्च तदूनतायां-
मन्येष्वसत्स्वपि फलेष्विदमुत्कटेन ॥ ९ ॥

टीका-जिस के जन्म में लग्न से शुभग्रह उपचय स्थानों में हो तो अति धनवान् होता है जिस के चन्द्रमा से उपचय में शुभग्रह (बुध, बृहस्पति, शुक्र) हो तो वह भी धनवान् होता है । तीनों शुभग्रह उपचयी होने से यह फल पूरा होगा । २ में मध्यम, १ में और कम । जिस के लग्न वा चन्द्र से उपचय ३ । ६ । १० । ११ में कोई भी शुभग्रह न हो तो दरिद्री होगा, जिस के लग्न चन्द्र दोनों से सभी शुभग्रह उपचय में हों वह अति धनी होगा यह योग फलमें उत्कट अर्थात् बडा तेज है कि, केमद्रुमादि योगों को काटकर धनवान् कर देताहै ॥ ९ ॥

इति महीधरविरचितायां बृहज्जातकभाषाटीकायां चन्द्र-
योगाऽध्यायस्त्रयोदशः ॥ १३ ॥

द्विग्रहयोगाऽध्यायः १४.

शार्दूलविक्रीडितम् ।

तिग्मांशुर्जनयत्युषेशसहितो यन्त्राश्मकारं नरं
भौमेनाघरतं बुधेन निपुणं धीकीर्त्तिसौख्यान्वितम् ।
क्रूरं वाक्पतिनान्यकार्यनिरतं शुक्रेण रङ्गायुधै-
र्लब्धस्वं रविजेन धातुकुशलं भाण्डप्रकारेषु वा ॥ १ ॥

टीका–अब द्विग्रहयोगाध्याय में प्रथम सूर्यसहित चन्द्रादिकों के पृथक् पृथक् फल कहते हैं सूर्य चन्द्रमा के साथ हो तो वह मनुष्य अनेक प्रकारके यन्त्र बनानेवाला और पत्थर का काम करनेवाला होवै । भौम युक्त सूर्य हो तो पापी होगा । बुध युक्त हो तो सब कार्यों में निपुण और बुद्धि यश सौख्य से युक्त हो । बृहस्पति युक्त हो तो क्रूर स्वभाव और निरन्तर पराये कार्य में तत्पर होवे । शुक्र युक्त हो तो रङ्ग मल्लादि और आयुध खड्गादि से धन पावे । शनि युक्त हो तो धातु (ताँबा, गेरू, मनशिलादि) के काम में निपुण और अनेक भाण्ड बर्त्तन आदि बनाने वा इनके कर्म से द्रव्य पावै १॥

शार्दूलविक्रीडितम् ।

कूटस्त्र्यासवकुम्भपण्यमशिवं मातुः सवक्रः शशी
सज्ञः प्रश्रितवाक्यमर्थनिपुणं सौभाग्यकीर्त्यान्वितम् ।
विक्रान्तं कुलमुख्यमस्थिरमतिं वित्तेश्वरं साङ्गिरा
वस्त्राणां ससितः क्रियादिकुशलं सार्किः पुनर्भूसुतम् ॥२॥

टीका–चन्द्रमा मङ्गल युक्त हो तो कूटकार्य करनेवाला स्त्री और मद्य के घडे बेचनेवाला और अपने माता को क्रूर (बुरा) होवे । बुध युक्त हो तो प्यारी वाणी बोलनेवाला, अर्थ जाननेवाला, सौभाग्य युक्त, सब मनुष्यों का प्यारा, कीर्ति (यश) वाला होवे । बृहस्पति युक्त हो तो शत्रु जीतने-वाला, अपने कुल में श्रेष्ठ, चपल, धनवान् होवे । शुक्रसहित हो तो वस्त्र कर्मतन्तुवाय सूत्र बुनना, रफूगिरी वा वस्त्र रँगना, सीना और क्रय विक्रयादि

वस्त्र व्यापार में चतुर होवे। शनि युक्त होवो उसकी माता पुनर्भू अर्थात् एक जगह व्याही गई दूसरे जगह पुत्र पैदा करनेवाली होवे ॥ २ ॥

स्रग्धरा।

मूलादिस्नेहकूटैर्व्यवहरति वणिग्बाहुयोद्धा ससौम्ये।
पुर्य्यध्यक्षः सजीवे भवति नरपतिः प्राप्तवित्तो द्विजो वा।
गोपो मल्लोथ दक्षः परयुवतिरतो द्यूतकृत्सासुरेज्ये
दुःखार्तोऽसत्यसन्धः ससवितृतनये भूमिजे निन्दितश्च ॥३॥

टीका—मङ्गल बुधयुक्त हो तो आत्तार, जडी, बलकल, फूल, पत्ते, गोंद, तेल और बनावटी वस्तु का व्यापार करता है। और मल्ल अर्थात् कुश्ती लडनेवाला होता है। बृहस्पति युक्त हो तो नगर का स्वामी अथवा राजा यद्वा ब्राह्मण धनवान् होताहै। शुक्र युक्त हो तो मल्ल, गोपालक, चतुर, परस्त्रियों में आसक्त, जुवारी, ठग होता है। शनियुक्त हो तो दुःखार्त, झूठा बोलने वाला, निंदित (निन्दा के कर्म करनेवाला) होता है ॥ ३ ॥

शार्दूलविक्रीडितम्।

सौम्ये रङ्गचरो बृहस्पतियुते गीतप्रियो नृत्यवि-
द्वाग्मी भूगणपः सितेन मृदुना मायापटुर्लंघकः।
सद्विद्यो धनदारवान्बहुगुणःशुक्रेण युक्ते गुरौ
ज्ञेयः श्मश्रुकरोऽसितेन घटकृज्जातोऽन्नकारोऽपि वा ॥ ४ ॥

टीका—बुध बृहस्पतियुक्त हो तो मल्ल, गीतप्रिय और नृत्य जाननेवाला होता है। शुक्र युक्त हो तो बोलने में चतुर भूमि और गणों का स्वामी होवे शनि युक्त हो तो दूसरे के ठगने में चतुर और गुर्वादिवचन लंघन करनेवाला होवे। बृहस्पति शुक्रयुक्त हो तो अच्छी विद्या जाननेवाला धन और स्त्रीसंयुक्त बहुत गुणों से युक्त होवे। शनियुक्त हो तो श्मश्रुकर्मा (हजाम) अथवा घटकृत् (कुम्हार) अन्नकार (रसोईदार) होवे ॥ ४ ॥

पुष्पिताग्रा ।

असितसितसमागमेल्पचक्षुर्युवतिसमाश्रयसम्प्रवृद्धवित्तः ।
भवति च लिपिपुस्तचित्रवेत्ता कथितफलैः परतो विकल्पनीयाः५॥

इति श्रीवराहमिहिरविरचिते बृहज्जातके द्विग्रह-
योगाऽध्यायश्चतुर्दशः ॥ १४ ॥

टीका-शुक्र शनियुक्त हो तो अल्पदृष्टि और स्त्री के आश्रय से धनबढे पुस्तकादि लिखने में और चित्र बनाने में चतुर होवे, जहां द्विग्रह योग दो स्थानों में हो वहां दोनों फल होंगे । ऐसे ही तीन भावों में तीनोंही फल कहने । जहां तीन ग्रह इकट्ठे हों तहां तीनों फल कहना जैसे सू० चं० मं० ये तीन इकट्ठे हों तो सूर्य चन्द्रमा का फल १, चन्द्रमा मङ्गल का २ सूर्य मङ्गल का ३ ये तीनों फल होंगे ऐसेही सर्वत्र जानना ॥ ५ ॥

इति महीधरकृतायां बृहज्जातकभाषाटीकायां
द्विग्रहयोगाऽध्यायश्चतुर्दशः ॥ १४ ॥

प्रव्रज्यायोगाऽध्यायः १५.

शार्दूलविक्रीडितम् ।

एकस्थैश्चतुरादिभिर्बलयुतैर्जाताः पृथग्वीर्यगैः
शाक्याजीविकभिक्षुवृद्धचरकानिर्ग्रन्थवन्याशनाः ।
माहेयज्ञगुरुक्षपाकरसितप्राभाकरीनैः क्रमा-
त्प्रव्रज्या बलिभिः समाः परजितैस्तत्स्वामिभिः प्रच्युतिः १॥

टीका-एक स्थान में चार आदि अर्थात् ।४। ५ । ६ । ७ ग्रह इकट्ठे हों तो प्रव्रज्या योग होता है, इन में भी बलके वश से है कि, जो उन प्रव्रज्या कारक ग्रहों में बलवान् कोई न हो तो यह योग फल भी नहीं देगा, जो एक ग्रह बलवान् हो तो उसी की प्रव्रज्या होगी, दो बली हों तो दोनों की, एवं जितने बलवान् हों उतने ही की प्रव्रज्या होगी। प्रव्रज्या फल प्रत्येक ग्रह का कहते हैं कि, मङ्गल की प्रव्रज्या हो तो

भगवा वस्त्रपहरनेवाला। बुधकी हो तो एक दण्डी और भिक्षु(यति)। बृहस्पति से आजीवक वैष्णव। चन्द्रमा से कापालिक वा शैव कनफटा, शुक्र से चक्राङ्कित,शनि से नंगा (वस्त्ररहित) सूर्य से फल मूल खानेवाला तपस्वी होगा। बलवान् ग्रहके अनुसार प्रव्रज्याफल मिलता है। जो वह ग्रह पराजित अर्थात् ग्रह युद्ध में हारा हो तो प्रव्रज्या भङ्ग होजाती है। अर्थात् फकीरी लेकर छोड देता है। जो दो वा तीन ग्रह बली हों तो पहिले एक प्रकार फकीरी लेकर फेर दूसरे प्रकार फेर तीसरे प्रकार लेगा। जो ग्रह पराजित हो तो उसकी प्रव्रज्या को छोडेगा। सभी पराजित हों तो सभी प्रकार लेकर छोडेगा। जो पराजित नहीं उसकी प्रव्रज्या आजन्म रहैगी। जो बहुत ग्रह प्रव्रज्यादायक हों तो प्रथम प्रव्रज्या दायकान्तर्दशा में उसके अनुसार फकीरी लेगा, जब दूसरे की दशान्तर्दशा आवे तब पूर्वगृहीत को छोडकर दूसरे के अनुसार ग्रहण करेगा इत्यादि ४। ५ में भी जानना ॥ १ ॥

वैतालीयम्।

रविलुप्तकरैरदीक्षिता बलिभिस्तद्गतभक्तयो नराः।
अभियाचितमात्रदीक्षिता निहतैरन्यनिरीक्षितैरपि ॥ २ ॥

टीका–प्रव्रज्या भङ्ग कहते हैं–जो प्रव्रज्याकारक बली ग्रह अस्तङ्गत हो तो अदीक्षित अर्थात् विना गुरुमंत्रोपदेश फकीर होगा, परन्तु तद्ग्रह-सम्बन्धी प्रव्रज्या में भक्त होगा। जो वह ग्रह औरों से विजित अर्थात् ग्रह युद्ध में जीता हो वा और ग्रह देखें तो दीक्षा लेने की इच्छा वा प्रार्थना करता रहै परन्तु दीक्षा न पावे। बली ग्रह के दशान्तर में दीक्षा पावेगा यदि पराजित न हो ॥ २ ॥

शालिनी।

जन्मेशोऽन्यैर्यद्यदृष्टोऽर्कपुत्रं पश्यत्यार्किर्जन्मपं वा बलोनम्।
दीक्षां प्राप्नोत्यार्किद्रेष्काणसंस्थे भौमार्क्यंशे सौरदृष्टे च चन्द्रे॥

टीका—और प्रकार प्रव्रज्या कहते हैं—जिसके जन्म समय में चन्द्रमा जिस राशि में हो उस राशिका स्वामी जन्मेश कहलाता है उसके ऊपर किसी की दृष्टि न हो और चन्द्रमा शनि को देखे तो प्रव्रज्या होती है। इस में भी शनि चन्द्रमा में जो बली हो उसकी दशान्तर्दशा में प्रव्रज्या होगी अथवा बलवान् शनि बल रहित जन्मराशिपतिको देखै तौभी शनि की उक्त प्रव्रज्या होगा और चन्द्रमा शनि के द्रेष्काण में हो अथवा शनि वा मङ्गल के नवमांश में हो कोई ग्रह न देखे केवल शनि देखे तो प्रवज्या दीक्षा पाता है अर्थात् शन्युक्त प्रव्रज्या पावेगा। अथवा चन्द्रमा निर्बल हो पाप ग्रह देखे विशेषतः शनि पूर्ण देखे तो वह मनुष्य भाग्यहीन होगा ॥ ३ ॥

मालिनी।

सुरगुरुशशिहोरास्वार्किदृष्टासु धर्म्मे
गुरुरथ नृपतीनां योगजस्तीर्थकृत्स्यात।
नवमभवनसंस्थे मन्दगेऽन्यैरदृष्टे
भवति नरपयोगे दीक्षितः पार्थिवेन्द्रः ॥ ४ ॥

इति श्रीबृहज्जातके प्रव्रज्यायोगाध्यायः पञ्चदशः ॥१५॥

टीका—बृहस्पति चन्द्रमा और लग्न इन पर शनि की दृष्टि हो और बृहस्पति नवम हो और कोई राज योग भी पड़ा हो तो वह राजा नहीं होगा। किन्तु तीर्थाटन करनेवाला होगा और शास्त्र रचनेवाला होगा। और शनि नवम हो और कोई ग्रह उसे न देखे और कोई राजयोग भी उस मनुष्य को हो तो वह राजाही होगा किन्तु दीक्षित अर्थात फकीरी दीक्षा भी पावेगा। महन्त आदि। और ऐसे योगों में यदि राजयोग कोई न हो तो केवल प्रवज्यायोग फल करेगा ॥ ४ ॥

इति महीधरविरचितायां बृहज्जातकभाषाटीकायां
प्रव्रज्यायोगाऽध्यायः पञ्चदशः ॥ १५ ॥

नक्षत्रफलाऽध्यायः १६.

आर्या ।

प्रियभूषणः सुरूपः सुभगो दक्षोऽश्विनीषु मतिमांश्च ।
कृतनिश्चयसत्यारुग्दक्षः सुखितश्च भरणीषु ॥ १ ॥

टीका-अब जन्म नक्षत्र का फल कहते हैं अश्विनी में जिसका जन्म हो वह मनुष्य भूषण शृङ्गार में रुचिवाला, रूपवान्, सबका प्यारा, सब कार्य्य करने में चतुर, बुद्धिमान् होता है। भरणी में जिस कामका आरंभ करे उसका पूरा करनेवाला, सत्य बोलनेहारा, निरोग, चतुर, सुखी होगा ॥ १ ॥

आर्या ।

बहुभुक्परदाररतस्तेजस्वी कृत्तिकासु विख्यातः ।
रोहिण्यां सत्यशुचिः प्रियम्वदः स्थिरमतिः सुरूपश्च ॥ २ ॥

टीका-कृत्तिका में बहुत भोजन करनेवाला, पराई स्त्रियों में आसक्त, तेजस्वी (किसी की नहीं सहनेवाला) सर्वत्र प्रसिद्ध होवे । रोहिणी में सत्य बोलनेवाला, पवित्र रहनेवाला, प्यारी वाणीवाला, स्थिरबुद्धि रूपवान् होवे ॥ २ ॥

आर्या ।

चपलश्चतुरो भीरुः पटुरुत्साही धनी मृगे भोगी ।
शठगर्वितः कृतघ्नो हिंस्रः पापश्च रौद्रर्क्षे ॥ ३ ॥

टीका-मृगशिरा में चञ्चल, चतुर, भय मानने वाला, चतुर वाणीवाला, उद्यमी, धनवान्, भोगवान् होवे । आर्द्रामें परकार्य बिगाडने वाला, मानी, कृतघ्न (पराई भलाई के बदले बुराई देनेवाला), जीवघाती, पापी होवे॥ ३ ॥

आर्या ।

दान्तः सुखी सुशीलो दुर्मेधा रोगभाक् पिपासुश्च ॥
अल्पेन च सन्तुष्टः पुनर्वसौ जायते मनुजः ॥ ४ ॥

टीका-पुनर्वसु में इन्द्रियोंको रोकनेवाला, सुखी, अच्छे स्वभाववाला, नम्र, जडके बराबर, रोगपीडित देह, तृषायुक्त, थोडे ही लाभमें सन्तुष्ट होताहै ४ ॥

आर्या ।

शान्तात्मा सुभगः पंडितो धनी धर्म्मसंभृतः पुष्ये ॥
शठसर्वभक्षपापः कृतघ्नधूर्त्तश्च भौजङ्गे ॥ ५ ॥

टीका–पुष्य में शमदमादि युक्त शान्त इन्द्रियवाला, सर्वप्रिय, शास्त्रार्थ जाननेवाला, धनवान्, धर्म्म में तत्पर होवे । आश्लेषा में परकार्यविमुख, सर्वभक्षी (सर्व्वव्ययी) पापी कृतघ्न (पराये उपकार को नाश करनेवाला) ठग होता है ॥ ५ ॥

आर्या ।

बहुभृत्यधनो भोगी सुरपितृभक्तो महोद्यमः पित्र्ये ।
प्रियवाग्दाता द्युतिमानटनो नृपसेवको भाग्ये ॥ ६ ॥

टीका–मघा में चाकर, कुटुम्ब, धन बहुत होवे, भोगयुक्त, देवता पितरों का भक्त, उद्यमी होवे । पूर्वाफाल्गुनी में प्यारी वाणी, उदार, कान्तिमान्, फिरनेवाला, राजसेवामें तत्पर होवे ॥ ६ ॥

आर्या ।

सुभगो विद्याप्तधनो भोगी सुखभाग्द्वितीयफाल्गुन्याम् ।
उत्साही धृष्टः पानपो घृणी तस्करो हस्ते ॥ ७ ॥

टीका–उत्तराफाल्गुनी में सर्वजनप्रिय विद्याके प्रभाव से धनवान् और भोगवान्, सुखी होवे । हस्त में उद्यमी, निर्लज्ज, मद्यपान करनेवाला, दयावान्, चोरीके कार्य में चतुर होवे ॥ ७ ॥

आर्या ।

चित्राम्बरमाल्यधरः सुलोचनाङ्गश्च भवति चित्रायाम् ।
दान्तो वणिक्कृपालुः प्रियवाग्धर्माश्रितः स्वातौ ॥ ८ ॥

टीका–चित्रा में अनेक प्रकार रङ्ग के वस्त्र और पुष्पमालादि धारनेवाला और सुहावने नेत्र सुन्दर अङ्ग होवे । स्वाती में उदार, व्यापारी, दयावान्, प्यारी वाणी बोलनेवाला, धर्म में आश्रय रखनेवाला होवे ॥ ८ ॥

आर्या।

ईर्षुर्लुब्धः कृतिमान्वचनपटुः कलहकृद्विशाखासु।
आढ्यो विदेशवासी क्षुधालुरटनोऽनुराधासु॥ ९॥

टीका-विशाखा में दूसरे की ईर्ष्या माननेवाला, अतिलोभी, कृतिमान् बोलने में चतुर, कलह करनेवाला होवे। अनुराधा में धनसम्पन्न, नित्य परदेशवासी, अतिक्षुधातुर, जगे जगे फिरनेवाला होवै॥ ९॥

आर्या।

ज्येष्ठासु न बहुमित्रः सन्तुष्टो धर्मवित्प्रचुरकोपः।
मूले मानी धनवान्सुखी न हिंस्रः स्थिरो भोगी॥१०॥

टीका-ज्येष्ठा में जिस का जन्म हो उसके बहुत मित्र न होवें, थोडे लाभ में सन्तोष करनेवाला और धर्मज्ञ, बड़ा क्रोधी होवे। मूल में मानयुक्त, धनवान्, सुखी, जीवहिंसा न करनेवाला अर्थात् दयावान्, स्थिरकार्य्यी, भोगवान् होवे॥ १०॥

आर्या।

इष्टानन्दकलत्रो मानी दृढसौहृदश्च जलदैवे।
वैश्वे विनीतधार्मिकबहुमित्रकृतज्ञसुभगश्च॥ ११॥

टीका-पूर्वाषाढा में स्त्री मनोवांछित प्रसन्नता देनेवाली और मानी, अच्छ मित्र होवें। उत्तराषाढा में नम्र, धर्मात्मा, बहुत मित्रवाला, थोड़े में भा उपकार माननेवाला गुणज्ञ सुरूप होवे॥ ११॥

आर्या।

श्रीमाञ्छ्रवणे श्रुतिमानुदारदारो धनान्वितः ख्यातः।
दाताढ्यशूरगीतप्रियो धनिष्ठासु धनलुब्धः॥ १२॥

टीका-श्रवण में शोभायुक्त, कान्तिमान्, स्त्री उदार और धनवान्, सर्वत्र (ख्यात) विदित होवे। धनिष्ठा में देनेवाला, शूर धनयुक्त, गीत रागादि में प्रेम लानेवाला और धन में लोभी होवे॥ १२॥

आर्या ।

स्फुटवाग्व्यसनी रिपुहा साहसिकः शतभिषासु दुर्ग्राह्यः ।
भाद्रपदासूद्विग्नः स्त्रीजितधनपटुरदाताच ॥ १३ ॥

टीका-शतभिषामें स्पष्ट वाणी बोलनेवाला, अनेक व्यसन करनेवाला, शत्रु को मारनेवाला, साहस करने वाला, किसी के वश में न आवे। पूर्वभाद्रपदा में नित्य उद्विग्न मन रहे, स्त्री के वश रहै, धन कमानेमें चतुर और कृपण होवे ॥ १३ ॥

आर्या ।

वक्ता सुखी प्रजावाञ्जितशत्रुर्धार्मिको द्वितीयासु ।
सम्पूर्णाङ्गः सुभगः शूरः शुचिरर्थवान्पौष्णे ॥ १४ ॥

इति श्रीवराहमिहिरकृते बृहज्जातके नक्षत्रफलाऽध्यायः षोडशः ॥ १६ ॥

टीका-उत्तराभाद्रपदा में शास्त्रार्थादि बोलनेवाला, सुखी, संततिवाला, शत्रुको जीतनेवाला, धर्मात्मा होवे । रेवती में सब अङ्ग परिपूर्ण अर्थात् कोई अङ्ग हीन न हो, सुरूप, शूर, पवित्र, धनवान् होवे ॥ १४ ॥

इति महीधरविरचितायां बृहज्जातकभाषाटीकायां नक्षत्रफलाऽध्यायः ॥ १६ ॥

राशिशीलाऽध्यायः १७.

शार्दूलविक्रीडितम् ।

वृत्तातानदृगुष्णशाकलघुभुक्क्षिप्रप्रसादोऽटनः
कामी दुर्बलजानुरस्थिरधनः शूरोऽङ्गनावल्लभः ।
सेवाज्ञः कुनखी व्रणाङ्कितशिरा मानी सहोत्थाग्रजः
शक्त्यापाणितलेऽङ्कितोऽतिचपलस्तोयेऽतिभीरुःक्रिये ॥१॥

टीका--अब चन्द्र राशिका फल कहते हैं--जिस के जन्म में चन्द्रमा मेष का हो तो उस मनुष्य के ताँबेकासा रङ्ग नेत्रों का हो और गोल हों,

गर्मभोजी, शाकभोजी और थोडा खानेवाला, शीघ्र खुश हो जानेवाला, जगे२ फिरनेवाला, अतिकामी और जंघा पतले हों, धन स्थिर न रहे, शूरमा होवे, स्त्रियों का प्यारा, सेवा जाननेवाला, नख कुरूप हों, शिरपर खोट हो, मानी हो अपने भाइयों में श्रेष्ठ हो हाथ में शक्तिका चिह्न हो, अति चपल हो और जलमें डरनेवाला होवे ॥ १ ॥

शार्दूलविक्रीडितम् ।

कान्तः खेलगतिः पृथूरुवदनः पृष्ठास्यपार्श्वेऽङ्कित-
स्त्यागी क्लेशसहः प्रभुः ककुदवान्कन्याप्रजः श्लेष्मलः ।
पूर्व्वैर्बन्धुधनात्मजैर्विरहितः सौभाग्ययुक्तः क्षमी
दीप्ताग्निः प्रमदाप्रियः स्थिरसुहृन्मध्यांत्यसौख्यो गवि ॥ २ ॥

टीका—जिस का चन्द्रमा जन्म में वृष का हो तो देखने में सुरूप सजीली चाल चलनेवाला और चूतड और मुख मोटे और पीठ या मुख वा कुक्षि में चिह्न हो, देने में उदार क्लेश सहनेवाला और उसकी आज्ञा को कोई भङ्ग न करे, गर्द्दन वडी हो, कन्या पैदा करनेवाला, कफ प्रकृति, प्रथम कुटुम्ब व धन व पुत्रसे रहित, सौभाग्ययुक्त, सवका प्यारा, वहुत भोजन करने वाला स्त्रियोंका प्यारा गाढे मित्रोंवाला, जवानी व बुढापेमें सुखी हो ॥ २ ॥

शार्दूलविक्रीडितम् ।

स्त्रीलोलः सुरतोपचारकुशलस्ताम्रेक्षणः शास्त्रविद्
दूतः कुंचितमूर्द्धजः पटुमतिर्हास्येङ्गितद्यूतवित् ।
चार्वङ्गः प्रियवाक्प्रभक्षणरुचिर्गीतप्रियो नृत्यवि-
त्क्लीबैर्य्याति रतिं समुन्नतनसश्चन्द्रे तृतीयर्क्षगे ॥ ३ ॥

टीका—मिथुन राशिवाला स्त्रियों में वहुत अभिलाषा करनेवाला, काम शास्त्र में चतुर, ताँबे के रङ्गसम नेत्र, शास्त्र जाननेवाला, दूत (पराया सन्देश लेजानेवाला) कुटिल केश, चतुरबुद्धि, सवको हँसानेवाला, पराये

मनकी बात चिह्नोंसे जाननेवाला, जुवारी, सुन्दरशरीरवाला, प्यारी वाणी बोलनेवाला, बहुत भोजनवाला, गीत प्यारा माननेवाला, नाच जाननेवाला, हिजडोंके साथ प्रीति करनेवाला हो और उसकी नाक ऊंची होवे ॥ ३ ॥

शार्दूलविक्रीडितम् ।

आवक्रद्रुतगः समुन्नतकटिः स्त्रीनिर्जितः सत्सुहृ-
द्दैवज्ञः प्रचुरालयः क्षयधनैः संयुज्यते चन्द्रवत् ।
ह्रस्वः पीनगलः समेति च वशं साम्ना सुहृद्वत्सल-
स्तोयोद्यानरतः स्ववेश्मसहिते जातः शशाङ्के नरः ॥ ४ ॥

टीका–कर्कट राशिवाला कुटिल व शीघ्र चलनेवाला, जघनस्थान ऊंचा, स्त्रीके वश रहनेवाला, अच्छे मित्रोंवाला, ज्योतिश्शास्त्र जाननेवाला हो, बहुत घर बनावे, कभी धनवान् कभी निर्द्धन, छोटाशरीर, मोटी गर्दन, प्रीति से वश में आनेवाला, मित्रों का प्यारा, जलाशय बगीचाओं में प्रेम रखनेवाला होवे ॥ ४ ॥

शार्दूलविक्रीडितम् ।

तीक्ष्णः स्थूलहनुर्विशालवदनः पिङ्गेक्षणोल्पात्मजः
स्त्री द्वेषी प्रियमांसकाननगः कुप्यत्यकार्य्येचिरम् ।
क्षुत्तृष्णोदरदन्तमानसरुजा सम्पीडितस्त्यागवा-
न्विक्रान्तस्थिरधीः सुगर्व्वितमना मातुर्विधेयोर्कभे ॥ ५ ॥

टीका–सिंह राशिवाला क्रोधी, ठोडी मोटी, बडा मुख पीले नेत्र, थोडे सन्तान, स्त्रियोंके साथ द्वेषी, मांस, वन, पर्वत को प्यारा माननेवाला; निकम्मे क्रोध करनेवाला, क्षुधा तृषा से और दन्त रोग, मानसी पीडासे पीडित, दाता, पराक्रमी, धीर बुद्धि, अभिमानयुक्त, मातृवश्य अर्थात् मातृभक्त होवे ५

शार्दूलविक्रीडितम् ।

व्रीडामन्थरचारुवीक्षणगतिः स्रस्तांसबाहुः सुखी
श्लक्ष्णः सत्यरतः कलासु निपुणः शास्त्रार्थविद्धार्मिकः ।

मेधावी सुरतप्रियः परगृहैर्वित्तैश्च संयुज्यते
कन्यायां परदेशगः प्रियवचाः कन्याप्रजोऽल्पात्मजः ॥६॥

टीका–कन्या राशिवाला लज्जासे अलससहित दृष्टिपात और गमनकरनेवाला और शिथिलस्कन्ध तथा बाहु और सुखी, मधुरवाणी, सच्चा बोलनेवाला, नृत्य, गीत, वादित्र, पुस्तक चित्र कर्म में निपुण, शास्त्रार्थ जाननेवाला धर्मात्मा, बुद्धिमान्, सम्भोगमें चञ्चल, पराये घर व धन से युक्त, परदेशवासी, प्यारी बोली बोलनेवाला, थोडे पुत्र बहुत कन्या उत्पन्न करने वाला होवे ॥६॥

शार्दूलविक्रीडितम्।

देवब्राह्मणसाधुपूजनरतः प्राज्ञः शुचिः स्त्रीजितः
प्रांशुश्चोन्नतनासिकः कृशचलद्गात्रोऽटनोऽर्थान्वितः।
हीनाङ्गः क्रयविक्रयेषु कुशलो देवद्विनामा सरु-
ग्बन्धूनामुपकारकृद्विरुषितस्त्यक्तस्तु तैः सप्तमे ॥ ७ ॥

टीका–तुलाराशिवाला देवता, ब्राह्मण और साधु की पूजा में तत्पर, बुद्धिमान्, परधनादिमें निर्लोभी, स्त्रीका वशीभूत, उच्च शरीर और नाक पतला, और शिथिल सब गात्र, फिरानेवाला, धनवान्, अङ्गहीन, क्रय विक्रय व्यापार जाननेवाला, जन्ममें एक नाम पीछे देवसंज्ञक दूसरा नाम विख्यातहो, रोगी, बन्धु, कुटुम्बका हितकारी और बन्धुजनोंसे त्यक्त होता है ॥ ७ ॥

मालिनी।

पृथुलनयनवक्षा वृत्तजंघोरुजानु-
र्जनकगुरुवियुक्तः शैशवे व्याधितश्च।
नरपतिकुलपूज्यः पिङ्गलः क्रूरचेष्टो
झषकुलिशखगाङ्कश्छन्नपापोलिजातः ॥८॥

टीका–वृश्चिक राशिवाले के नेत्र और छाती बड़े, जंघा व जानु गोल, माता पिता गुरु से रहित; बाल अवस्थामें रोगी, राजवंशसे पूज्य, पीतशरीर, विषमस्वभाव, मच्छी, वज्र, पक्षीका चिह्न हाथ पैरमें हो और गुप्त पापी ॥८॥

शार्दूलविक्रीडितम् ।

व्यादीर्घास्याशिरोधरः पितृधनस्त्यागी कविर्वीर्य्यवा-
न्वक्ता स्थूलरदश्रवाधरनसः कर्मोद्यतः शिल्पवित् ।
कुब्जांसः कुनखी समांसलभुजः प्रागल्भ्यवान्धर्म्मवि-
द्बन्धुद्विट् न बलात्समेति च वशं साम्नैकसाध्योऽश्वजः॥९॥

टीका—धनराशिवाले का मुख और गला भारी, पितृधनयुक्त, दानी, कविता जाननेवाला, बलवान्, बोलने में चतुर, ओष्ठ, दन्त, कान, नाक मोटे; सब कार्यों में उद्यमी; लिपि चित्रादि शिल्पकर्म्म जानने वाला, गर्दन थोड़ी कुबड़ा, कुरूप नख, हाथ बाहु मोटे, अति प्रगल्भ, धर्मज्ञ, बन्धुवैरी और बलात्कार से वश न होवे, केवल प्रीति से वश होजावे ॥ ९ ॥

शार्दूलविक्रीडितम् ।

नित्यं लालयति स्वदारतनयान्धर्मध्वजोऽधः कृशः
स्वक्षः क्षामकटिर्गृहीतवचनः सौभाग्ययुक्तोऽलसः ।
शीतालुर्म्मनुजोऽटनश्च मकरे सत्त्वाधिकः काव्यकृ-
ल्लुब्धोगम्यजराङ्गनासु निरतः सन्त्यक्तलज्जोऽघृणः ॥१०॥

टीका—मकर राशिवाला नित्य प्रीतिपूर्वक अपने स्त्री और पुत्रों को प्यार करनेमें तत्पर, दम्भी, मिथ्या धर्म करनेवाला, कमर से नीचे पतला, सुहावने नेत्र, कृश कमर, कहा माननेवाला, सर्वजनप्रिय, आलसी, शीत न सहनेवाला, फिरने में तत्पर, उदार चेष्टावाला या बलवान्, काव्य करनेवाला, विद्वान्, लोभी, अगम्य और बूढ़ी स्त्रीसे गमन करनेवाला, निर्लज्ज, निर्दयी होता है ॥१०॥

त्रोटकम् ।

करभगलशिरालुः खरलोमशदीर्घतनुः
पृथुचरणोरुपृष्ठजघनास्यकटिर्जठरः ।
परवनितार्थपापनिरतः क्षयवृद्धियुतः
प्रियकुसुमानुलेपनसुहृद्धटजोऽध्वसहः ॥ ११ ॥

टीका-कुम्भ राशिवाला ऊंट के समान गला, सर्वाङ्ग में प्रकट नसीं, रूखे और बहुत रोम, ऊंचा शरीर, पैर, चूतड, जंघा, पीठ, घुटने, मुख, कमर, पेट ये सब मोटे; परस्त्री, परधन और पापकर्म में तत्पर, क्षय वृद्धिसे युक्त, पुष्प, चन्दन और मित्रोंमें प्रियकरनेवाला होता है ॥ ११ ॥

मालिनी ।

जलपरधनभोक्ता दारवासोऽनुरक्तः
समरुचिरशरीरस्तुङ्गनासो बृहत्कः ।
अभिभवति सपत्नान्स्त्रीजितश्चारुदृष्टि-
र्द्युतिनिधिधनभोगी पण्डितश्चान्त्यराशौ ॥ १२ ॥

टीका-मीन राशिवाला जल रत्न (मोती आदिके क्रय विक्रय)से उत्पन्न धन और पराये कमाये धनोंका भोगनेवाला, स्त्री, विषय, वस्त्रादिमें अनुरक्त और सब अवयवोंसे परिपूर्ण और सुन्दर शरीर, ऊंची नाक, बडा शिर, शत्रुको जीतनेवाला, स्त्रीके वशवर्ती सुहावने नेत्र, कान्तिमान्, निधि अर्थात्अकस्मात् खानसे मिला हुवा द्रव्य आदि भोगनेवाला, शास्त्रज्ञ पण्डित होता है ॥ १२ ॥

कुसुमावचित्रा ।

बलवति राशौ तदधिपतौ च स्वबलयुतः स्याद्यदि तुहिनांशुः ।
कथितफलानामविकलदाता शशिवदतोऽन्येप्यनुपरिचिन्त्याः॥ १३॥
इति श्रीवराहमिहिरकृतेबृहज्जातके राशिशीलाऽध्यायस्सप्तदशः १७॥

टीका-पुरुष के जिस राशिमें जन्म में चन्द्रमा है वह राशि वा उसका अधिपति बलवान् हो और चन्द्रमा बलवान् हो तो राश्युक्त फल परिपूर्ण हो इन में २ बलवान् हों तो मध्यम फल वाला और एक ही बलवान् हो तो हीन फल होगा, ऐसेही सूर्य भौमादि के फलों में भी विचारना॥ १३॥

इति महीधरविरचितायां बृहज्जातकभाषाटीकायांराशिशीला
ऽध्यायस्सप्तदशः ॥ १७ ॥

ग्रहराशिशीलयोगाऽध्यायः १८.

औपच्छंदसिकम् ।

प्रथितश्चतुरोऽटनोल्पवित्तः क्रियगे त्वायुधभृद्द्वितुङ्गभागे ।
गवि वस्त्रसुगन्धपण्यजीवी वनिताद्विट् कुशलश्च गेयवाद्ये ॥१॥

टीका-जिसके जन्म में सूर्य मेष राशि का हो तो वह विख्यात, चतुर, सर्वत्र फिरने वाला, थोडा धनवान्, शस्त्रधारणसे आजीवन करनेवाला होवे। यह फल उच्चांश से अलग है उच्चांशक में हो तो जो जो हीन अटनाल्प धनादि फल कहे हैं वे नहीं होंगे । वृष का सूर्य हो तो वस्त्र, सुगन्धि द्रव्य और पण्य कर्म से आजीवन हो, स्त्रियों का वैरी और गीत गाने बाजे बजानेमें चतुर होवे ॥ १ ॥

शार्दूलविक्रीडितम् ।

विद्याज्योतिषवित्तवान्मिथुनगे भानौ कुलीरे स्थिते
तीक्ष्णोऽस्वः परकार्य्यकृच्छ्रमपथक्लेशैश्च संयुज्यते ।
सिंहस्थे वनशैलगोकुलरतिर्वीर्य्यान्वितोऽज्ञः पुमान्
कन्यास्थे लिपिलेख्यकाव्यगणितज्ञानान्वितः स्त्रीवपुः ॥२॥

टीका-मिथुन का सूर्य हो तो व्याकरणादि विद्या वा ज्योतिश्शास्त्र जाननेवाला, धनवान् होगा । कर्क का हो तो तीक्ष्णस्वभाव, निर्द्धन, परायेका कार्य करनेवाला और श्रम, मार्गादि क्लेशों करके समस्त काल उसका व्यतीत होवै । सिंह का सूर्य हो तो वन, पर्वत, गोट इन स्थानों में प्रसन्न रहै, बलवान् और मूर्ख होवै । कन्या का सूर्य हो तो पुस्तकादि लिखने और चित्र, काव्य, गणित ज्ञानसे युक्त रहै; स्त्री कासा शरीर होवै ॥ २ ॥

शार्दूलविक्रीडितम् ।

जातस्तौलिनि शौण्डिकोऽध्वनिरतो हैरण्यको नीचकृत्
क्रूरः साहसिको विषार्जितधनः शस्त्रान्तगोलिस्थिते ।

सत्पूज्यो धनवान्धनुर्द्धरगते तीक्ष्णो भिषक्कारुको
नीचोऽज्ञः कुवणिङ्मृगेल्पधनवाँल्लुब्धोन्यभाग्ये रतः ॥ ३ ॥

टीका—सूर्य तुला का हो तो शौण्डिक (मद्य बनानेवाला) अर्थात् कलाल, मार्ग चलने में तत्पर, सुवर्णकार, अनुचित कर्म करनेवाला होवै। वृश्चिक का हो तो उग्रस्वभाव, साहसी, विष के कर्म से धन कमानेवाला, कोई "वृथार्जितधनः" ऐसा पाठ कहते हैं कि, उसका कमाया धन व्यर्थ जावै, और शस्त्र विद्या में निपुण होवै। धन का सूर्य हो तो सज्जनों का पूजक योग्य, धनवान्, निरपेक्ष, वैद्यविद्या जाननेवाला, शिल्प कर्म जाननेवाला, होवै। मकर का हो तो नीच (अपने कुल से अयोग्य) कर्म करनेवाला, मूर्ख, निन्द्य व्यापार करनेवाला, अल्पधनी, अतिलोभी, पराये धन और पराये उपकार को भोगनेवाला होवै ॥ ३ ॥

वसंततिलका।

नीचो घटे तनयभाग्यपरिच्युतोऽस्व-
स्तोयोत्थपण्यविभवो वनिताऽऽदृतोऽन्त्ये।
नक्षत्रमानवतनुप्रतिमे विभागे
लक्ष्मादिशेत्तुहिनरश्मिदिनेशयुक्ते ॥ ४ ॥

टीका—सूर्य कुम्भ का हो तो नीच कर्म करनेवाला, पुत्रों से और ऐश्वर्य से रहित निर्द्धन होवै। सूर्य मीन का हो तो जल से उत्पन्न मोती आदि रत्नों के व्यापार से ऐश्वर्य पावै, स्त्रियों का पूजनीय होवै। सूर्य चन्द्रमा इकठे एक राशिमें हों तो वह राशि कालात्माके जिस अङ्गमें है उस अङ्गमें तिल मसकादि चिह्न होगा। कालात्मा प्रथमाध्यायमें कहा है ॥४॥

त्रोटकम्।

नरपतिसत्कृतोऽटनश्चमूपवणिक्सधनः
क्षततनुश्चौरभूरिविषयांश्च कुजः स्वगृहे।

युवतिजितान्सुहृत्सु विषमान् परदाररतान्
कुहकसुवेषभीरुपरुषान्सितभे जनयेत् ॥ ५ ॥

टीका-मङ्गल अपने घर १।८ का जिस का हो वह राजपूजित और फिरने वाला, सेनापति, व्यापारी, धनवान होवै । शरीरमें खोट हो, चोर हो, इन्द्रिय चञ्चल होवैं अर्थात् विषयी होवै । जो मङ्गल शुक्र के २ । ७ घर में हो तो स्त्रीके वशमें रहै, मित्रों में उलटा रहै अर्थात् क्रूरस्वभाव रक्खे और परस्त्री सङ्ग करनेवाला, इन्द्रजाली, भानमती का खेल जानने-वाला, सुन्दर शृङ्गार बना रक्खे, डरनेवाला भी होवै, रूखा हो (स्नेह किसी पर न रक्खे) ॥ ५ ॥

वसंततिलका ।

बौधेऽसहस्तनयवान्विसुहृत्कृतज्ञो
गांधर्वयुद्धकुशलः कृपणोऽभयोऽर्थी ।
चान्द्रेऽर्थवान् सलिलयानसमर्जितस्वः
प्राज्ञश्च भूमितनये विकलः खलश्च ॥ ६ ॥

टीका-मङ्गल बुध की राशि ३ । ६ में हो तो तेजस्वी, पुत्रवान्, मित्र-रहित, परोपकारी, गायन विद्या तथा युद्धविद्या जाननेवाला और कृपण (मूजी) निर्भय, मांगनेवाला होवे । कर्क का हो तो नाव जहाज आदि के काम से धनवान् होवे और बुद्धिमान् और अङ्गहीन तथा दुर्ज्जन होवै ॥६॥

शार्दूलविक्रीडितम् ।

निःस्वः क्लेशसहो वनान्तरचरः सिंहेऽल्पदारात्मजो
जैवे नैकारिपुर्नरेन्द्रसचिवः ख्यातोऽभयोऽल्पात्मजः ।
दुःखार्तो विधनोऽटनोऽनृतरतस्तीक्ष्णश्च कुम्भस्थिते
भौमे भूरिधनात्मजो मृगगते भूयोऽथवा तत्समः ॥ ७ ॥

टीका–मङ्गल सिंहका हो तो निर्द्धन, क्लेश सहनेवाला, वन में फिरनेवाला हो, स्त्री पुत्र थोडे हों । धन और मीन का हो तो शत्रु बहुत हों, राजमन्त्री होवे, विख्यात होवै, निर्भय होवै, सन्तान थोडी होवे । कुम्भ का हो तो अनेक दुःखों से पीडित, निर्द्धन (दरिद्री) फिरनेवाला, झूठ बोलनेवाला, क्रूर होवे । मकर का हो तो धन और सन्तति बहुत हो, राजा अथवा राजा के तुल्य होवै ॥ ७ ॥

वसंततिलका ।

द्यूतर्णपानरतनास्तिकचौरनिस्वाः
कुस्त्रीककूटकृदसत्यरताः कुजर्क्षे ।
आचार्य्यभूरिसुतदारधनार्ज्जनेष्टाः
शौक्रे वदान्यगुरुभक्तिरताश्च सौम्ये ॥ ८ ॥

टीका–जिसके जन्म में बुध भौम राशि १ । ८ में हो तो द्यूत (जुआ) ऋणादि परधन लेने में, मद्यपान में, नास्तिकता में, शास्त्रविरुद्धता में,चोरी में, तत्पर और दरिद्री होवे, स्त्री उसकी निन्द्य होवे, झूठा घमंडी और अधर्मी होवे । शुक्र की राशि २ । ७ में हो तो उपदेश शिक्षा करने वाला आचार्य हो; सन्तान बहुत हो, स्त्रियाँ बहुत हों, धन जमा करने में तत्पर और उदार हो, माता पिता और गुरुकी भक्तिमें तत्पर हो ॥ ८ ॥

इन्द्रवज्रा ।

विकत्थनः शास्त्रकलाविदग्धः प्रियम्वदः सौख्यरतस्तृतीये ।
जलार्ज्जितस्वः स्वजनस्य शत्रुः शशाङ्कजे शीतकरर्क्षयुक्ते ॥ ९ ॥

टीका–बुध मिथुन राशि का हो तो वाचाल (झूठा बोलने वाला) शास्त्र (विद्या) और कला (गीत, बाजे, नाच खेल इतने कामों) को जानने वाला, प्यारी वाणी बोलने वाला, सुखी होवे । कर्कका बुध हो तो जल कर्म से उत्पन्न धन से धनवान् होवै, मित्र बन्धु जनों का शत्रु होवे ॥ ९ ॥

प्रहर्षिणी ।

स्त्रीद्वेष्यो विधनसुखात्मजोऽटनोऽज्ञः
स्त्रीलोलः स्वपरिभवोऽर्कराशिगे ज्ञे ।
त्यागी ज्ञः प्रचुरगुणः सुखी क्षमावान्
युक्तिज्ञो विगतभयश्च षष्टराशौ ॥ १० ॥

टीका--बुध सिंह का हो तो स्त्रियों का वैरी और धन, सुख, पुत्र इनसे रहित होवै, फिरनेवाला, मूर्ख, स्त्रियों की बहुत अभिलाषा रखनेवाला और अपने जनों से पराभव पावे। कन्या का हो तो दाता, पण्डित, गुणवान् सौख्यवान्, क्षमावान् (सहारनेवाला), प्रयोग युक्ति जाननेवाला निर्भय होवै॥ १०॥

औपच्छन्दसिकम् ।

परकर्मकृदस्वशिल्पबुद्धिर्ऋणवान्विष्टिकरो बुधेऽर्कजर्क्षे ।
नृपसत्कृतपण्डिताप्तवाक्यो नवमेऽन्त्येजितसेवकोन्त्यशिल्पः ११।

टीका-बुध शनिकी राशि १०। ११ में हो तो पराया काम करनेवाला, दरिद्री, शिल्प कर्म करनेवाला, ऋणी, परायी आज्ञा पर रहनेवाला होवे, धन का होवे तो राजपूजित वा राजवल्लभ और विद्वान् व्यवहार जानने वाला अनुकूल अर्थात् योग्य बात बोलनेवाला होवै। मीन का हो तो सेवक अर्थात् परायी सेवा में तत्पर वा उसके सेवक जीते हुये रहैं पराया अभिप्राय जाननेवाला नीच शिल्प करनेवाला होवै ॥ ११ ॥

शार्दूलविक्रीडितम् ।

सेनानीर्बहुवित्तदारतनयो दाता सुभृत्यः क्षमी
तेजोदारगुणान्वितः सुरगुरौ ख्यातः पुमान्कौजभे ।
कल्पाङ्गः ससुखार्थमित्रतनयस्त्यागी प्रियः शौक्रभे
बौधे भूरिपरिच्छदात्मजसुहृत्साचिव्ययुक्तः सुखी॥१२॥

टीका-बृहस्पति भौम राशि १।८ में हो तो सेनापति और धनाढ्य बहु स्त्री, बहुत पुत्र होवे, । दाता होवे, भृत्य अच्छे होवें, क्षमावान् होवें, तेज-

स्वी, स्रीसे सुखवान्, प्रख्यात कीर्तिवाला होवे । शुक्र राशि २ । ७में हो तो स्वस्थ देह, सुखी, धन व मित्रों से युक्त, सत्पुत्र वाला, उदार होवे, सब का प्यारा होवे । बुध की राशि ३ । ६ में हो तो घर परिवार बहुत होवे, पुत्र और मित्र बहुत होवें मन्त्री होवे और सुखी रहै ॥ १२ ॥

शार्दूलविक्रीडितम् ।

चान्द्रे रत्नसुतस्वदारविभवप्रज्ञासुखैरन्वितः
सिंहे स्याद्बलनायकः सुरगुरौ प्रोक्तश्च यच्चन्द्रभे ।
स्वर्क्षे माण्डलिको नरेन्द्रसचिवः सेनापतिर्वा धनी
कुम्भे कर्कटवत्फलानि मकरे नीचोऽल्पवित्तोऽसुखी ॥१३॥

टीका—चन्द्र राशि (४) का बृहस्पति हो तो मणि, पुत्र, धन, स्त्री, ऐश्वर्य, बुद्धि, सुख इन से युक्त रहै । सिंह का हो तो सेना समूहों में श्रेष्ठ रहै और कर्कमें कहा हुवा फलभी कहना स्वराशिका ९ । १२ में हो तो माण्डलिक (कुछ गांव का राजा) वा प्रधान, अथवा सेनापति, वा धनवान् होवे कुम्भ का हो तो कर्क के बराबर फल जानना, मकर का हो तो नीचकर्म करनेवाला, अल्पवित्तवान्, दुःखित होवे ॥ १३ ॥

पुष्पिताग्रा ।

परयुवतिरतस्तदर्थवादैर्हृतविभवः कुलपांसनः कुजर्क्षे ।
स्वबलमतिधनो नरेन्द्रपूज्यःस्वजनविभुः प्रथितोऽभयःसितेस्वे१४॥

टीका—शुक्र मङ्गल की राशि १ । ८ का हो तो परस्त्रियोंमें आसक्त रहे और परस्त्रियों के अपराधानुवचनों से धनहरण करावे, कुल पर कलङ्क लगावै । अपनी राशि २ । ७ का हो तो अपने बल व अपनी बुद्धिसे धन कमावे, राजपूज्य होवे, अपने बन्धु जनों में प्रधान होवे, विख्यात व निर्भय होवे ॥ १४ ॥

औपच्छन्दसिकम् ।

नृपकृत्यकरोऽर्थवान्कलाविन्मिथुने षष्ठगतेऽतिनीचकर्मा ॥
रविजर्क्षगतेऽमरारिपूज्ये सुभगः स्त्रीविजितो रतः कुनार्य्याम्१५॥

टीका-शुक्र मिथुनराशि में हो तो राजकार्य करनेवाला, धनवान्, कला व गीत बाजे यन्त्रादि जाननेवाला होवे । कन्याराशि में हो तो अति नीचकर्म करनेवाला होवे । शनि राशि १० । ११ में हो तो सब लोगों का प्यारा, स्त्री के वश रहनेवाला वा विरूप स्त्री में आसक्त रहे ॥ १५ ॥

शिखरिणी ।

द्विभार्योऽर्थी भीरुः प्रबलमदशोकश्च शशिभे
हरौ योषाप्तार्थः प्रबलयुवतिर्मन्दतनयः ।
गणैः पूज्यः सस्वस्तुरगसहिते दानवगुरौ
झषे विद्वानाढ्यो नृपजनितपूजोऽतिसुभगः ॥ १६ ॥

टीका-शुक्र कर्क का हो तो दो स्त्री होवें और मांगनेवाला, भययुक्त, उन्मद, अति दुःखित होवे । सिंह का हो तो स्त्री का कमाया धन पावै और स्त्री उसकी प्रधान रहे सन्तान थोडी होवे । धन का हो तो बहुतों का पूज्य, धनवान् होवे । मीन का हो तो विद्वान् और संपन्न, राजपूज्य, सबका प्यारा होवे ॥ १६ ॥

वसंततिलका ।

मूर्खोऽटनः कपटवान्विसुहृद्यमेऽजे
कीटे तु बन्धवधभाक् चपलोऽघृणश्च ।
निर्ह्रीसुखार्थतनयः स्खलितश्च लेख्ये
रक्षापतिर्भवति मुख्यपतिश्च बोधे ॥ १७ ॥

टीका-शनि मेष का हो तो मूर्ख और फिरनेवाला, कपटी, नेत्ररहित होवे । वृश्चिक का हो तो मारने बांधनेवाला, हत्यारा, जल्लाद होवे, चपल होवे, निर्दयी होवे। मिथुन वा कन्या का हो तो निर्लज्ज, और दुःखित, अपुत्र, लिखने में भूल जानेवाला, रक्षास्थान (कैद) आदि का पति या श्रेष्ठ (पति) होवे ॥ १७ ॥

मंदाक्रांता ।

वर्ज्यस्त्रीष्टो न बहुविभवो भूरिभार्यो वृषस्थे
ख्यातः स्वोच्चे गणपुरबलग्रामपूज्योऽर्थवांश्च ।
कर्किण्यस्वो विकलदशनो मातृहीनोऽसुतोऽज्ञः
सिंहेऽनार्यो विसुखतनयो विष्टिकृत्सूर्यपुत्रे ॥ १८ ॥

टीका-शनि वृष का हो तो अगम्यस्त्रियों का गमन करनेवाला, ऐश्वर्य रहित, बहुत स्त्रियोंवाला होवे । तुला का हो तो प्रख्यातकीर्ति और समूह-ग्रामसेनाआदि में पूज्य और धनवान् होवे । कर्क का हो तो दरिद्री, दन्त-रोगवाला मातृरहित, पुत्ररहित, मूर्ख होवे । सिंह का हो तो मूर्ख, दुःखित, पुत्ररहित, और भार ढोनेवाला होवे ॥ १८ ॥

शार्दूलविक्रीडितम् ।

स्वन्तः प्रत्ययितो नरेन्द्रभवने सत्पुत्रजायाधनो
जीवक्षेत्रगतेऽर्कजे पुरबलग्रामाग्रनेताऽथवा ।
अल्पस्त्रीधनसंवृतः पुरबलग्रामाग्रणीर्मन्ददृक्
स्वक्षेत्रेमलिनःस्थिरार्थविभवो भोक्ता चजातः पुमान्॥१९॥

टीका-गुरु क्षेत्र ९ । १२ का शनि हो तो स्वन्तः अन्त्य अवस्था में सुख पावै । अथवा स्वन्तः-मृत्यु उसकी शुभ कर्म से होवे । दुर्मरण अपघात अल्पमृत्यु, जलप्रवाह, तुङ्गपात, अग्नि, विष,शस्त्रादि से न होगी, राजद्वार में उसकी प्रतीति होवे और उसके स्त्री सुस्त्री, पुत्र सत्पुत्र, धन सद्धन होवे आर सेना वा ग्राम का अधिनेता (श्रेष्ठ) होवे जो शनि स्वक्षेत्र १० । ११ का हो तो परायी स्त्री व पराये धन से युक्त रहे ग्राम व सेना में अग्रणी (मुख्य) होवे,नेत्र मन्द होवें, सर्वदा मैला शरीर रक्खे, धन व ऐश्वर्य स्थिर रहे, भोगवान् होवे ॥ १९ ॥

पुष्पिताग्रा ।

शिशिरकरसमागमेक्षणानां सदृशफलं प्रवदन्ति लग्नजातम् ॥
फलमधिकमिदं यदत्र भावाद्भवनमनाथगुणैर्विचिन्तनीयम् ॥२०॥

इति श्रीबृहज्जातके ग्रह राशिशीलयोगाऽध्यायोऽष्टादशः ॥१८॥

टीका–जो चन्द्र राशि के फल कहे हैं वही लग्नराशि के भी कहते हैं और दृष्टिफल भी चन्द्रमा के बराबर लग्न के कहते हैं। भाव फल व भावेश फल बलानुसार होता है जैसे लग्न राशि बलवान् हो लग्नेश भी बलवान् हो तो शरीर पुष्टि अधिक होगी। एक बलवान् एक लघु बली होने से समान होगी, एक बली एक हीन बली होने से थोड़ी होगी, दोनों के निर्बलता में शरीर पुष्टि न होगी इसी प्रकार सर्वत्र भावेशों का फल विचारना ॥ २० ॥

इति महीधरविरचितायां बृहज्जातकभाषाटीकायांग्रहराशिशीलयोगाऽध्यायः १८

दृष्टिफलाऽध्यायः १९.

शार्दूलविक्रीडितम् ।

चंद्रे भूपबुधौ नृपोपमगुणी स्तेनोऽधनश्चाजगे
निस्वःस्तेननृमान्यभूपधनिकः प्रेष्यः कुजाद्यैर्गवि ।
नृस्थेऽयोव्यहारिपार्थिवबुधाभीस्तन्तुवायोऽधनी
स्वर्क्षे योधकविज्ञभूमिपतयोऽयोजीविदृग्रोगिणौ ॥ १ ॥

टीका–अब चन्द्रमा पर ग्रहदृष्टि के फल कहते हैं-मेष के चन्द्रमा पर मङ्गल की दृष्टि हो तो कुलानुमान राजा होवे, बुध की दृष्टि से पंडित, बृहस्पति की दृष्टि से राजा के तुल्य, शुक्र की दृष्टि से गुणवान्, शनि की दृष्टि से चोर, सूर्य की दृष्टि से निर्द्धन (दरिद्री) होता है। ऐसे ही मेष लग्न के दृष्टिफल जानना। वृष के चन्द्रमा पर मङ्गल की दृष्टि से दरिद्री, बुध की दृष्टि से चोर, बृहस्पति की दृष्टि से राजमान्य, शुक्र की दृष्टि से राजा, शनि की दृष्टि से धनवान्, सूर्यदृष्टि से दास (परकर्म करनेवाला) होता है। ऐसेही

वृषलग्न में भी दृष्टिफल जानना । मिथुन के चन्द्रमा पर वा मिथुन लग्न पर भौम दृष्टि से लोहा शस्त्रादिक व्यवहार करनेवाला, बुधदृष्टि से राजा, गुरुदृष्टि से पण्डित, शुक्रदृष्टि से निर्भय, शनिदृष्टि से तन्तुवाय (सूत्रादि बीननेवाला) सूर्य्य दृष्टि से दारिद्री । कर्कके चन्द्रमा पर और कर्क लग्नपर भौम दृष्टि हो तो युद्ध जाननेवाला, बुधदृष्टि से कविता करनेवाला, गुरुदृष्टि से पण्डित शुक्र दृष्टि से राजा, शनि दृष्टि से शस्त्रव्यापारी, सूर्य से नेत्र रोगी होवे ॥ १ ॥

शार्दूलविक्रीडितम् ।

ज्योतिर्ज्ञाढ्यनरेन्द्रनापितनृपक्ष्मेशा बुधाद्यैर्हरौ
तद्वद्भूपचमूपनैपुणयुताःषष्ठेऽशुभे स्त्र्याश्रयः ।
जूके भूपसुवर्णकारवणिजः शेषेक्षिते नैकृती
कीटे युग्मपिता नतश्च रजको व्यङ्गोऽधनो भूपतिः॥२॥

टीका—सिंह के चन्द्रमापर और सिंहलग्न पर बुधदृष्टि से ज्योतिःशास्त्र का जाननेवाला बृहस्पति से धनवान्, शुक्र से राजा शनि से नापित अर्थात् हज्जाम, सूर्यदृष्टि से राजा मङ्गलदृष्टि से राजा होवे। कन्या के चन्द्रमा पर और कन्यालग्न पर बुधदृष्टि से राजा बृहस्पति से सेनापति शुक्र से निपुण अर्थात् सर्वकार्य्यज्ञ,अशुभ शनि सूर्य मङ्गल की दृष्टि से स्त्रीके आश्रय से जीवन करे । तुला के चन्द्रमा और तुला लग्न पर बुधदृष्टि से राजा, बृहस्पति से सुवर्णकार, शुक्र से बनियां व्यापारी, सूर्यशनिभौमदृष्टि से जीवघाती होवे । वृश्चिक के चन्द्रमा और वृश्चिकलग्न पर बुधदृष्टि से(युग्मपिता)दो बेटाओं का पिता और कोई ऐसा भी अर्थ करते हैं कि, उसके दो पिता अर्थात् एक से जन्म दूसरेका धर्म्मपुत्र इत्यादि, बृहस्पति दृष्टि से नम्र, शुक्रदृष्टि से रजक (धोबी) शनिदृष्टिसे अङ्गहीन, सूर्यदृष्टि से दरिद्री, भौमदृष्टिसे राजा होवै ॥ २ ॥

शार्दूलविक्रीडितम् ।

ज्ञात्युर्वीशजनाश्रयश्च तुरगे पापैः सदम्भः शठ-
श्चात्युर्वीशनरेन्द्रपण्डितधनी द्रव्योनभूपो मृगे ।

भूपो भूपसमोऽन्यदारनिरतः शेषैश्च कुम्भस्थिते
हास्यज्ञो नृपतिर्बुधश्च झषगे पापश्च पापेक्षिते ॥ ३ ॥

टीका-धन के चन्द्र और धनलग्न पर बुध की दृष्टि हो तो अपनी जाति में श्रेष्ठ स्वामी रहै, गुरुदृष्टि से राजा, शुक्रदृष्टि से बहुत जनों का आश्रय होवे, शनि सूर्यमङ्गल की दृष्टि से दम्भी, झूंठा पाखण्ड धर्मवाला और पराये कार्य से विमुख होवे । मकर के चन्द्रमा मकर लग्न पर बुध दृष्टि से राजाओं का राजा, गुरुदृष्टिसे राजा, शुक्रदृष्टि से पण्डित, शनि दृष्टि से धनवान्, सूर्यदृष्टि से दरिद्री, भौमदृष्टि से राजा होवे । कुम्भ के चन्द्रमा व लग्न पर बुधदृष्टि से राजा, गुरुदृष्टि से राजतुल्य, शुक्रदृष्टि से परायी स्त्री में तत्पर, श० सू० मं० की दृष्टि से भी परस्त्रीगामी होवे । ऐसे कुम्भराशि कुम्भलग्न में भी फल कहे हैं । मीन का चन्द्रमा वा मीनलग्न पर बुधदृष्टि से मसखरा (ठट्ठाखोर) गुरुदृष्टि से राजा, शुक्रदृष्टि से पण्डित, श० सू० भौ० दृष्टि से पापी होवै ॥ ३ ॥

शार्दूलविक्रीडितम् ।

होरेशर्क्षदलाश्रितैः शुभकरो दृष्टः शशी तद्वत-
स्त्र्यंशे तत्पतिभिस्सुहृद्भवनगैर्वा वीक्षितः शस्यते ।
यत्प्रोक्तम्प्रतिराशिवीक्षणफलन्तद्द्वादशांशे स्मृतं
सूर्य्याद्यैरवलोकितेपि शशिनि ज्ञेयं नवांशेष्वतः ॥ ४ ॥

टीका-चन्द्रमा जिस राशि जिस होरा में बैठा है उसको उसी होराचक्र स्थित ग्रह देखे तो जन्म में शुभफल देनेवाला होगा । जैसे चन्द्रमा सूर्यहोरा में हो और सूर्यहोरास्थित ग्रह देखे वा चन्द्रमा चन्द्रहोरा में हो और चन्द्रहोरा-स्थित ग्रह उसे देखे तो शुभ होगा, इसी प्रकार लग्न में भी होरेशफल जानना । ऐसे ही द्रेष्काण में भी जानना, जिस द्रेष्काण में चन्द्रमा हो उसी द्रेष्काणराशि के स्वामी से चन्द्रमा देखा जाय तो शुभफल देगा । ऐसेही नवांश, द्वादशांश, त्रिंशांशकोंके भी फल जानने । और चन्द्रमा को

स्वगृहगत वा मित्रराशिगत ग्रह देखे तो शुभफल देगा। शत्रुक्षेत्रस्थग्रहदृष्टि से अशुभ फल करेगा ऐसेही लग्न में भी जानना। द्वादशांश फलके वास्ते जो मेषादि प्रतिराशिगतचन्द्रमा पर दृष्टिफल कहे गये हैं वही कहने चाहियें। इस में भी कर्कद्वादशांश विना चन्द्रदृष्टि अशोभन कहते हैं इससे चन्द्रमा पर सूर्यादिकों की दृष्टि का फल नवांशों में जानना ॥ ४ ॥

वसन्ततिलका।

आरक्षिको वधरुचिः कुशलो नियुद्धे
भूपोऽर्थवान्कलहकृत्क्षितिजांशसंस्थे।
मूर्खोऽन्यदारनिरतः सुकविः सितांशेः
सत्काव्यकृत्सुखपरोऽन्यकलत्रगश्च ॥ ५ ॥

टीका–चन्द्रमा मङ्गल के नवांश १। ८ में हो और उस पर सूर्यदृष्टि हो तो नगरकी रक्षा करनेवाला अर्थात् कोतवाल होवे, मङ्गल की दृष्टि से प्राणघाती, बुध की दृष्टि से मल्लयुद्ध जाननेवाला, गुरुदृष्टि से राजा, शुक्रदृष्टि से धनवान्, शनिदृष्टि से कलह करनेवाला होवै। चन्द्रमा शुक्र नवांश २।७ में सूर्यदृष्टि से मूर्ख, भौमदृष्टि से परस्त्रीगमन करनेवाला, बुधदृष्टि से काव्य जाननेवाला, गुरुदृष्टि से सुन्दर काव्य करनेवाला, शुक्रदृष्टि से सुख में आसक्त, शनिदृष्टि से परस्त्रीगमन करनेवाला होवै ॥ ५ ॥

वसंततिलका।

बौधे हि रङ्गचरचौरकवीन्द्रमन्त्री
गेयज्ञशिल्पनिपुणः शशिनि स्थितेंऽशे।
स्वांशेऽल्पगात्रधनलुब्धतपस्विमुख्यः
स्त्रीपोष्यकृत्यनिरतश्च निरीक्ष्यमाणे ॥ ६ ॥

टीका–चन्द्रमा बुध नवांश ३। ६ में सूर्यदृष्ट हो तो मल्ल, भौम से चोर, बुध से कविश्रेष्ठ, गुरु से मन्त्री, शुक्र से गान जाननेवाला, शनि से शिल्पकर्म जाननेवाला होवै। चन्द्रमा अपने नवांश ४ में सूर्यदृष्ट हो तो शरीर

कृश, मङ्गलदृष्टि से धनलोभी अर्थात् कृपण, बुध से तपस्वी, बृहस्पति से मुख्य प्रधान, शुक्र से स्त्रियों से पालन पावै, शनिदृष्टि से कार्यासक्त होवै ६ ॥

प्रहर्षिणी ।

सक्रोधो नरपतिसंमतो निधीशः
सिंहांशे प्रभुरसुतोऽतिहिंस्रकर्म्मा ।
जैवांशे प्रथितबलो रणोपदेष्टा
हास्यज्ञः सचिवविकामवृद्धशीलः ॥ ७ ॥

टीका-चन्द्रमा सिंहांशक में सूर्यदृष्ट हो तो क्रोधी, भौम से राजवल्लभ, बुध से निधियों का मालिक, गुरु से प्रभु अर्थात् जिसकी आज्ञा सब मानें, शुक्र से पुत्ररहित, शनि से क्रूर कर्म करनेवाला होवै। चन्द्रमा बृहस्पति के नवांश ९ । १२ में सूर्यदृष्ट हो तो प्रख्यात बलवाला, भौमसे संग्रामविधि जाननेवाला, बुध से हास्यज्ञ (खुशमशखरा) गुरुदृष्टि से मन्त्री, शुक्रदृष्टि से नपुंसक, शनिदृष्टि से धर्ममति होवै ॥ ७ ॥

शालिनी ।

अल्पापत्यो दुःखितः सत्यपि स्वे
मानासक्तः कर्मणि स्वेऽनुरक्तः ।
दुष्टस्त्रीष्टः कृपणश्चार्किभागे
चन्द्रे भानौ तद्वदिंद्वादिदृष्टे ॥ ८ ॥

टीका-चन्द्रमा शनि के नवांश १० । ११ में सूर्य्यदृष्ट हो तो सन्तान थोड़ी होवै। भौम से धनद्रव्य की प्राप्ति में भी दुःख ही पावै। बुधसे गर्विता, गुरु से अपने कुलयोग्य कर्मोंमें आसक्त, शुक्र से दुष्टस्त्रियों का प्यारा, शनि से कृपण (मूजी) हो। इसी प्रकार तत्काल नवांशकवश से ग्रहदृष्टि का लग्न में भी कहना। परन्तु कर्क नवांशक विना चन्द्रदृष्टि अशुभ होती है यह सर्वत्र जानना। ऐसे ही सूर्य के फल चन्द्रमा के उक्त तुल्य कहना यहां जो चन्द्रमा पर सूर्यदृष्टि का फल होगया है वह सूर्य पर चन्द्रदृष्टि का जानना वही कहना ॥ ८ ॥

वसंततिलका ।

वर्गोत्तमस्वपरगेषु शुभं यदुक्तं
तत्पुष्टमध्यलघुताशुभमुत्क्रमेण ।
वीर्यान्वितोंशकपतिर्निरुणाद्धिपूर्वं
राशीक्षणस्य फलमंशफलं ददाति ॥ ९ ॥

इति श्रीवराहमिहिरविर० वृ० दृष्टिफलाऽध्यायः ॥ १९ ॥

टीका–नवांशक दृष्टिफल शुभाशुभ दोप्रकार कहा गया है जैसे आरक्षिक और वधरुचि, इसमें विचारना चाहिये कि वर्गोत्तमांश के चन्द्रमा में जो ग्रहदृष्टिफल शुभ कहा है वह अति शुभ होगा, अपने अंशकस्थ चन्द्रमा का जो शुभ फल है वह मध्यम होगा, परांशक के चन्द्रमा में जो शुभ फल कहाहै वह थोड़ा होगा । अशुभ फल के लिये विपरीत जानना जैसे परनवांशकस्थ चन्द्रमा में दृष्टिफल जो अशुभ कहा है वह अत्यन्त बुरा होगा । स्वनवांशक में मध्यम, वर्गोत्तमांशक में थोडा होगा । इसी प्रकार लग्न और सूर्य्य का भी दृष्टिफल जानना । इस में यी व्यवस्था है कि, लग्न चन्द्र सूर्य में जो अधिक बलवान् होगा वह और के फल को दबायके अपने उक्त फल को अवश्य देगा । जैसे जिस नवांशक में चन्द्रमा स्थित है उसका स्वामी बलवान् हो तो चन्द्रनवांशक दृष्टिफल प्रबल होगा । और पूर्वोक्तराशि दृष्टिफल, होरा–द्रेष्काणफल, द्वादशांशकफल को दबाय के अंश दृष्टिही फल देगी, एवं सर्वत्र जानना ॥ ९ ॥

इति महीधरविरचितायां बृहज्जातकभाषाटीकायां दृष्टिफलाऽध्यायः ॥१९॥

भावाऽध्यायः २०.

मन्दाक्रांता ।

शूरः स्तब्धो विकलनयनो निर्घृणोऽर्के तनुस्थे
मेषे सस्वस्तिमिरनयनः सिंहसंस्थे निशान्धः ।
शुक्रेन्धोऽस्वः शशिगृहगते बुद्बुदाक्षः पतङ्गे
भूरिद्रव्यो नृपहृतधनो वक्ररोगी द्वितीये ॥ १ ॥

टीका—अब भावाध्याय में प्रथम सूर्य का भाव फल कहते हैं–सूर्य लग्न में हो तो शूरमा, विलम्बसे कार्य करनेवाला, दृष्टिहीन, निर्दयी होवै। इतना फल सब राशियोंमें समान्य है, जो लग्न में सूर्य मेष का हो तो धनवान्, और नेत्ररोगी। सिंह का सूर्य लग्न में हो तो रात्र्यन्ध होवै। तुला का सूर्य लग्न में हो तो अन्धा होवै और दरिद्री भी हो, कर्क का सूर्य लग्न में हो तो बुद्बुदाक्ष (टेढ़ी) तिर्छी दृष्टिवाला अथवा नेत्रमें फुल्ली होवै। लग्न से दूसरा सूर्य हो तो धनवान् होवै, परंतु राजा उसका धन हरै, मुख में रोग रहै॥१॥

उपोद्गता।

मतिविक्रमवांस्तृतीयगेऽर्के विसुखः पीडितमानसश्चतुर्थे।
असुतो धनवर्जितस्त्रिकोणे बलवाञ्छत्रुजितश्च शत्रुयाते ॥२॥

टीका—सूर्य तीसरा हो तो बुद्धिमान्, पराक्रमी होवे। चौथा हो तो सुखरहित और मन में पीड़ित रहै। पञ्चम होतो धन और पुत्ररहित रहै। सूर्य छठा हो तो बलवान् और शत्रुओं से जीता हुआ रहै॥ २ ॥

वसंततिलका।

स्त्रीभिर्गतः परिभवम्मदने पतङ्गे
स्वल्पात्मजो निधनगे विकलेक्षणश्च।
धर्मे सुतार्थसुतभाक्सुखशौर्य्यभाक्खे
लाभे प्रभूतधनवान्पतितस्तु रिप्फे ॥ ३ ॥

टीका—सूर्य सातवां हो तो स्त्रियों से हारा हुआ रहै। आठवां हो तो सन्तान थोड़ी और नेत्र चञ्चल होवे। नवम हो तो पुत्र व धन का सुख भोगनेवाला होवे। दशम हो तो सुखी और धनवान् होवे। ग्यारहवां हो तो धनवान् होवे। बारहवां हो तो अपने कर्म से भ्रष्ट होवे ॥ ३ ॥

शार्दूलविक्रीडितम्।

मूकोन्मत्तजडान्धहीनबधिरप्रेष्याः शशाङ्कोदये
स्वक्षजोच्चगते धनी बहुसुतः सस्वः कुटुम्बी धने।
हिंस्रो भ्रातृगते सुखे सतनये तत्प्रोक्तभावान्वितो
नैकारिर्मृदुकायवह्निमदनस्तीक्ष्णोऽलसश्चारिगे ॥ ४ ॥

टीका—चन्द्रमा लग्न का मेष वृष कर्क राशियों से अन्य राशियों में हो तो गूंगा अथवा (उन्मत्त) बावला, वा मूर्ख, वा अन्धा, वा नीचकर्म करनेवाला, वा बधिर, वा पराया दास होवे। जो चन्द्रमा लग्न में कर्क का हो तो धनवान् हो, मेष का हो तो बहुत बेटे हों। वृष का हो तो धनवान् होवै। लग्न से दूसरा चन्द्रमा हो तो बड़ा कुटुम्बवाला होवे; तीसरा हो तो प्राणघाती होवै, चौथा हो तो सुखी, पांचवां हो तो पुत्रवान् हो, छठा हो तो बहुत शत्रु होवें और शरीर सुकुमार, मन्दाग्नि, मन्दकाम, उग्रस्वभाव, आलसी, कार्य करने में अवज्ञा करनेवाला और निरुद्यमी होवे ॥ ४ ॥

शार्दूलविक्रीडितम् ।

ईर्ष्युस्तीव्रमदो मदे बहुमतिर्व्याध्यर्दितश्चाष्टमे
सौभाग्यात्मजमित्रबन्धुधनभाग्धर्म्मेस्थिते शीतगौ ।
निष्पत्तिं समुपैति धर्म्मधनधीशौर्यैर्युतः कर्मगे
ख्यातो भावगुणान्वितो भवगते क्षुद्रोऽङ्गहीनो व्यये ॥५॥

टीका—चन्द्रमा सप्तम हो तो ईर्ष्यावान्, (दूसरे की भलाई को बुराई माननेवाला), अतिकामी होवे, अष्टम हो तो बुद्धिमान्, चपलबुद्धिवाला और रोगपीड़ित रहै। नवम हो तो सब जनों का प्यारा और पुत्रवान्, मित्रवान्, वा बंधुयुक्त, धनयुक्त रहै। दशम हो तो समस्त कार्यकी निष्पत्ति (कृतकार्यता) पावै और धर्म, धन, बुद्धि, बल इन से युक्त रहै। ग्यारहवां हो तो सर्वत्र विख्यात और नित्य लाभयुक्त रहै। बारहवें में क्षुद्र और अङ्गहीन होवे ॥ ५ ॥

वसंततिलका ।

लग्ने कुजे क्षततनुर्धनगे कदन्नो
धर्मेऽघवान्दिनकरप्रतिमोऽन्यसंस्थः ।
विद्वान्धनी प्रखलपण्डितमन्त्र्यशत्रु-
र्धर्मज्ञविश्रुतगुणः परतोऽर्कवज्ज्ञे ॥ ६ ॥

टीका–मंगल लग्न में हो तो शरीर में प्रहारादि से घाव लगा हो। दूसरा हो तो दुष्ट अन्न (बाजरा, बगड, मडुवा आदि) खानेवाला होवे, नवम हो तो पापकर्ममें तत्पर हो और शेष स्थानों में सूर्य का जैसा फल जानना। जैसे तीसरा हो तो बुद्धि व पराक्रमवाला हो। चौथे में सुखरहित, पञ्चम में पुत्ररहित धनरहित, छठेमें बलवान्, सप्तम में स्त्रीका जीता हुआ, आठवें में थोड़ी सन्तान, नववें में पुत्र व धनका सुख, दशम में सुख व बलसहित, ग्यारहवें में धनवान्, बारहवें में पतित होवे। अब बुध के भावफल कहते हैं–बुध लग्न का हो तो विद्वान् (पण्डित) होवे। दूसरा हो तो धनवान्, तीसरा हो तो दुर्जन, चौथा हो तो पण्डित, पञ्चम हो तो मन्त्री, छठा हो तो शत्रुरहित, सातवां हो तो धर्मज्ञ, आठवां हो तो ख्यात,गुणवान्, और भावों में सूर्य के तुल्य फल जानना। जैसे बुध नवम हो तो पुत्र, धन, सुख, इन से युक्त रहै। दशम में सुख और बलयुक्त रहै। ग्यारहवें में धनवान्, बारहवें में पतित होवै ॥ ६ ॥

इन्द्रवज्रा।

विद्वान्सुवाक्यः कृपणः सुखी च धीमानशत्रुः पितृतोऽधिकश्च।
नीचस्तपस्वी सधनः सलाभः खलश्च जीवे क्रमशा विलग्नात् ७॥

टीका–बृहस्पति लग्न का हो तो पण्डित होवे, दूसरे में सुन्दरवाणी, तीसरे में कृपण अर्थात् मूजी, चौथे में सुखी, पाँचवें में बुद्धिमान्, छठे में शत्रुरहित, सातवे में अपने पिता से अधिक, आठवें में नीचकर्म करनेवाला, नवम में तपस्वी, दशम में धनवान्, ग्यारहवे में लाभवान्, बारहवें में खल दुर्जन होवे ॥ ७ ॥

तामरसम्।

स्मरनिपुणः सुखितश्च विलग्ने प्रियकलहोऽस्तगते सुरतेप्सुः।
तनयगते सुखितो भृगुपुत्रे गुरुवदतोऽन्यगृहे सधनोन्त्ये ॥ ८ ॥

टीका–शुक्र लग्न का हो तो कामदेव की कला में निपुण और सुखी होवे, सप्तम स्थान में हो तो कलह को प्यारा माननेवाला और स्त्रीसङ्ग की

अभिलाषा रखनेवाला होवे, पञ्चमस्थानमें सुखी फल ह, अन्यभावों में बृहस्पति के तुल्य फल जानना जैसे दूसरे में सुन्दर वाणी, तीसरे में कृपण, चौथे में सुखी, पञ्चममें बुद्धिमान् छठे में शत्रुरहित, सातवे में अपने पितासे अधिक, आठवें में नीच, नवम में तपस्वी, दशम में धनवान्, ग्यारहवें में लाभवान्, बारहवें में दुर्जन, इस में भी यह विशेष है कि अपने उच्च मीन का शुक्र जिस किसी भाव में हो तो धनवान् ही करैगा ॥ ८ ॥

शिखरिणी।

अदृष्टार्थो रोगी मदनवशगोऽत्यन्तमलिनः
शिशुत्वे पीडार्त्तः सवितृसुतलग्नेत्यलसवाक्।
गुरुस्वर्क्षोच्चस्थे नृपतिसदृशो ग्रामपुरपः
सुविद्वांश्चार्वङ्गो दिनकरसमोन्यत्र कथितः ॥ ९ ॥

टीका–शनि तुला, धन, मकर, कुम्भ, मीन से और राशियों का लग्न में हो तो नित्य दरिद्री, नित्य रोगी, अतिकामी, अतिमलिन, बाल्यावस्था में पीडित, आलसी वाणी होय। जो लग्न में ७।९।१०।११।१२ राशि का हो तो राजतुल्य होवै और ग्राम नगरका स्वामी होवै, पण्डित होवै, अङ्ग सुरूप होवै। और भावों का फल सूर्य के बराबर कहा है जैसे दूसरा शनि धनवान् और मुखरोगी और राजा धन हरै ऐसे फल करता है। तीसरा हो तो बुद्धिमान्, पराक्रमी होवै। चौथा हो तो सुखरहित पीडित रहै। पञ्चम हो तो विपुत्र धनरहित। छठा हो तो बलवान् शत्रु से हारा रहै। सातवां हो तो स्त्री के वश रहै। आठवां हो तो सन्तान थोडी होवै और नेत्रकलारहित होवै। नवम हो तो पुत्र, धन, सुख, वाला होवै। दशम हो तो सुखी व बलवान् होवे ग्यारहवां हो तो धनवान्, बारहवां हो तो पतित होवे ॥ ९ ॥

मालिनी।

सुहृदरिपरकीयस्वर्क्षतुङ्गस्थितानां
फलमनुपरिचिन्त्यं लग्नदेहादिभावैः।
समुपचयविपत्ती सौम्यपापेषु सत्यः
कथयति विपरीतं रिप्फषष्ठाष्टमेषु ॥ १० ॥

टीका-इतने जो भावफल कहे गये हैं सब लग्न से फल देते हैं "मूर्तिश्च होरां शशिभश्च विन्द्यात्" इस वचन से लग्न और चन्द्रराशि तुल्य फल वाली कही है परन्तु यहां चन्द्रराशि से नहीं है लग्न, धन, सहजादि भावों में जैसी राशि सुहृदादि में ग्रह होगा वैसाही शुभाशुभ फल उस भावका देगा (सुहृत) मित्र, (अरि) शत्रु, (परकीय) उदासीन, (स्वर्क्ष) अपनी राशि (तुङ्ग) उच्च ये संज्ञा हैं, मित्रराशिवाला पूर्ण शुभ फल देगा, अशुभफल कम देगा, शत्रु राशिवाला अशुभफल देगा, ऐसाही नीचका भी, और परकीय जो उदासीनं है वह शुभ और अशुभ भी देगा, स्वर्क्षवाला अशुभफल पूर्ण देगा, उच्चवाला शुभ फल अधिक देगा, शुभफल देनेवाला जिस भाव में होगा उसकी वृद्धि और अशुभफल देनेवाला उस भाव की हानि करैगा। सत्याचार्य कहते हैं कि, शुभ ग्रह जिस भाव में हैं उसकी वृद्धि, पाप जिस भाव में हैं उसकी हानि होती है परन्तु छठा आठवां बारहवां इन में उलटे फल जानने जैसे पापग्रह बारहवें व्यय की हानि, अष्टम मृत्यु की हानि, छठे रोग व शत्रु की हानि करते हैं इसमें एकआचार्यका भेद हुवा है परन्तु शास्त्र उत्तरोत्तर बलवान् होता है, पूर्वोक्तफल सामान्य और पीछे का कहा हुआ बलवान् होताहै और बुद्धिमानों को उनका बलाबल देख के फल कहना उचित है, व्यवस्था इस विषय में बहुत है परन्तु यहां ग्रन्थ बढ़ने के भय से थोडा सा भय सारतर लिखदिया है॥ १०॥

अनुष्टुप्।

उच्चत्रिकोणस्वसुहृच्छत्रुनीचगृहार्कगैः ।
शुभं सम्पूर्णपादोनदलपादाल्पनिष्फलम् ॥ ११ ॥

इति श्रीवराहमिहिरविरचिते बृहज्जातके भावाऽध्यायः ॥२०॥

टीका-ग्रहकुण्डली में फल शुभाशुभ दो प्रकार के हैं, शुभ फल उच्चस्थ ग्रह पूर्ण देता है, मूल त्रिकोणवाला चौथाई कम देता है, स्वक्षेत्रवाला आधा देताहै, मित्रराशिवाला चौथाई फल देता है, शत्रु राशिवाला पाद से भी कम और नीचराशिका और अस्तङ्गत ग्रह कुछ भी

शुभफल नहीं देता पाप ग्रह उलटे फल देते हैं जैसे अस्तङ्गत व नीचका ग्रह अशुभफल पूरा देता है, शत्रुक्षेत्रवाला चौथाई कम, मित्रक्षेत्रवाला आधा, स्वक्षेत्रवाला चौथाई, त्रिकोणवाला पाद से भी कम, उच्चवाला कुछ भी नहीं देता, ये भावफल दशान्तर अष्टकवर्गगोचरमें कहना ॥ ११ ॥

इति महीधरविर० बृहज्जातकभाषाटीकायां भावाऽध्यायो विंशः ॥२०॥

आश्रययोगाऽध्यायः २१.

पुष्पिताग्रा ।

कुलसमकुलमुख्यबंधुपूज्याधनिसुखिभोगिनृपाः स्वभैकवृद्ध्या ।
परविभवसुहृत्स्वबंधुपोष्यागणपबलेशनृपाश्च मित्रभेषु ॥ १ ॥

टीका-अब आश्रययोगाध्याय कहते हैं-जिस के जन्म में एक ग्रह स्वराशिगत हो तो अपने कुलके अनुसार विभव पाता है अर्थात् अपने कुलवालों के तुल्य होता है । दो ग्रह अपनी राशि के हों तो अपने कुल में मुख्य श्रेष्ठ होवे । तीन स्वगृहमें हों तो वन्धु लोगों का पूज्य, चार स्वगृही हों तो धनवान्, पांच हों तो सुखी, छः हों तो अनेकभोग भोगनेवाला राजा के तुल्य होवै, सात हों तो राजा होवे । मित्र राशि में एक ग्रह हो तो पराये विभव से जीवे । दो हों तो मित्रों से, तीन हों तो अपनी जातवालों से, चार में भाइयों से, पांचमें बहुतों का स्वामी होवे, छः में सेनापति, सात में राजा होवे ॥ १ ॥

मालिनी ।

जनयति नृपमेकोऽप्युच्चगो मित्रदृष्टः
प्रचुरधनसमेतम्मित्रयोगाच्च सिद्धम् ।
विधनविसुखमूढव्याधितो बन्धतप्तो
वधदुरितसमेतः शत्रुनीचर्क्षगेषु ॥ २ ॥

टीका-उच्च का ग्रह मित्रदृष्टिवाला एक भी हो तो राजा होवे । जो उच्चगत ग्रह मित्रग्रह से युक्त भी हो तो बहुत धनसहित सिद्ध होता है ।

जिस के जन्म में एक ग्रह शत्रुराशि का वा नीच का हो तो वह निर्द्धन होवे । जिस के दो हों तो दरिद्री और सुखरहित भी होवे । तीन हों तो दुःखी दरिद्री और मूर्ख भी होता है । चार हों तो पूर्वोक्त तीन फलसहित रोगी भी होवे । पांच हों तो बन्धन से सन्तापयुक्त रहै । छः हों तो बहुत दुःखतप्त रहै । सात हों तो मृत्युतुल्य क्लेश सर्वदा रहै ॥ २ ॥

उपजातिः ।

न कुम्भलग्नं शुभमाह सत्यो न भागभेदाद्यवना वदन्ति ।
कस्यांशभेदो न तयास्ति राशेरतिप्रसंगास्त्विति विष्णुगुप्तः॥३॥

टीका-सत्याचार्य जन्म में कुम्भलग्न अच्छा नहीं कहते और यवनाचार्य कुम्भलग्न समस्त को नहीं किन्तु लग्न में कुम्भद्वादशांश को अशुभ कहते हैं । विष्णुगुप्त कहते हैं कि यवनमत से कुम्भद्वादशांश बुरा है तो वह सभी लग्नों में आवेगा तो क्या सभी बुरे हो जायँगे इस लिये यवनोक्ति अतिप्रसंग है कुम्भलग्न ही जन्म में अशुभ है कुछ कुम्भांशक बुरा नहीं है ॥ ६ ॥

वसंततिलका ।

यातेष्वसत्स्वसमभेषु दिनेशहोरां
ख्यातो महोद्यमबलार्थयुतोऽतितेजाः ।
चान्द्रीं शुभेषु युजि मार्दवकान्तिसौख्य-
सौभाग्यधीमधुरवाक्ययुतः प्रजातः ॥ ४ ॥

टीका-जिस्के जन्ममें पापग्रह सूर्य्य होरामें हो अर्थात् विषम राशियों के पूर्वदल में हो तो वह मनुष्य सर्वत्र विख्यात, और बड़ा उद्यमी, बलवान्, धनवान्, अतितेजस्वी, होवै और समराशि में चन्द्रमा की होरा में शुभग्रह हो तो मृदु (कोमल) स्वभाव, कान्तिमान्, सुखी, सब का प्यारा,बुद्धिमान्, मधुर वाणीवाला होवे ॥ ४ ॥

इन्द्रवज्रा ।

तास्वेव होरास्वपरर्क्षगासु ज्ञेया नराः पूर्वगुणेषु मध्याः ।
व्यत्यस्तहोराभवनस्थितेषु मर्त्या भवन्त्युक्तगुणैर्विहीनाः ॥५॥

टीका-अब विपरीत में कहते हैं कि, जो समराशिमें सूर्य की होरा में पाप ग्रह हों तो पूर्वोक्त शुभफल मध्यम जानने, ऐसे ही विषम राशि चन्द्र-होरा में शुभ ग्रह हों तो फल मध्यम जानने और विपरीत हों तो उलटा जानना,जैसे समराशि के चन्द्रहोरा में पाप ग्रह हों तो पूर्वोक्त महोद्यम, बल, धन,तेज से हीन होवै। ऐसे ही विषम राशिके सूर्य होरा में शुभ ग्रह हों तो मृदुशरीर, कान्ति, सौख्य, सौभाग्य, बुद्धि,मधुर वाणी ये फल उलटे होवैं।इनमें भी ग्रह बहुत होने से फल बहुत और ग्रह थोड़े होनेसे फल थोड़ाकहना ५॥

वसंततिलका।

कल्याणरूपगुणमात्मसुहृद्दृकाणे
चन्द्रोन्यगस्तदधिनाथगुणङ्करोति।
व्यालोद्यतायुधचतुश्चरणाण्डजेषु
तीक्ष्णोतिहिंस्रगुरुतल्परतोऽटनश्च॥६॥

टीका-जिस के जन्म में चन्द्रमा अपने वा तत्कालमित्र के द्रेष्काण में हो तो उसके रूप गुण अच्छे होवैं। जिस के द्रेष्काण में चन्द्रमा है वह तत्काल में सम हो तो रूप गुण मध्यम होंगे। ऐसे ही शत्रु हो तो रूप गुण से हीन होवे। सर्प्पद्रेष्काण का चन्द्रमा हो तो उग्रस्वभाव, उद्यतायुध- द्रेष्काण में प्राणिघात के वास्ते हथियार उठाय रक्खै, चौपाया राशि के द्रेष्काण में चन्द्रमा हो तो गुरुस्त्री का गमन करनेवाला होवै, अण्डज पक्षी राशिके द्रेष्काण में हो तो फिरनेवाला होवै, जहां दो की प्राप्ति अर्थात् अपने द्रेष्काण में और सर्प्पद्रेष्काण में भी हो तो दोनों फल होंगे। सर्प्पद्रेष्काण-कर्कका उत्तर वृश्चिक का पूर्व मीन का मध्य द्रेष्काण और उद्यतायुध-मेष का प्रथम, मिथुन का दूसरा, सिंह का प्रथम, तुला का द्वितीय, कुम्भ का प्रथम द्रेष्काण और पक्षी अण्डज राशि जानना॥६॥

शालिनी ।

स्तेनो भोक्ता पण्डिताढ्यो नरेन्द्रः
क्लीबः शूरो विष्टिकृद्दासवृत्तिः ।
पापा हिंस्रोऽभीश्च वर्गोत्तमांशे-
ष्वेषामीशा राशिवद्द्वादशांशैः ॥ ७ ॥

टीका–नवांशक फल कहते हैं--जिसका जन्म मेष नवांशक में हो तो चोर होवै, वृष में भोगवान्, मिथुन में पण्डित, कर्कमें धनवान्, सिंह में राजा, कन्या में नपुंसक, तुला में शूरमा, वृश्चिक में विना पैसा भार ढोने-वाला, धन में (दास) गुलाम, मकर में पापी, कुम्भ में क्रूरस्वभाव, मीन में निर्भय होवै, परन्तु इतने फल वर्गोत्तम रहित के हैं। वर्गोत्तम नवांश जैसे मेषलग्न में मेषांश, वृषलग्न में वृषांश इत्यादि में जन्म हो तो पूर्वोक्त फल होवै परन्तु राजा होवै जैसे मेष वर्गोत्तमांश हो तो चोरोंका राजा होवै वृष में भोगियोंका राजा इत्यादि और द्वादशांशों में राशितुल्य फल जानना ७

वसंततिलका ।

जायान्वितो बलविभूषणसत्त्वयुक्त-
स्तेजोतिसाहसयुतश्च कुजे स्वभागे ।
रोगी मृतस्वयुवतिर्विषमोन्यदारो
दुःखी परिच्छदयुतो मलिनोऽर्कपुत्रे ॥ ८ ॥

टीका–मंगल अपने त्रिंशांश में हो तो स्त्रीसे सहित, बल, भूषण, उदा-रता, अति तेजसे युक्त रहै, साहस का काम करनेवाला होवे । शनि अपने त्रिंशांश में हो तो रोगी रहै, स्त्री मरे, क्रोधस्वभाव होवै, परस्त्रीमें आसक्त रहै, दुःखी रहै, घर व वस्त्र और परिवारसे युक्त हो, मलिन रहै ॥ ८ ॥

वसन्ततिलका ।

स्वांशे गुरौ धनयशःसुखबुद्धियुक्ता-
स्तेजस्विपूज्यानिरुगुद्यमभोगवन्तः ।
मेधाकलाकपटकाव्यविवादशिल्प-
शास्त्रार्थसाहसयुताः शशिजेऽतिमान्याः ॥ ९ ॥

टीका-बृहस्पति अपने त्रिंशांशक में हो तो धन, यश, सुख, बुद्धि और तेज इन से युक्त रहै,सब लोकों में मान्य होवै, निरोगी और उद्यमी होवै, भोगवान् होवै, बुध अपने त्रिंशांशक का हो तो बुद्धिमान्, गीत, नाच, पुस्तक, चित्रका जाननेवाला होवै, कपटी और दम्भी होवै, कविता और बोलनेमें चतुर होवै, शास्त्रार्थ को जाननेवाला साहसी व अतिमान्य होवै॥९॥

मन्दाक्रान्ता ।

स्वे त्रिंशांशे बहुसुतसुखारोग्यभाग्यार्थरूपः
शुक्रे तीक्ष्णः सुललितवपुः सुप्रकीर्णेन्द्रियश्च ।
शूरस्तब्धौ विषमवधकौ सद्गुणाढ्यौ सुखिज्ञौ
चार्वङ्गेष्टौ रविशशियुतेष्वारपूर्वांशकेषु ॥ १० ॥

इति श्रीवराहमिहिरविरचिते बृहज्जातके आश्रय-
योगाऽध्याय एकविंशः ॥ २१ ॥

टीका-शुक्र अपने त्रिंशांशक में हो तो बहुत पुत्र, बहुत सुख, निरोग, ऐश्वर्यवान्, धनवान्, रूपवान्, कोई 'भार्यार्थरूपः' ऐसा कहते हैं वहाँ स्त्री सुखवान् होवै, क्रूरस्वभाव, कोमल अङ्ग, इन्द्रिय से असावधान अर्थात् बहुस्त्रीगामी होवै । मंगल के त्रिंशांश में सूर्य हो तो शूरमा, चन्द्रमा हो तो शिथिल । शनि त्रिंशांश में सूर्य हो तो विषमस्वभाव । चन्द्रमा हो तो जीवघाती । बृहस्पतिके त्रिंशांश में सूर्य हो तो गुणवान्, चन्द्रमा हो तो धनवान् । बुध त्रिंशांश में सूर्य हो तो सुखी, चन्द्रमा हो तो पण्डित । शुक्र त्रिंशांश में सूर्य हो तो शोभनशरीर, चन्द्रमा हो तो सर्वजनप्रिय होवै॥१०॥

इति महीधरविरचितायां बृहज्जातकभाषाटीकायामाश्रययोगाऽध्यायः ॥२१॥

प्रकीर्णाऽध्यायः २२.

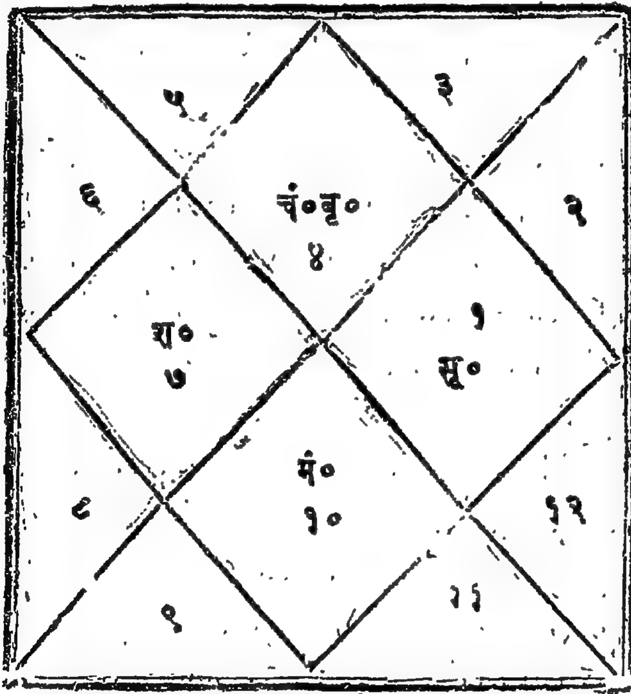
वैतालीयम् ।

स्वर्क्षतुङ्गमूलत्रिकोणगाः कण्टकेषु यावन्त आश्रिताः ।
सर्व एव तेऽन्योन्यकारकाः कर्मगस्तु तेषां विशेषतः ॥ १ ॥

टीका-कोई ग्रह अपनी राशि का वा उच्च का वा मूलत्रिकोण का केन्द्र में हो और दूसरा कोई ग्रह ऐसाही स्वोच्च मूलत्रिकोण वा स्वराशिक केन्द्र में हो तो ये दोनों परस्पर कारक होते हैं । इस में दशमगत ग्रह कारक विशेष होता है उदाहरण आगे है ॥ १ ॥

रथोद्धता ।

कर्कटोदयगते यथोडुपे स्वोच्चगाः कुजयमार्कसूरयः ।
कारका निगदिताः परस्परं लग्नगस्य सकलोंबराम्बुगः ॥२॥



टीका-कारक योगका उदाहरण-जैसे कर्क लग्न में चंद्र और गुरु, चतुर्थ शनि, सप्तम मङ्गल, दशम सूर्य, ये सब केन्द्र में उच्चवर्ती हैं तो परस्पर कारक हुये; ऐसे ही स्वगृह मूल त्रिकोणवाले भी कारक होते हैं लग्नगत ग्रहका दशम चतुर्थवाला ग्रह उच्चादि राशिगत हो तो कारक कहलाता है॥ २॥

अनुष्टुप्।

स्वत्रिकोणोच्चगो हेतुरन्योन्यं यदि कर्मगः।
सुहृत्तद्गुणसम्पन्नः कारकश्चापि स स्मृतः ॥ ३ ॥

टीका–कारक का हेतु स्वराशि मूलत्रिकोणोच्चगत ग्रह है किन्तु जब वह केन्द्र में हो और वैसाही स्वगृहादिस्थित ग्रह उससे दशमस्थान में हो, दशमस्थान में अधिक इस प्रयोजन से कहा कि तत्काल में वह मित्र होगा तद्गुणसम्पन्नता पावेगा ॥ ३ ॥

अनुष्टुप्।

शुभं वर्गोत्तमे जन्म वेशिस्थाने च सद्ग्रहे।
अशून्येषु च केन्द्रेषु कारकाख्यग्रहेषु च ॥ ४ ॥

टीका–जिसका वर्गोत्तम लग्न नवांश में जन्म हो, अथवा चन्द्रमा वर्गोत्तम नवांशक में हो, उस का सारा जन्म शुभ होगा और जिस के जन्म में वेशिस्थान में शुभग्रह हो उस का भी जन्म शुभ ही होगा, वेशिस्थान-सूर्य जिस भाव में बैठा है उससे दूसरे भाव को कहते हैं और जिसके चारहों केन्द्रों में कोई भी केन्द्र ग्रहरहित नहीं उस का भी सारा जन्म शुभ होगा, इस में शुभग्रह होने से विशेषही शुभ होता है और जिसके जन्म में पूर्वोक्त कारक ग्रह पडे हैं उस का भी जन्म शुभतर हो जायगा, ये उत्तरोत्तर विशेष फलवाले कहे हैं ॥ ४ ॥

वैतालीयम्।

मध्ये वयसः सुखप्रदाः केन्द्रस्था गुरुजन्मलग्नपाः।
पृष्ठोभयकोदयर्क्षगास्त्वन्तेन्तःप्रथमेषु पाकदाः ॥ ५ ॥

टीका–जिसके जन्म में बृहस्पति वा चन्द्राराशीश वा लग्नेश केन्द्र में हो उसकी मध्यावस्था जवानी सुखसे व्यतीत होवे । जिसका दशापति दशाप्रवेश समय में पृष्ठोदय राशि १।२।९।४।१० में हो तो अन्त में दशाफल देगा, जो दशाप्रवेश समय में दशापति मीन १२ का हो तो दशा-

न्तर्दशा के मध्य में फल देवै, जो शीर्षोदय ३ । ५ । ६ । ७ । ८ । ११ का हो तो दशाप्रवेश समय में फल देवे ॥ ५ ॥

पुष्पिताग्रा ।

दिनकररुधिरौ प्रवेशकाले गुरुभृगुजौ भवनस्य मध्ययातौ ।
रविसुतशशिनौ विनिर्गमस्थौ शशितनयः फलदस्तु सर्वकालम् ६॥

इति श्रीवराहमिहिरकृते बृहज्जातके प्रकीर्णकाऽध्यायो द्वाविंशतितमः ॥ २२ ॥

टीका—गोचराष्टकवर्ग में शुभाशुभफल देने में सूर्य और मङ्गल राशि के प्रथम तीसरे भाग में फल देता है। बृहस्पति, शुक्र राशिमध्यविभाग में फल देते हैं, चन्द्रमा, शनि राशि के अन्त्यविभाग में फल देते हैं, बुध सभी समय में फल देता है ॥ ६ ॥

इति महीधरविरचितायां बृहज्जातकभाषाटीकायां प्रकीर्णकाऽध्यायः॥२२॥

अनिष्टाऽध्यायः २३.

शार्दूलविक्रीडितम् ।

लग्नात्पुत्रकलत्रभे शुभपतिप्राप्तेऽथवाऽऽलोकिते
चन्द्राद्वा यदि सम्पदस्ति हि तयोर्ज्ञेयोऽन्यथाऽसम्भवः।
पाथोनोदयगे रवौ रविसुतो मीनास्थितो दारहा
पुत्रस्थानगतश्च पुत्रमरणं पुत्रोऽवनेर्यच्छति ॥ १ ॥

टीका—जिस के जन्म में लग्न से वा चन्द्रमा से पञ्चमभाव अपने स्वामी वा शुभग्रहों से युक्त वा दृष्ट हो तो उसको पुत्रसम्पत्ति होगी। जिसका पञ्चमभाव लग्न चन्द्रमासे स्वनाथसौम्यग्रहयुक्त दृष्ट न हो तो उसको पुत्रसम्पत्ति न होगी । ऐसा ही लग्न चन्द्रमा से सप्तमभाव स्वनाथ वा सौम्यग्रह युक्त दृष्ट हो तो स्त्रीसम्पत्ति होगी। अन्यथा नहीं होगी, पुत्र और कलत्र ये दो भाव उपलक्षणमात्र कहे हैं, ऐसा विचार लग्नादि सभी भावों

में चाहिये । दूसरा योग–लग्न में कन्या का सूर्य, सप्तम में मीन का शनि हो तो दारहा योग होता है–पुरुष के जीवितही में स्त्री मरण देता है। और कन्या का सूर्य लग्न में और मकरका मङ्गल पञ्चम में हो तो पुत्रमरणयोग पुत्रशोक देता है ॥ १ ॥

प्रभावती ।

उग्रग्रहैः सितचतुरस्रसंस्थितैर्मध्यस्थिते भृगुतनयेऽथवोग्रयोः ।
सौम्यग्रहैरसहितसंनिरीक्षिते जायावधो दहननिपातपाशजः॥ २ ॥

टीका–जिसके जन्म में शुक्र से चतुर्थ अष्टम क्रूरग्रह (सूर्य, भौम, शनि) हों उस की स्त्री अग्नि से जल मरै। जो शुक्र पापग्रहों के बीच हो तो उसकी स्त्री ऊंचेसे गिर के मरे और शुक्र पर शुभग्रहों की दृष्टि न होवे और शुभग्रहों से युक्त भी न हो तो उसकी स्त्री फांसी आदि बन्धन से मरै। ये दहन निपात पाश से मरणके ३ योग पुरुष के जीवित में स्त्री मरणके हैं ॥ २ ॥

वसंततिलका ।

लग्नाद्व्ययारिगतयोः शशितिग्मरश्म्योः
पत्न्या सहैकनयनस्य वदन्ति जन्म ।
द्यूनस्थयोर्नवमपञ्चमसंस्थयोर्वा
शुक्रार्कयोर्विकलदारमुशन्ति जातम् ॥ ३ ॥

टीका–जिसके जन्म में सूर्य चन्द्र छठे और बारहवें हों अर्थात् एक बारहवां एक छठा हो तो वह पुरुष एकनेत्र अर्थात् काणा होवे और उस की स्त्री भी काणी होवे. जिस के जन्म में सप्तम वा नवम वा पञ्चम सूर्य शुक्र इकट्ठे हों तो उसकी स्त्री अङ्गहीन होवे ॥ ३ ॥

चेलञ्चालम् ।

कोणोदये भृगुतनयेऽस्तचक्रसन्धौ
वन्ध्यापतिर्यदि न सुतर्क्षमिष्टयुक्तम् ।
पापग्रहैर्व्ययमदलग्नराशिसंस्थैः
क्षीणे शशिन्यसुतकलत्रजन्मधीस्थे ॥ ४ ॥

टीका-जिस का शनि लग्न में हो और शुक्र चक्रसन्धि कर्क वृश्चिक मीन नवांशक में होकर लग्न से सप्तमभाव में हो तो उस की स्त्री वांझ होवे, यह योग मकर वृष कन्या लग्न से होगा; जिस के वारहवां और सप्तम और लग्न में अथवा इन में से दोनों स्थानों में वा एक ही स्थान में पापग्रह हो और क्षीण चन्द्रमा लग्न वा पञ्चम में हो तो उसको स्त्री पुत्र कुछ भी न होवे ॥ ४ ॥

हरिणी।

असितकुजयोर्वर्गेऽस्तस्थे सिते तदवेक्षिते
परयुवतिगस्तौ चेत्सेन्दू स्त्रिया सह पुंश्चलः।
भृगुजशशिनोरस्तेऽभार्य्यो नरो विसुतोऽपि वा
परिणततनू नृस्त्र्योर्दृष्टौ शुभैः प्रमदापती ॥ ५ ॥

टीका-शनि वा मंगल के वर्ग का शुक्र सप्तमभावमें हो और शनि वा मङ्गल उसे देखै तो वह पुरुष परस्त्रीगमन करनेवाला होवै और शनि मङ्गल सप्तमभाव में चन्द्रमा सहित हों और शनि वा मङ्गल के वर्गमें स्थित जो शुक्र देखता हो तो वह पुरुष स्त्री सहित व्यभिचारी हो अर्थात् पुरुष परस्त्री में आसक्त और उसकी स्त्री परपुरुषों में आसक्त रहै और शुक्र चन्द्रमा एक राशि में हो और उनसे सप्तम स्थान में शनि मङ्गल हो तो (अभार्य) स्त्रीरहित अथवा पुत्र रहित होवै और पुरुषग्रह और स्त्रीग्रह दोनों शुक्रराशि में हों और सप्तम भाव में शनि मङ्गल हों और उन पर शुभ ग्रहों की दृष्टि हो तो वह वृद्धावस्थामें बूढी स्त्री पावे ॥ ५ ॥

मन्दाक्रांता।

वंशच्छेत्ता खमदसुखगैश्चन्द्रदैत्येज्यपापैः
शिल्पी त्र्यंशे शशिसुतयुते केन्द्रसंस्थार्किदृष्टे।
दास्यां जातो दितिसुतगुरौ रिष्फगे सौरभागे
नीचोऽर्केन्द्वोर्मदनगतयोर्दृष्टयोः सूर्यजेन ॥ ६ ॥

टीका-जिस के जन्म में चन्द्रमा दशम और शुक्र सप्तम और पापग्रह चतुर्थ हों तो वह वंशच्छेत्ता अर्थात् कुलघाती गोत्रहत्या करनेवाला (दुर्योधन सरीखा) होवै और बुध जिस त्रिंशांश में हो उस राशि को लग्न वा केन्द्र में बैठा हुवा शनि देखे तो वह पुरुष शिल्पविद्या चित्रादि कारीगरी करनेवाला हो और जिस के शुक्र बारहवां शनि के नवांशक में हो तो वह दासीपुत्र है कहना और जिस के सूर्य्य चन्द्रमा सप्तम स्थान में हो शनि की दृष्टि उन पर हो तो वह नीच कर्म करनेवाला होगा ॥ ६ ॥

शार्दूलविक्रीडितम्।

पापालोकितयोः सितावनिजयोरस्तस्थयोर्बाह्यरु-
क्केन्द्रे कर्कटवृश्चिकांशकगते पापैर्युते गुह्यरुक्।
श्वित्री रिप्फधनस्थयोरशुभयोश्चन्द्रोदयेऽस्ते रवौ
चन्द्रे खेवनिजेऽस्तगे च विकलो यद्यर्कजो वेशिगः ॥ ७ ॥

टीका-जिस के शुक्र मंगल सप्तम स्थान में हों और उन पर पाप ग्रहों की दृष्टि हो तो उस के शरीर में बाहरसे रोग प्रगट रहैगा. जिसके चन्द्रमा कर्क वा वृश्चिक नवांशक में पापयुक्त हो तो उसको गुप्त रोग होवै. जिस के दूसरे बारहवें शनि मङ्गल हों और चन्द्रमा लग्न में सूर्य्य सप्तम में हो तो (श्वित्री) श्वेतकुष्ठी होवै। जिस को चन्द्रमा दशम, मङ्गल सप्तम हो और शनि वेशिस्थान अर्थात् सूर्य्य से दूसरे भाव में हो तो अङ्गहीन होगा ॥ ७ ॥

वसंततिलका।

अन्तः शशिन्यशुभयोर्मृगगे पतंगे
श्वासक्षयप्लिहकविद्रधिगुल्मभाजः।
शोषी परस्परगृहांशगयोरवीन्द्वोः
क्षेत्रेऽथवा युगपदेकगयोः कृशो वा ॥ ८ ॥

टीका-जिस के जन्म में चन्द्रमा, शनि मङ्गल के बीच हो और सूर्य मकर का हो तो उसके श्वास वा प्लिहक (फीहा) वा विद्रधि वा गुल्म ये रोग

होवैं और सूर्य चन्द्रमा के नवांशक में और चन्द्रमा सूर्य के नवांशक में हो तो वह पुरुष (शोषी)शोषण रोगवाला होवे, अथवा सूर्य चन्द्रमा दोनों सिंहांशक में वा कर्कांशक में हों तो शोषी वा कृश (माडा) शरीरवाला होवे॥८॥

वसंततिलका ।

चन्द्रेऽश्विमध्यझषकार्किमृगाजभागे
कुष्ठी समन्दरुधिरे तदवेक्षिते वा ।
यातैस्त्रिकोणमलिकर्किवृषैर्मृगे च
कुष्ठी च पापसहितैरवलोकितैर्वा ॥ ९ ॥

टीका-चन्द्रमा धनराशि के मध्य अर्थात् पांचवें नवांश में हो और मङ्गल वा शनि उस के साथ हो अथवा मङ्गल शनि की दृष्टि होवे तो वह पुरुष कुष्ठी होवै, अथवा चन्द्रमा किसी राशि में मीन वा कर्क वा मकर वा मेष नवांशक में और उस पर शनि वा मङ्गल की दृष्टि हो तो कुष्ठी होवे; परन्तु यह भी विचार चाहिये की ऐसे योगों में चन्द्रमा पर शुभ ग्रहों की दृष्टि हो तो कुष्ठी न होवै परन्तु कण्डू विकार दाद खुजली वारुण आदि होवें और जिसके वृश्चिक वा कर्क वा वृष वा मकर ये राशि त्रिकोणमें हों और लग्न में भी इन्हीं में से कोई राशि हो अथवा पञ्चम नवम में से एक जगह और लग्न में हो और वह राशि पापयुक्त वा दृष्ट हो तो वह कुष्ठी हो ॥ ९ ॥

वैतालीयम् ।

निधनारिधनव्ययस्थिता रविचन्द्रारयमा यथा तथा ।
बलवद्ग्रहदोषकारणैर्मनुजानां जनयन्त्यनेत्रताम् ॥ १० ॥

टीका-जिस के सूर्य, चन्द्रमा, मङ्गल, शनि यथासम्भव अष्टम और छठे और दूसरे और बारहवें होवें तो वह नेत्रहीन होवै इन भावों और ग्रहोंमें यथाक्रम नियम नहीं है, चाहे इन में से कोई ग्रह उक्त भावों में से किसी में हो किन्तु चार भावोंमें यही चारग्रह हों और इतना भी विचार

चाहिये कि इन ग्रहों में जो बलवान् हो उस का जो धातु उस के कोप से नेत्रहीन होगा ऐसा कहना ॥ १० ॥

वैतालीयम्।

नवमायतृतीयधीयुता न च सौम्यैरशुभा निरीक्षिताः।
नियमाच्छ्रवणोपघातदा रदवैकृत्यकराश्च सप्तमे ॥ ११ ॥

टीका—जिस के पापग्रह नवम ग्यारहवें तृतीय और पंचम हों उनको शुभ ग्रह न देखें तो उन में से जो बलवान् है उसके धातुके विकार से कान फूट जावें बहिरा होवै। जो पाप ग्रह (सूर्य, मङ्गल, शनि) सप्तम में हों उनको शुभ ग्रह न देखें तो दांतों का रोग होवै इस में भी बलवान् ग्रह की धातु दन्तहीन करती है ॥ ११ ॥

वैतालीयम्।

उदयत्युडुपेऽसुरास्यगे सपिशाचोऽशुभयोस्त्रिकोणयोः।
सोपप्लवमण्डले रवावुदयस्थे नयनापवर्जितः ॥ १२ ॥

टीका--चन्द्रमा लग्न में हो और राहुग्रस्त (ग्रहण समय का) हो और त्रिकोण ९।५ में पापग्रह श० मं० हो तो उस पर पिशाच लगा रहै और ५।९ में यही पाप हो और लग्न का सूर्य्य राहुग्रस्त होवे तो वह अन्धा होवे ॥ १२ ॥

शार्दूलविक्रीडितम्।

संस्पृष्टः पवनेन मन्दगयुते द्यूने विलग्ने गुरौ
सोन्मादोऽवनिजे स्थितेऽस्तभवने जीवे विलग्नाश्रिते।
तद्वत्सूर्यसुतोदयेऽवनिसुते धर्म्मात्मजद्यूनगे
जातो वा ससहस्ररश्मितनये क्षीणे व्यये शीतगौ॥ १३॥

टीका—जिस के जन्म में सप्तम शनि और लग्न में बृहस्पति हो तो उसको वायुरोग होवै। और जिस का मङ्गल सप्तम में, बृहस्पति लग्न में हो तो उन्मादी (दिवाना) अर्थात् बावला होवै। और शनि लग्न में हो मङ्गल नवम वा पञ्चम वा सप्तम में हो तौ भी उन्मादी (बावला) होवै। अथवा

क्षीणचन्द्रमा और शनि बारहवां हो तौ भी बावला होवै। यहां ग्रहण का चन्द्रमा क्षीणतुल्य जानना ॥ १३ ॥

वसंततिलका।

राश्यंशपोष्णकरशीतकरामरेज्यै-
र्नीचाधिपांशकगतैररिभागगैर्वा।
एभ्योऽल्पमध्यबहुभिः क्रमशः प्रसूता
ज्ञेयाः स्युरभ्युपगमक्रयगर्भदासाः ॥ १४ ॥

टीका—चन्द्रमा जिस नवांशक में बैठा है उसका पति और सू० चं० बृ० ये अपने नीचराशिके स्वामी के नवांशक में वा शत्रुनवांशक में हों तो वह दास अर्थात् गुलाम होवै। इस में और भी विचार है कि इन ग्रहों में नीचाधिपांश में शत्रुनवांशक में एक ग्रह हो तो वह अपने आजीविका के वास्ते दासकर्म करेगा। जिस के दो हों वह विकजाने से दास बनैगा। जिसके तीन चार ऐसे हों तो वह गर्भदास अर्थात् उस के माता वा पिता भी दास ही होंगें ॥ १४ ॥

हरिणी।

विकृतदशनः पापैर्दृष्टे वृषाजहयोदये
खलतिरशुभक्षेत्रे लग्ने हये वृषभेऽपि वा।
नवमसुतगे पापैर्दृष्टे रवावदृढेक्षणो
दिनकरसुते नैकव्याधिः कुजे विकलः पुमान् ॥ १५ ॥

टीका—वृष वा मेष वा धन लग्न हो और उस को पापग्रह देखे तो (विकृतदशन) दांत उस के विरूप हों। जिस पापग्रहकी राशि १।८।५।१०। ११ वा २।९ लग्न में हो उसपर पाप ग्रह की दृष्टि हो तो खल्वाट अर्थात् गंजा होगा। सूर्य नवम वा पञ्चम हो और उस पर पापग्रहकी दृष्टि हो तो (अदृढेक्षण) इस के नेत्र पुष्ट न रहैं मन्द सर्वदा रहैं। जो शनि नवम वा पञ्चम में पापदृष्ट हो तो उस के शरीर में अनेक रोग रहैं। जो मङ्गल पञ्चम वा नवम में पापदृष्ट हो तो वह अङ्गहीन होवे ॥ १५ ॥

पुष्पिताग्रा ।

व्ययसुतधनधर्मगैरसौम्यैर्भवनसमाननिबन्धनं विकल्प्यम् ।
भुजगनिगडपाशभृद्दृकाणैर्बलवदसौम्यनिरीक्षितैश्चतद्वत् ॥१६॥

टीका–जिस के बारहवें और पञ्चम और दूसरे और नवम पापग्रह हों तो उसको बलवान् ग्रह की दशा अष्टकवर्गादि में बन्धन मिलैगा। वह बन्धन भी राशिसमान जानना। जैसे चौपाया राशि हो तो रस्सीते बँधेगा। मनुष्यराशि हो तो कैद, कुम्भ भी ऐसाही और कर्क मकर मीन में बन्धनविना कैद अर्थात् पिञ्जरे वा कठड़े में, वृश्चिक राशि में भूमि वा छोटासा घर वा बिल वा घर बनाय के बँधेगा। और जिस के जन्म भुजग वा निगड़द्रेष्काण में हो और जिसका वह द्रेष्काण है वह राशि बलवान् और पापदृष्ट होवै तौ भी बन्धन पावैगा। भुजग द्रेष्काण–कर्कट का प्रथम वृश्चिक का दूसरा, मीन का तीसरा। निगड द्रेष्काण मकर का प्रथम जानना। पाशभृत् शब्द इनका सहचारी है जैसे भुजगपाशभृन्निगडपाशभृत् ॥ १६ ॥

हरिणी ।

परुषवचनोपस्मारार्तः क्षयी च निशापतौ
सरवितनये वक्रालोकं गते परिवेषगे ।
रवियमकुजैः सौम्यादृष्टैर्नभःस्थलमाश्रिते-
र्भृतकमनुजः पूर्वोद्दिष्टैर्वराधममध्यमाः ॥ १७ ॥

इति श्रीवराहमिहिरविर॰बृहज्जातकेऽनिष्टाऽध्यायस्त्रयोविंशः २३

टीका–जिसके जन्म में चन्द्रमा शनि के साथ हो और मङ्गल चन्द्रमाको देखे और जन्म समय में परिवेष (सौंडल) भी हो तो कठोर बोली बोलनेवाला होवै। और अपस्मार (मृगी) रोग और क्षयरोग भी होवै, इस में भी तीन भेद हैं कि, चन्द्रमा शनिसहित हो तो कठोर वचन होवै, चन्द्रमा शनिसहित मङ्गलदृष्ट हो तो मृगी होवे। और चन्द्रमा शनिसहित भौमदृष्ट हो और चन्द्रमा पर परिवेष सौंडल भी हो तो क्षय रोगी होवै। और सूर्य, मङ्गल, शनि, दशम स्थान में हों उन पर शुभग्रह की दृष्टि न हो

तो वह मनुष्य (भृतक) पराई सेवा करनेवाला होवे । इस में भी विचारना चाहिये कि, सू० मं० श० मेंसे शुभ ग्रह दृष्टिरहित एक ग्रह होवै तो चाकरी में भी उत्तम कर्म करैगा, दो ग्रह हों तो मध्यम आर तीनों हों तो अधम कर्म करैगा ॥ १७ ॥

इति महीधरकृतायां बृहज्जातकभाषाटीकायामनिष्टकथनाऽध्यायः ॥ २३ ॥

स्त्रीजातकाऽध्यायः २४.

वसंततिलका ।

यद्यत्फलं नरभवेऽक्षममङ्गनानां
तत्तद्वदेत्पतिषु वा सकलं विधेयम् ।
तासां तु भर्तृमरणं निधने वपुस्तु
लग्नेन्दुगं सुभगतास्तमये पतिस्तु ॥ १ ॥

टीका-जन्म में जो जो फल पुरुषों के कहे हैं वह स्त्रियों के असंभव हैं इस लिये स्त्रीजातक जुदा कहते हैं-कि, जो 'वृत्तातामग्रदिक इत्यादि लक्षण हैं वे तो स्त्रियों के जुदे कहने। जो राजयोगादि हैं वह उनके भर्त्ता के होगें ऐसा कहना । जो नाभसयोगादि हैं वे दोनों को फल देते हैं । अथवा समस्तफल पुरुषों को कहना । और अष्टम स्थान से स्त्रियोंके भर्ता की मृत्यु का विचार, और स्त्रियों के लग्न तथा चन्द्रराशि से शरीरका आकार और सप्तमस्थानसे सौभाग्य और पति के रूपादिक का विचार करना चाहिये, ये सब आगे कहे जायँगे ॥ १ ॥

वसंततिलका ।

युग्मेषु लग्नशशिनोः प्रकृतिस्थिता स्त्री
सच्छीलभूषणयुता शुभदृष्टयोश्च ।
ओजस्थयोश्च मनुजाकृतिशीलयुक्ता
पापा च पापयुतवीक्षितयोर्गुणोना ॥ २ ॥

टीका–जिस स्त्री के लग्न और चन्द्रमा समराशि के हों वह स्त्रियों में मृदु स्वभाववाली होगी। और लग्न चन्द्रमा शुभग्रहों से दृष्टभी हों तो अच्छे चरित और भूषणों से भी युक्त रहैगी। जिसके लग्न चन्द्रमा विषमराशि में हो तो पुरुष कासा आकार और स्वभाव होगा। उनपर पापग्रहों कीदृष्टि हो अथवा पापग्रह युक्त हों तो पापी स्वभाव और सर्वगुणरहित होगी। कोई शुभ देनेवाला कोई अशुभ देने वाला जहां दोनों हों वहां मध्यम फल होगा॥ २॥

इन्द्रवज्रा।

कन्यैव दुष्टा व्रजतीह दास्यं साध्वी समाया कुचरित्रयुक्ता।
भूम्यात्मजर्क्षे क्रमशोंशकेषु वक्रार्किजीवेन्दुजभार्गवानाम्॥ ३॥

टीका–जिस के लग्न वा चन्द्रमा मङ्गल की राशि १। ८ में हो और वह मङ्गल के त्रिंशांशक में भी हो तो विना विवाह पुरुषसङ्गम करे, शनि के त्रिंशांशक में हो तो विनाही विवाही दासी होवै, बृहस्पतित्रिंशांशक में हो तो पतिव्रता होवे, बुध के त्रिंशांश में हो तो मायावाली हो, शुक्र के त्रिंशांश में हो तो दुष्ट काम करे॥ ३॥

इन्द्रवज्रा।

दुष्टा पुनर्भूः सगुणा कलाज्ञा ख्याता गुणैश्चासुरपूजितर्क्षे।
स्यात्कापटी क्लीबसमा सती च बौधे गुणाढ्या प्रविकीर्णकामा॥४॥

टीका–जिसका लग्न वा चन्द्रमा शुक्र क्षेत्र २। ७ का हो और भौम त्रिंशांशक में हो तो वह स्त्री दुष्टस्वभाव की होगी शनि त्रिंशांश में हो तो एक भर्ता के जीवित ही दूसरा भर्त्ता करै, बृहस्पति के त्रिंशांश में हो तो गीत, वादित्र, नाच, चित्र, कारीगरीके काम जाने। शुक्रत्रिशांश में हो तो गुणशीलादि से ख्यात होवै। जो लग्न वा चन्द्रमा बुध क्षेत्र ३।६का हो और मङ्गल का त्रिंशांश हो तो कपटी होवै, शनि के त्रिशांशक में हो तो हिजडे की ऐसी सूरत होवै, बृहस्पति के त्रिशांश में हो तो पतिव्रता होवै, बुधत्रिशांशमें हो तो गुणवती और शुक्रत्रिशांश में व्यभिचारिणी होवै॥

शार्दूलविक्रीडितम् ।

स्वच्छन्दा पतिघातिनी बहुगुणा शिल्पिन्यसाध्वीन्दुभे
त्राचाराकुलटार्कभे नृपवधूः पुंश्चेष्टितागम्यगा ।
जैवे नैकगुणाल्परत्यतिगुणा विज्ञानयुक्तासती
दासी नीचरतार्किभे पतिरता दुष्टाप्रजा स्वांशकैः ॥ ५ ॥

टीका–कर्क का चन्द्रमा वा कर्क लग्न मङ्गल के त्रिंशांश में हो तो (स्वच्छन्दा) अपने मनका व्यवहार करै किसी की न माने, शनिके त्रिंशांश में पति को मारनेवाली, बृहस्पति को त्रिशांश में बहुगुणवती, बुधत्रिंशांश में शिल्पकर्म जाननेवाली, शुक्रत्रिशांश में बुरे कर्म करनेवाली होवै। और सिंह का चन्द्रमा वा सिंहलग्न मङ्गल के त्रिशांश में हो तो पुरुष के समान आचरण करै, शनिके त्रिंशांश में कुलटा(व्यभिचारिणी), बृहस्पति के त्रिशांश में राजा की स्त्री होवै, बुधके त्रिंशांश में पुरुषों के स्वभाववाली, शुक्रत्रिंशांश में अगम्य पुरुष को गमन करनेवाली होवै। और लग्न वा चन्द्रमा बृहस्पति के क्षेत्र ९ । १२ में हो और मङ्गल के त्रिंशांश में हो तो बहुत गुणवती, शनिके त्रिंशांश में (अल्परति) थोडा संगम में मदजल छोडनेवाली, बृहस्पति में बहुगुणा, बुध के त्रिंशांश में विज्ञानयुक्त, शुक्रके त्रिंशांश में पतिव्रता न होवै और शनि क्षेत्र १० । ११ का लग्न वा चन्द्रमा मंगल के त्रिशांश में हो तो दासी होवै, शनिके त्रिंशांश में नीचपुरुषसे गमन करनेवाली, बृहस्पति के त्रिशांश में अपने भर्त्ता में आसक्त रहनेवाली, बुध के में दुष्टस्वभाव, शुक्रके में (बांझ) अपुत्रा होवै ॥ ५ ॥

अनुष्टुप् ।

शशिलग्नसमायुक्तैः फलं त्रिंशांशकैरिदम् ।
बलाबलविकल्पेन तयोरुक्तं विचिन्तयेत् ॥ ६ ॥

टीका–प्रतिराशिमें लग्न चन्द्रमाके त्रिशांशफल कहे गये हैं अब लग्न और चन्द्रमा इनदोनों में से जो बलवान् हो उसके त्रिशांशक का फल ठीक होगा हीन बली का फल नहीं होगा ॥ ६ ॥

प्रहर्षिणी।

दृक्संस्थावसितासितौ परस्परांशे शौक्रे वा यदि घटराशिसम्भवोंऽशः।
स्त्रीभिस्त्रीमदनाविषानलंप्रदीप्तंसंशान्तिनयतिनराकृतिस्थिताभिः ७

टीका–जिस के जन्म में शुक्र शनि के अंशक का और शनि शुक्र के अंशक का हो और दोनों की परस्पर दृष्टि भी हो तो वह स्त्री अति कामातुर होवे यहांतक कि चमड़े वा कुछ वस्तु का लिङ्ग बनाकर दूसरी स्त्रीके हाथसे कामदेवरूपी विषाग्नि को शमित करावे। और वृष वा तुला लग्न हो और तत्काल कुम्भ नवांश हो तो भी उसी योगका फल होगा॥ ७॥

शार्दूलविक्रीडितम्।

शून्ये कापुरुषोऽबलेऽस्तभवने सौम्यग्रहावीक्षिते
क्लीबोऽस्ते बुधमन्दयोश्चरगृहे नित्यं प्रवासान्वितः।
उत्सृष्टा रविणा कुजेन विधवा बाल्येऽस्तराशिस्थिते
कन्यैवाशुभवीक्षितेऽर्कतनये द्यूने जराङ्गच्छति॥ ८॥

टीका–जिस के लग्न वा चन्द्रमा से सप्तमभाव में कोई भी ग्रह न हो सप्तम भाव निर्बल हो और शुभग्रहों की दृष्टि सप्तमभावपर न हो तो उसका भर्त्ता कापुरुष अर्थात् निन्द्य होवे। अथवा लग्न वा चन्द्रमा से सप्तम बुध वा शनि हो तो उस का भर्त्ता नपुंसक हो। जिस के लग्न वा चन्द्रमा से सप्तम में चरराशि हो तो उस का भर्त्ता नित्य परदेशमें रहेगा, ऐसेही स्थिर राशि हो तो नित्य घर रहे, द्विस्वभाव हो तो कुछ घर रहै कुछ प्रवासी रहे। जिस के लग्न वा चन्द्र से सूर्य सप्तम हो तो उसको पति त्याग करै, जिसके मंगल हो और उसे पापग्रह भी देखें तो बाल्यावस्था में विधवा होवै, जिसके शनि हो और पापदृष्ट हो तो कन्याही बूढी होवै विवाह न करावै। शुभदृष्ट होने में बडी उमर में विवाह होवे, इतने सब फल लग्न वा चन्द्रमा जो बलवान् हो उससे कहना॥ ८॥

शार्दूलविक्रीडितम् ।

आग्नेयैर्विधवाऽस्तराशिसहितैर्मिश्रैः पुनर्भूर्भवे-
त्क्रूरे हीनबलेऽस्तगे स्वपतिना सौम्येक्षिते प्रोज्झिता ।
अन्योन्यांशगयोः सितावनिजयोरन्यप्रसक्ताऽङ्गना
द्यूने वा यदि शीतरश्मिसहितौ भर्तुस्तदाऽनुज्ञया ॥९॥

टीका—सप्तमस्थान के ग्रहों के फल प्रत्येक के जुदे कहे हैं, पापग्रह जब सप्तम में बहुत हों तो केवल विधवा फल है, जब पाप और शुभग्रह भी सप्तम में मिश्रित हों तो पुनर्भू अर्थात् विवाहित पतिको छोडकर और की भार्या बनै, जिसका सूर्य वा मंगल वा शनि सप्तम में हीनबली हो और शुभग्रहसे दृष्ट भी हो तो उस को पति छोड देवै, जिस के जन्म में शुक्र मंगल के अंशक का और मंगल शुक्र के अंशक का हो तो वह स्त्री पराये पुरुषसे गमन करै। या शुक्र और मंगल चन्द्रमासे युक्त होकर सप्तमस्थान में स्थित हों तो भर्त्ता की आज्ञा से पराये पुरुषका गमन करै ॥ ९ ॥

शालिनी ।

सौरारर्क्षे लग्नगे सेन्दुशुक्रे मात्रा सार्द्धं बन्धकी पापदृष्टे ।
कौजेऽस्तांशे सौरिणा व्याधियोनिश्चारुश्रोणी वल्लभा सद्ग्रहांशे १०

टीका—शनि की राशि १० । ११ वा मंगल की राशि १ । ८ का शुक्र चंद्रमा लग्न में हों और उन पर पापग्रहों की दृष्टि हो तो वह स्त्री और उस की माता भी दोनों (व्यभिचारिणी) परपुरुषगमन करनेवाली होवैं । जिसके सप्तम स्थान में तत्काल स्पष्ट में मंगल का नवांश हो और सप्तम भाव पर शनि की दृष्टि हो तो उसके भग में रोग रहै, ऐसेही शुभग्रह का अंशक सप्तम में हो तो सुन्दर भगवाली होवै ॥ १० ॥

शालिनी ।

वृद्धो मूर्खः सूर्यजर्क्षेंशके वा स्त्रीलोलः स्यात्क्रोधनश्चावनेये ।
शौक्रेकान्तोऽतीवसौभाग्ययुक्तो विद्वान्भर्त्तानैपुणज्ञश्च बौधे॥११॥

टीका-जिसके जन्म में सप्तमस्थान में शनि का अंशक वा राशि हो तो उसका भर्ता बूढा और मूर्ख होगा। जिसके मङ्गलका अंश वा राशि सप्तम में हो उसका भर्त्ता स्त्रियों की अति इच्छा करनेवाला और क्रोधी भी होगा। ऐसेही शुक्र के राशि अंश होने में भर्त्ता सुरूप गुणवान होवै। बुधकी राशि अंश में भर्त्ता पण्डित और सब काम जाननेवाला होवै ॥ ११ ॥

पुष्पिताग्रा ।

मदनवशगतो मृदुश्च चान्द्रे त्रिदशगुरौ गुणवाञ्जितेन्द्रियश्च ।
अतिमृदुरतिकर्मकृच्च सौर्य्ये भवति गृहेऽस्तमयास्थितेंशके वा॥१२॥

टीका-जिस के सप्तमभाव में चन्द्रमा की राशि वा अंशक हो तो उसका भर्ता कामातुर और कोमल होगा। ऐसे ही बृहस्पति के राशि वा अंशक होने में गुणवान् और जितेन्द्रिय तेजस्वी होगा सूर्य के राशि वा अंशक होने में अतिमृदु कोमल और अतिव्यवहार कर्म करनेवाला होगा। जहां राशि और अंश में भेद हो वहां जो बली हो उस का फल कहना १२॥

वसन्ततिलका ।

ईर्ष्यान्विता सुखपरा शशिशुक्रलग्ने
ज्ञेन्द्वोः कलासु निपुणा सुखिता गुणाढ्या ।
शुक्रज्ञयोस्तु रुचिरा सुभगा कलाज्ञा
त्रिष्वप्यनेकवसुसौख्यगुणा शुभेषु ॥ १३ ॥

टीका-जिस के जन्म लग्न में चन्द्रमा शुक्र दोनों हों तो वह स्त्री ईर्ष्यावती (पराई रिस उँचाई न सहनेवाली) होगी,सुख में भी आसक्त रहैगी। बुध चन्द्रमा ये दोनों लग्न में हों तो अनेक कला जाननेवाली, सुखी और गुणवती भी होगी। शुक्र बुध लग्न में हों तो सुरूप और सौभाग्ययुक्त (पतिप्यारी) होगी, और कलाओंको जाननेवाली होगी। जिसके चन्द्रमा, बुध, शुक्र तीनों लग्न में हों तो अनेक प्रकार के धन सुख और गुणोंसे युक्त होगी, ऐसा ही बुध गुरु शुक्र का भी जानना ॥ १३ ॥

वसंततिलका ।

क्रूरेऽष्टमे विधवता निधनेश्वरोंशे
यस्य स्थितो वयसि तस्य समे प्रदिष्टा ।
सत्स्वार्थगेषु मरणं स्वयमेव तस्याः
कन्यालिगोहरिषु चाल्पसुतत्वमिन्दौ ॥ १४ ॥

टीका–जो पहिले अष्टमस्थान से भर्तृ मरण कहा है वह ऐसा है कि-जिस का पापग्रह अष्टमस्थान में हो वह जिसके नवांशक में है उसकी दशा वा अन्तर्दशा में विधवा होगी, अथवा (एकं द्वौ नवविंशतिः) ग्रहों की अवस्था में विवाह से उपरान्त उतने वर्ष में भर्त्ता मरैगा । जिस के अष्टम पाप-ग्रह हों और दूसरे भाव में शुभ ग्रह भी हों तो वह भर्त्ता से पहिले आप मरैगी । जिस का चन्द्रमा जन्म में वृश्चिक वा वृष वा सिंह का हो उसके पुत्र थोड़े होंगे ॥ १४ ॥

शार्दूलविक्रीडितम् ।

सौरे मध्यबले बलेन रहितैः शीतांशुशुक्रेन्दुजैः
शेषैर्वीर्यसमन्वितैः पुरुषिणी यद्योजराश्युद्गमः ।
जीवारास्फुजिदैन्दवेषु बलिषु प्राग्लग्नराशौ समे
विख्याता भुवि नैकशास्त्रनिपुणा स्त्री ब्रह्मवादिन्यपि १५

टीका–जिस का शनि मध्यम बली हो और चन्द्रमा शुक्र बुध निर्बल हों और सूर्य मङ्गल बलवान् हों और विषमराशि लग्न में हो तो वह स्त्री बहुत पुरुषोंका गमन करनेवाली होवै । जो बृहस्पति, मङ्गल, शुक्र, बुध बलवान् हों और समराशि लग्न में हो तो सर्वत्र गुणों से विख्यात और शास्त्र जाननेवाली और मुक्तिमार्गजाननेवाली होवै ॥ १५ ॥

प्रहर्षिणी ।

पापेऽस्ते नवमगतग्रहस्य तुल्यां प्रव्रज्यां युवतिरुपैत्यसंशयेन ।
उद्वाहे वरणविधौ प्रदानकाले चिन्तायामपि सकलं विधेयमेतत् ॥

इति श्रीवराहमिहिरविरचिते बृहज्जातके स्त्रीजातका-
ध्यायश्चतुर्विंशतितमः ॥ २४ ॥

टीका--पहिले सप्तम स्थान के पापग्रहों का पृथक्फल कहा गया है। जो सप्तम में पाप ग्रह हो और नवम में भी कोई ग्रह हो तो वह स्त्री पूर्वोक्त फल को छोडकर निस्सन्देह फकीरनी होवेगी। वह फकीरी भी नवम स्थानवाले ग्रह के अनुसार पूर्वोक्त प्रव्रज्याध्यायवाली कहना। इस स्त्रीजातकाध्याय में जो कहा गया है वह विवाह समय में (वरण) वाग्दान अर्थात् सगाई के समय में और कन्यादान के समय में और प्रश्नकाल में ऐसेही योग विचारने और जगह स्त्रीजातकों में बहुत विचार कहे हैं । यहां ग्रन्थ बढ़ने के कारण सूक्ष्म कहा है ॥ १६ ॥

इति महीधरविरचितायां बृहज्जातकभाषाटीकायां स्त्रीजातका-ऽध्यायश्चतुर्विंशतितमः ॥ २४ ॥

नैर्याणिकाऽध्यायः २५.

शार्दूलविक्रीडितम् ।

मृत्युर्मृत्युगृहेक्षणेन बलिभिस्तद्धातुकोपोद्भव-
स्तत्संयुक्तभगात्रजो बहुभवो वीर्यान्वितैर्भूरिभिः ।
अग्न्यम्ब्वायुधजो ज्वरामयकृतस्तृट्क्षुत्कृतश्चाष्टमे
सूर्याद्यैर्निधने चरादिषु परस्वाऽध्वप्रदेशेष्विति ॥ १ ॥

टीका–जिस का अष्टमभाव शून्य हो जो बलवान् ग्रह अष्टमभाव को देखे उस ग्रहके धातुकोप से मृत्यु होवे, धातु सूर्य का पित्त, चन्द्रमा का वात कफ,मंगल का पित्त,बुध का वात पित्त श्लेष्म, बृहस्पति का कफ, शुक्र का वात कफ,शनि का वात ये हैं और अष्टम में जो राशि है वह कालांग में जहां कहीं हो उसी अंगमें पूर्वोक्त धातु का विकार होगा। जो बहुत ग्रह बलवान् हों और अष्टम को देखें तो सभी धातु अर्थात् बहुत रोग एक बेर उत्पन्न होंगे। जो अष्टम स्थान में सूर्यादि ग्रह हों तो क्रमसे सूर्य का अग्नि, चन्द्रमा का जल, मंगल का शस्त्र, बुध का ज्वर, बृहस्पति का पेट का रोग, शुक्र का तृषा (खुशकी),शनि का क्षुधा, इसमें जो ग्रह अष्टम है उसके हेतुसे

मृत्यु होगी। इस में भी विचार है कि, वह ग्रह बलवान् हो तो शुभ कर्म से वह हेतु होगा, बलहीन होतो अशुभ कर्म से, और जिस के अष्टमस्थान में चरराशि हो उस की मृत्यु पर देश में होगी, स्थिरराशि हो तो स्वदेश में, द्विस्वभावराशि हो तो मार्ग में मृत्यु होगी ॥ १ ॥

शार्दूलविक्रीडितम् ।

शैलाग्राभिहतस्य सूर्यकुजयोर्मृत्युः खबन्धुस्थयोः
कूपे मन्दशशांकभूमितनयैर्बन्ध्वस्तकर्मस्थितैः ।
कन्यायां स्वजनाद्धिमोष्णकरयोः पापग्रहैर्दृष्टयोः
स्यातां यद्युभयोदयेऽर्कशशिनौ तोये तदा मज्जतः ॥ २ ॥

टीका-जिस के जन्म में सूर्य मंगल दशम और चतुर्थ स्थान में हों अर्थात् एक दशम एक चतुर्थ में हो तो पत्थर की चोट लगने से उस की मृत्यु होवै और शनि, चन्द्रमा, मंगल अलग अलग सप्तम चतुर्थ और दशम में हों जैसे शनि चौथा, चन्द्रमा सप्तम, मंगल दशम हों तो कुयें में गिर के मरै आर सूर्य चन्द्रमा कन्या राशि के हों और पापग्रह उन्हें देखें तो अपने मनुष्य के हाथ से मृत्यु पावै। जो द्विस्वभाव राशि लग्न में हो और सूर्य चन्द्रमा उस में हों तो जल में डूब के मरै॥ २ ॥

शार्दूलविक्रीडितम् ।

मन्दे कर्कटगे जलोदरकृतो मृत्युर्मृगांके मृगे
शस्त्राग्निप्रभवः शशिन्यशुभयोर्मध्ये कुजर्क्षे स्थिते ।
कन्यायां रुधिरोत्थशोषजनितस्तद्वत्स्थिते शीतगौ
सौरर्क्षे यदि तद्वदेव हिमगौ रज्ज्वग्निपातैः कृतः ॥ ३ ॥

टीका-जिस के जन्म में शनि कर्क का और चन्द्रमा मकर का हो तो जलोदर (पाण्डुरोग) से मृत्यु होवै और चन्द्रमा मङ्गल के घर का १।८ हो और पापग्रहों के बीच का हो तो शस्त्रसे वा अग्नि से मृत्यु होवे। जिस का चन्द्रमा कन्या का पापग्रहों के बीच हो तो रुधिरविकारसे मृत्यु होवे,

अथवा शोषरोग से। जिसका चन्द्रमा शनि की राशि १० । ११ का पापों के बीच हो तो (रस्सी) फांसी आदि से वा आग में गिरनेसे मृत्यु होवै॥ ३॥

शार्दूलविक्रीडितम्।

बन्धाद्धीनवमस्थयोरशुभयोः सौम्यग्रहादृष्टयो-
र्द्रेष्काणैश्च ससर्पपाशनिगडैश्छिद्रस्थितैर्बन्धतः।
कन्यायामशुभान्वितेऽस्तमयगे चन्द्रे सिते मेषगे
सूर्ये लग्नगते च विद्धि मरणं स्त्रीहेतुकं मन्दिरे ॥ ४ ॥

टीका—जिस के पञ्चम नवम पापग्रह हों और उन्हे शुभग्रह न देखें तो बन्धन से मृत्यु होवै और जन्म लग्न से अष्टम में तत्काल जो सर्प पाश वा निगड द्रेष्काण हो तौ भी बन्धन से मरैगा । ये द्रेष्काण कर्कट का प्रथम, वृष का दूसरा, कन्या का तीसरा कहते हैं । जिस के कन्या का चन्द्रमा सप्तम पापयुक्तहै और शुक्र मेष का और सूर्य लग्न में हो तो स्त्री के निमित्त घर के भीतर मरै ॥ ४ ॥

शार्दूलविक्रीडितम्।

शूलोद्भिन्नतनुः सुखेऽवनिसुते सूर्येऽपि वा खे यमे
सम्प्रक्षीणहिमांशुभिश्च युगपत्पापैस्त्रिकोणाद्यगैः।
बन्धुस्थे च रवौ वियत्यवनिजे क्षीणेन्दुसंवीक्षिते
काष्ठेनाभिहतः प्रयाति मरणं सूर्यात्मजेनेक्षिते ॥ ५ ॥

टीका—जिसके चतुर्थ स्थान में सूर्य वा मंगल और दशम में शनि हो तो शूल से मरै। पापग्रह और क्षीणचन्द्रमा नवम पञ्चम और लग्न में हो तो भी शूल से मरै और सूर्य चतुर्थ, मंगल दशम हो उसे क्षीण चन्द्रमा देखै तौ भी शूल से मरै। जो सूर्य चौथा, मङ्गल दशम हो और शनिकी दृष्टि उस पर हो तो काष्ठ के चोटसे मरै ॥ ५ ॥

वसन्ततिलका।

रन्ध्रास्पदाङ्गहिबुकैर्लगुडाहताङ्गः
प्रक्षीणचन्द्ररुधिरार्किदिनेशयुक्तैः।

तैरेव कर्मनवमोदयपुत्रसंस्थै-
धूमाग्निबन्धनशरीरनिकुट्टनान्तः ॥ ६ ॥

टीका-जिस का क्षीणचन्द्रमा अष्टम और मङ्गल दशम और शनि लग्न का और सूर्य चौथा हो तो लाठी से मरे और क्षीणचन्द्रमा दशम, मङ्गल नवम, शनि लग्न का, सूर्य पञ्चम हो तो अग्निके धुवां में बन्द होने से, वा काष्ठ से शरीर कूटेजाने से मरे ॥ ६ ॥

वसंततिलका।

बन्ध्वस्तकर्मसहितैः कुजसूर्यमन्दै-
र्निर्याणमायुधशिखिक्षितिपालकोपात्।
सौरेन्दुभूमितनयैः स्वसुखास्पदस्थै-
र्ज्ञेयः क्षतक्रिमिकृतश्च शरीरपातः ॥ ७ ॥

टीका-जिसके मङ्गल चतुर्थ, सूर्य सप्तम, शनि दशम हो तो (शस्त्र) खड्गादि से वा अग्नि से वा राजा के कोप से मृत्यु होवै। जो शनि दूसरा, चन्द्रमा चौथा, मङ्गल दशम हो तो शरीर में कीडे पडने से मरै ॥ ७ ॥

शार्दूलविक्रीडितम्।

स्वस्थेऽर्केऽवनिजे रसातलगते यानप्रपाताद्वधो
यन्त्रोत्पीडनजः कुजेऽस्तमयगे सौरेन्दुनाभ्युद्गमे।
विण्मध्ये रुधिरार्किशीतकिरणैर्जूकाजसौरर्क्षगै-
र्याते वा गलितेन्दुसूर्यरुधिरैर्व्योमास्तबंध्वाह्वयान् ॥ ८ ॥

टीका-जिस के सूर्य दशम, मङ्गल चौथा हो तो वह सवारीसे गिरके मरेगा। जिसके मंगल सप्तम और शनि, चन्द्रमा, सूर्य लग्न में हों वह यन्त्र में पीसे जानेसे मरे। यन्त्र-कोल्हू, चक्र, अंजन आदि जानना कोई। क्षीणेन्दूना०इति इस योग में शनि के जगह क्षीणचन्द्रमा कहते हैं। जो तुला का मङ्गल, मेष का शनि और मकर वा कुम्भ का चन्द्रमा हो तो विष्ठा में मृत्यु होवै। जो क्षीण चन्द्रमा दशम सूर्य, सप्तम और मङ्गल चौथा हो तो भी विष्ठा में मृत्यु होवै ॥ ८ ॥

वैतालीयम् ।

वीर्यान्वितवक्रवीक्षिते क्षीणेन्दौ निधनस्थितेऽर्कजे ।
गुह्योद्भवरोगपीडया मृत्युः स्यात्कृमिशस्त्रदाहजः ॥ ९ ॥

टीका—जो क्षीण चन्द्रमा को बलवान् मङ्गल देखे और शनि अष्टम हो तो गुह्यस्थान के रोग-बवासीर, फिरंग, भगन्दरादि से मृत्यु होवै अथवा कीडे पड़ने से वा शस्त्र से वा (दाह) अग्निघात आदि से मृत्यु होवै ॥ ९ ॥

वसंततिलका ।

अस्ते रवौ सरुधिरे निधनेऽर्कपुत्रे
क्षीणे रसातलगते हिमगौ खगान्तः ।
लग्नात्मजाष्टमतपःस्विनभौममन्द-
चन्द्रैस्तु शैलशिखराशनिकुड्यपातैः ॥ १० ॥

टीका—जिस का सूर्य सप्तम मङ्गलसहित और अष्टम शनि, चौथा क्षीण चन्द्रमा हो उस की मृत्यु पक्षी से होवै और लग्न का सूर्य, पञ्चम मङ्गल, अष्टम शनि, नवम चन्द्रमा हो तो पर्वत के शिखर से गिरके मरे अथवा वज्र से अथवा दीवालके गिरने में दबके मरे ॥ १० ॥

वैतालीयम् ।

द्वाविंशः कथितस्तु कारणं द्रेष्काणो निधनस्य सूरिभिः ।
तस्याधिपतिर्भपोऽपि वा निर्याणं स्वगुणैः प्रयच्छति ॥ ११ ॥

टीका—जिस के जन्म में इतने योगों में से कोई भी न हो और अष्टम स्थान में कोई ग्रह न हो और अष्टम में किसी की दृष्टि भी न हो तो उस की मृत्यु कहते हैं-कि, जिस द्रेष्काण में जन्म भया है उस से बाईसवां द्रेष्काण मृत्य का कारण है कि उसका स्वामी अपने उक्त दोष 'अग्न्यम्बुवा-युधज०' इत्यादि से मृत्यु देगा अथवा उस बाईसवें द्रेष्काण की राशि का स्वामी उक्त दोष से मारेगा । वह २२ वां द्रेष्काण लग्न से अष्टम राशि में होता है इस हेतु अष्टमेश ही अपने उक्तदोष से मृत्यु देता है इन दोनों में बली फल देगा ॥ ११ ॥

वसंततिलका ।

होरानवांशकपयुक्तसमानभूमौ
योगेक्षणादिभिरतः परिकल्प्यमेतत् ।
मोहस्तु मृत्युसमयेऽनुदितांशतुल्यः
स्वेशेक्षिते द्विगुणतास्त्रिगुणः शुभैश्च ॥ १२ ॥

टीका–मृत्युस्थान कहतेहैं–जन्म में तत्काल लग्नका जो नवांश है उसका स्वामी जिस राशि में है उस के योग्य भूमि में मृत्यु होगी। जैसे मेष में भेड बकरी के स्थान में, वृष में गौ बैल के स्थानमें, मिथुन में और कुम्भ में घरमें, कर्क और कन्यामें कुवाँ में, सिंहमें जंगल में, तुलामें दुकानमें, वृश्चिकमें छिद्रादि में, धनमें घोडा के स्थान में, मकर कुम्भ मीनमें अनूप भूमि में, इस में भी नवांशराशीश का बल देखना चाहिये और नवांशराशीश के साथ कोई बली ग्रह हो तो उसी के सदृश भूमि मिलेगी। जहां बहुत भूमि की प्राप्ति है वहां जिस का बल अधिक हो उस की भूमि कहना। ग्रहभूमि मूल त्रिकोणराशि की भूमि जाननी। कोई (देवाम्ब्वग्निविहारकोशशयनाक्षिति–) सूर्य का देवस्थान, चन्द्रमा का जलस्थान, मंगल का अग्निस्थान, बुध का विहारस्थान, गुरु का भण्डार, शुक्र का शयनस्थान, शनि की ऊषर भूमि स्थान कहे हैं। जितने नवांश जन्म लग्न में भोगनेको बाकी रहे हैं उनके भोगनेका जितना काल है उतना काल मरणसमय में मोह अर्थात् बेहोशी रहेगी। जो लग्न में लग्नेश की दृष्टि हो वह काल द्विगुण और शुभ ग्रह देखे तो त्रिगुण दोनो देखें तो छः गुण कहना ॥ १२ ॥

मालिनी ।

दहनजलविमिश्रैर्भस्मसंक्लेदशोषै-
र्निधनभवनसंस्थैर्व्यालवर्गैर्विडम्बः ।
इति शवपरिणामश्चिन्तनीयो यथोक्तः
पृथुविरचितशास्त्राद्गत्यनूकादि चिंत्यम् ॥ १३ ॥

टीका-मरे में उस शरीर की क्या दशा होगी इस वास्ते कहते हैं कि, अष्टमस्थान में तत्काल द्रेष्काण जो है वही लग्न से २२ वां होता है वह अग्नि द्रेष्काण हो तो उस प्रेतका शरीर भस्म होगा, अग्निद्रेष्काण पापग्रह द्रेष्काण को कहते हैं। जो जल द्रेष्काण अर्थात् शुभग्रह द्रेष्काण हो तो जल में बहाया जावे। जो मिश्र हो अर्थात शुभद्रेष्काण पापयुक्त वा पापद्रेष्काण शुभ युक्त हो तौ कहीं ऊखर भूमि में सूखेगा। जो सर्प्प द्रेष्काण कर्क वृश्चिकका पहिला और दूसरा, मीन का अन्त्य होवे तो उस शरीर को कुत्ते कौवे स्यार चील आदि खावेंगे और उपरान्त को गति भी नहीं होगी यह सब वराहमिहिराचार्यके पुत्र पृथुयशा नामक ज्योतिर्विद्के बनाये हुये ज्योतिर्ग्रंथसे विचार करना ॥ १३ ॥

मालिनी।

गुरुरुडुपतिशुक्रौ सूर्यभौमौ यमज्ञौ.
त्रिबुधपितृतिरश्चो नारकीयांश्च कुर्युः।
दिनकरशशिवीर्य्याधिष्ठितत्र्यंशनाथा-
त्प्रवरसमनिकृष्टास्तुङ्गह्रासादनूके ॥ १४ ॥

टीका-सूर्य चन्द्रमा में से जो बलवान् है वह बृहस्पति के द्रेष्काण का हो तो वह देवलोक से आया अर्थात् पहिले देव लोक में था। जो वह चन्द्रमा वा शुक्र के द्रेष्काण का हो तो पितृलोक से और सूर्य वा मङ्गल के द्रेष्काण का हो तो तिर्यक योनि से आया। जो शनि वा बुध के द्रेष्काण का हो तो नरक से आया। इस में भी विचारहै कि, वह ग्रह उच्च का हो तो पूर्व पठित योनियोंमें भी उत्तम होगा, उच्चसे उतरा हो तो मध्यम और नीच का हो तो अधम होगा ॥ १४ ॥

मालिनी।

गतिरपि रिपुरन्ध्रत्र्यंशपोऽस्तस्थितो वा
गुरुरथ रिपुकेन्द्राच्छिद्रगः स्वोच्चसंस्थः।

उदयति भवनेन्त्ये सौम्यभागे च मोक्षो
भवति यदि बलेन प्रोज्झितास्तत्र शेषाः ॥ १५ ॥
इति श्रीवराहमिहिरविरचिते बृहज्जातके नैर्याणिका-
ऽध्यायः पंचविंशः ॥ २५ ॥

टीका--जिस का छठा सातवां आठवां भाव ग्रहरहित हो तो तत्काल में छठे और आठवें स्थान में जिसका द्रेष्काण हो उसमें जो बली हो उस की गति पूर्व कही है वही मरे में भी होगी। जो छठे वा सातवें वा आठवें स्थान में कोई ग्रह हो तो उस की उक्तगति मिलेगी जो सभी जगे ग्रह हो तो उन में जो बलवान् है उस की गति मिलैगी। बृहस्पति छठा,वा केन्द्र, वा अष्टम हो और कर्क का हो तो एक योग। अथवा मीन का बृहस्पति लग्न में हो और शुभग्रहके अंशमें हो और शेष ग्रह बलरहित हों तो दूसरा योग है। जिसके ये योग हों तो उस का मरने उपरान्त मोक्ष होगा ऐसा कहना जैसे जन्म में पूर्व गति कही गई है वैसी ही मरे में भी आगे की गति जाननी ॥ १५ ॥

इति महीधरविरचितायां बृहज्जातकभाषाटीकायां
नैर्याणिकाध्यायः पंचविंशः ॥ २५ ॥

नष्टजातकाऽध्यायः २६.

इन्द्रवज्रा।

आधानजन्मापरिबोधकाले सम्पृच्छतो जन्म वदेद्विलग्नात्।
पूर्वापरार्द्धे भवनस्य विन्द्याद्भानावुदग्दक्षिणगे प्रसूतिम्॥ १ ॥

टीका--अब प्रश्न से जन्मपत्री बनाने की रीति कहते हैं कि, जिस का आधानसमय और जन्मसमय मालूम न हो तो प्रश्न लग्न से जन्म समय कहना प्रश्न लग्न जो पूर्वार्द्ध(१५ अंश)के भीतर हो तो उत्तरायण और उत्त-रार्द्ध (१५ अंश से उपरान्त) हो तो दक्षिणायन में जन्म हुवा कहना॥ १ ॥

उपजातिः।

लग्नत्रिकोणेषु गुरुस्त्रिभागैर्विकल्प्य वर्षाणि वयोऽनुमानात्।
ग्रीष्मोऽर्कलग्ने कथितास्तु शेषैरन्यायनर्त्तावृतुरर्कचारात् ॥२॥

टीका-जो प्रश्नलग्न प्रथम द्रेष्काण हो तो जो लग्न है उसी राशिके बृहस्पति में जन्म हुआ, जो दूसरा द्रेष्काण हो तो उस लग्न से पाँचवाँ जो राशि है जन्म में उसी राशिका बृहस्पति होगा जो प्रश्नलग्न में तीसरा द्रेष्काण हो तो जो उस लग्न से नवम राशि है उस के बृहस्पति में जन्म कहना, इस प्रकार बृहस्पति के निश्चय हुये में संवत्प्रमाण हो जाता है कि, बृहस्पति प्रति राशिमें एक वर्ष चलता है, प्रश्न कर्त्ताकी उमर देख कर १२ से, वा २४ से, वा ३६ से, ४८ से वा ६० से, वा ७२ से भीतर का संवत् जिस में उस राशि पर बृहस्पति है वह साल जानना, दूसरा ये है कि लग्न में प्रथम द्वादशांश हो तो लग्न राशि के बृहस्पति में, जन्म, दूसरा द्वादशांश हो तो द्वितीयस्थ राशि के बृहस्पति में, इसी प्रकार जितने द्वादशांश तत्काल में हों उतने भाव सम्बन्धी राशि के बृहस्पति में जन्म कहना, यहां १२। १२ वर्ष विकल्प कहा है जहां इस में भी भ्रान्ति हो तो पुरुषलक्षणसे वर्ष विभाग जानना वह यह है-

"पादौ सगुल्फौ प्रथमम्प्रदिष्टञ्जङ्घे द्वितीये तु सजानुवक्रे।
मेढ्रोरुमुष्काश्च ततस्तृतीयन्नाभिङ्कटिश्चेति चतुर्थमाहुः ॥ ३ ॥
उदरङ्कथयन्ति पञ्चमं हृदयं षष्ठमथ स्तनान्वितः।
अथ सप्तममंसजत्रुणी कथयन्त्यष्टममोष्ठकन्धरे ॥ ४ ॥
नवमन्नयने च साभ्रुणी सललाटन्दशमं शिरस्तथा।
अशुभेष्वशुभं दशाफलञ्चरणाद्येषु शुभेषु शोभनम् ॥ ५ ॥"

अर्थात्-प्रश्नसमय में पूछनेवाले का हाथ जिस अङ्ग पर लगा हो उसके प्रमाण वर्ष बारहवर्ष के भीतर कहना जैसे पैरों में १ वर्ष, जंघा में २ वर्ष इत्यादि। जिसके परमायु १२० वर्ष से अधिक उमर हो उस का नष्ट जन्मपत्री क्रम भी नहीं है। प्रश्न लग्न में सूर्य्य हो तो ग्रीष्म ऋतु में और शनि हो तो शिशिर ऋतु, शुक्र हो तो वसन्त, मङ्गल हो तो ग्रीष्म, चन्द्रमा हो तो वर्षा, बृहस्पति हो तो हेमन्त में जन्म और इन ग्रहों

के द्रेष्काण लग्न में हो तौभी यथोक्त ऋतु जानना। जो लग्न में बहुत ग्रह हों तो उन में से जो बलवान् हो उस की ऋतु कहना । जो लग्न में कोई भी ग्रह न हो तो जिस का द्रेष्काण लग्न में हो उस की ऋतु कहना । अयन और ऋतु में फर्क हो जैसा अयन तो उत्तरायण लग्न पूर्वार्द्ध होने से पाया और लग्न में बृहस्पति हो तो हेमंत ऋतु पायी तो उत्तरायण में हेमन्त ऋतु असम्भव है ऐसा विक्षेप जहां पडे वहाँ अगले श्लोक में निश्चय कहा है ऋतु सौरमान से जानना ॥ २ ॥

इन्द्रवज्रा ।

चन्द्रज्ञजीवाः परिवर्त्तनीयाः शुक्रारमन्दैरयने विलोमे ।
द्रेष्काणभागे प्रथमे तु पूर्वो मासोऽनुपाताच्चतिथिर्विकल्प्यः ॥३॥

टीका–जहां ऋतु और अयन का व्यत्यास हो तो चन्द्रमा के ऋतु में शुक्र की, बुध से मङ्गल की, बृहस्पति में शनि की ऋतु कहनी । जैसे उत्तरायण आया और ऋतु वर्षा आई तो वसन्त कहना । ऐसे ही शरद के स्थान में ग्रीष्म, हेमंत के स्थानमें शिशिर कहना । दक्षिणायन हो तो यही ऋतु पूर्वोक्त क्रम से परिवर्त्तन करना । महीनेके लिये प्रश्न में तत्काल प्रथमद्रेष्काण हो तो ज्ञातऋतु का प्रथम मास दूसरा द्रेष्काण हो तो दूसरा मास, तीसरा द्रेष्काण हो तो उस के दो भाग करने प्रथम भाग में एक दूसरे में दूसरा महीना जानना । जिस द्रेष्काण के पक्ष में वह भाग है उसके प्रकारोक्त महीना कहना । महीना भी सौरमान से लेना । अब तिथि के लिये अनुपात त्रैराशिक है कि १० अंश का एक द्रेष्काण हुआ ६०० कला १० अंश की हुई इतनी कला में ३० तिथि होवी हैं तो तत्काल द्रेष्काण में क्या? तत्काल द्रेष्काण कलाको ३० से गुण कर ६०० कला के भाग देने से जन्म तिथि मिलैगी यहां भी सौरमान है तिथि के जगह सूर्य के अंश जानना चान्द्रमानतिथि अगले श्लोक में हैं ॥ ३ ॥

इन्द्रवज्रा ।

अत्रापि होरापटवो द्विजेन्द्राः सूर्य्यांशतुल्यां तिथिमुद्दिशन्ति ।
रात्रिद्विसंज्ञेषु विलोक्यजन्म भागैश्चवेलाः क्रमशोविकल्प्याः॥४॥

टीका–यहां भी होराशास्त्र के जाननेवाले मुनिश्रेष्ठ सूर्य के अंश तुल्य शुक्लादि तिथि कहते हैं । दिन रात्रि जन्म के लिये तत्काल प्रश्न लग्न जो दिवा बली हो तो रात्रि का जन्म और वह रात्रिवली हो तो दिनका जन्म कहना । सूर्य के स्पष्ट होनेसे दिनमान रात्रिमान भी होजाता है । दिवा जन्म में दिनमान से रात्रि जन्म में रात्रिमान से तत्काल लग्न के जितने पल भुक्त हुये उनको गुण दिया उपरान्त अपने देश के लग्न खण्ड से भाग लिया तो लब्धि जन्मसमय की बेला मिलैगी ॥ ४ ॥

लग्नखण्डा काशी के और श्रीनगर के ।

राशि	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	क०	तुला	वृश्चिक	धन	मकर	कुंभ	मीन
काश्याम्	२००	२४०	२८०	३२०	३६०	४००	४००	३६०	३२०	२८०	२४०	२००
श्रीनगरे	२३३	२८३	३३२	३५२	३४०	३४८	३५३	३४९	३१४	२६०	२१८	२०८

इन्द्रवज्रा ।

केचिच्छशाङ्काध्युषितान्नवांशाच्छुक्लांतसंज्ञं कथयन्ति मासम् ।
लग्नत्रिकोणोत्तमवीर्ययुक्तं भम्प्रोच्यतेंगालभनादिभिर्वा ॥ ५ ॥

टीका–किसी का मत कहते हैं कि चन्द्रमा के नवांश से महीना कहना चन्द्रमा नवांशक में जो नक्षत्र है उस नक्षत्र में पूर्णचन्द्रमा जिस महीनेमें हो वह जन्ममास कहना । जैसे मेष के ८ नवांश के ऊपर वृष के ७ नवांश भीतर चन्द्रमा हो तो कार्त्तिक महीने में जन्म कहना । ऐसे ही वृष के ७ नवांश ऊपर मिथुन के ६ नवांश भीतर मार्गशीर्ष, मिथुन के ६ से कर्क के ५ भीतर पौष, कर्कमें ५ नवांश ऊपर सिंह के ४ नवांश भीतर माघ, सिंह के ४ ऊपर कन्या के ७ भीतर फाल्गुन, कन्या के ७ ऊपर तुला के ६ भीतर चैत्र, तुला के ६ ऊपर वृश्चिक के ५ भीतर वैशाख,

वृश्चिक के ५ ऊपर धन के ४ भीतर ज्येष्ठ, धन के ४ ऊपर मकर के ३ भीतर आषाढ, मकर के ३ ऊपर कुम्भ के २ भीतर श्रावण, कुम्भ के २ ऊपर मीन के ५ भीतर भाद्रपद, मीन के ५ नवांश ऊपर मेष के ६ नवांश भीतर आश्विन महीने में जन्म कहना । यह युक्ति उस नक्षत्र में पूर्णचन्द्रमा के होने की है । जैसे कृत्तिका रोहिणीमें चन्द्रमा नवांश से हो तो कार्त्तिक, मृगशिर आर्द्रा मार्गशीर्ष, पुनर्वसु पुष्य पौष, आश्लेषा मघा माघ, पूर्वाफाल्गुनी उत्तरा फाल्गुनी हस्त फाल्गुन, चित्रा स्वाती चैत्र, विशाखा अनुराधा वैशाख, ज्येष्ठा मूल ज्येष्ठ, पूर्वाषाढा आषाढ, उत्तराषाढा श्रवण धनिष्ठा श्रावण, शतभिषा पूर्व भाद्रपदा उत्तरभाद्रपदा भाद्रपद रेवती अश्विनी भरणी आश्विन जानना, इसको शुक्लान्त मास कहते हैं कि, कृत्तिका में पूर्णमासी होने से कार्त्तिक, मृगशिरा में होने से मार्गशीर्ष, इत्यादि और प्रश्न समय में त्रिकोण ९।५ भाव में से जो राशि बलवान् हो उस राशि के चन्द्रमा में जन्म कहना अथवा प्रश्न पूछने के समय जिस अङ्ग में उस का हाथ लगा है, उस अङ्ग में कालांग की जो राशि 'शीर्ष मुख बाहु' वा कंठ हृक् श्रोत्र इत्यादि से है उस राशि के चन्द्रमा में जन्म कहना । आदि शब्द से तत्काल जीव दर्शन से भी कही जाँयगी । जैसे भेड बकरी अकस्मात् देखी जावें तो मेष, गौ बैल देखे जाने से वृषराशी कहना इत्यादि सभीके चिह्न लक्षण पहिले कहे गयेहैं ॥५॥

इन्द्रवज्रा ।

यावान्गतः शीतकरो विलग्नाच्चन्द्राद्वदेत्तावति जन्मराशिः ।
मीनोदये मीनयुगम्प्रदिष्टम्भक्ष्याहृताकाररुतैश्च चिन्त्यम् ॥६॥

टीका-प्रश्न लग्नसे जितने स्थान में चन्द्रमा है उससे उतने ही स्थान में जो राशि है उस के चन्द्रमा में जन्म कहना, जैसे मेष लग्न से पञ्चम चन्द्रमा सिंह का है तो उस से भी पञ्चम धन के चन्द्रमा में जन्म कहना जो प्रश्न लग्न में १२ मीन राशि हो तो मीन ही का चन्द्रमा जन्म में कहना । इस प्रकरण में नक्षत्रविधिके २।३ प्रकार हैं सभी प्रकार एक होने

में निश्चय कहना जहां उनका व्यत्यास पड़ता हो तो लक्षण अतीत भक्ष्य और आकार तथा शब्द इत्यादि शकुन से निश्चय कहना जैसे उस समय में बिल्ली आदि जीव देखे जावें वा उनका शब्द सुनने में आवे अथवा तदाकार चिह्न कोई दृष्टि में आवे तो सिंहका चन्द्रमा कहना। ऐसे ही भेड़ बकरी से मेष, घोडे, ऊंट से धन इत्यादि, अथवा राशि स्वरूप जो पहिले कहा गया है वह उस पुरुषपर जिस राशि का मिलै वह राशि जानना ॥ ६ ॥

इन्द्रवज्रा।

होरानवांशप्रतिमं विलग्नं लग्नाद्रविर्यावति च दृकाणे।
तस्माद्वदेत्तावति वा विलग्नं प्रष्टुः प्रसूताविति शास्त्रमाह ॥७॥

टीका—जन्मलग्न जाननेके लिये प्रश्नलग्न में जिस राशि का नवांशक तत्काल वर्त्तमान है। उस से उतनीही सङ्ख्या की, जो राशि है वह जन्म लग्न कहना। जैसे सिंह लग्न १०। २२ अंश प्रश्न लग्न में हो तो चौथा नवांश कर्कराशि है इससे चौथा अर्थात् तुला जन्म लग्न होगा। अथवा दूसरा प्रकार यह है कि, प्रश्नलग्न में तत्काल वर्तमान द्रेष्काण से सूर्य का द्रेष्काण वर्तमान जितनी संख्या का गिनती में पड़ता हो उस से भी उतने ही राशि लग्न जन्म कहना। जैसे १०। २० अंश, लग्न में दूसरा द्रेष्काण धन में है। और सूर्य ८। १८। ५५। ५ स्पष्ट है तो सूर्य धन के द्वितीय द्रेष्काण मेष में हुआ यह लग्न द्रेष्काण से १३ वां है बारह से ऊपर होने में १२ से तष्ट किया शेष १ रहा सूर्य द्रेष्काण से गिन कर १ होने से वही रहा अर्थात् धन का द्वितीय द्रेष्काण मेष यह जन्मलग्न हुआ ॥ ७ ॥

इन्द्रवज्रा।

जन्मादिशेल्लग्नगर्वीर्य्यगे वा छायाङ्गुलघ्नेऽर्कहृतेऽवशिष्टम्।
आसीनसुप्तोत्थिततिष्ठताभं जायासुखाज्ञोदयसम्प्रदिष्टम् ॥ ८ ॥

टीका–और प्रकार से जन्मलग्न कहते हैं, कि प्रश्न लग्न में जितने ग्रह हैं उन का तत्काल स्पष्ट लिप्तापर्य्यन्त पिण्ड करना । अथवा उन में से जो बलवान् अधिक है उसी का लिप्तापिण्ड करना । और समभूमि में द्वादशाङ्गुल शंकु की छाया देखना कितने अंगुल हैं उन अंगुलों से लिप्तापिंड गुण देना १२ से तष्ट करके जो शेष रहै वह जन्मलग्न जानना और प्रकार यह है कि जो प्रश्न पूछने में बैठ कर पूछे तो तत्काल लग्न से सप्तम स्थान में जो राशि है । वह जन्म लग्न कहना । जो पडे २ पूछे तो उस लग्न से चतुर्थ स्थान की राशि, जो विस्तर से वा भूमि से उठता हुआ पूछे तो दशम राशि, खडे खडे पूछे तो जो वर्त्तमान लग्न है वही जन्म लग्न होगा । ऐसे प्रकार से निश्चय करके १ लग्न कहना ॥ ८ ॥

शार्दूलविक्रीडितम् ।

गोसिंहौ जितुमाष्टमौ क्रियतुले कन्यामृगौ च क्रमा-
त्संवर्ग्या दशकाष्टसप्तविषयैः शेषाः स्वसंख्यागुणाः ।
जीवारास्फुजिदैन्दवाः प्रथमवच्छेषा ग्रहाः सौम्यव-
द्राशीनां नियतो विधिर्ग्रहयुतैः कार्या च तद्वर्गणा ॥ ९ ॥

टीका–अब और प्रकार से नष्ट जातक कहते हैं–पहिले प्रश्न कालिकलग्न का लिप्तिकापर्यन्त पिण्ड करना. उपरान्त जो लग्न है उसके गुणक से गुण देना वे गुणक ये हैं- वृष, सिंह लग्न के कलापिण्ड को १० से गुणना । मिथुन वृश्चिकके ८ से, मेष तुला ७ से, कन्या मकर ५ से और राशि अपनी अपनी संख्याओंसे जैसे कर्क ४ से धन ९ से कुम्भ ११ से मीन १२ से इस प्रकार गुणा करके तब जो ग्रह कोई लग्न में हो तो पूर्व अपने गुणकार से गुणे पिण्ड को फेर उस ग्रह के गुणकार से गणना जब लग्न में बहुत ग्रह हों तो सभी के गुणकारों से १। १ वार गुण देना लग्नगत ग्रहों के गुणकार यह है सूर्य चन्द्रमा बुध शनि ५ मङ्गल के ८ बृहस्पति के १० शुक्र के ७ पहिले तात्कालिक लग्न लिप्तापिण्ड को अपने गुणकार से गुण के पीछे

लग्नगतग्रह के गुणाकार से गुणकर जो अंक हों उसे स्थापन करना अब आगे काम आवैगा ॥ ९ ॥

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	ग्रह गुणक					
५	५	८	५	१०	७	५	राशियोंके गुणक					
राशि	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२
गुणक	७	१०	८	४	१०	५	७	८	९	५	११	१२

वसंततिलका ।

सप्ताहतं त्रिघनभाजितशेषमृक्षं
दत्त्वाथवा नव विशोध्य न वाथवा स्यात् ।
एवङ्कलत्रसहजात्मजशत्रुभेभ्यः
प्रब्रुवेदुदयराशिवशेन तेषाम् ॥ १० ॥

टीका—नक्षत्र के लिये कहते हैं कि, पहिले श्लोकोक्त प्रकार से गुणकर जो पिण्ड स्थापन किया है उस को ७ सात से गुण देना उपरान्त वह लग्नराशि चर हो तो सातगुणे अंक में ९ नौ जोड देने. जो द्विस्वभाव हो तो ९ घटाय देना, जो स्थिर राशि हो तो वैसाही रखना अर्थात् ९ जोड़ना भी नहीं घटाना भी नहीं, इस प्रकार कोई आचार्य कहते हैं, ग्रन्थकर्ता का अभिप्रेत यह है कि, प्रश्नलग्न तात्कालिक जिस के पिण्ड को स्वगुणकार से गुणा है इसमें तत्काल प्रथम द्रेष्काण हो तो ९ जोड़ने दूसरा हो तो न जोडना न घटाना, तीसरा हो तो ९ घटाय देना, यही मत ठीक है, ऐसे कर्म करने से जो अंक मिला है उस में २७ का भाग देकर जो बाकी रहै उस संख्या का अश्विन्यादि गणनासे जो नक्षत्र हो वह जन्मनक्षत्र प्रश्नवाले का जानना, इसी प्रकार से जब कोई अपनी स्त्री का नक्षत्र पूछे तो उस लग्न से सप्तम राशि का । यह सर्व कार्य करना, जो भाई का पूछे तो तृतीय से और पुत्र का पूछे तो पञ्चम से, शत्रुका

पूछे तो छठे से विचार करना । अर्थात लग्न स्पष्टकी राशि बदल के अंशादि वही रखने जैसे पुत्र का पूछे तो लग्नपस्ट की राशिमें ५ जोड कर स्त्री का पूछे तौ ७ जोड कर करना ॥ १० ॥

वसंततिलका ।

वर्षर्तुमासतिथयो द्युनिशं ह्युडूनि
वेलोदयर्क्षनवभागविकल्पनाः स्युः ।
भूयो दशादिगुणिताः स्वविकल्पभक्ता
वर्षादयो नवकदानविशोधनाभ्याम् ॥ ११ ॥

टीका-अब वर्षादि निकालनेकी विधि और दूसरे प्रकार समस्त नष्ट जातक कहते हैं कि पूर्वविधि से लग्न का पिण्डराशि व ग्रहगुणकार से गुणा करके जो मिला है उस को ४ जगे स्थापन करना, पहिले स्थान में १० से गुनना, दूसरे स्थान में ८ से तीसरे स्थान में ७ से चौथे स्थान में ५ से गुणकर, उन सभी में नौ ९ जोडना वा घटाना वा न जोडना न घटाना पूर्वोक्त क्रमसे जैसा योग्य हो कर के अपने अपने विकल्पों से भाग देकर वर्ष ऋतु महीना तिथि होती हैं कौनसे अङ्क से कौन मिलैगा इस लिये आगे ३ श्लोक लिखे हैं ॥ ११ ॥

अनुष्टुप् ।

विज्ञेया दशकेष्वब्दा ऋतुमासास्तथैव च ।
अष्टकेष्वपि मासार्द्धास्तिथयश्च तथा स्मृताः ॥ १२ ॥

टीका-पूर्व श्लोकोक्तविधि से जो चार ४ अंक स्थापित हैं उनमें ९ नव जोड़ तोड ९ वा न जोड़ न तोड जैसी प्राप्ति हो करके प्रथम स्थान में जो १० गुणित है उस में १२० परमायु का भाग देकर जो बाकी रहै वह वर्ष संख्या जाननी और उसी में ६ का भाग देने से जो बाकी रहै वह ऋतु जाननी, ऋतु शिशिरादि क्रमसे गिनी जाती है उसी अंक में २ से भाग देने से १ बाकी रहे तो जो ऋतु पाई है उस का पहिला महीना, २ अर्थात् ०

शून्य शेष रहैं तो दूसरा महीना जानना, अब जो दूसरे स्थान में ८ से गुणी राशि स्थापित है उसमें २ से भाग लेकर १ बचै तो शुक्लपक्ष शून्य शेष रहै तो कृष्णपक्ष जानना उसी में तिथि १५ से भाग देकर जो बाकी रहै वह तिथि जाननी ॥ १२ ॥

अनुष्टुप्।

दिवारात्रिप्रसूतिं च नक्षत्रानयनं तथा।
सप्तकेष्वपि वर्गेषु नित्यमेवोपलक्षयेत् ॥ १३ ॥

टीका–जो तीसरे स्थान में सात से गुणी राशि स्थापित है उसमें २ से भाग लेकर एक बाकी रहै तो दिन का जन्म शून्य शेष रहै तो रात्रिका जन्म जानना और उसी अंक में २७ से भाग देकर जो बाकी रहै अश्विन्यादि क्रम से उस नक्षत्र में जन्म जानना ॥ १३ ॥

अनुष्टुप्।

वेलामथ विलग्नञ्च होरामंशकमेव च।
पञ्चकेषु विजानीयान्नष्टजातकसिद्धये ॥ १४ ॥

टीका–जो चौथे स्थान में ५ गुणी राशि स्थापित है उस में दिनका जन्म हो दिनमान से, रात्रिजन्म हो तो रात्रिमान से भाग देकर जो बचे वह काल जन्म का जानना जब इष्ट काल मिलगया तो उसी से लग्न स्पष्ट, गृहस्पष्ट, होरा नवांशादि साधन कर लेना, नष्टजातक की २।३ प्रकार से रीति यहां कही है और भी बहुत प्रकार हैं कई प्रकार से एक निश्चय कर के कहना नक्षत्र के लिये और भी आगे कहते हैं ॥ १४ ॥

आर्या

संस्कारनाममात्राद्वि गुणा छायाङ्गुलैस्समायुक्ता।
शेषन्त्रिनवकभक्तं नक्षत्रन्तद्धानिष्ठादि ॥ १५ ॥

टीका–और प्रकार नक्षत्रानयन कहते हैं प्रश्नकर्ता का जो संस्कार नाम अर्थात् नाम कर्म में रक्खा हुआ नाम है उसकी मात्रा जितनी हों

उन में उस समय द्वादशांगुल शंकु की जितनी अंगुल छाया है उतने जोड देने जो अंक हो उसे २७ से तष्ट करके जो बाकी रहै वह जन्मनक्षत्र धनिष्ठादि गणना से जानना, नाम मात्रा की यह रीति है कि, जितने उस नाम मात्रा में व्यञ्जन हों उतनी पूरी मात्रा और जितने स्वर हों वह अर्द्ध-मात्रिक मानना ॥ १५ ॥

आर्या ।

द्वित्रिचतुर्दशतिथिसप्तत्रिगुणनवाष्ट चैन्द्राद्याः ।
पञ्चदशघ्नास्तद्दिङ्मुखान्विताभं धनिष्ठादि ॥ १६ ॥

टीका–और प्रकार से नक्षत्र जानने की रीति यह है कि प्रश्न पूछने-वाले का मुख जिस दिशा में हो उस के अंक लेने १५ से गुण देने फिर उस जगह में जितने मनुष्य बैठे हों उस के मुख जिन जिन दिशाओं के तरफ़ हों उन सबों के अंक जोड देने युक्तांक में २७ का भाग देना जो बाकी रहै उतनाही धनिष्ठा से गिनकर जन्मनक्षत्र जानना दिशाओं के अंक पूर्व के २ आग्नेय के ३ दक्षिण के ४ नैर्ऋत्य के १० पश्चिम के १५ वायव्यके २१ उत्तर के ९ ईशान के ८ ये हैं, जहां थोडे मनुष्य हों तहां मिलताहै ॥ १६ ॥

आर्या ।

इति नष्टकजातकमिदम्बहुप्रकारम्मया विनिर्दिष्टम् ।
ग्राह्यमतः सच्छिष्यैः परीक्ष्य यत्नाद्यथा भवति ॥ १७ ॥

इति वराहमिहिरवि० बृहज्जातके नष्टजातकाऽध्यायः षड्विंशतितमः॥ ॥ २६ ॥

टीका–आचार्य कहते हैं कि, मैंने यहां नष्टजातक बहुत प्राचीन आचार्यों के मत लेकर बहुत प्रकारसे कहा है इस में बुद्धिमान् शिष्य विचार के और परीक्षा करके जैसा मिलै वैसा ग्रहण करे कितने ही प्रकार से एक उत्तर मिलने पर निश्चय करना चाहिये नष्टजातक और कुण्डली रचना में दो इष्टसिद्धि अवश्य चाहिये एक तो प्रश्न का इष्ट

और दूसरे अपने इष्टदेवकी कृपा, विना इष्ट कृपा पहिले तो सारा फला-ध्याय दूसरे ये स्थल तो नहीं मिलते ॥ १७ ॥

इति महीधरविरचितायां बृहज्जातकभाषाटीकायां षड्विंशतितमोऽध्यायः २६ ॥

द्रेष्काणफलाऽध्यायः २७.

वैतालीयम् ।

कट्यां सितवस्त्रवेष्टितः कृष्णः शक्त इवाभिरक्षितुम् ।
रौद्रः परशुं समुद्यतं धत्ते रक्तविलोचनः पुमान् ॥ १ ॥

टीका-द्रेष्काण फल कहते हैं-प्रथम मेष का त्रिभाग का स्वरूप यह है कि कमर में श्वेत रङ्ग का वस्त्र बाँधा हुवा, श्याम रङ्ग, रखवाली को समर्थ होरहा, भयानक मूर्त्ति, फरसा उठाय के कन्धे पर धरता नेत्र लाल रङ्ग के हो रहे इस प्रकार का मेष प्रथम द्रेष्काणमें पुरुषका स्वरूप होता है यह द्रेष्काण चौपया है ॥ १ ॥

इन्द्रवज्रा ।

रक्ताम्बरा भूषणभक्ष्यचिन्ता कुम्भाकृतिर्वाजिमुखी तृषार्ता ।
एकेन पादेन च मेषमध्ये द्रेष्काणरूपं यवनोपदिष्टम् ॥ २ ॥

टीका-मेष के दूसरे द्रेष्काण का रूप लालरङ्ग के वस्त्र पहिरे, भूषण और भोजन की चिन्ताकर्त्री, घड़े के समान पेट, घोडे का सा मुख, प्यासी एक पैर से खडी रहती, ऐसी स्त्री रूप मेषके मध्य द्रेष्काण में यवनाचार्यने कहाहै सिंहद्रेष्काण चौपया है ॥ २ ॥

इन्द्रवज्रा ।

क्रूरः कलाज्ञः कपिलः क्रियार्थी भग्नव्रतोऽभ्युद्यतदण्डहस्तः ।
रक्तानि वस्त्राणि बिभर्ति चण्डी मेषे तृतीयः कथितस्त्रिभागः ॥ ३ ॥

टीका-विषम स्वभाव, अनेक प्रकार के काम जाननेवाला, भूरे केश काम करने को निरन्तर उद्यमी, नियम भग्न करनेवाला, सम्मुख हाथ से लठी उठाय रखता क्रोधी पुरुष यह मेष द्रेष्काण तृतीय द्विपद रूप काहै ३ ॥

दोधकम् ।

कुञ्चितलूनकचा घटदेहा दग्धपटा तृषिताशनचिन्ता ।
आभरणान्यभिवाञ्छति नारी रूपमिदम्प्रथमे वृषभस्य ॥४॥

टीका-टेढे और छोटे शिरके बाल, घडे के समान पेट अग्निदग्ध वस्त्र धारती, नित्य प्यासी, भोजन को निरन्तर चाहती, भूषणों की इच्छा करती ऐसी स्त्री वृष प्रथम द्रेष्काण का रूप सात्विक है ॥ ४ ॥

स्वागता ।

क्षेत्रधान्यगृहधेनुकलाज्ञो लाङ्गले सशकटे कुशलश्च ।
स्कन्धमुद्वहति गोपतितुल्यं क्षुत्परोऽजवदनो मलवासाः ॥५॥

टीका-खेती का काम, अन्न सँभारने का काम और घर का काम गौ की रक्षा, गीत, वाद्य, नाच, लिखनाआदि चित्र कर्म इतने कामों का जाननेवाला और पण्डित, हल और गाडी का काम जाननेवाला, बैल के समान गर्द्दनवाला, अति क्षुधावाला, बकरे का सा मुख, मैले वस्त्र धारण कर्त्ता पुरुष यह वृष का दूसरा द्रेष्काण चौपया है ॥ ५ ॥

श्रुतकीर्तिः ।

द्विपसमकायः पाण्डुरदंष्ट्रः शरभसमांघ्रिः पिङ्गलमूर्तिः ।
अविमृगलोभव्याकुलचित्तो वृषभवनस्य प्रान्तगतोऽयम् ॥६॥

टीका-हाथी के समान बडा शरीर, कुछ सुर्खी सहित श्वेतदाँत, ऊँट के समान बडे पैर, पीला रङ्ग शरीर का, बकरे व मृगों के लोभ में व्याकुल चित्त ऐसा वृष का तृतीय द्रेष्काण चौपया है ॥ ६ ॥

वसंततिलका ।

सूच्याश्रयं समभिवाञ्छति कर्म नारी
रूपान्विताभरणकार्यकृतादरा च ।
हीनप्रजोच्छ्रितभुजर्त्तुमती त्रिभाग-
माद्यं तृतीयभवनस्य वदन्ति तज्ज्ञाः ॥ ७ ॥

टीका-स्त्री शिलाई का काम कसीदा आदि जाननेवाली, रूपवान्, भूषणों में अतिश्रद्धा धारण कर्ती, सन्तान रहित, दोनों भुजा उठाय रखे,

ऋतु मती या अतिकामार्त्त ऐसा मिथुन प्रथमद्रेष्काण का रूप पण्डित कहते हैं यह स्त्री द्रेष्काण है ॥ ७ ॥

उपजातिः ।

उद्यानसंस्थः कवची धनुस्मान् शूरोऽस्त्रधारी गरुडाननश्च ।
क्रीडात्मजालङ्करणार्थचिन्तां करोति मध्ये मिथुनस्य राशेः ८॥

टीका—बख्तर पहिर के धनुष बाण लिये वन बगीचाओं में खडा शूरमा रणको प्यारा माननेवाला(अस्त्र) विद्या मन्त्रमय शस्त्र अर्थात् जादूगरी जाननेवाला, गरुड समान मुख और खेल पुत्र तथा भूषण और धन इन की नित्य चिन्ता करनेवाला पुरुष यह मिथुन मध्य द्रेष्काण पक्षी जाति है ॥ ८ ॥

स्वागता ।

भूषितो वरुणवद्बहुरत्नो बद्धतूणकवचः सधनुष्कः ।
नृत्यवादितकलासु च विद्वान्काव्यकृन्मिथुनराश्यवसाने ॥९॥

टीका—बहुत भूषणों से भूषित और समुद्र समान अनेक रत्नोंसे युक्त, कवच और बाण धारण कर्त्ता, धनुष लिये रहता और नाचने में, बाजे बजाने में, गीत गाने में, अति सुघड कविता, काव्यादि रचनेवाला, पण्डित ऐसा पुरुष मिथुन तीसरा नर द्रेष्काण है ॥ ९ ॥

स्वागता ।

पत्रमूलफलभृद्द्विपकायः कानने मलयगः शरभाङ्घ्रिः ।
क्रोडतुल्यवदनो हयकण्ठः कर्किणः प्रथमरूपमुशन्ति ॥१०॥

टीका—पत्ते, जड, फल इन को धारण कर्त्ता, हाथीका सा बडा शरीर, वन विहारी, चन्दन वृक्ष समीप प्राप्त, ऊंटके से पैर, सूकर का सा मुख घोडे कीसी गर्दन, ऐसा पुरुष कर्कट प्रथम द्रेष्काणका स्वरूप है । यह द्रेष्काण चतुपद है ॥ १० ॥

इन्द्रवज्रा ।

पद्मार्चिता मूर्द्धनि भोगियुक्ता स्त्री कर्कशारण्यगता विरौति ।
शाखां पलाशस्य समाश्रिता च मध्ये स्थिता कर्कटकस्य राशेः ११॥

टीका-स्त्री शिर में कमल के पुष्प धारण करती, सर्पयुक्त और बडी कर्कशा जवानी से भरी, वन में ढाक की टैनी पकड कर खडी हो रही ऐसा रूप कर्कट के दूसरे द्रेष्काण का है। यह सर्प द्रेष्काण है, स्त्री द्रेष्काण भी है ॥ ११ ॥

वैतालीयम्।

भार्याभरणार्थमर्णवं नौस्थो गच्छति सर्पवेष्टितः।
हैमैश्च युतो विभूषणैश्चिपिटास्योऽन्त्यगतश्च कर्कटे ॥ १२ ॥

टीका--स्त्री के आभरण निमित्त समुद्र में नाव के ऊपर बैठा सर्प से अंग वेष्टित होकर चलता और सोने के भूषण पहिरे हुये, चिपिट मुख, ऐसा रूप कर्कट तीसरे द्रेष्काण का है। यह पुरुप द्रेष्काण सर्प द्रेष्काण है ॥ १२ ॥

रथोद्धता।

शाल्मलेरुपरि गृध्रजम्बुकौ श्वा नरश्च मलिनांबरान्वितः।
रौति मातृपितृविप्रयोजितः सिंहरूपमिदमाद्यमुच्यते ॥ १३ ॥

टीका-मोच वृक्ष अर्थात् सेमल के वृक्ष ऊपर एक गीध और एक श्याल बैठा और एक कुत्ता एकमनुष्य मैले वस्त्र पहिरके मा बाप से रहित होने के वियोग से रोय रहा यह रूप सिंह प्रथम द्रेष्काण का है। ये द्रेष्काण नर, चौपया और पक्षी भी है ॥ १३ ॥

वंशस्थम्।

हयाकृतिः पाण्डुरमाल्यशेखरो बिभर्ति कृष्णाजिनकम्बलं नरः॥
दुरासदः सिंह इवात्तकार्मुको नताग्रनासो मृगराजमध्यमः १४॥

टीका-घोडेकासा पुष्ट शरीर और शिर में गुलाबी रङ्ग के पुष्प धारण कर्त्ता,काले हरिणका चर्म्म ओढ रक्खा कम्बल भी धरता और सिंहके सदृश सहज में साध्य नहीं होता, धनुर्द्धारी और नाक का अग्रभाग ऊंचा, ऐसा रूप पुरुषके सिंहमध्यम द्रेष्काण का है, यह पुरुष द्रेष्काण सायुध है॥ १४॥

उपजातिः।

ऋक्षाननो वानरतुल्यचेष्टो बिभर्ति दण्डाफलमामिषं च।
कूर्ची मनुष्यः कुटिलैश्च केशैर्मृगेश्वरस्यान्त्यगतस्त्रिभागः॥ १५॥

टीका–रीछ के समान कुरूप मुख, वानर के समान चेष्टा करता, लट्ठी, फल, मांस इन को निरन्तर धरता, दाढ़ी बड़ी, शिर के केश मुँडे हुये ऐसा पुरुष सिंह तीसरे द्रेष्काण का रूप है। यह नर और चौपाया द्रेष्काण है॥ १५॥

उपजातिः ।

पुष्पप्रपूर्णेन घटेन कन्या मलप्रदग्धाम्बरसंवृताङ्गी ।
वस्त्रार्थसंयोगसमीष्टमाना गुरोः कुलं वाञ्छति कन्यकाद्यः॥१६॥

टीका–कन्या फूलों से भरा घड़ा ले रही, मैले वस्त्र पहरती, वस्त्र और धनका संग्रह चाहती, गुरु कुल को गमन करती ऐसा रूप कन्या के प्रथम द्रेष्काण का है, यह स्त्री द्रेष्काण है ॥ १६ ॥

वैतालीयम् ।

पुरुषः प्रगृहीतलेखनिः श्यामो वस्त्रशिरा व्ययायकृत् ।
विपुलं च बिभर्ति कार्मुकं रोमव्याप्ततनुश्च मध्यमः ॥ १७ ॥

टीका–पुरुष हाथ में कलम ले रहा, श्यामरङ्ग, शिरमें पगडी वा साफा बांधे (आयव्यय) आमदनी खर्च को गिनती करनेवाला, बड़ा धनुष धारण कर्ता, सर्वाङ्ग में रोम व्याप्त हो रहे ऐसा कन्या मध्य द्रेष्काणका रूप है और यह द्रेष्काण नर है ॥ १७ ॥

उपजातिः ।

गौरी सुधौताग्रदुकूलगुप्ता समुच्छ्रिता कुम्भकटच्छुहस्ता ।
देवालयं स्त्री प्रयता प्रवृत्ता वदन्ति कन्यान्त्यगतस्त्रिभागः१८॥

टीका–गोरे रङ्ग की स्त्री,सुन्दर दुपट्टा ओढती, अति लम्बा शरीर, घड़ा और करछी हाथ में लेरही सावधानी से देवालय जाने को तय्यार हो रही ऐसा रूप कन्या के तीसरे द्रेष्काण का है यह भी स्त्री द्रेष्काण है॥१८॥

वसंततिलका ।

वीथ्यन्तरापणगतः पुरुषस्तुलावा-
नुन्मानमानकुशलः प्रतिमानहस्तः ।
भाण्डं विचिन्तयति तस्य च मूल्यमेत-
द्रूपं वदन्ति यवनाः प्रथमं तुलायाः ॥ १९ ॥

टीका-रास्ता बाजार में दुकान खोल कर तराजू हाथ में लिये पुरुष बैठा तोल का प्रमाण जानता, सुवर्णादि द्रव्य के पात्रादिकों का तोल कर मोल बतलाता ऐसा रूप तुला प्रथम द्रेष्काण का यवनों का कहा है। यह नर द्रेष्काण है ॥ १९ ॥

त्रोटकम्।

कलशं परिगृह्य विनिःपतितुं समभीप्सति गृध्रमुखः पुरुषः।
क्षुधितस्तृषितश्च कलत्रसुतान्मनसैति घटुर्द्धरमध्यगतः ॥२०॥

टीका-गीध पक्षी का सा मुख, पुरुष, शरीर, घडा लेकर गिरनेको तय्यार हो रहा, भूंख और प्यास से पीडित और मन से स्त्री पुत्रों को याद कर रहा, ऐसा रूप तुला के मध्य द्रेष्काणका है। यह द्रेष्काण पक्षी व नरसंज्ञक है ॥ २० ॥

वंशस्थम्।

विभीषयंस्तिष्ठति रत्नचित्रितो वने मृगान्कांचनतूणवर्मभृत्।
फलामिषं वानररूपभृन्नरस्तुलावसाने यवनैरुदाहृतः ॥ २१ ॥

टीका-पुरुष मणियों से भूषित हो रहा और वन में हरिणादि मृगों को डराता हुआ सुवर्ण धनुप और तूणीर कवच धारता, फल और मांस धारण कर्त्ता वानर का रूप करनेवाला यह रूप तुला के अन्त्य द्रेष्काण का यवनाचार्य्योंने कहा है। यह चतुष्पद द्रेष्काण है ॥ २१ ॥

उपजातिः।

वस्त्रैर्विहीनाभरणैश्च नारी महासमुद्रात्समुपैति कूलम्।
स्थानच्युता सर्प्पनिबद्धपादा मनोरमा वृश्चिकराशिपूर्वः ॥२२॥

टीका-स्त्री वस्त्र भूषणों से रहित (महासमुद्र) बडे दरयाव से तीर पर आयी हुई अपने स्थान से भ्रष्ट होरही, पैरो में सर्प्प लिपटा हुआ मनोहर सूरत ऐसा रूप वृश्चिकके प्रथम द्रेष्काण का है। यह स्त्री व सर्प द्रेष्काण है२२॥

दोधकम्।

स्थानसुखान्यभिवाञ्छति नारी भर्तृकृते भुजगावृतदेहा।
कच्छपकुम्भसमानशरीरा वृश्चिकमध्यमरूपमुशन्ति ॥ २३ ॥

टीका–स्त्री भर्त्ता के निमित्त स्थान सुख चाहती, शरीर में सर्प्पाकार चिह्न, कछुवा वा कुम्भ के समान शरीर, ऐसा रूप वृश्चिक के मध्यम द्रेष्काण का है। यह सर्प्प द्रेष्काण है ॥ २३ ॥

पुष्पिताग्रा।

पृथुलचिपिटकूर्म्मतुल्यवक्त्रः श्वमृगवराहशृगालभीपकारी।
अवति च मलयाकरप्रदेशं मृगपतिरन्त्यगतस्य वृश्चिकस्य॥२४॥

टीका–वडा और चिपटा (पतला) सा मुख कछवा के मुख के समान, कुत्ता हरिण स्यार सूकर इन को डरानेवाला, मलयागिरि नाम चन्दन के उत्पत्तिस्थान की रक्षा करनेवाला ऐसा सिंह वृश्चिक के अन्त्य द्रेष्काण का रूप है यह सिंह द्रेष्काण चतुष्पद है ॥ २४ ॥

इंद्रवज्रा।

मनुष्यवक्त्रोऽश्वसमानकायो धनुर्विगृह्यायतमाश्रमस्थः।
क्रतूपयोज्यानि तपस्विनश्च ररक्ष पूर्वो धनुषस्त्रिभागः ॥ २५ ॥

टीका–मनुष्य का सा मुख, घोडे का सा शरीर, बड़ा धनुष बाण लेकर आश्रम में बैठा, यज्ञ के उपयोगी स्रुवादि पात्र और यज्ञ करनेवाले तपस्वियों की रक्षा कर्त्ता, ऐसा पुरुष धन के प्रथम द्रेष्काणका रूप है। यह द्रेष्काण मनुष्य और चौपया है ॥ २५ ॥

उपजातिः।

मनोरमा चम्पकहेमवर्णा भद्रासने तिष्ठति मध्यरूपा।
समुद्ररत्नानि विघट्टयन्ती मध्यत्रिभागो धनुषः प्रदिष्टः॥२६॥

टीका–मन को रमण करनेवाली, चम्पा पुष्प सुवर्ण के समान कान्तिवाली, भद्रासन में बैठी हुई, अति सुन्दर भी नहीं, समुद्र के रत्नों को वनाय रही, ऐसी स्त्री धन के मध्य द्रेष्काण का रूप हैयह स्त्री द्रेष्काण है॥२६॥

उपजातिः।

कूर्चो नरो हाटकचम्पकाभो वरासने दण्डधरो निषण्णः।
कौशेयकान्युद्वहतेऽजिनश्च तृतीयरूपं नवमस्य राशेः॥२७॥

टीका-दाढीवाला, पुरुष, सुवर्ण वा चम्पा पुष्प के समान कान्तिमान्, श्रेष्ठ आसन सिंहासन, कुर्सी आदि में बैठा हुवा लठ्ठी हाथ में, कुसुम्भी वस्त्र पहिरे और मृगचर्म्म भी धारता ऐसा रूप धन के तीसरे द्रेष्काण का नरसंज्ञक है ॥ २७ ॥

दोधकम् ।

रोमचितो मकरोपमदंष्ट्रः सूकरकायसमानशरीरः ।
योक्त्रकजालकबन्धनधारी रौद्रमुखो मकरप्रथमस्तु ॥ २८ ॥

टीका-सर्वाङ्ग में रोम व्याप्त और नाकू के से दांत, सूकर का सा शरीर और योक्त्र अर्थात् जोत जिनसे बैल जोते जाते हैं और (जाल) बन्ध, फांसी, बेडी आदि इन को धारण कर्त्ता भयानक मुख ऐसा रूप मकर के प्रथम द्रेष्काणका है । यह द्रेष्काण चौपया है ॥ २८ ॥

उपजातिः ।

कलास्वभिज्ञाब्जदलायताक्षी श्यामा विचित्राणि च मार्गमाण ॥
विभूषणालङ्कृतलोहकर्णा योषा प्रदिष्टा मकरस्य मध्ये ॥ २९ ॥

टीका-सम्पूर्ण कला जाननेवाली, चतुर, कमलदल के समान नेत्र, श्यामवर्ण की अनेक प्रकार वस्तु जात को ढूंढ़ती, भूषणों से सज रही, कानों में लोहा लगाय रक्खा, ऐसी स्त्री मकर के दूसरे द्रेष्काण का रूप है । यह स्त्री द्रेष्काण है ॥ २९ ॥

रथोद्धता ।

किन्नरोपमतनुः सकम्बलस्तूणचापकवचैस्समन्वितः ।
कुम्भमुद्वहति रत्नचित्रितं स्कन्धगं मकरराशिपश्चिमः ॥ ३० ॥

टीका-किन्नर देवयोनि हैं घोड़े का सा मुख उन का रहता है उनके समान शरीर, कम्बलधारी, तूणीर, धनुष, बख्तर धारण कर्त्ता, रत्नसहित कुम्भ कांधे पर ले रहा, ऐसा रूप मकर के तीसरे द्रेष्काण का है । यह सायुध पुरुष द्रेष्काण है ॥ ३० ॥

रथोद्धता।

स्नेहमध्यजलभोजनागमव्याकुलीकृतमनाः सकम्बलः।
सूक्ष्मकोशवसनाऽजिनान्वितो गृध्रतुल्यवदनो घटादिगः॥३१॥

टीका—तेल, शराब आर अन्न इन के आगम से चित्त व्याकुल और कम्बल ओढ़े, रेशमी वस्त्र और मृगचर्म धारण कर्त्ता, गीध के समान मुख, ऐसा रूप कुम्भप्रथमद्रेष्काण का है। यह नर द्रेष्काण है॥ ३१ ॥

वैतालीयम्।

दग्धे शकटे सशाल्मले लोहान्याहरतेऽङ्गना वने।
मलिनेन पटेन संवृता भाण्डैर्मूर्ध्नि गतैश्च मध्यमः॥ ३२॥

टीका—स्त्री आग से फूकी गई, शाल्मलीवृक्षसहित गाड़ी से लोहा चुन रही, वन में मैले वस्त्र पहन के (भाण्डे) वर्त्तन शिर में धारती, ऐसा रूप कुम्भ मध्य द्रेष्काण का है। यह सात्विक स्त्री द्रेष्काण है॥ ३२ ॥

इन्द्रवज्रा।

श्यामः सरोमश्रवणः किरीटी त्वक्पत्रनिर्य्यासफलैर्बिभर्ति।
भाण्डानि लोहव्यतिमिश्रितानि सञ्चारयत्यन्त्यगतो घटस्य॥३३॥

टीका—श्यामवर्ण और कानों में वाल जमें हुये, शिर में किरीट धारता, लोह युक्त पात्र में वृक्ष के त्वचा (वकली) पत्ते, गोंद और तेल और फल इन को घर के एक स्थान से दूसरे में ले जाता, ऐसा कुम्भ के अन्त्य द्रेष्काण का रूप है यह पुरुष द्रेष्काण है॥ ३३ ॥

इन्द्रवज्रा।

स्रुग्भाण्डमुक्तामणिशङ्खमिश्रैर्व्याक्षिप्तहस्तः सविभूषणश्च।
भार्य्याविभूषार्थमपां निधानं नावाप्लवत्यादिगतो झषस्य॥३४॥

टीका—स्रुवादि यज्ञ पात्र, मोती, मणि (रत्नजात) शंख ये सब इकट्ठे हाथ में ले रहा, भूषण पहिरे हुये और स्त्री के भूषणों के निमित्त समुद्र में नाव जहाज आदि में वैठा जाता ऐसा पुरुष मीन के प्रथम द्रेष्काण का रूप है यह नर है॥ ३४ ॥

वसंततिलका ।

अत्युच्छ्रितध्वजपताकमुपैति पोतं
कूलं प्रयाति जलधेः परिवारयुक्ता ।
वर्णेन चम्पकमुखी प्रमदा त्रिभागो
मीनस्य चैष कथितो मुनिभिर्द्वितीयः ॥ ३५ ॥

टीका-बड़े ऊंचे पताकावाले जहाज वा किश्ती में बैठकर समुद्र के तीर तीर कुटुंब सखी जनों को साथ लेकर स्त्री चलरही, चम्पा पुष्प के समान मुख कान्ति, ऐसा रूप मीन क दूसरे द्रेष्काण का है यह स्त्री द्रेष्काण है ॥ ३५ ॥

इन्द्रवज्रा ।

श्वभ्रान्तिके सर्पनिवेष्टिताङ्गो वस्त्रैर्विहीनः पुरुषस्त्वटव्याम् ।
चौरानलव्याकुलितान्तरात्मा विक्रोशतेऽन्त्योपगतो झषस्य॥३६॥
इति श्रीवराहमिहिरवि०बृहज्जातके द्रेष्काणफलाऽध्यायः
सप्तविंशतितमः ॥२७॥

टीका-खाई के समीप सर्पवेष्टित हो रहा 'ऐसा' नङ्गा पुरुष, वन में चार और अग्नि के भय से मन में व्याकुल रो रहा, ऐसा रूप मीन के तीसरे द्रेष्काण का है, यह द्रेष्काण सर्प है। ये द्रेष्काणों के रूप चोर,के रूप और चोरित द्रव्य के स्थान बतलाने आदि में काम आते हैं ॥ ३६ ॥

इति महीधरविरचितायां बृहज्जातकभाषाटीकायां द्रेष्काणफलाऽध्यायः
सप्तविंशतितमः ॥ २७ ॥

उपसंहाराऽध्यायः २८.

उपजातिः ।

राशिप्रभेदो ग्रहयोनिभेदो वियोनिजन्माथ निषेककालः ।
जन्माथ सद्यो मरणं तथायुर्दशाविपाकोऽष्टकवर्गसंज्ञः ॥ १ ॥

टीका-बृहज्जातक के २९ अध्याय में से तीन अध्याय यात्रिक के

यहां ग्रन्थ कर्त्ता ने छोड़ दिये उपसंहार अर्थात् अनुक्रम से बृहज्जातक इतने ही २५ अध्याय में पूरा हो गया अब उपसंहाराध्याय में ग्रन्थ की अनुक्रमणिका और आचार्य का नामादि वर्णन ग्रन्थ समाप्ति के न्याय से कहते हैं इस से यह ग्रन्थ २६ अध्याय न समझना चाहिये ॥

इस बृहज्जातक में पहिला अध्याय राशि भेद १, ग्रहयोनिभेद २, वियोनिजन्म ३, निषेकाध्याय ४, सूतिकाध्याय ५, अरिष्टबालकों का ६, आयुर्दायाध्याय ७, दशाविभाग ८, अष्टकवर्गाध्याय ९ ॥ १ ॥

शालिनी ।

कर्माजीवी राजयोगाः खयोगाश्चांद्रा योगा द्विग्रहाद्याश्च योगाः ।
प्रव्रज्याथो राशिशीलानि दृष्टिर्भावस्तस्मादाश्रयोथ प्रकीर्णः ॥२॥

टीका–कर्माजीवी १०, राजयोगाध्याय ११, नाभसयोगाध्याय १२, चन्द्रयोगाध्याय १३, द्विग्रहत्रिग्रहयोगाध्याय १४, प्रव्रज्यायोगाध्याय १५, राशिफलाध्याय १६, दृष्टिफलाध्याय १७, भावफलाध्याय १८, आश्रयाध्याय १९, प्रकीर्णाध्याय २० ॥ २ ॥

शालिनी ।

नेष्टा योगा जातकं कामिनीनां निर्य्याणं स्यान्नष्टजन्म दृकाणः ।
अध्यायानां विंशतिः पञ्चयुक्ता जन्मन्येतद्यात्रिकं चाभिधास्ये ॥३॥

टीका–अनिष्टयोगाध्याय २१, स्त्रीजातकाध्याय २२, निर्याणाध्याय २३, नष्टजातकाध्याय २४, द्रेष्काणस्वरूपाध्याय २५, बृहज्जातक की मर्यादा आचार्य्यने २८ अध्यायकी करी है परन्तु जातकोपयोगी अर्थात् जन्मकाल प्रयोजन के २५ ही थे इस कारण यह जातक ग्रन्थ होने से २५ ही में ग्रन्थ समाप्त कर दिया बाकी जो ३ अध्याय हैं वे यहां इस कारण छोड़ दिये कि उनका प्रयोजन जातक कर्म पर नहीं है उस को यहां लिखने से यह ग्रन्थ जातक नहीं कहलाता संहिता हो जाती उन ३ अध्यायों का प्रयोजन आगे है ॥ ३ ॥

उपजातिः ।

प्रश्नास्तिथिर्भं दिवसः क्षणश्च चन्द्रो विलग्नं त्वथ लग्नभेदः ।
शुद्धिर्ग्रहाणामथ चापवादो विमिश्रकाख्यं तनुवेपनं च ॥ ४ ॥

टीका–आचार्य कहता है कि,प्रश्न विचाराध्याय, तिथिबलाध्याय, नक्षत्रबलाध्याय, दिनप्रकरण अर्थात् वारफलाध्याय, मुहूर्त्तनिर्देश, चन्द्रबलाध्याय, लग्ननिश्चय, होरा, द्रेष्काणादि, लग्नभेद, लक्षणफलसहित और समस्त ग्रहों के कुण्डलियोंके फल, अपवादाध्याय, मिश्रकाध्याय, देहकम्पनाध्याय॥ ४॥

उपजातिः ।

अतः परं गुह्यकपूजनं स्यात्स्वप्नं ततः स्नानविधिः प्रदिष्टः ।
यज्ञो गृहाणामथ निर्गमश्च क्रमाच्च दिष्टः शकुनोपदेशः ॥ ५ ॥

टीका–गुह्यकपूजनविधि, स्वप्नाध्याय,स्नानविधि, गृहयज्ञविधि,यात्रानिर्णय, अरिष्टविचार, शकुनाध्याय इतने यात्रिक में हैं ॥ ५ ॥

उपजातिः ।

विवाहकालः करणं ग्रहाणां प्रोक्तं पृथक् ताद्विपुला च शाखा ।
स्कंधैस्त्रिभिर्ज्योतिषसंग्रहोयं मया कृतो दैवविदां हिताय ॥ ६ ॥

टीका–विवाहपटल और ग्रहोंका करण पंचसिद्धांतिका ग्रन्थमें लिखा जिस की शाखा शुभाशुभज्ञानार्थ बहुत हो गई है, इस प्रकार तीन स्कन्ध अर्थात् गणितग्रंथ, (होरा) जातकग्रंथ (संहिता) समस्त विचार निर्णय से तीन स्कन्ध से समस्त ज्योतिष शास्त्र का विचार प्रयोजन मैंने ज्योतिर्विदों के हित के लिये अनेक बडे प्राचीनग्रन्थोंका विचार करके त्रिस्कन्ध ज्योतिप इस प्रकारका बनाया ॥ ६ ॥

मालिनी ।

पृथुविरचितमन्यैः शास्त्रमेतत्समस्तं
तदनु लघुमयेदं तत्प्रदेशार्थमेवम् ।
कृतमिह हि समर्थं धीविपाणामलत्वे
मम यदिह यदुक्तं सज्जनैः क्षम्यतां तत् ॥ ७ ॥

टीका–और भी आचार्य प्रार्थना करता है–कि यह होराशास्त्र अन्य यवनादि आचार्यों ने बडे विस्तार से कहा है वही अच्छा है परन्तु बडे ग्रन्थों के पढने में कलियुग की थोडी आयु व्यतीत होजायगी पढ़ने का फल कब मिलना है इसलिये उस बडे ग्रन्थ के शीघ्र प्रवेश के प्रयोजन उसी का मत लेकर बुद्धिरूपी शृङ्ग के निर्मल करनेको यह 'बृहज्जातक' नाम ग्रंथ सूक्ष्म मैंने बनाया है इस में जो मैंने अयोग्य कहा हो उस को सज्जन पण्डित क्षमा करैं ॥ ७ ॥

वसंततिलका।

ग्रन्थस्य यत्प्रचरतोस्य विनाशमेति
लेख्याद्बहुश्रुतमुखाधिगमक्रमेण।
यद्वा मया कुकृतमल्पमिहाकृतं वा
कार्य्यं तदत्र विदुषा परिहृत्य रागम् ॥ ८ ॥

टीका–और भी आचार्य प्रार्थना सज्जनों के आगे करता है कि इस ग्रंथ के फैलने में जो कुछ टूट फूट जाय अथवा लिखनेवाला बिगाड़ देवै तो बहुश्रुत लोगों के मुख से सुन के आप पण्डित लोग (मत्सर) अन्य शुभद्वेष और घमण्ड छोड कर पूरा कर दें और मैंने जहांकहीं अनुचित कहा हो अथवा अधूरा कहा हो तो उस को भी विचार कर के शुद्ध और पूरा कर दें ॥ ८ ॥

वसंततिलका।

आदित्यदासतनयस्तदवाप्तबोधः
कापित्थके सवितृलब्धवरप्रसादः।
आवन्तिको मुनिमतान्यवलोक्य सम्य-
ग्घोरां वराहमिहिरो रुचिरां चकार ॥ ९ ॥

टीका--आवन्तिक देश में उज्जयनी नाम नगरके कापित्थ नाम ग्राम का रहनेवाला आदित्यदास ब्राह्मण का पुत्र वराहमिहिरनामा ज्योतिर्विद् ने

अपने पितासे बोध और सूर्यनारायणसे वरप्रसाद पाय कर पूर्व ऋषिप्रणीत ज्योतिष ग्रन्थों का अवलोकन और विचार भली भांति से कर के यह होराशास्त्र "बृहज्जातक" नाम जातक सुन्दर और सुगम थोडे में बहुत प्रयोजन देनेवाला बनाया ॥ ९ ॥

आर्या।

दिनकरमुनिगुरुचरणप्रणिपातप्रसादमतिनेदम्।
शास्त्रमुपसंगृहीतं नमोस्तु पूर्वप्रणेतृभ्यः ॥ १० ॥

इति श्रीवराहमिहिरविरचिते बृहज्जातके उपसंहा-
हाराध्यायोऽष्टाविंशतितमः ॥ २८ ॥

सामाप्तोऽयं ग्रन्थः ।

टीका-फिर सज्जनों को प्रणाम आचार्य करता है कि सूर्यादि ग्रह और वशिष्ठादि मुनि और गुरु आदित्यदास जिनके नमस्कार करने के प्रसाद से पाई है बुद्धि जिसने ऐसा वराहमिहिर ने मैंने यह शास्त्र उपसंग्रहण किया पूर्वाचार्य शास्त्रकर्त्ता जिनके मत के आश्रय से मैंने यह कार्य किया उनको नमस्कार होवै ॥ १० ॥

इति महीधरविरचितायां बृहज्जातकभाषाटीकायामुपसंहाराऽध्यायोऽ-
ष्टाविंशतितमः ॥ २८ ॥

समाप्तोऽयं ग्रन्थः ।

पुस्तक मिलनेका ठिकाना-

खेमराज श्रीकृष्णदास,

"श्रीवेङ्कटेश्वर" स्टीम्, यन्त्रालयाध्यक्ष-मुंबई.

विज्ञापनम् ।

बालानां सुखबोधसंततिकरी सच्छिक्षकाणां श्रम-
घ्नी पर्याप्तधियो ममागसामियं भाषेति विद्वज्जनाः ।
कष्टज्ञाः कवयः क्षमंतु विशदं कुर्वंतु माहीधरीं
वाणीं स्वल्पतरे पदार्थबहुले सज्जातके कल्पिताम् ॥ १ ॥

टीका—भाषाटीकाकार सज्जनोंसे विज्ञप्ति करता है-कि मैंने यह ज्योतिष शास्त्र का सुंदर बृहज्जातक नाम ग्रंथ (जो पढनेमें थोडा और पदार्थों-का भरा हुवा) इसकी भाषाटीका खडीबोलीमें; बालक अर्थात् बृहज्जातक न जाननेवालों के सहजहीमें बोधरूपी संतति करनेवाली तथा पाठकमहाशयों के श्रम दूर करनेवाली अर्थात् गुरुजन इसे देखकर सुगमतासे छात्र को समझाय सकते हैं इसमें संस्कृतसे भाषा करने के मेरे अपराधों को ग्रंथ रचनाके कष्ट जाननेवाला (ग्रंथकर्त्ता कवि विद्वान्) लोग क्षमा करें और इस माहीधरी भाषाको प्रकट करें ॥ १ ॥

छिद्रान्वेषणतत्पराः परकृते विध्वंसका दूषका
मात्सर्येण परार्थनाशनपरा दुर्बुद्धयो मानिनः ।
सत्कार्य्ये शिथिलाः कुकर्मसुखिनो निंदंतु नंदंतु वा
मत्कृत्यं सुकृतं परोपकृतये कुर्वंतु निर्मत्सराः ॥ २ ॥

टीका—और जो लोग पराये छिद्र ढूंढनेमें तत्पर पराये किये कर्म को नाश करनेवाले, दूसरे को दूषण देनेवाले, मत्सरी अर्थात् पराई भलाई से विना आग जल भुन जानेवाले, पराये प्रयोजन को भंग करने में तत्पर रहनेवाले, भले कृत्यमें शिथिल अर्थात् जिनसे भले का

अपने हातसे कुछ नहीं हो सकते प्रत्युत बुरे कर्मोंसे सुख मानने-वाले, (घमंडखोर) ऐसे बुद्धिवालेहैं वे मेरे इस परोपकारार्थ परिश्रम को देखकर निंदा करें अथवा प्रसन्न होकर प्रशंसा करते रहैं; किंतु जो विज्ञ महाशय (निर्मत्सरी) पराये सुकृत से आनन्द माननेवाले एवं दुष्कृत्यसे चिंता करनेवाले हैं वे इस कृत्य को सुकृत करें ॥ २ ॥

यदयुक्तमयुक्तं मे युक्तं कुर्वंतु युक्तितः ॥
श्रमे मम न कुर्वंतु कैतवं न च मत्सरम् ॥ ३ ॥

टीका–जो मैंने इस भाषा करने में अयोग्य लिखा हो उसे उक्त सज्जन (युक्ति) यत्नसे शुद्ध करें, एवं मेरे इस (परोपकारार्थ) परिश्रम में (कैतव) ठगपन वा ठट्ठाखोरी न करें तथा मत्सर (अन्यशुभद्वेष) अर्थात् दूसरे के भलाई में दुष्ट भाव न करें ॥ ३ ॥

श्रीमत्प्रतापशाहानां वसत्यां कीर्तिशालिनाम् ।
आज्ञयैषा कृता भाषा रसाभ्रवसुभूशके ॥ ४ ॥

टीका–सत्कीर्तिमान् महाराज श्री "प्रतापशाह" देवकी आज्ञासे उन्हींकी राजधानी टीहरी जिला गढवालमें १८०६ (अठारहसौछः) शककालमें यह भाषाटीका रची ॥ ४ ॥ भाषाटीकाकार–पंडित महीधर शर्मा.

पुस्तक मिलनेका ठिकाना–
खेमराज श्रीकृष्णदास,
"श्रीवेङ्कटेश्वर" स्टीम्, प्रेस–बंबई,